

पदांतात्तिकीकिरणोहीहैकेसरिजाविषै॥५॥हारकरिसो नितहैवरुखजका मांनंगीके
 वदाहकंरिसंयुक्तहिमवानपर्वतही॥५॥भुंदरहैअंगुरीअरदयेरीजाकै॥त्रैसीउनुजासो
 मांनंपणकरिमंनितगाहीहै॥केयूरतामाअनूपणतिनिकरिसो नितहै॥५॥भुंदरकंधेमां
 नसर्वसहितनिधिकेघटहीहै॥महाइटा॥वज्रसमांतकज्जवजनागवसेहनकाधारकभुंदर
 नाभिकंधेसोहताभया॥मांनंजुर्धनरअथविस्तारकंधेपुंरषाकारलोकाकासहीहै॥५॥
 अरकटिसूत्रकरिसो नितजाकीकटि॥मांनंशृङ्गानिगजारतनदीपहीहै॥जैसैरतनदीप
 केअपिपासिरतनकेलिरहै॥तैसैंअंगअंगविधैरतनविस्तारिहै॥५॥अरजाकीमं
 दावर्तुलकारअतिइदवज्रकेषंभसमांनमांनं॥जातरूपमंदिरताकेसंजहीहै॥६॥या
 काउपेतेशरीरकामदाभारजातिकरितामकर्मरूपविधातानैंनंदअलिष्टिरमहाइ
 टरवाहै॥६॥अरवरणनिमैंवंडमंसर्जनदीपमनु॥मखकछादिककेमुनलरुण॥मांनं
 वरावरपदार्थवरणतिहीलगिरहै॥६॥यासो निसुंदरसरीर॥मुतैसुजावमतोहरमदाभुं
 रवांणी॥त्रैसारूपइंजदिकदेवनिरुंइंउर्लननाभिरजाकावर्ननकहांलगकरै॥६॥ता
 कैसमैवालकनिदैजतमविधैनाभिकातासदष्टिपरताभया॥तवतालकटाया॥तातैना
 भिनामशगतभया॥६॥ताहीकैसमैमदअसरालवरसतेंलगेकाहीहै॥दाटानिनिर्की॥
 अरअकासाविधैइंइंधनवधटै॥६॥मेदनिकासमरुआकासविधैछायाया॥काल

राजावचनमैऽदृशहोऽकाशपाथसोकुलकरजाणतमिसर्वविधैऽवयाध॥ वक्ररिनापीडै
 तेरकांकुलकरमहाजोतिकाधारकप्रसेनजितमया॥ अवकर्मभूमिआयतगी॥ ध॥ कुलक
 रकासादापांचसैधनुषजंघ्रसरीरा॥ अरपद्वप्रमाणआयाध॥ वहकुलकरप्रजाकोनेत्रसर्प
 समानदेसाजया॥ सोसर्पनोरुकरिशुहसअरदोषाकहिएरात्रिताकरिअस॥ अरयहन
 मकहिएअज्ञानतातैरहित॥ अरदोषाकहिएदुराचारप्रवर्तितातैरहितसोयहअदभुत
 सर्जकवहसर्जनोपदमकहिएकमलतिनिर्कंप्रफुलितकरै॥ अरुयहपदमाकहिएलक्ष्मी
 लाकरिमंभितजातकंप्रफुलितकरै॥ ध॥ तासमैवालकनरायुपलकरिवेछितनमतेभयो
 पदलीजरायुजरहितहोते॥ सोलोकुनिकुंकुलकरनैनरायुपदतकेदरिकरिवेका
 आदेसदीया॥ ध॥ वहनरायुपदशरीरकाआवणहै॥ ताकंप्रसेनकहिएसोकोधर्त
 समानहै॥ ताकेछेदनेके
 जपयतैकुलकरप्रसेनजितकहाया॥ ध॥ काशपाथस्वर्गतोकगया॥ तापीडैचौदवांकुल
 करनाभिराजाभयो॥ सोयुगाकीआदिपुरधनयो॥ अरमहात्मापविधैधुरंधरभ॥ जाक
 सदापाचसैधनुषजारीरजुव॥ अरकोडिपूर्वप्रमाणआयाध॥ सोधेमुकटधरेदोउका
 नतिसेंकुलतपहरे॥ अेसासोहैमानेंचूलिकाधरेचोदसर्जकरियुक्तसुमेरपर्वतहीहै
 ॥ ध॥ काकापसकमलमरदकीपदुंकेवंदमाकूंजीतताजयाभुलकनिकरिउत्सासरू

त्यादुजपजावतामया॥मूलकनिरुपहैवांदिनीजाकै॥३६॥तासमैलोकपुत्रनिसहितकै
 द्रकदिनजीवतेजये॥पीछेआयुपूरीकरिमरतेनएस्तोकनिकोहर्षजपजपवेतैंच
 दा॥नतामपाया॥३७॥सोकुलकरकालपायस्वर्गविधैजपमावऊरितापीछेंऊनवर्ष
 येवारकांकुलकरमरुदेवनया॥गहिदेधेंलोकनिकाहि॥हिफुंआनेंदरोहि॥३८॥जा
 कापांचसै॥पिचरुतरिधनुषजेंचाआरी॥रदैदीपमंता॥अरनयुतो॥प्रमाणआयु॥म
 तेजस्वीअरजाहिदेधेंसुषुजपनै॥मरुतोअंवरक॥हियेअगाकासविधैनुहोतकरै
 यरपृथ्वीविधै॥सिहताअंवरक॥हिएवस्तुतिनिकरि॥सोनायमानसोकुलकरअरदु
 तस्वरुसोनामया॥३९॥तासमैपितापुत्रकाव्यवहारसपहमया॥प्रजाकैलोकपुत्रनि
 हितवऊतदिनजीवनेलगे॥४०॥अरवातकनिकामुखदे॥पिपुचकारिपुचकारिहर्षमा
 नतेजयेअरनैसैकायाकाअगाथारस्वामनैसैयहप्रजाकाअगाथारहोतामया॥याकैअ
 धीनहैप्रजाकाव्यवहार॥तातैयहमरुदेवकहाया॥मरुतक॥हिएस्वामतासमंनवल्लभहो
 तामया॥४१॥तासमैमावचादिदेकीप्रहृतिमई॥अरद्रोणीक॥हिएखोदेनवाउमये॥अ
 णकैसमैजसकैनिवांणानिकैसेतवंधी॥अरगिरनिकेवदिदेकीसीधीमई॥४२॥अ
 रताकैसमैजलकीडावनकीडा॥गिरकीडामई॥अरउपममुद्रतयानदीप्रगटन
 वेणकुंलीयेमेघकीव॥छिंदोतीमई॥कैसेहैमेघखोटेगजाकीतार्डअ॥पिरहै॥जैसेखोटा

निकामयनिवास्या॥ एतिसुरेवात्मकहै प्रथ॥ जाके समैवात्मकविलोकिवेमें आये तातेंच लुप्तप्रानतामकहाया॥ सो पर्यायपूर्णक रिसर्गिया॥ २४॥ वक्ररिवक्रतकोडिवर्षवीसंयत्रास्वान्नामानवमांकुलकरनयासोमहायत्रकाधारी॥ २५॥ साटाछसैधनुषकाञ्चुआरीरकुमदप्रमाणआया॥ २६॥ तासमैप्रजापुत्रनिकामुखदेविअसीसदृष्टकिंकिन्तकात्मतिष्ठिकरिपरलोकगये॥ २७॥ ताकाजसपुत्रनिसहितप्रजाकेकेलोप्रसन्नहोयगावनेनए॥ तातेंयत्रास्वान्नामसाथिकपाया॥ वृहकुलकरसगरातजिसर्गिया॥ २८॥ वक्ररिवक्रतवर्षवीसंदसमंकुलकरअभिचंदनया॥ चंदमासमानमुख॥ २९॥ सवाछसैकाञ्चुआरी॥ कुमुदंगप्रमाणआयु॥ देदीप्यमानहैकुंलनअरमुकटजिह्मिको॥ ३०॥ कल्पवृक्षसमांनजंगमहाफलकादेनदमा॥ कोतिधारी॥ ज्ञानाप्रकारआमरनरूपमंजरीययाण्यानधरता॥ नया॥ ३१॥ तासमैवात्मकरुदनकरनेलगे॥ तवकुलकरकेजपदैत्रातेंलोकवात्मकनिकुंजलकेपात्रविधैचंदमांकप्रतिवचंददिषायरमावतेनए॥ अरहितसहितपुत्रनिकुंदेषतेनए॥ ३२॥ तातेंयाकाअभिचंदनामप्रसिद्धनया॥ सोआयुपूर्णक रिदेवलोकगया॥ ३३॥ वक्ररिवक्रतवर्षवीसंयत्रावांकुलकरचंदनहोताभया॥ चंदमासमांनजाकामुखअरदेराकासकावेता॥ छसैधनुषजेवामरीरजगनेसूर्यसमानकोति॥ नयुत्प्रमाणआयुमहासमलक्षण॥ ३४॥ सोकुलकरसर्वकलापिपुण्यालोकनिर्गुधिया॥ चंदमांसमानआर

धनुष

वादमेतदेतयोः तातैनामसीमं धरयायाः १०० वक्ररिवरुकोटिवर्धवीतैव्वगलुलकरसीमं धरमदु
 न्याधिकारीयाद्याः अत्रं धिदैमहाजदयप्रभाकाः १११ सा तसैपवीसधनुषकागरीरः अरनसिधप्र
 माणः आद्युः १२ तासमैकल्पदृक् अत्रं तमंदफलनयोः तवलोकावि सैमहाविसंवादनप
 ज्याः सदायोदीहोतैलगेः १३ तवसीमं धरकुलकरदः निकैकत्पाणनमिमिमहाप्रवीणः
 वृक्षः गुत्मादिविह्वलिकरिमीववंधीः कोजयाकीवां धीसीवनलं देतोहीः तातैसीमं ध
 रकदायाः सोमरीरनजिदेवलोकायाः १४ तापीह्वैः कोटिवरसमैः आद्युकाद्युदस्याः अत्रमं
 दिसर्वादीदृष्टेगयोः १५ तवसातवांकुलकरदिसलवांहननयाः भोगलक्ष्मीकरिमं नि
 तसातसैधनुषकाजवशागीरसोजाकरियुक्तपद्यप्रमाणः आद्युपद्यादिककाप्रमाणती
 जीध्यायकैः अत्रं कल्याहैः १६ स्ताकीः आगणतैलोकगनः अरजुरंगमाद्विप्ररिः आरोहणक
 रतेन एः अरमातैः दौदाः अत्रं वावारीः अकुसः अरगननिकैः आनूषणः अरतुरंगनिकैः प
 लोणः अरः अरः अरः आयादकीः १७ सोकुलकरः आद्युपूर्णैः किरिस्वर्गलोकगयाः १८ वक्र
 रिवक्रकोटिवर्धवीतैः आठवांकुलकरवक्रुष्मानमयाः १९ ह्युसैषिवरुतः रिवधनुषकाज
 वशागीरपदमंगप्रमाणः आद्युः २० तासमयलोकविलोकपुत्रनिकामुषः २१ धिमरणक
 रतेन एः पदस्त्रीमातापिताकामरः एः अरसंतातं काननएकः समैहोताः अत्रं वसंतानका
 रवः अत्रं वलोकतकरिः नयवंतमयोः २२ तदकुलकरैः गणैः कुलकरदयाः पृथिव्यदेः अत्रं

पञ्चाहै दया लभाव जा कूं सो कहता भया उम कहो है सो सत्य है अगोत्रे से ही कुते ए
 ए अथ वसपंकर भये है कास के योग तें धिकार कूं ग्राम भए अथ वतु मद्रनिका विस्वामतिकर
 दुरिही तें तम कु॥ २०॥ एव वन सुनि लोक सीमा ले जाटा ले निका विस्वामनकर ते भए वद कु
 लकर काल करि देव लोक गाया ॥ १॥ तापी छैं अथ संष को टिव र्ववी तें ॥ २॥ चौपा कुलकर धे मं धर
 भया सुंदर है सात से पिव दत्त विधनुष का जरी ॥ सत्पुरुष निमैं अग्रे स्वर ॥ ३॥ तुटिक ग्राम ए
 है अगु ॥ ४॥ ताके समै स्पंदादिक मोटा ले अथ महि सादिक सीमा ले अति प्रवत्त भये लो
 क निपरि दो रि अथ वने तगे तव कुलकर संप्रखी ॥ कुलकर कही अथ वये अथ धिक डल भये
 तुम तावीं गाराष कु॥ १॥ दोरि क रि अथ वैन दत्ता जीं ग नि तें न राय दे कु तव वे पंही कर ते
 भये ॥ ५॥ यक्ष कुलकर प्रजा के धेम तें धे मं धर कलाया ॥ क्रूर जीव नि तें रक्षा का उपाय वताया
 द ॥ वद रि व कु को टिव र्ववी तें पंथ वं कुलकर प्रजा के पुत्र के उदय तें सी मं कर भया ॥ ७॥
 सो जाना प्रकार के वस्तु अथ मात्पादिक रि सो नित सरीर कूं धारता जे सा सुगर्क विभूति
 करि सुरेंद्र सो है ते सा यद नरेंद्र जोग लक्ष्मी करि सो हता भया ॥ ७॥ साटा सात सै धनुष उ
 च्च जारी ॥ अथ कमल प्रमाण अगु म हा सुबुधी ॥ ता स मैं कल्प वृक्ष निके फल मं ॥ ८॥ प
 र का रु के वस्तु जातिका मंद पस्या ॥ का रु के आर्मुष ए जातिका मंद पस्या ॥ लोक निविधे
 पर सपर कगण पस्या ॥ ९॥ कुलकर संज्ञाय सव निकही ॥ तव वे बुद्धि वा न भर्मा दा करि वि

धामगो ८९॥ यत्सनामतिशरीरनिस्तराप्रामयाम्पाद्यैः प्रसंख्यातकोटिद्वि
 दीतेनीमराकुलकरधेमंकरनया ९०॥ महावाङ्महाकाया ॥ विसीर्णवत्स्य
 उपरदैदिष्ममानप्रमाजाकी ॥ सोमुमेरुतैः प्रधिकसोदनामया ॥ मुकटरूपहैवृत्तिका
 जाकै ११॥ अटवप्रमंणहै ॥ अगुजाकी ॥ अरअरावसैधनुषजंवासररीरमहाजानी ॥
 जाकैकहंतगणकहिए ९१॥ ताकैसमैसंघादिककखूदकविकारकंप्राप्त
 टो ॥ यहीसरलमुजावकुतेवकतानजनी ॥ स्योकतिनकूलपावते ॥ अरवदहमंहा
 नंतगो ॥ अरजयंक १२॥ वदकरनेंतगो ९२॥ तिनिकीविक्रियादेविलोकनरे ॥
 यकरिधेमंकरसंप्रखुतेनये ॥ धेमंकरमहासम्पकटही ॥ जानी ॥ सवरीतिकेवेता ॥
 नेकुंकारूवातकासंदेहनांही ॥ तिनिसंज्ञोकजायकदनेनये ९३॥ हैदेवपद
 ॥ संधादिकनदपरिणामी ॥ कुते ॥ अरतसारिधेमिष्ठ ॥ अतिसादरूपत्राके ॥ अ
 चरते ॥ अरअरमतसारिषा ॥ जलपीयमहात्प्रिनेये ९४॥ दमारीगोदमैलो ॥ टेतेह
 नकुंहायनिसंज्ञपावतेहमाशद ॥ निकंवडा ॥ विसासजता ९५॥ अरवएसंधा
 दकसोहंकारिहमकुंडरावैहै ॥ अरनयनिकरिजवूहै ॥ अरसोगालेतिरजं
 गीगनिसंज्ञरावैहै ॥ एविनाकारणक्यूकुपितनेये ९६॥ सोकहौ ॥ निनैधेमका
 ॥ प्रायकहा ९७॥ अमनातके ॥ मेधिनवननैहै ॥ मेकरहो ॥ एववनप्रजाके ॥ मुनिउ

वर्तनती जी अथा य के अंन विधै क ह्य है ॥ ७ ॥ ता स मे यो तिरां ग जा तिके क ल प ह रु नि की
 जो ति अ त्पं त मं द प री जै सें प्र जा ति स म य दी प ग की जो ति मं द प रै ॥ ८ ॥ त व रा त्रि स मै स म स
 आ का स वि धै सं ध्या स मै ग्र ह न रु त्र अ ग द म यो ति नि कूं दे वि क रि जो ग नू धि यां न य क रि कं पा
 य मं न म ये जै सें जी व हिं सा दे वि जै नी क बा य मं न हो य ॥ ९ ॥ त व स व स न स ति धै अ यो अ र पू ह्य
 हे प्र जो ये क ह्य है त व स न म ति क ही हे प्र इ प रि ण मी हौ ए तु म कूं क ष के का र ण नां ही
 तु म न य म ति क रौ ॥ १० ॥ ए ता रे ए न रु त्र ए ग्र ह इ नि के वि मं न स द्य सा स ते हैं न वे नां ही
 ॥ ११ ॥ अ व त क यो ति रां ग ना ति के क ल्प ह रु नि की यो ति क रि ह्य हि न प रै अ व ति नि
 की यो ति मं द हो वे क रि ट्ट डि प रें है ॥ १२ ॥ आ का स स द्य ता रा दि क क रि मं नि न ही है ए
 यो ति गी दे व न यो नां ही अ व क र्म भू मि अ र्द्र रा ति दि न का ने द्र अ ग द म य ण स र्ज चं द
 मा का उ द य अ स हो य गा ॥ १३ ॥ ग्र ह ण हो य गा अ र रा ति दि न की द्य दि व धि हो य गा
 एक वर्ष मै दो य अ य न है एक द रु ण य ण एक न रा य ण य द स व जो ति स मा न
 का वी ज है व र कु ल क र ज नी लो क ति कूं क र ता म य ॥ १४ ॥ ता के व च न तैं जु ग ति
 या ति र्म य म यो प्र जा का उ प ग री लो क स अ धि क है जो ति जा की स व नि को ने त्र स
 मा न हो ता म य ॥ १५ ॥ ते स व म न सें जा न ते न ए य ह र मा र अ र्भ दू दि वा न सों बि ल स
 न्म ति है र म कूं सु भ म ति क र ते न रा गा औ स जा नि या की स्मृ ति क रि अ प ने अ प ने

दिने॥ आद्यप्रतिष्ठातृकं कहेतेत्ये॥ हे प्रजो एते कृश्वतकनदीषते॥ अथ दीधेहि सो क
। नवप्रतिष्ठाति इति कास्वकपक हि प्रजाकामय निवारतामया॥ ६९॥ अहेतोको

दस्य इति के विमंनसदासासते॥ है जोतिरंगजातिके कलयह्वृत्तिकीयोतिकरि न
दीषते॥ अथ तिनिकीयोतिमंदनरी कर्मश्रमिका आगमनया॥ तातै एष्टिपरे॥ ७०॥

आकासमैत्रमणक है है॥ इति कश्चिदेन इपरिणामी है॥ उमकं कछूनयतां ही॥ ७१॥

कुलकरके ववनसुनिहो कनिकं विमवास उपज्या॥ यदकुलकर आगामी दानक
मंश्रुमिकी कहेतामया॥ तददे॥ अति प्रीति कं प्रास होया॥ याज्ञोतिक कहते नए॥ इदप्रति

ष्ठातिमहाधीर है॥ दसागडधसुनि ड पतिरवृत्तिकीया॥ त्रैसै कहि ल्याकी सुनिकरने
नये॥ ७२॥ अहोवुद्धि दानमहाभाग तुम चिरका लजीवो॥ दमक हरूपममुद विवेक द

त कृते सो तुम वचाये॥ तुम निहृजसमंन है॥ ७३॥ याज्ञोत्तिको कवारंवार कुलकरकी
स्तुतिकश्चि अथनें अथनें धारिण॥ ७४॥ ददप्रतिष्ठाति कालपाय स्वर्गगया॥ तापी छै

असंख्यतको दिवरस वितीत नये॥ ७५॥ तददज्ञा कुलकर सन्मति नया॥ मां देवा
कलयद कहे है॥ सुंदर वखा॥ मनोहर के समुक्त धरे॥ कुलपद है॥ दारकरि सो

नकसपद॥ इति के पुष्पति की मा लापदरे॥ चंदन चरचें अत्यंत सो दता नया॥ ७६॥
की अममप्रमाण आधु॥ अरते रासै धनुष उंवा सरीर॥ अमम अष्टदंष्टिका दिकका

दत्ती एं प्रवर्त्तनी नै सैं धर्म तमाग जमर्षादि विधै प्रवर्त्तनी भूता समै मनुष्य नि की आशु ए
 पत्न्य अरकाय को सभ्य माण विपंगम लि स मानसा मासुं दरसरी ए क दिन गये पाछें
 आबला प्रमाण आहार भक्ष्य वती जाकाल रुआ नुक्रमै वती तमया अरपत्न्य
 ववां जागती जेकाल मैवा की रक्षा भक्ष्य कल्प दुरु निमोही टो नितो ग जाति के कल्प दुरु
 नि की मंद जोति नई भूत व असाठ मुदि प्रभू कै दिन संभ्रास मै प्रवव अिम की तरफ
 दमो स र्ज्य इष्टि ये भूत स र्ज्य अस्त हो ता अर चंद मां उदय हो ता भूत मां नू आका मरु
 पस मुद्रा विधै ए उ सुवर्ण मर्द जिहा जही है अथवा आका मरु परु ली के मानू कान
 है भूत अथवा पूर्ण वासी रू पस्त्री के क्रीडा करि वे के लाष के गो लही है पर सपर मि
 सी है किर ए नि नि की भूत अर कर्म भिरु पीरा जा जग तरु पय विधै आ वै गा सो
 के प्रथम प्रवेश के मंगल निमत ए दोऊ सुवर्ण मर्द कल सही पार विधै ध्याये है कृष्ण
 थवा ए दोउ आका मरु पसागर कै मध्य सुवर्ण मर्द क्रीडा करि वे के नल मंदिर ही है सा
 मै जाग अर ग्राहवा हि ए सो आका मरु पसागर मै ग्रहरु पग्राह अर तारा रूप जाग है
 दश अरावां दस र्ज्य मां नू साध पुरष समान सुद ता है ए तौ सदहत क हि ए गो ल अर सा
 ध सदहत क हि ए उ तम आवरण के धारक अर अर संग क हि ए साध तौ परिग्रहर हिन
 ए प्रथम अ के ले नि नि अ ए ग्रहा रकादिक दने कुल कर कै समै नि नि अ

अ२

म६

वकरिगतिदिननंद्। वंदसरजनदैषे॥ ४०॥ तेजोगन्मिप्रांआयुष्यंतमहाजोगरिज्ञे
 संपवनकेयोगतैसरदकेवाटरवितैजंदि। तैसैंआयुकेअंतकरिस्त्रीपुषत्तारहीस
 रीरसजै॥ ४१॥ देवगतिजायमरणसमैंपुषकूंजंनर्दस्त्रीकूंछीक॥ ४२॥ स्वभावहीहैकोम
 लपरिणामजितकेवक्तारहितमदकपरिणामीयातेंदेवगतिटारिओरगतिनजा
 हि॥ ४३॥ यदप्रथमकालकीरवनाकरी॥ देवऊरउत्तरकुरुमोगन्मिसमानसवरीनि
 जानिनी॥ वक्रविजवपहनाकालपूर्णमया॥ ४४॥ सोपहनाकालवितीतहोताआयातै
 सें। तैसैंहीकलयहकृतिकावीर्यअरआयुकायदत्तादिसवघटनेगये॥ ४५॥ तवती
 नकोडाकोडीसागरकादुजासुषमाकालप्रवत्या॥ ४६॥ तासमैंजरतषेजकेआर्यखंड
 विषैहरिस्त्रअररमकटैत्रकीमरीतिप्रवती॥ कलयहकृतिकारिबिन्निकूंविस्मा
 रतीसंतीनरैपसुनकीदोषपत्यआयु। दोषकोसकीकायसुनयेष्ट॥ ४७॥ चंदमोकी
 कलासमानदेहिमैंजोतिदोषदिनगयेष्टीहैंवहेजाप्रमाणआहार॥ ४८॥ देवविसेमनोहरम
 नुस्तसकलरीतिजोगन्मिबिकीहरिषेत्रअररमकषेत्रसमानजाननी॥ यदद्रुजाकालरु
 अनुक्रमैवतीतनया॥ ४९॥ ज्योज्योकाजदीयातोत्योआयुकभुद्रुत्यादिसर्वघटने
 मये। तवदोषकोडाकोडीसागरकातीजाकालप्रवत्या॥ जयन्यजोगन्मिबिकीप्रवर्हिहो
 तीनर्दजैसाहैमवत॥ दैरणवदषेत्रकीरीतिहैतैसीनर्द॥ ५०॥ दहतीजाकालअप्रतीम

लीङ्घमाङ्घ्रमाङ्गनाङ्घ्रमा। तीजाङ्घ्रमा सुषमा चौथा सुषमा दुषमा पांचवां सुषमा छ
ठा सुषमा सुषमा १८ सुनामनेकाङ्गनामवुरेकायाही तै एनाम सार्थिक है १८ अ
वसर्पिणी नाम छठनेका उत सार्पिणी नाम वक्षंका। ता तै एउनाम अर्थ क्कहि न है जै सै ए
क मास मै भुक्त्वा स्त्रै कुं दोय पत्न्य अश्वर एक वर्स मै दोय अश्वन ए क दत्त ए गायत्र्य द
जाउत रायण तै सै एक कल्प मै अश्व सार्पिणी उत सार्पिणी दय कही या अश्व सार्पिणी
विषे न राय छे त्रके अर्थ पंड मै पहा काल सुषमा सुषमा १२ आदिके डाको डी सा
गर का प्रवर्त्ता उत कृष्ण भोग भूमि की राति १३ तै सी देव कुरु उतर कुरु भोग भूमि वि
षे मास ती राति है तै सी पहा ले काल मै द्रहं प्रवर्त्ता १४ तामस मै मनुष्य निका उमा दुती न
पत्न्य कायती नको सकी १५ सवही त्रि अश्वन नाराव सह नना महा सोम सुंदरा क
र मनोहर ताये सुवर्ण सभं वक्रांति महा दै दीप्यमान १६ अश्व मुकट कुंडल हार
कटि मेखला कंडे के दूर दाजु ब्रह्म सत्त्व ए उमा नृषण सव निकै १७ अश्व
न्यके ज दय तै रूप लावण संपदा करि युक्तर मै है त्वा नि सहित नै सै स्वर्ग निके देव
देवांगना सहित न मै १८ महा पराक्रमी महा धीर महा निर्मल हृदय महा प्रमा
द कुं धरो सव सभं न १९ ति निके तीन दिन गए पीछे वदरी फल समान अमा
श्वर अति सुंदर ज्यैसा चक्रवर्त्ति कि कुं नोही २० अश्वर नि निके वेद नोही रोग नोही

एक भुवका लः एक विद्वारका लः सोमवहारका लकुं गो एक हि एव्यवहारका लभुव
 का लकी पय्य है का लः ए रूप निश्चयका लभुव है अपर सैयदिका दि रूपव्यवहा
 का ल गो ए है इत्यविनां पय्यानं रीं यद्व्यवहारका ल निश्चयका ल के आधी न है न
 नकुं नी एक विवेका है स्वभावनाका अपर निश्चयका ल स्वाधी न है यद्वार्ता सव
 देव नैक रीः २० जो वर्तना ल रूप भुवका ल है सो अने र है अपर व्यवहारका ल अ
 न अनागत वर्तमान नेद रूप है २१ समया अभावना स्वासः पडी आ दिव्यवहार
 लक हि ए सो व्यवहारका ल जो तिसवर्त के सम एक रिजो निवे है २१ नवा आयु
 यु कर्मदिक का स्थिति सवका ल के अभाधी न है सो काल अने न स मैना क पशिद
 न अने न प्रकार है २२ अपर वा के मुख नेद दोय एक उत्सर्पिणी अरजा मै ए सवदा
 ए जा मै आयुः कालः बुद्धिः वधना जाय सो उत्सर्पिणी अरजा मै ए सवदा
 दत्ते नो हि सो अवे सर्पिणी १४ दत्ता को ड को डी सागर की अव सर्पिणी इ सक
 ो डी का उत्सर्पिणी वी स को ड को डी सागर का एक कल्प १५ उत्सर्पिणी के
 कालः अपर अव सर्पिणी के छ काल १६ तिन के नाम हे श्रेणिक मुणि पद ला का
 ल भुवमा भुवमा इजा भुवमा तीजा भुवमा दुषमा चौथा दुषमा भुवमा १७ पांचमा
 षमा छठा दुषमा दुषमा ए अव सर्पिणी के छ काल के हे अपर उत्सर्पिणी सै पद

पपरणवैह्ये सोकात् एकप्रदेसी अनेतसामर्थ्यकुंलीएहै ॥ ३ ॥ जैसें कुहारके वाककुंज
मणका कारण नीवनी सिद्ध है। तैसें सकल पदार्थ निवी प्रवर्तनका कारण कात्त है। ॥ ४ ॥
यद्यपि निश्चय नयनें सकल पदार्थ अथवा नीमक्ति कश्चि अथवा ही गुण पर्याय रूप परणवै
ह्येतया पित्रवद्वारा तय करिकात्त का सहाय है। सो कात्त पंचास्तिका यमै न भिन्नां ता नै
नां ही। के ईद्वय अत्रै सामा नैह्ये द्वावडमनी सि वि के समजा यवे कौं षट्द्वय विवै द्या का
असि त्वक्क है। ॥ ५ ॥ अर के ईद्वय समयादिके लक्ष्मं मानै है। कात्ता ए रूप निश्चै कात्त
को नां ही मां नै है। सो निश्चै कात्त विनां व्यवहारा कात्त नां ही। जैसें संहत होय तौ विला
वक्त्रै समान कहते। जो यह संहत मान है। ॥ ६ ॥ कात्त कावर्तनात्त एहै सकल द्वाय लोका
का सम विवै ति है है। कोऊ द्वाय का रूस भितै नां ही। अथ पनें अथ पनें गुण पर्याय कुं धरे सव
नुदेनुदे ति है है। परम परमि सि एक नां ही होय जाय है। कात्त द्वाय यद्यपि वक्र प्रदे
मके अजावने पंचास्तिका यमै न गित्यां तथा पिएक प्रदेसी अनेत गुण रूप वस्तु षट्
द्वय विवै प्रगट है। ॥ ७ ॥ अर नीव पुद्गल। धर्म अथ धर्म आकास ए पांच द्वाय वक्र प्रदे
सी है। आने अस्तिका यमै गिते। कात्त एक प्रदेसी है। ता नै अस्तिका यमै नां ही। गुण पर
याय नि के सम द्वाय कुं धरे द्वाय नि मै है। पांच कुं अस्तिका यमै ही। तव जा निए कात्त कुं नां
ही। जैसें नव को वेत नव कह्या। तव जा निए अत्रै रयांच अथ वेत न है। ॥ ८ ॥ कात्त के दोय नै द्वा

एत्रादिपुणएकेमहाअधिकारहै। औररूपुणएनिविधैमयायोगएकहिएगोभए
 कथाकारंभीविकारूपउमकंकहा। अवकालकास्वरूपअबहुलकंक
 थनकरिहै। ६०। याजोतिगैसमत्वांगीए। धरकहांतवश्रेणिकसहिसवहीसज्ज
 रमुनिनिकेसमहजकि करिनश्रीभूतहेयप्रवणविधैसावधानए। नमवांनकेववन
 कल्याणरूपकौनमुबुद्धीउन्मेंनधाहै। धारै। ह्यो। जोतिअसायनिकीपरंप
 करिवत्पात्रायहएविपुणए। चउर्थकालकीअदिदिवैसगांनरिषनस
 क्रवर्तिकंकसासो। तिसरेपाएरूपकर्दमपया। निकशिपरमसुठगोदेऊयहजगतक
 पवित्रकरनहरेमनोहरववनरूपजलसस्यापरमतीर्थसमोनेहै। ६१। इतिश्रीजग
 नजिनसेनाचार्यद्विरविनत्रिषष्टिसहस्रए। महापुणएकेसंगहिविधैकथाके। अरंसदनुनना
 महतीशपर्वपूर्णजया॥ ॥१॥ ॥१॥

विनासीजगवांनरिषनपुणए। पुरषोसमतिकुंनसमकारकरिमहापुणएकीपीवि
 काशगटकहिएहै। २। वर्तनात्तदएकालसोअनादिनिधनहै। आकीअदिअंन
 ही। लोकाकासविधैअसंभ्रातकालाएहै। ३। एकएकप्रदेशविधैएकएककाल
 एतिहैहै। सोअसंभ्रातकालाएअनेकएकएकप्रदेशीअनेतद्वयनिकेपरए
 वनकंसहायरूपप्रवर्तहै। समस्तद्वयकालकेनिमनेअपनेअपनेगुणपर्याय

हिगो॥ भवपुराण चौथाई छटि जाया ॥ पौणरहेगा ॥ जैसै ना जन के अनाव तै वस्स की
 नून ता होइ ॥ तैसै मति की नून ता तै श्रुन की नून ता होइ ॥ ५७ ॥ वहु रि सुनइ ॥ य सो न
 दा नइ वा का तो हा वा र्था ॥ एया रि मुनि एक अंग के पावी होहि गे ॥ ५८ ॥ एक सो अवा रा
 वर सभे ॥ अनु क्रमै होहि गे ॥ तव पुराण चौथाई रहै ॥ गानी नव ट छटि जाया ॥ तहां पीछे
 बुद्धि की दान ता के दोष क रि पुराण अलप मात्र रहै ॥ ५९ ॥ विर ते पुरष धारण करै ॥ ५०
 जात विज्ञान क रि मं दित जे गुर नि नि की प रि पाटी क रि य रह्यं ॥ य च ल्या अया है ॥ सो प्रम
 ण है ॥ जाम सै तेनी बुद्धि होया ॥ ते ता ही प्रकास करै ॥ ५१ ॥ तव नीया के व्यापन क रि वे
 कूं समर्थ होहि गे ॥ म हा बुद्धि दान जिन से ना चार्थ के ॥ अग्र गामी पूज क विनि के ईस्वर ॥ ५२
 य द जैन पुराण स्वयं भगवांन तै नाथा ना तै प्रमाण है ॥ अग्र अग्रो र पुरष नि के ना वे पुराण
 प्रमाण नां ही ॥ के व ली ॥ श्रुन के व ली के वचन ही प्रमाण है ॥ ५३ ॥ भगवांन काना मग्र हण
 क रि ही प वित्र दू जे तौ उन की कथा श्रवण रूप अग्र मृत के पांन क रि कूं न प वित्र हो ॥ ५४ ॥
 ता तै प्रष्टा वान जन नि कूं य द पुराण रूप समुद्र प वित्र पुरष रूप रत नि क रि न स्था स
 दा अग्र ग हि वे दी ग्य है ॥ ५५ ॥ अदि पुराण के संग्रह विषै ॥ अथ मनु स्मार्थिणी अग्रव स
 र्थिणी कान कावर्णन ता सै षट षट काल का कथन ॥ ५६ ॥ कुल क कूं की उत्त पत्ति रि
 ष षट् व कानन म ॥ वं स नि का विसारा ॥ रिष भका राज्य वैराग्य के वल ॥ निर्वोण ॥ ५७ ॥

अत्र तौ पाके पांचद्वज्जाय पट है ॥ अस्त्र आगे पंचम काल विधै के तार हग सो मुन का ॥ ८
 म काल के दोष है जीव नि की बुद्धि या दि जाय गी ॥ सो बुद्धि के घटने ते पुण का वि
 र या दि जाय गा ॥ ३५ ॥ ना वां न के मुख ते सु न्यां अस्त्र म कौ क ह्मा व क्र रि मे रे पी छें ॥ सु ख
 र्मा चार्य रु पुराण का पूरण चार्या न करै गे ॥ ३६ ॥ अस्त्र सु ध र्मा चार्य कै पी छें ॥ ज व्स्वा
 मी क है गे ॥ सो ज व्स्वा मी अस्त्र म र्पाणी के अंति के व स्ती है ॥ ३७ ॥ अस्त्र सु ध र्मा चार्य अस्त्र
 स्वां मी ॥ ३८ ॥ य म तौ म क ल अश्रु त के धार का पी छें ॥ पंचम काल में ए ती तौ के व स्ती हो य अ
 नु क्र म ते मुक्ति पावै गे ॥ ३९ ॥ जा दि त ज व्स्वां मी मुक्ति प धारै गे ॥ ता दि न ना वां न क मुक्ति
 प धारै वा म वि वर्ध हो दि गो ॥ ४० ॥ अस्त्र ज व्स्वां मी पी छें ॥ अश्रु क्र मे सौ व र स मै पां व अश्रु त
 व स्ती हो दि गो ति नि के नाम विष्णु ॥ नं दि मि अश्रु अ प रा जित ॥ ३ गो वर्ध न भ ॥ न ड वा क्र
 ण म ह्मा बु धि वां न म क ल अश्रु ति के प रा ग मी हो दि गो ॥ ४० ॥ सो पु रा ण का संपूर्ण चार्या
 न करै गे ॥ ४१ ॥ अस्त्र त हां पी छें ॥ वि सा षा चार्य ॥ प्रो हित ॥ न्द्र ज्ञे य ॥ न य से ना ना ग से ना ॥
 र्थ ॥ ध ति धे ण ॥ ४२ ॥ वि य य ॥ तु कि मा न ॥ गं ग दे व ॥ ध र्म से न ए ण र ह्म नि ॥ द स प र्व के ण
 वी हो दि गो ॥ ४३ ॥ सो पां व अश्रु त के व स्ती पी छें ॥ अश्रु क्र मे ए क से ती या मी वर्ध मै हो दि गो ॥
 दा त्रुं पु रा ण का संपूर्ण चार्या न करै गे ॥ ४४ ॥ व क्र रि त धि जा चार्य ॥ ज य पा ल ॥ पां डु ॥ कुं व
 ण ॥ कं सा चार्य ॥ पां व मुं नि ॥ ४५ ॥ पा र ह्म अं ग के पा वी अश्रु क्र मे दो य है वी स व र स मै

दशार्धमनोहरा तत्त्वकानिरनैजोधाविषैहै सोमवग्रंथानिमैप्रमाणहै ॥ जैसैंकसोदी
 काकस्मासुवर्णहृदकनिकोप्रमाणहोइ ॥ अरनाकायामैअप्रमाणताहै सोसर्वत्र
 सिंघहै ॥ २२ ॥ महाउपादेश्यदहपुराणताकेअधिकारनिकागणताकहैहै ॥ २३ ॥ याभेव
 डेजेसविअधिकारासिसलिकेमहापुरषनिकेवर्णनतैं ॥ जिबिनिकहैहै ॥ २४ ॥ य
 पुराणरूपवृत्तकेएजेसविअधिकारवडेइहलेहै ॥ अरअवांतरअधिकारवदुत
 है ॥ २५ ॥ तीर्थंकरकेपुराणविषैसवनिकासंग्रहहै ॥ तानैपुराणचौईसहीकहिए ॥ २६ ॥ प
 दलाअदिपुराण ॥ २७ ॥ अजितपुराण ॥ २८ ॥ आसंनवपुराण ॥ २९ ॥ चौथाअजितेद
 पुराण ॥ ३० ॥ पांचववांसुमतिपुराण ॥ ३१ ॥ अष्टापदावनपुराण ॥ ३२ ॥ मानवांसुपार्मपुराण ॥ ३३ ॥
 अत्राववांवंदवनपुराण ॥ ३४ ॥ नवमांसुपुस्तकदंतपुराण ॥ ३५ ॥ दसवांसीतलपुराण ॥ ३६ ॥
 रवांश्रेयांसपुराण ॥ ३७ ॥ द्वादवांसपुनपुराण ॥ ३८ ॥ तेरवांविमलपुराण ॥ ३९ ॥ चौद
 कांअनंतपुराण ॥ ४० ॥ पंदकांधर्मपुराण ॥ ४१ ॥ सोलकांजांतिपुराण ॥ ४२ ॥ सतरवांकुं
 पुराण ॥ ४३ ॥ अत्राववांअरपुराण ॥ ४४ ॥ अगणसवांसहिपुराण ॥ ४५ ॥ बीसवांसुनिसु
 वतपुराण ॥ ४६ ॥ द्वादकईसवांसुनिसपुराण ॥ ४७ ॥ द्वादसवांसुनिसपुराण ॥ ४८ ॥ तेईसवापा
 नाथपुराण ॥ ४९ ॥ चौईसवांसुनिसपुराण ॥ ५० ॥ चौईसतीर्थंकरनिकेचौईसपुराण
 ॥ ५१ ॥ निसवनिकासंग्रहमहापुराणसोयहै ॥ अगवांसमहावीरकेअनुग्रहतैंहंमकहा ॥ ५२ ॥

विद्यातीसकोडिदकतीसलाषमातरजारापंचसैन्येअरणकद्रोककेअरुवर
 तीससोसोलासेचौतीसकोडिनीयामीलाषमातरजाराअठाठसैअग्रामीअरु
 जयोएरादृशमाणकदा॥१४॥अरअर्थरूपअणारहैकेवलजानामहैयापु
 णसैसमस्तसिखंतकारहस्यहैयाकैवाहरिकोउवसुजांदी॥१५॥जैसैअमोनि
 करतननिकीउनपतिसमुद्रसैहै।जैसैसुगहूरूपरतननिकीउनपतियापु
 नैहैं।तीर्थकरावक्रवर्तिदंडावलदेवा।वामुदेवा।प्रतेवा।मुदेवतिनिकी।वि
 भूतिकारणन।अरमुनिनिकारिदिया।मैंकहिए।॥अरसंसारजीवनिकास
 रूपनष्टासिद्धिनिकासरूप।अरबंधमोक्षकेकारण।तथाषट्द्वय।सतत
 त्वा।नवपदार्थ।पंचास्तिकायकासकलव्यानया।मैंहै॥१७॥तीनलोकका
 रचना।तीनकालकावर्णन।अतकीरीति।कर्मभूमिभोगभूमिकावर्णन।प्र
 लयकालकीरचना।समस्तकथनया।मैंहै॥१८॥मारागकहिए।मोक्षमारात
 नत्रय।अरमारागकलकहिएकेवलवोध।अरपुरुषार्थकहिए।धर्म।अर्थ
 काम।मोक्ष।इनकाकथन।जेता।विस्तारहै।सो।सबया।मैंहै॥१९॥बहुलकहिदेक
 रिकल।धर्मकास्वरूपनी।ववा।धारहै।ना।का।सकल।निर्णयया।पुण।ण।मैंहै।
 २०॥सोक।थनदुर्लभ।और।वोरनपाई।ए।सो।सबया।मैं।पद।पद।वि।सैहै।२१॥नाष्टसु

नंगीवांतीकावर्तनः। इत्यादिप्रतिप्रदनुनकथनहै। २० अथ अथानुपूर्वीकहि।
 अनुक्रमताकं अदिदेषां प्रकार उपक्रम है। सोपुण एक अरंज विषे अगम
 प्रमाण कहै है। प्रमत्त जो वस्तु अरंजी है ताके अर्थकार हस्य श्री ता निरुमुतावतां।
 ताहि उपक्रम कहियो अरंज पोदघात रुकहि। ताके नेद अथ अनुपूर्वी नाम।
 प्रमाण अथ निषेध अथ धाधिकार एषां च। २१ अनुपूर्वी के नेद दोष अथ म अथानु
 पूर्वी अथानुपूर्वी जो प्रथम ही प्रथमानुयोग का व्याख्यान करि दो सो अथानु
 अनुपूर्वी अथानुपूर्वी अनुयोग का प्रथम व्याख्यान करि दो सो अथानुपूर्वी। सो यह अथानु
 अनुपूर्वी कथन है। २२ व्यापि अथानुयोग पहली कहि तिनि में यह प्रथमानुयोग है।
 कोऊ पूर्वैया का नाम प्रथमानुयोग क्यो कहा। ताका जनर अथानुपूर्वी के
 कथन में प्रथम या का कथन है। तातें प्रथमानुयोग अथे माना म प्रार्थिक है। इ
 सो प्रथमानुयोग का प्रमाण विसार रूप सुनिवेकानां ही अथानुप्रार्थि निरुके।
 तिनि श्री तानिके अथानुहर्तें प्रमाण कहि है। २३ सो प्रथमानुयोग ^{नैव} ^{अथानु}
^{हर्तें} ^{अथानु} अथानु रूप विचारि। तौ अथानु प्रथम है। अथानु अथानु विचारि। तौ प्रार्थ
 हर्तार पद सो एक पद के इकावनको डिअठला प्रवौ रासी हर्तार हर्तार से साटा इ
 कर्तु म सिलोक सो पांव हर्तार के सिलोक दोष लाष पदावन हर्तार व्यापि

॥२॥ समतल भूतल में पलंका सतति हि कश्चि वैरागकी परम रहता हि निरूपण करेने
 तेजं व्यजीवति कुं संवो धि तेन ए ॥ ५५ ॥ वा मरुसतौ पद्मासनधरा ॥ अरदा हि ण कस्रं
 करिज पदे शदे तेन ए ॥ मां ने मर्दवधर्म की वदि करे है ॥ ५६ ॥ अति गंजी रमधुरं
 ए ॥ करि गौतम स्वासी श्रोता नि कुं संवो धतेन ए ॥ अहौ न व्यजीव हौ में न गां न श्री
 र्धमान के मुख की दिव्य ध्वनि में सुन्यां ॥ सो पुरा एकार रस तु मर्क यथा वत क
 रू ॥ ५७ ॥ उम चित दे सुन ऊ ॥ जो न गां न विष न ते न रथ व कवर्तिक क ह्या ॥ अरस
 तीर्थं करया ही जांति क रहै अण ॥ सो ही अंति म तीर्थं कर म हा वी र स्वासी क ह्या ॥
 तिति की आसा प्रमाण में तु म सब करूं ॥ ५८ ॥ वाद संग सख के व्यापि म हा अ
 कार है ॥ तनि में पहला प्रथम नूयोग जा में तीर्थं कर दि म हा पुरष नि की क था ॥
 ॥ ५९ ॥ अर रू जा कर ए नूयोग जा में ॥ श्री लो ॥ क्य का व्याख्यान ॥ ॥ ॥ अर रती जै में
 कारु की कुलावली पत्र होय ते में सी न लोक का भित्री नित्रवर्ण है ॥ अर रती जावर
 नूयोग जा में सु नि अर र आवाग का धर्म ॥ २०० ॥ अर र वौ था द व्यां नूयोग जा में ॥ ५९ ॥
 धन त्वन व पदार्थ पंवा सि काय का कथन ॥ नय प्रमाण निरूप की वरवा ॥ अर
 निर्देश स्वा मित्व ॥ साधन अ धे कर एण स्थिति विधान ता का व्याख्या न ॥ अर र सत
 संष्ठा ॥ धे अ स्म र्त्तन ॥ काल ॥ जाव ॥ अं न र ॥ अर स ॥ व ऊ त्व ॥ ६ ॥ नि का क थन ॥ अर स

तां अग्निप्राप्य तावते नयेत् ॥ ३ ॥ मुनिनिमहास्तुति करिगौ तम गणधर स्रष्टा र्थना करी
तव गौ तम सव निके अ नुग्रह विवै न ह्यमी होश पुराण के वर्णन विवै म न ल गा व ते भ
यो । ता तै व डे नि की न नि करि धर्म श्रवण कर तां यो ग्य है ॥ ४ ॥ सकल सार्थ निके समू
ह अर सुर न र स क ल श्रो ता श्रो णि क स हि त मैन ग हि हा य जो रि ति श्रु त हो य ति हे
७ ॥ गणधर अ प ने व व न क रि नि न वां णी कं अ ग ट क र ते न ये ॥ ७ ॥ चार की या त व दां त
नि की यो ति प्रा ट हो ती न डी ॥ ८ ॥ मुं ड र क थ न रू प म हा र त न श्रो ता रू प ग्रा ह क
नि कं प्रा र्थ ना रू प ग र य क रि दे ते न ये ॥ ९ ॥ अ र ज हां त र य का अ प्र वा रा हो य है । त हा
त र य के अ रां न वि वै फू ल व ये रे है । सो स र स व ती रू प न र य का शि णी के अं त र स रू प
न र य के अ रां न वि वै ग ण ध र नें ड स न ने की टी । हि रू प फू ल व ये रे ॥ १० ॥ अ र म न की
प्र सं न ना कं अ ग ट क र ण हा री क पा ह हि सो र्ज त की धा रा ता क रि स म स त स ना कं
ज रु ल क र ते न ये ॥ ११ ॥ अ र त प के प्र भा व क रि ज प न्या मु नि प ट रू प सिं हा स न
ता प रि ति ष्ट ते मा नं अ प ती म हि मा क रि ज ग त के ज प रि दा ति हे है ॥ १२ ॥ प रि पू र्ण
है मु ष की मुं ड र ता जि नि की । सो स ह ज स्व ना व द्या र्थ ना क र ते न ॥ १३ ॥ भा वा
न की वा णी ता हि म र स त की क हि ए सो अ न्ना दि क्रा त की डो र है । ता हि षे ड र हि
त प्रा ट क र ते न ॥ १४ ॥ आ र द्या न क र ते प रि श्र म न नु प न्या प से व त अ ग्रा यो ज धे ग न न

रिद्धिके धारक उमसे उम कूं हमारानमसकार होऊ ७३ हेना पउम ही परमवं
धु हो अउम ही परमवं धु गुरु उम कूं से वैति न कै साव संपदा हो या ७४ हे प्रभो उ

मृति प्राट करी धर्म की समस्त प्रतिष्ठा उम तै है या तै जो गी स्व तुम कूं नम
र कर है ७५ उम ही तै से व क लं ए होय है ७६ मी सखा कर तै थ के ह म ति हा

ए रूप हृद की छाया से वै है ७८ ति हा री सु नि कर तै व व न गु द्वि जा य तौ जाऊ
अर ति हा री गुण स रण कर तै म नो गु द्वि जा य तौ जाऊ अर तुम कूं नम स्कार कर
तै का य गु द्वि जा य तौ जाऊ नि सैं कं ७९ तुम सकल सुवन विषै प्रे ह ति हा री स
त्यार्थ सु नि करि ह म र ही प्रार्थ ना कर है है ८० पु र ण का प्रवण कर है ८१ पु र ण

वण तै धर्म का लाज होय है ८२ सो ह म धर्म नु प्रार्थ ना के फल तै वारं वार ध
वण ही की प्रार्थ ना कर है है ८३ ति हा रे व र ण क म ल के सेवन तै जो ह म रे शुभ
का संवय न या ना के प्रजा व तै ह म रे ति हा रे प द विषै डि ट न कि हो ऊ ८४ हे
व ति हा रे प्रसाद तै प्र ह प्रार्थ ना म फल होऊ अद र जा रिष र जा प्रे णि क ता सा
त ह म स द पु र ण प्रवण की या वा है है ८५ तुम अउम प्रह करै ८६ या नो ति
प्र कारै सो अनिके पाव करि सकल मु नि नि ग ण धर की सु ति करी सो सु
म हा त्म जा ह हो ना न या ८७ या नो ति म हा मु नि ग ण धर की सु ति करि

नि

नां गाका अर्थ धितं तौ अरव वन वल कहि॥ अंतर्मुक्त नैमै द्वादसां गाका व्यान क
 है॥ अरका यवल कहिये शरीर का अतल वल होय॥ इत्यादि वल रिद्धि के धारक उभा
 ति नि कुंहर मारान मसकार॥ उभा अर जल चारण कहि॥ जल परिष्कल की नोई व
 ले जां हि॥ जल का यकुं वा धान होइ अर फल चारण कहिये॥ बरु निके फल निप
 रिव ले जां हि॥ फल दूहि वे न पावै॥ अर पुष्प चारण कहिये पुष्प निपरि व ले जां
 हि॥ पुष्प नि कुं वा धान होय॥ अर तंतु चारण कहिये॥ मकड़ी के तार परिव ले
 जां हि तार तट्टे॥ अर बीज चारण कहिये॥ बीज निपरि व ले जां हि॥ बीज कुं वा धा
 न होय॥ अर अंकर चारण कहिये॥ अंकरे परि वितो परसें व ले जां हि॥ अंकर कुं
 वा धान होय॥ अर जंघा चारिणी कहिए॥ पद मास नाहि अनेक आसन धरे व ले
 जां हि॥ अर श्रेणि चारण कहिये सखे श्रेणी रूप व ले जां हि॥ मारग में पर्वत दिक्
 बुद्ध अवावो का कृतें न रुकै निराधार आकास विषै सर्व दिसा कुं व ले जां हि॥ एवा
 रणी रिद्धि के नेद॥ अर अक्षीण महान सी कहिये॥ साधना के दारिद्र्यो जनक है॥ ता
 दिन ताकी रसोई अट्ट होय जाय॥ अर अक्षीण महान इक हिये॥ जारसोई में जो
 जनक है सो अर रसोई का स्या न हो अति संकीर्ण होय सो ना दिन औ सावित्री ए
 होइ जाय जा में वक्रवर्तिका कटक समा य जाय॥ क्षेत्र रिद्धि के नेद॥ इत्यादि अने

वर्यादिककीसंपदाकरिलेय।वसित्वकरियेहेजाकूंबसिकरै।अप्रनीयातकहि
 पर्वतादिकमेंहोयवत्याजायशरीरकूंबाथानहोयअरपर्वतादिकनिकेछिद्र
 नहोय।अथेतस्यांनकरहियेवैवाहीअप्रस्यहोयजाय।कामरूपकरियेवाहेभैसा
 रूपवजावै।इत्यादिविक्रियाकृदिकेधारकउमतिनिकूंदमारातमसकाय।अ
 भामरकहिएववनषेत्तकरहियेधंधारविटकरहियेसकलमत्त।जलकहिएमृत्त।इ
 त्यादिमुनिकेजारीरकेमत्ततिनिकासपरसनीबनिकेसर्वगोहरै।अरसर्वोषधी
 कहिएमुनिकेसरीरकोसपरसिपवनअथवैसोमकलत्याधिकूंदरै॥७१॥अ
 सीविषकरहिये।मुनिकेववनमुनेविषयउतरिजाय।अरदृष्टीविषकरहिये।मुनि
 दत्तानकोएविषउतरिजाय।इत्यादिअथैषधिरिदिकेधारकउमतिनिकूंद
 नमसकार॥७२॥अरअमत्तआविणीकरहिये।रसोईमेंविषवापस्याहोय।अरमु
 पधारैतौअमत्तहोयजाय।अरमधुआविणीकरहिये।रसोईमेंमीठानहोय।अर
 धअप्रदा।रकूंबआवैतौरसोईमिष्टनेसहितहोयजाय।अरपीरअंविणीकरहि
 दूधनहोयतौदूधहोयजाय॥७३॥अरद्वतआविणीकरहिये।रसोईमेंघीरैहोयते
 द्वतहोयजाय।अरआसीविषदृष्टीकरहिए।इहांदिवकरनी।इत्यादिरसरिदि
 केधारकउमतिनिकूंदमारातमसकार।अरसतोवलकहिए।अंतर्मरुत्तमेंद

कारहण्य अरदीक्षितपरिद्विकहिद्यो। तपकेप्रभावकरिअनेकसूर्यसमांनगरीर
 मेंशोतिहोद। अरजगतपकहिणअनसनादितपवदतेजांहि। अरतत्रशिद्विकहि
 ण। गरीरकेमलमूत्रादिसवजातेरहै। अरमहतपविद्विमोकहिद्येजाकाधारकसे
 यारितानकाधारीहोय। अरमहतपर्वधनअनेकरिद्विमंनिनहीयअरगोरतपक
 दिणै। महाविषमतपकारुसौंनवनैसोकहै। शोणदिकनगिनै। अरजोमुखनैवचनक
 हैसोहोय। अरगोरगुणब्रह्मचारीकहिद्ये। अरवंडब्रह्मवर्दकाएलकउपमर्गसह
 न। मीलकुधादिपरीमहकरि। अरजगुजाकेनिकदगीवतिकेसर्वउपश्रुवदरिहै
 य। अरगोरएराक्रमीसोकहिद्येजोचाहैतौ। अरसंव्यातसमुद्रनिकाजलपीयजाय।
 अरचाहैतौवैलोक्यकुंजचायलेपरंहुकवरुंशैसानकरै। अरउलपराक्रमीकर्म
 केनासकरिवैकुंठसंमर्थादृत्पादितपपरिद्विकेधारकउमतिनिर्कुंदमाराजमसका
 रा। अरअरअणिमाकहिणसूरुमगरीरकरै। महिमाकहिद्येस्यूलसरीरकरै। स्त
 धिमाकहिद्येहस्तकासरीरकरै। अरिमाकहिद्येजास्यासरीरकरै। प्राद्विकहिद्येसु
 मेरादिककीबूलिकासपरसे। अरददवतिकेविमाननिकुंठकंपावै। अरश्राकासि
 कहिद्येथलविषैजैजैसैंजलसैंबुजकीलाजिए। तैसैंलेयकरिअरजलविषैथल
 कीनाईवल्पाजाय। अरटाईदीपविषैइछाकरै। तहांजायअरईसत्वकहिद्येवज

का) अथवा मध्यका एकपदधारण करि ममस्तयं एतिकात्प्राप्तानकरै। औसी हि
 के धारक उमति निर्कुं हमारानमसकारा) अरसंति न ओत्र कहिए वारह्यो जन संवा
 नव जो नवौ डावक वर्तिका कटकता विधै मनुष्य निर्यच आदिना नाष्टति निर्कुं
 निंन निंन सुए। औसी रिक्के धारक उमति निर्कुं हमारानमसकारा) द्य) अर दरमप
 स। हरा स्वादन। दर डां ए। दर दर्जो ना दर श्रवण। इति रिक्के नि के धारक उमति नि

दी

हमारानमकारा) अर न उमति म न पदं एतथा विपुल मति म न पदं यता के धारक
 मति निर्कुं हमारानमस्कारा) अर सत्थे कबुकि कहिए कछु नि म तपाइ वैराग्य प्रात होइ
 जै सैंना लो जन कामारण दे विप्र शिष्य न जाय वैराग्य न ये अर स्वयं बुक कहिए परो
 पदे जा विनो स्वयमेव वैराग्य होय। औ सैनु मति नि को नमस्कार होऊ। अर दर्जो न
 पूर्व धरण कहिए दशावां विद्यानुवाद पूर्व ताके पाव करि देव नि क रि पूजा होय। अर श्रव
 उर्दश पूर्व धरण कहिए सकल पूर्व नि काज्ञान अर प्रसा श्रवणी रिक्के के नेद। अ औ
 पातिका कहिए पूर्व नव विधै श्रुत का उग्र भास का या होइ सो या नव विधै सिद्धि होय। अ
 र पाशेण मिका कहिए का हकारण तै एरिणाम श्रुद्ध होइ ता करि उपजै। अर श्रवै नय
 की कहिए देवगुं रजासु के विनय करि उपजै। अर कर्म जा कहिए न पसंय मादि
 रि उपजै। इत्यादि बुकि रिक्के अने कने दति नि के धारक उमति निर्कुं हमारानमस

मके वार उधार न हारे उम है। ता तै तु म्परा ज पास ना करै है। ६५॥ ब्रह्म कहिए सर्व जे वीर
 राग देवति नै प्रकासे समस्त नत्वति निवै उम वै ता है। ता तै तु म कं ब्रह्म सुत कहिए॥
 अर ब्रह्म वेत्ता कहिए। जे ब्रह्म वेत्ता है। ते या ही तै ज्ये सी कहै है। जो ब्रह्म का जान पना इत
 कै अथा न है। ६७॥ म हामु निदिगं वर वा यु मं न ल ही है। कटि मे षत्ता जिति कै ते सिद्ध
 रु वा चा है है। ता का उपाय मुद रत नत्रय तिहारे प्रसाद तै फई ए। सो तु म कं सी मन
 वा य न म स्कार करै है। ६८॥ हे म हामो गे इ जी व नि कै र क म हारि कि के भार क म हार
 पुरष तु म कं ह मार न म स्कार होऊ। ६९॥ हे दे शो व धि पर मा व शि म र्वा व धि के थारी। तु म कं
 ह मार न म स्कार होऊ। ७०॥ अर को ष्ट बु धि कहिए। जे सैं को थार विषे अने क था य के
 थारी को सो पिछे। अर जा स मै जो व ल्क वा हिए। सो व ह दे य तै सैं जिनि को अने क वर
 या गुर थार ए क रा वै। अर जा स मै जो प्र स्ता व आ य परै ता को प्रा ट करै। तिनिकुं के भ
 ष्ट बु धि रि धि के थार क कहिए। ज्यै से उ म ति नि कं न म स्कार। अर वी ज बु धि कहियो।
 जे सैं दे व विषे स मै प्रे रि वी ज वो ई ए सो एक वी ज के अने क वी ज होइ। ते सैं एक वी ज
 मं त्र के ग्रह ए तै अने क पट्ट पदार्थ की सि धि होय। ज्यै सी वी ज बु धि के थार क तु म ति
 नि कं ह मार न म स कार। अर पदा तु सारिणी कहिए। ग्रं थ की आदि का तथा अंत

निर्मलधारिज्ञानप्रतिष्ठाति॥ अथ विधौ मध्यम्यति निवर्तितुमनात्कृतं नो नैह ॥ ता
नैऽनुमर्षं पंथितवुद्धकहैहै ॥ अनुभवद्विकेपारहौ ॥ ५५ ॥ बुद्धिकैः पश्यैषमात्मनि
नुमज्जा नो ह्यैष रमजोतिरूपजगतां ननु मवितो न पार्थिव ॥ ता नैति निवर्तिका स तैऽनु
जोतिर्मर्दीपगहो ॥ ५६ ॥ अथ रसरस्वती कहिरे सर्वज्ञकी वाती ॥ तानैऽप्रजित
याज्ञानरूपी दीपगता की नोति सर्वज्ञानविषे प्रकासकरनहारी ॥ तिहारैऽव
पमं दिरविषे प्रगटनर्है ॥ ५७ ॥ तिहारैऽवनञ्जज्ञानअधकारकं दर्शने स
मोनशुद्धमारा कुं प्रगटकरहै ॥ ५८ ॥ तिहारी नो कतैऽअधिकबुद्धिविद्याकी
पारगोप्सिनी आस्वरूपसमुद्रकेतिरिवे कुं जिहानहै ॥ ५९ ॥ अगवानमहावीर
पञ्चगोहिमावतपर्वतनिनकामुषसेर्जनयापदमद्दह ॥ ता नैति नवानीरूपगं
गा नुमप्रगतकरा ॥ समसपापरूपरनकी पषा लनहारी ॥ ता विषे प्रवेसकरिव
कृतज्ञत्वजीवपरमपवित्रनयेहै ॥ नगवानसर्वज्ञके वतप्रतद्विज्ञानधरैहै ॥ ता
नैकेवली कहिए ॥ अथ रतुममतिष्ठाति एदो यज्ञानपरोक्ष ॥ अथ रअवधिमन
पर्थ एदो यज्ञान एको देवावतद्विनिजि को धरैहो ॥ ता नैऽनुमश्रुतकेवली ॥
दृष्टमञ्जसा न अथ कारकैः पारपरमक्षामहै ॥ तहो पहींचा कहै ॥ सो पथम

वउदशपूर्वरूपसमुद्रकेपरागमीहै। वौदशविद्यानिधानमहागुणवांनहै। वउदश
द्विद्याकेनामप्रथमानयोग। ४८ करणानुयोग। १४ वरणानुयोग। २४ द्रव्यानुयो
ग। ३४ सिद्धाकल्याण। ४४ व्याकर्ण। ५४ बंद। ६४ अलंकार। ७४ ज्योतिष। ८४ निरुक्त। ९४ इति
दास। १०४ पुराण। ११४ मीमांसा। १२४ न्याय। १३४ हेरिषीस्वरनिके। १४४ द्दमकेवलसक्ति।
केचरेतिदशरेसोत्रकविवेकुंउद्यमीनयेहै। ४८ हैमगवांननुमजयनिकेसमूहके।
सिवदीपलेजायवेसमर्थहै। तिसारीकीतिवेंदमांसमांनउरुलभुजासमांनउची।
सोजायमांनहै। ४९ तिसारीकीतिरुपवेलिलोककरूपवृक्षकेउपरिवटहै। समुद्रहै।
है। आलवालकहिएजलस्सीविवेकीवै। दशजाके। ५० अरतुमकुंमुनिराजमुनिन
के। ५१ द्दमानैहै। सुमअगणितगुणनिके। धारकनगवांनके। मुखगणधरहै। ५२ गो
नमाकहिएसवतिमैउत्कृष्टसर्वज्ञकीवांणी। आहिरुमधारणकरैहै। पटोहो। पटा
वोहो। आनोहो। जानैतुमकोंनोतमकहियो। ५३ अरगोतमाकहियोस्वर्गकाअग्र
नदातैअग्रेजिनराजतिननैजाषाजोसत्रताहिरुमअभयनकरैहै। जानैउ
मकुंनोतमकहियो। ५४ अरद्वंद्वकहिएदर्पजातुमतातैद्वंद्वनिकहियो। द्वादि
कमवतिसारेसेवकहै। सुमसाक्षातसर्वज्ञकेपुत्र। जानैउमकुंआमरुकहिए। ५५।

एका अथ तै प्रसन्न कर तै स तै प्राग र की या ॥ प्रसन्न ते रा अति ॥ ति गे नी र ज्ञा सै सम सस धर्मो
 कथा की र वि ॥ पेत्र क हि ऐ मा री र अथ वा नी न लो का अर र्हे व ज्ञ क हि ऐ अा त्मा नी
 हि यो भुषो प यो ॥ अने दर त न व य मो रु का मा र्गी अर का ल क हि ऐ व नु र्थ का ल स त पुर
 ष नि के व रि त्र का अा प्रया ॥ ४ ॥ जो प्र अ तै की या सो ही न ग की आ दि वि कै श्री रि ने
 दे व कै नि क हि म र थ च क्र व र्ति की या अ र थ ही प्र स म ग र व क्र व र्ति श्री अ जित ना थ
 अा गै की या वे म ग व न अ वृ न क हि ऐ अ वि ना सी है ॥ ४ ॥ य ह प्र मा ण न त व क्रो श्री
 नि की प्र रं प रा य तै म हा वु दि वा न जे गो त म ग ण ध र ति नि नै पू छु तै सो ना य मां न
 री ॥ ४ ॥ त प्र स न हा रा न ग व न क र न हा रे अ र ह म स व प्र व ण क र न हा रे इ ह
 म श्री मि त नां दु र्त्त न है ॥ ४ ॥ ता तै या ष षि त्र क पा क र्त्तु दि के पा र ग मी गो त म
 स्वा मी आ र णा न क र ॥ अ र स व श्री तां अ व ण क रै ॥ ४ ॥ या नो ति स क ल मु नि
 स मा धा न रु प है ॥ भा व नि न कै ए का ग र है इ हि नि नि की ते श्री णि क र्त्तं ध र्म प्र व ण
 वि वे न क्ता ह रु प क रि गो त म ग ण ध र की सु ति क र ते न ण ॥ ४ ॥ हे प्र मो नु म म हा
 द य को ध रं ज्ञा न रु प है ॥ अ व शि ज्ञा नी मु नि नि रु के ज्ञा न क रि अ ग म्प है म हि
 मा जे न की ॥ म हा सो व क रि ह म ति हा रा सु ति क रि वे कूं उ द मी न दे है ॥ ४ ॥ नु म

षाकं जिता वै है। नैधर्मका प्रत्यक्ष की याता मै सवही प्रत्यक्ष आण ३०। द्विधर्म रूप वृत्त
 का अर्थ रूप फल है। अथ अर्थ रूप फल का काम रूप पर स है। सकल पुरषार्थ का मूल
 धर्म का या का अर्थ है। ३१। धर्म धर्म की अर्थ का ममोक्त निमित्त देह होय है धर्म है सो अर्थ का
 मकी उत्तपत्तिका कारण है। हे विरंजीव तत्रैसा निश्चय करि जो धर्मार्थि है सो ही
 महा प्रवीण है। धर्म ही धर्म। रिद्धि सुख संपदा का मूल है। ३२। धर्म ही कल्प वृत्त धर्म
 ही काम से जु। धर्म ही धिंता मणि धर्म ही अर्थ निधि है। धर्म ही कष्ट व्यक्ती जीव निका रि
 द्वा कर है। ३३। धर्म विधेतिष्ठते मनुष्य कूंदे वता पांडु जनक हिस कै। ३४। ही नै दे विन मम
 कार करै। ३५। हे बुद्धि चान तरा मा अथ देव दत्ता दिक नि के बिसा समै तो सं देह जा नि अर
 धर्म के महा तम मै सं देह मति जा नै। हे राजन् देव दू धर्म काम महा तम जो अगा निमी तन होय जा।
 ३६। सर्प मा ल होय जाय है। ३७। जो नर का दिपत न नै व दायक रि अ विना सी सुष का है जु द
 य जहा औ सा तो क शि पर त हां पद चा वै सो धर्म कहियो। ३८। ता का आर व्या न पुराण नि मै दि
 जोष है। आ मे वे अकाल तीर्थ म त पुरष। अथ स त पुरष नि के व रि अ। ए वं अकार क यन हो
 य सो पुराण कहियो। ३९। वे अक हि ऐ नी न लोक का ल क हि ऐ नी न काल का बिस्तार ती
 र्थ कहिये मुक्ति का उपाय रत नत्रय। अथ पुरष क हि ऐ रत नत्रय के अरा धक ३९।
 अथ रचि अक हि ऐ पाप के छेदन हो रै सं त नि न का आचरण पाय रू पय रू स मस्त। पु

है महिमांजिनि की। त्रैसेतुममहाकुसलजगतके हित। नवजीवनि का समूह। ताके
 सार्थवांही है। १८॥ है महायोगेंदमोहिक त्याग की वारता कहौ। उमनै कछु अ
 गोवरतांही। तिरारे जगत्तरु की एक मै प्रकास करि रहै हैं। १९॥ एक मेरी वी
 नती है सो सुनऊ। ज्योतिहारो। विस मेरे अग्रनुग्रह विषै दट होय। २०॥ हे प्रभो मै प्रथम
 वस्य। विषै अज्ञान के योग तैं दराचार की। निनिपणनि की प्रसांति कै अर्थि प्र
 भित देवऊ। २१॥ सिध्या लका अज्ञान जीव हिंस मया वाद परधन हरण। परदार से
 वन। वऊ अरंभ। वऊ परिग्रहै। तिनिक रिमै पाप उपाई। २२॥ अर सिध्या लव अग्रवस
 विषै। मुनि राज कुंज पसर्ग की। या सो मेरै नरक का कारण। पापकर्म वंछा। २३॥

है

ता तैं हे नाथ पुराण पुराण पुरव भि की। पवित्र कथा मोहि मूल तैं कहौ। जाके प्रव
 ण करि पापनिका नास होय। २४॥ या नांति विनयरूप वचन कहिक रिशजा अलि
 क सौ नग्रहिरहा। मां नें अ पनें दांत नि की। यो तिरूप पुष्प निक रि पूजा ही करी है
 को। तव श्रेणिक की महा मुनि दी। तित पर्वदे। द्विके धारक। धर्म स्तिर कहि प्रसंसाक
 रतेन। २५॥ है मगधाधिप तैं जला प्रसन्न की। या त। विवेकी। नि मै प्रेष्ट है। या प्रसन्न
 करि तैं दमारा मन प्रसन्न की। या २६॥ जो दमारे मन मै पूछि वे की। ऊती सो दीपूछी।
 या स मां न अगौरक दा। २७॥ है श्रेणिक तेरा प्रस है सो धर्म के जा विवे की अजिना

के नामानुक्तिरिति ॥ तपश्चि ॥ विक्रियाश्चि ॥ त्र्यौषधिरिति ॥ रसरश्चि ॥ व
 सश्चि ॥ ६ ॥ अस्तीणश्चि ॥ द्विप्रभोदहस्यानकतिहारेष्वाभ्ययनैपवित्रयया है ॥ अ
 तिनिराकुल है तप रूप सत्त्वाकारत्वावतसोत्रे है ॥ १० ॥ इहं एमगा द्विपसु विवरे है ॥ ते
 कुधन है ॥ महामिष्टत्राणां निकृं चरि करि पुष्ट है ॥ दनिकं संधादि कूरजीवनि की वाया
 कदाचित्तांसी ॥ ११ ॥ अर एमगानिके बालक पादप्रक्षालनिके जल रूप अमरतक
 शिपवित्रययेव किं कुं न जे है ॥ १२ ॥ इह संधानिके बालक निकृं दृष्टाणी सुषावै है ॥ अर
 हाथीनिके छावानाहरी निके अंवल वृषै है ॥ जीवनिके जाति विरोध निशिये है ॥
 ३ ॥ अहो वज्रा अचिरज है ॥ ववनर हिन एमगति हारे चरण विंदके निकदवै है ॥
 मं नृश्रावकनिके समूह हीवै है ॥ १४ ॥ अर एवन के वक्र निनिका उचाको उछे दि
 नसकौ फल फल चूटिन सके ॥ फल फल निकरि मं दित मं नृधर्म रूप वंके वद ही
 है ॥ १५ ॥ अर एवन की लता महाप्रफुलित रवली कनवर निकरि मं दित अति सो है
 है ॥ कान्ठ के करकी बाधा दनिकं तां ही ॥ जे सैधर्म तारा जाकी प्रजा कं का कं बाधा
 न होय ॥ १६ ॥ यहतपो वन महारवली कवि पुता चतुर्पर्वत के असापि सासि भैरव मन कूद
 धिसक वै है ॥ पृथग्दयादान सी है ॥ १७ ॥ अर इह साधतपो धन दी प्रितपश्चि के भारक दि
 गंवर तिहारे चरणारविंद के प्रसाद करि मोक्ष मार्ग कुं अराधै है ॥ १८ ॥ हेनगा वानप्रग

अथातंतरेदेवनिर्केदेवश्रीआदिनाथस्यंभूतिनिर्कुं प्रणामकरिपुंराणाकाव्याख्या
नकरंरुंश्रीनानिर्कीवुधिविधै। नप्रर्थकासमर्पणकरंरुं॥१॥ धर्मकेजानिदेकी हैइछ
कैसमाधानरूप हैवुक्तिजाकी। भद्राप्रवीणराजाश्रितिकसोगीतमगणधरकंपू
तानयाधहेनावानसमस्तपुराणपुंरहस्यरूपनौमैकेवस्तीसर्वज्ञवीतरगाव
मानदेवाधिदेवतितिकादिब्रह्मनिविधैमुन्यं। नप्रवयंथरूपतिसारेअनुग्रहसंभुन्यं
रुंरुं। प्र। उमजातकेविनांकारणवंधूहै। नप्रसर्वजीवनिपरिदिनांकारणवा
न्यथारैहै। उरवरूपेगनिकरिणी। नितेअं। ति। नि। कुं। वि। नां। कार। ण। वै। ह। है। भ। न। ह।
वर। ण। नि। के। न। र। व। की। कि। र। ण। अ। का। स। गं। ग। के। ज। त। स। मां। न। ह। मो। र। म। स्त। ग। प। रि। अ। य
है। श्री। ह। म। कूं। प। वि। त्र। करै। है। ॥५॥ उमदी। नित। ए। ल। वृ। के। ध। र। क। सो। ति। ह। रे। अं। ग। की। कं।
ति। वि। स्त। रा। र। ण। अ। म। मे। वि। धै। नी। उ। ग। ते। स। र्प। की। सी। सो। जा। कूं। धे। रै। है। ॥६॥ इह। स। म। स्त। जा। तं।
विद्याकरिमुद्रितनेत्रकृतासोउमजाग्रतस्पर्कीया॥ नैसैसृज्यकवलनिकेवनकूं
फलितकशै। ॥७॥ हिनाथजोअज्ञानरूपअंतरंगकाअंधिकारबेइमांकीकिरण
करितयासूर्यकीकिरणनिकरिद्रजिनहोइ। सोतुमववनरूपकिरणनिकरित्नी
मात्र मैदृशिकरोहै। ॥८॥ हेयोगीस्वरनिकेइइतिसारीएउत्कृष्टमहासप्तदिकि
रूपईधनकेनस्मकरिवेकूंअगनिकीज्वालासमानदेदीप्यमानहै। ॥९॥ सप्तदिरि

[illegible]

शिद्विके धारी ता ही नांति पुराण कं प्रकासते नये ॥ १ ॥ वक्र विचतुर्थ काल के अंत
 वां नमस्तु वीरसि सार्ध के नंदन विपुला चर पर्वत कूं सो जाय मां न कर ते आया वि
 राजे सकल पदार्थ निके दृष्ट ॥ १ ॥ अत्र ति मनी र्व कर ति नि कुं सा जा अणे क वि न
 करि न मी ज्ञ ते होय पुराण का अर्थ पूछता नया ॥ १ ॥ ता उप शि न ग वां न का अनुश
 नां ति गो त म ग ए थ र स म स्त पुराण का संग्रह कह ते नये ॥ १ ॥ अत्र जै सा गो त म ग ए
 थ र नै द्या र्ज्या न की या ॥ ता ही अनुस्वारि सुभ र्मा चर्य अत्र नै वू स्वामी कह ते नये ॥ १ ॥
 त हां पी छै गुं र नि की प रि ण टी क रि द्या ध्या न वे ल्या आ या ॥ अत्र अत्र प नी ज्ञा कि प
 मां न र्म पुरा न का ध्या र्ज्या न करै है ॥ १ ॥ ता तै गुं थ के मूल क त्त वि र्क मा न स्वां मी ॥
 र ति नि के अ नु स्वारि गो त म स्वा मी क त्त सो ॥ १ ॥ अणे क के प्र स्र कुं वि जा रि द्या ॥
 र थां न कर ते नये ॥ स र क णा के सं वंध की प रि ण टी म हा क र्म कारी प्र मा ण कै अर्थ
 क ही ॥ १ ॥ इ ह पुरा ण के व ली ॥ अनु के व ली नि को न ध्या है ॥ ता तै शु मा ण जां णि क त्या ण
 अ र्था नि कुं श्र वा क र नां ॥ पठ नां ॥ ध्या व तां ॥ १ ॥ पु न्य म र्द प वि न म हा मं ग ल रू प अ रा
 प र्य त सु ष का दा ता ॥ य स क का र ण ॥ अ र सु र्ग मो र्क का दा ता ॥ १ ॥ या कूं पू जै ति कै
 सं ति होय ॥ पू च्च न स्त रे नि कुं र ध होय ॥ पु ष ता होय पठ न वा रे नि कुं धे म होय ॥ अ रा शे ग ता
 होय ॥ अ व ए क र न स्त रि नि के क र्म का नि र्ग होय ॥ १ ॥ या के प्र सा व तै ६ ॥ स्व प्र का ना

वितां ही जावां न कै दिव्य ध्वनिका उच्चार होता मया महत् पुरुष निकी अदभुत देख आ
 तके उच्चार करिवे के अर्थ होय है ॥ ८८ ॥ एक रूप ही है जावान की दिव्य ध्वनि तथा पिसुर अ
 सुर नर तिर जंघना ना प्रकार के श्रोता निकं पायता ता रूप ज्ञासती नई जैसे जल की धारा
 एक रूप है तथा पिना ना बरु निकं पायता ता रूप हो है ॥ ८९ ॥ वे जावां न कृता र्थ बिजात गु
 ला परमा रथ कै निमित्त देख कर ते न ऐ सो परमार्थ स्रोजन और पदार्थ नों ही महत् पु
 रष निकी देख सुनै सजाव परमार्थ ही कै अर्थ है ॥ ९० ॥ केवली के मुख तैं विसरी बाणी
 सर्व भजा कं पोषती नई भां न संताप कर हरण दारी अरत की धारा ही है ॥ ९१ ॥ जो अ नु क्र
 मै न रथ नें पूछा ऊ ता सा को उत्तर ता कं जावां न मद क ह्या ॥ ९२ ॥ अ गि ली उत्सर्पिणी
 ता के तीर्थ कर निर्वण सा गादिक ॥ तिनिके समस्त पुराण कहै ॥ ९३ ॥ अरया अवसा
 र्पिणी काल के अाक्षि नीर्थ कर दिजे स वि सिजा का पुरष नि नि सव निके पुराण क
 है ॥ ९४ ॥ अर आगामी उत्सर्पिणी काल के पदम ना नतीर्थ कर दिहो हिगे तिन सव
 निके पुराण कहै ॥ ९५ ॥ अथ मही जावां न श्री रिष न देव दिव्य ध्वनिक रिजो कहा सो
 समस्त ब्रष न से न गा ए धर अथ स हित धारता मया अर न गावां न की बाणी ॥ ९६ ॥ अथ व
 धा रिजात को हिन निमसि पु राण रवता न या स वाण धरूं मैं मुख ब्रष न से न गा ए
 धर रवता करी ॥ ९७ ॥ व ऊ रि स मस्त ही नीर्थ कर देख निके समस्त ही गा ए धर वदी

पकिरणनिकरिमेरासंसयस्वपतिमरहरकावहसंसयस्वपतिमरअनादिअज्ञान
उपग्राह्येयाजोतिनरयस्वसैर्नादतिकामार्द्राजगवांनसंप्रसक्तश्चिद्युपहो
हृ॥ कथाश्रवणवणकाअभिनापीअपदेनेस्थानकवेगभवायाकेप्रसक्तीस
दीदेवमनुक्तप्रसंसाकरनेनए॥ कैसाप्रसक्तीयाहैअवसरपाययानोंअरपरिपू
वंधजामैयाकेवचनविनयकूंभरेगर्वरहितहै॥ एतासमैसवनिकीहृदि
नरयउपरिपरी॥ मोनेसुरनेरनरयपरिनेत्ररूपपुष्पनिकीवर्षाकरनेनयो॥ ८५
सवदीदेवकहैहो॥ होनरयषेत्रकेअपिपति॥ गुमसवतिकरिपूज्यहो॥ हमतिहा
प्रसंसाकहोलाकरैं॥ उपग्रहप्रसवहो॥ तनीजमकीया॥ जोविनैवानविवेकी
नाकीप्रसंसाकौननकरै॥ यानांतिदंडादिकप्रसंसाकरनेनयो॥ ८६॥ जगवांन
सर्वपयाप्रसविनांही॥ याकेमनकाअभिप्रायसर्वजानतेहुते॥ परंउभ्रोतानिके
प्रसत्तैकहिदेमैंअपवेसो॥ ८७॥ यामेंप्रसक्तीयातवद्विषयनिकरिनगवांनपुरा
णकाकथनसंपूर्णकहतेनए॥ ८८॥ नांहीहातेहै॥ होवतालवाअदिनिनिका
अरदांतनिकाकोतिप्रगटनांहीहोयहै॥ तौऊस्वयंभूकेमुखरूपकमत्ततैंदांनोउपजी
सोइहदजाअचिरजहै॥ आदीस्वरका॥ ८९॥ मुखकमत्तसरस्वतीकेउपनिदेकाग्रह
है॥ सहांपायाहैननमजानों॥ सोनसरकूंऊतारयकरतीनदी॥ ९०॥ जोतिवेकीइछा

निरंतरपीयवेकीअभिलाषाहै॥६६॥मैगाएधरदेवकंनपूछरूं॥अरउमकंपूछरूं
 सोअतिभक्तिनैउलंघनकेभयकंनगिनैरूं॥६७॥सोकहाश्रमाकीउक्तहतामोहिदा
 चालकरैहै॥अथवाविशेषमुनिवेकाहैअभिलाषमेरे॥हिंनगवानजगतकेस्वा
 मीजगतकेगुरमैधर्मकासंग्रहमहापुरषनिकापुत्राणसुन्याचारूंरूं॥ऋपाकरि
 मोहिकृतार्थकरहु॥६८॥सीधंकरअरवक्रवर्ति॥अरनारायण॥वलिनदुप्र
 तिनारायणयाचउर्थकालमैकेतेकहो॥हिंगे॥६९॥तिनिकापूर्ववृत्तांतअर
 वर्तमानवृत्तांतत्रैलोकिकाथमैमवसुन्याचारूंरूं॥उमवक्तानिमैश्रेष्ठहोसोउम
 कहौ॥७०॥इतिकेनामगोत्रकुटुंबालक्षण॥अपकारा॥आयु॥७१॥अमान॥अ
 यु॥कायु॥अंतरात्मा॥ऋपाकरिसवकहौ॥हेविवंनरमेरैवक्रतअभिलाषाहै
 ७२॥एमहापुरषकोंनजगविषेकोंनकोंनसमैहो॥हिंगे॥अरजगकेतेजगनिकी
 रीतिकहा॥७३॥अरजगनिमैअंतरकेना॥सीजेफैलामैकेता॥कालवाकीरहै
 कुलकरउपजो॥अरकुलकरकहाआख्यानकरै॥अरतिनिमैअंतिराकेता
 सोकहोसवकहौ॥सीनलोकास्वरूपाषट्द्वयकानिरूपण॥कालकीरीति
 वंशकीउत्पत्ति॥जगजगविषेकेतीआयु॥अरप्रलयकालकावर्णन॥वर्णाश्र
 मकीप्रवर्तितिहारेमुखनैमैसवसुन्याचारूंरूं॥७५॥हेनिनेंद्रसूर्यअपनेवचन

न कमलिनीसमं न द्वै॥ अरुमत्रै लोक्पके सूर्य्यस्योतिहारे प्रसादतै यद्गमगारूप कमलि
 नीप्रफुलितहोयगा॥ ५५ ॥ पद्मगतप्रपांनरूपमूर्त्तिकरि मूर्त्तितज्ञानवेष्टारहिंसोति
 उपदेशरूपप्रमतकासां व्यासवेतनयाति विधेहै॥ ५६ ॥ जोतिहारेववनमोदत्रं
 कारकेहरणहारेन प्रकासकरै॥ तौसमस्तजीवनि श्रुयसेतीमार्गनपावै॥ ५७ ॥ हेदेव
 तिसारेदर्शनतैमैक्रतार्थनया॥ महाति धिर्कंपायकौनक्रतार्थनहोयतिहारेदर्शन
 तौक्रतार्थनयाहीषा॥ विहरितिहारेववनमुणिप्रत्यंतकतार्थनया॥ ५८ ॥ जैसैत्रं
 मृतकंदेविलोकतद्विहोदतौप्रमतपांनकीमहिमाकहाकदनी॥ ५९ ॥ यद्गमात
 वैप्रसिद्धहै॥ जोषेननिमैमैदृवृजानलाहीहै॥ हेदेवउमसात्तातमेयरूपधर्मरूपजन
 वर्ष्करासोसवनि केकदयधेतसजनन॥ ६० ॥ उमउपदेशदाताउपदेशदीया॥
 तवतत्वकीवरवा मैकहासंदेहरहा॥ सवसंदेहरिजया॥ जैसैतिमरकाहरनहारा
 नानुजासैतवकहानसूँ॥ सवहीसूँ॥ ६१ ॥ उमतत्वज्ञानकानपदेशदीया॥ तवस
 तपुर्षनिकीवुदिसंदेदकंनप्राप्तहोय॥ जैसैमहाप्रवीणप्रयेस्वरमारगदिष्टावै॥ त
 वनेत्रनिकेधारककोऊहीनमूलै॥ ६२ ॥ तिसारेववनविधैसमस्तवस्तुकास्वरूप
 मैदेष्टा॥ तिसाराववनत्रैलोक्यकीतरुमीकेमुषप्रवलोकनकामंगलदर्पणहै॥
 ५॥ सोमेरैसंदेहतौनरहा॥ तयापिकछुपछिवेकीदछाहै॥ उहारेववनरूपप्रमृत

पदे सनवाहरै ते छिद्र घटसमां ग ॥ १७ ॥ अरजे घटका नरै ते दंस समा न ॥ जै सैं डंस तन कै ला गि
 था कुल ता ज प जा वै तै सैं स जा मै था कुल ता उ प जा वै ॥ १८ ॥ अरजे गुण कूं छां डि कै व ला ॥
 औ गण है ते जो क समां न ॥ जै सैं जो क कूं आ च ल नि कै ल गा ई ए तौ द्रव छां नि रु शिर पां
 न करै ॥ १९ ॥ चौ द द्रव कार ओ ता र्क है ॥ ति नि मै ग य अर हंस सा रि थे ज म ॥ अर म त्य का अ
 र द्वा समां न म ध ॥ ओ र स व अ ध म ॥ ४१ ॥ तथा नेत्रा द र्भ ॥ ता ष डी की मां गी ॥ क सो टी का
 पा बां ए ॥ इ ति सा रि थे ओ ता ॥ क था रू प र त न प री क्ता कै अ धि कार है ॥ ना वा र्थ ॥ नेत्र नि
 रिज ला वु रा नि ज रि अ वा वै तै सैं सु जा सु न कूं जा नै ॥ जै सैं दर्प ॥ में रू प कु रू प जा ए पां प रै
 सैं ज उ चे त न कूं जां ऐ ॥ अ र जै सैं क सो टी कै पा बां ए ऊ प रि ध से सो नां की प र ष प डै तै सैं थ
 म ॥ अ ध म र्क प र थै ॥ ए ओ ता नि कै ल द ए क है ॥ ४२ ॥ ओ ता क था अ व ए तै द द लो क के फ
 न बां छै ॥ के व ल थ म ॥ अ र्थि सु ऐ ॥ अ र व क्ता म त कार थ ना उ ष थ ॥ आ प्र य न बा है ॥ ४३ ॥ के
 ल क ल्यां ए कै अ र्थि उ त म मा र्ग का था र द्वा न क रै ॥ सु ऐ स त पुर ष नि की थे छा क ल्या ए
 कै अ र्थि है ॥ क छु लो क नि के व गि वे अ र्थि नां ही ॥ स त पुर ष लो का थ व हार तै विर क्त है ॥
 प्रू षा कूं आ टि दे य ओ ता नि कै गु ए प्र सं सा यो ग है ॥ अ र व क्ता सो ही जो वा त ल्य आ दि
 क्त गु ए रू प आ न ष ए का थार क ॥ ४४ ॥ सु श्रू षा क हि ए अ व ए की द्र छा ॥ अ र अ व ए
 ए ॥ थार ए ॥ स्म र ए ॥ प्र ल ॥ उ त र ॥ नि श्रै ए ॥ आ व ओ ता नि कै गु ए है ॥ ४५ ॥ उ त म क था कै

विष्कारकथायथायोग्योतातिर्कंक है॥ ६॥ जेधर्मप्रवणविधैसावधानतेओता
 कहिए। तिनिकेसतेवुरेभावनि कीप्रगटताकैअर्थिदृष्टानकहैहै॥ ७॥ मत्पका॥
 चालणी॥ छिदैला॥ १॥ मांजार॥ २॥ सदा॥ ३॥ दुगला॥ ४॥ सिला॥ ५॥ सप्य॥ ६॥ पाय॥ ७॥ हंस॥
 जैसा॥ ८॥ छिदपट॥ ९॥ फांसर॥ १०॥ जोक॥ ११॥ एचौदहप्रकारकेओता॥ अरज्यैररुअने
 कप्रकारकेओताहै॥ तिनिकावर्नकहांनककरैं। चौदहकहै। तिनमें३०॥ कैदक
 उत्तमकैदकमध्यकैदकअधम। तिनिकावर्निसुनऊ। गाखप्रवणकरैतेकोमत्त
 वहु॥ रिकठिनसोमत्पकासमान॥ १॥ अरज्यौगणग्राही। चालणीसमानक। एना॥ रेनुसा
 गृहै॥ २॥ अरमहाकामीछै॥ र्समान॥ ३॥ अरघातीकहु॥ ४॥ मांजारकोसमान॥ ५॥ अरजिनि
 कंणनतांही॥ परायाकहाहै॥ तेसदासमान॥ ६॥ अरमनमत्तीन॥ ऊपरिजरेतेदुग
 लासमान॥ ७॥ अरजिनिकेघटमेंजिनवांणीप्रवेसनकरै॥ महाकठोरभावसोसिलासमान
 ८॥ अरजिनिकंअरतपाईएअरविषहोयजायतेसर्पसमान॥ जावार्थ॥ सारवाखानसु
 निअसारताग्रहैसुलटेअर्थकीउलटाग्रहै॥ ९॥ अरजिनिकंत्रिएनारियेअरदधदेतेगाय
 समानाजावार्थ॥ अलपप्रवणतैजिनिकंवक्तृत्तज्ञानहोय॥ १०॥ अरजेसारग्राहीतेहंससमान
 जेहंसदधमैमिटैजलकंछांदिदधकापानकरै॥ ११॥ अरजेकपनमेंनोखापाइतेमहि
 षसमान॥ जैसैमहिषकहियेजैसा॥ जलमेंप्रवेसकरिकाटाकरै॥ १२॥ अरजिनिकेघटमेंज

विनां समर्पकं है नापरिकषय न करै। सहन सीला २५। महादयाला। आत्मसत्पञ्चाकाया
 कमुदिवांनपराये चित्तका अनि प्राय जानै समस्त विद्याका पारगामी। सोधीरकथा
 का कथक कहिए २६। अनेक कथा विधै प्रदी। अनेक नाषा विधै निपुण। अनेक
 प्रस्ताव। अनेक इष्टांन जा कूं यादिए। जाना ग्राह्य नि कावे ज्ञा। अनेक कला विधै नि
 ए। भोव ज्ञां नि मै मुरख कहिये २७। व्याख्यान करतै नौ हिन चावै नां ही। अंगुरी कट
 कावै नां ही। कारु सुंकट कवच न करै। हसै नां ही। अति ऊंचा स्वर व्याख्यान कर
 अति धीरा स्वर न करै। ३०। कदाचि अथि कस जा होय। अरज वस्त्र व्याख्यान कर
 परै तौ ऊजस्त वचन न करै। गरव न धरै। सत्य कथन करै। जाका उपदेस मुनि। कारु
 संसय न उपजै भरा। हित मित्र संदेह रूप रहित। धर्म रूप वचन करै। प्रसंग रूप य। अथ
 धर्म रूप। अपन सरूप वचन न करै। अथ व्याजं तियुक्ति कूं विचारि। अथुक्ति का त्याग क
 रिक था का व्याख्यान करै। भोव ज्ञा पंति त नि मै श्रेष्ठ है। अथ जिन मन की सरथा वदोव
 दारी। अनेकै कौणी कथा साधर्मि निकै निकट करै। अथ पाप पंथ की धर्म न दारी। वि
 द्यै कथा परवादी नि सं करै। अथ अथ र्मा नुराग की वर्द्धनी संवेगनी कथा धर्म रू
 चि दटा धवे ३३। कूं करै। अथ रवैराप की उपजावन दारी। निरवेदनी कथा विरकत पु
 षनिकै निकट वैराप वटा यव के अर्थ करै। अथ व्याजं ति धर्म के अंग कूं ली।

कारण॥ अथकींद्रादिकउत्पत्त्या अरमुक्तिकीतिश्रैकरिसिद्धिदोषोर्ध्व
नाकीकोकथासोर्ध्वकथाकहिये॥ अथरदेवधर्मकथाकेसानग्रंथकहैहै॥ तेई
उपेक्षणातिनिकरिसोन्निकथासुंदररत्नकाहिए॥ समांतसोसैहै॥ अथउत्पत्ति
तीर्थकालनावाकलप्रस्ताव॥ एसातग्रंथकहिए॥ अथउत्पत्ति
वादिर्कषट्ठयकाकथनावेत्रकहिए॥ तीनलोकावर्णन॥ तीर्थकहिये॥ जिनवर
केचरित्रकाव्याख्यानाकालकहिए॥ तीनकालकानिरूपण॥ अथनावकहिये॥ उद
येकाउपसभप्रयोगशाम्नायकापारणमिक॥ इतिकातिर्णयफलकहियेतत्
स्तान्मषकनिकहिए॥ प्रस्तावाएसातकथाकेअंगहै॥ तेजहांपादएसोकथाइनाग्रं
निकाविस्तारजहांजहांसाहिएगातहांनहांकहिएगा॥ अथअरकथाकाकथक
आचार्य॥ महावती॥ पिरबुद्धी॥ यतेंद्री॥ सर्वकलाविषयवीणा॥ रूपवांन॥ मनोहरनि
रोगा॥ अरसष्ट॥ सुक्ष्मिष्ट॥ सवकोइष्ट॥ ज्यैसीहैवांणी॥ जाकीमहागुणवांन॥ २५॥ जि
नसामनरूपसमुद्रकेजलकरिथोयाहै॥ कितजानें॥ समस्तब्रह्मकेदोषतेईउपेक्षलतिर
निकेअभावतेंउज्जलहैवांणी॥ जाकी॥ अथमहासोजायमंनस्त्वावतुरजीवनिकेम
नकादशरापंथितप्रवीणसीधउत्तरकादेनहारगुणवांन॥ जाकेवचन॥ २६॥ ते
निकंप्रमंनअनेकप्रसक्तहै॥ तिनिकरिआकुलनहोया॥ सवनिकीवातसुनैकोई

पुनर्केन षड्विंशकोत्कारेण १७॥ वक्ररिपहकथादर्पणसमांनचित्तकी प्रसन्नक
 णराशी मत्स्यमंगलरूपप्रतिविम्ब है ॥ नीतलोकका स्वरूपनाविधे ११॥ अथ
 कथाश्रुतिस्वर्धकहिण्वादसांगसोर्दयामनवचितफलकादेन हाराकलप
 वृत्तताकी महामाषादी है ॥ १२॥ अथ कथाप्रथमानयोगरूप ॥ महामसमुद्रकी क
 ल ॥ मनोहरधुनिकुंभरे ॥ मैत्र्या है अर्थरूपनलनाविधे ॥ १३॥ अथ कथासमस्तसिद्धां
 तके रहस्यकी संग्रहकरणहारी ॥ परमनकी जीतनहारी संतनिकुंभार्मानुरागकी
 पञ्चावतहारी ॥ वैराग्यवटावनहारी ॥ १४॥ अदनुत है अर्थजामै परमार्थरूपमहा
 मनोहरगुणनिकरिपूर्ण अनेकपूर्वाचार्यनिरंघा है ॥ १५॥ जसकी अथकस्यां

रणहारी ॥ महापवित्रदंष्ट्रादिकपदवीतथा मुक्ति की देनहारी प्रवपदिपाटी अ
 सारिमैयह कथाकरुं हो सुजन हो नुममुनजा ॥ १६॥ अथ मही कथाके अरंजवि
 वक्ताश्रोता अथ कथाका स्वरूप पंक्तिनिकुंवर्यनकरनां ॥ १७॥ जामै अर्थ
 ममोत्त ॥ १८॥ निपुण वार्थनिका कथनसे कथा कहिये ॥ तहां अर्थरूप कथाकी पंक्ति
 करि ॥ तत्र समाक है है ॥ १९॥ अथ अर्थकै फल ॥ २०॥ अथ प्रताप ताका वर्तनसे अर्थ कथाक
 हिण्वा अथ वरे पुरषनिके देव निसमानमोगातिनिका कथनसे काम कथा कहिये ॥
 जो अर्थ कथा अथ काम कथा अर्थ कुंली ॥ सो कथा ॥ अथ रंजित कथा सो पाप ॥

समुद्रकी उपमां कुं आवरै है। जाके बुद्धिमयी दिअर विद्या जल प्रसं न्तता लहरि गुण
 रूप रक्ष निरिज स्याम साध्वति कुं भरे अप्रपंर रूप मनुका प्रवाह सोई नदी नि का प्र
 वाह। त्रैसे क वि नि की करी जो का व सो अमृत समान है। म जा करि तु स्या य स रू
 प शरीर विरमा ल पर्यंत रहै। त्रैसा य धार्थ क ल रूप रसायन अमृत तु ल्य प्रगट क
 र ऊ भा वार्थ भुंटर का व के क य न नै ज स प्र ल य का ल पर्यंत रहै है। प जे य स रूप
 धन कुं वटा या वा है है। अर पुण्य रूप दा डि मां प्या वा है है। ति नि कुं य स धर्म क था रू
 प का व मूल पं जी है। त्रैसा नि श्रय क रि मै धर्म संवै है। ती क था अर सं रू क था स त
 पु र ष नि क रि सु ति क रि वे यो ग है। म हा पु र ष नि का है क य न जा मे ७। य द क था मां
 नं क ल्य द रु की वै लि ही है। मन दं छि न फ ल की दे न हा री। वि स्ती र्ण अ ने क अ वं
 त र क था रूप सा धा नि क रि सं यु क्त मां त ता रूप ह्या या क रि मं रि त। तिः क प ट पु र
 ष ते र्द ज ये जो ग भि यां ति नि क रि से य वे यो ग। म हा र म णी क लो क वि षै दि द्य मा ना
 ऽ। य रु दि द ह क था म हा स ये व री स मा न अ ति निर् म ल सु ष रूप सी त ल ज ल की म
 ज ग त के अ मा ता प द रि क र ल हा री। ए। व रु दि य ह क था सा दा ता गं गा ही है। के व ल
 शु ति के व ली नि की प रि ण दी प्र व त न तै ज प जी। अ र पा प रूप क र्द म तै र हि ता के
 ते स रूप अ मा ता प की द र ल हा री प्र वी ण पु र ष नि की या है प्र वे अ जा मे म हा प वि अ

रंउपदललितनांही॥अरमेरायदअभिप्रायजोगुंथमैगादअरअर्थदेऊसुंदर
 आदौ॥ए॥सतपुरषतिकीकाव्यअलंकारसहिताअरमहारसकीनरी॥जामै
 तिसजुनत्ताअरअनुक्तिविकहि॥एपरकीजछिछनांही॥सोमानूसरस्वतीका
 मुखहीहै॥नादार्था॥सोपरार्दकाव्यनिकेअक्षरभित्तायकाव्यकरैसोजछिछकहि
 ॥ए॥जामैप्रबंधस्यछनांही॥अरगादूललितनांही॥रसनांही॥सोकाव्यअति
 मकहि॥ए॥केवलकानतिकुंकटुकत्रैसीकाव्यकुंकविकरै॥ए॥अरमहाकवि
 रपदकीरचनाकरै॥स्यप्रबंधरै॥जामैप्रगटरूपसुनिवेद्योग्यअर्थमनोहर॥ए
 यदमहापुगणसंबंधीमहाकाव्यकहि॥जामैमहानायकश्रीतीर्थकरदेवतिना
 कीकथाअरअर्थमार्थकाममोरुइनकीरचना॥ए॥संसारमैत्रैसेनौकविवनेजेबे
 दविंनुहोयकैरकस्यो कवनभावै॥अरवेकविदुर्लभनेपूर्वापरअदिरुक्साखका
 प्रबंधजुंकातौंधरै॥ए॥गादुगानिअपाअरअरसुंदरअर्थरूपनेप्रगथीनजि
 मेंरसरुप्रगटरसकेनरेअरलोकविषेदृष्टांतरुअनेककविताविषेदरिद्रताकहौ॥
 ००॥कविनोहैसोमदकेमार्गविषेविवरताअर्थरूपगहनविषेदविंनजगाम
 कविरूपदरुकीछायाविश्रामकेअर्थलहै॥रमहाकविबलसमानहै॥जा
 दुक्षिप्रलअरपेगुणगादुपल्लवयसरूपपुष्पदोधरूपफल॥२३॥वक्रविक

धर्मकथामहासमीचीनताहिमुनिकरिदुर्जनोंकाचित्रकथारूपहीयजैसेपिसावादि
 गृहीतपुरुषनिकुंभंत्रविद्यानरुचैसुनिकरि कोपकरै॥८॥मिथ्यात्वकरिदुषितहैदु
 क्षितिनिकीतिनिको धर्मरूपऔषदिनरुचै॥जैसेपित्रज्वरवारैनिकुंमीवीवसु रुकर
 दीलागै॥८॥महासुंदरमुखावितमंत्रकविरूपमंत्राधीनैरूपणकथेतिनिकुंसुनि
 करिदुष्टजीवकोपकरै॥जैसेदुष्टभूतमंत्रकेगृहसुनिकोपकरै॥९॥दुर्जनमहावक्रवि
 त्रहै॥तांमकीनरुसमानअनेकगांविकानरुहै॥ताहिकोंनसरुवक्ररिसकै॥देसैं
 स्वांतकीपूखवक्रहै॥ताहिसरलकोंनकरिसकै॥८॥वक्रअचिरजहै॥सज्जनोकीसं
 गतिवहोतदिनकरैतौऊसज्जनतातआवै॥वक्रदुष्टनिकीसंगतिजोकनिकुंत
 तकालदुष्टकरिले॥८॥सज्जनताकेलरुणदयालताईर्षानावरहितगुणानुरा
 गएसज्जनताकेलरुणहै॥अरनिर्दयताईर्षादोषएदुर्जनताकेलरुणहै॥९॥सज्ज
 नकाअरदुर्जनकाअसहासमावजांनिकरुंरुप्रांणीसंरागदोषनकरतां॥९॥एकम
 विनिकुंकाट्ठकरिवै॥विवैसंतों॥काअनुरादरुसावत्वंनहैसोशुद्धै॥वितारूपस
 मुद्रकैपागयावाहंरुं॥९॥कविकानावाअथवाकविकाकरत॥सोकावै॥क
 रिएजामेंअर्थप्रगटगृहसुंदरअलंकारसंयुक्तसोमनोहरकाव्यकरिए॥९॥कै
 दूककविसोललितपदधरै॥पदचुअर्थमनोहरनाही॥अरकेईकअर्थसुंदरसैप

एवं चै। परोपे आरथ नमै कछु कल्याण नां ही। कल्याण उत ममारा के उपदेअ तै है। ७६।
 याण कदि अरनवीन कविति ति के मत निन्न निन्न है। को नति नि के आरा धि वे कूं सम
 कै दक तो लति अछु या है। अर कै दक सुंदर अर्थ या है। कै यक समस की वाऊ
 ता अ है। कै दक समस रहित या है। ७७। कै दक को मत का अ की रचना या है। कै
 दक कतिन का अ के अवंध कूं या है। कै दक न कवि न को मत म अ छ त्रि या है। क वि नि
 विन्यायी न्यायी है। ७८। निन्न निन्न है अ नि प्र या जि नि के। ता तै पं नित इरा रा अ है। अर
 अज्ञानी आख के रहस्य कूं न जानै। अर म न मै बुद्धि वां न रु वार है। आ कूं सम का वना अर
 क वि न है। ७९। अर उर जन लोग समीचीन कविता कूं दूषन लगवै। जे सैं चंदन के।
 ब्रह्म की साषा कूं नुयंग विष करि दूषित करै। ८०। अर जे सजन है ते स दोष कविता कूं
 निर्दोष करि लेहि। जे सैं सरद रि तिक दर्भ करि म/तिन सरो वरा कूं निर्मल करि ले या ८१
 र्जन पराये दोष ही ग्रह है। अर सजन गुण ग्रह है। एह जन के विरु का स्वभाव है। या कूं को ऊ अ
 र जां तिन करि सकै। ८२। जे संत है ते गुण रूप धन कूं धरै है। अर उर्जन दोष रूप विन कूं धरै
 है। अप नां धन ते तै को नति वा रि सकै। ८३। उर्जन नि सं क दोष नि को ग्रहो। इ मारे गुन ह
 मै रहो। इ मारी उन्नम का अ विषे गुण है तौ उर्जन क हा करै गो। जौ वे ऊर्ध्व दोष लेहि गो तो
 नित नि मै गुण प्रगट हो या गा। पं नित क है गो या मै दूषण नां ही त उखा दूषण लगवै है। ८

टावै। ह्य। अर कै य कर सकी जरी का व स रूप का मिनी ता हि अ प वि ल सि वे कं अ स म र्थ प
 र की स हा य चा है। जै सैं अ स म र्थ कां मी अथ या दि क का स हा य चा है। ६७। अर कै य क अ
 र नि के का ए कं अ ह क रि ^{कै} अ प नी का व वि स्ता रें हैं। जै सैं पा पी ऊं ची व स्त मैन ची व स्त र
 मि ला रें हैं। ह्य। अर कै य क अ ह तौ सुं द र थैं। अर ति नि मै अ र्थ उ छ सो का व सो जा न
 पा वैं। जै सैं ला व के म ए या नि की मा ला सो ल को न ल है। अर सो ना रु न पा वैं। ६८। अर
 कै य क अ र्थ तौ सुं द र थैं प रं उ अ र्थ यो ग अ ह नां दी तौ व ह रु क वि ता स त प र ष नि के म
 न कूं न ह है। जै सैं क प ण की वि न ति सो ना कूं न थैं। ६९। अर कै द क य षे ष अ रं न तौ की
 या प रं तु नि ता हि वे कं अ स म र्थ ते उ षे द धि न हों। हि जै सैं अ ने क का र नि क रि पी न्या कि
 सा। ए बि द धि न हो य। ७०। अर कै य क क वि कुं दे व नि के मा रा कूं पो षैं हैं। कु थ र्म की प्र
 ति क रें हैं। ति नि की क वि ता सैं अ क वि ता न ली। ७१। अर कै य क ^० वि दु कै अ न ग
 सी क ला र हि त ग्रा ख तैं। दि मु ष का व की या चा हैं हैं। य ह रु व न ग्रा श्र य हैं। दे षे उ न म र्
 ति का सां द स। ७२। ना तैं बु ध ज न ग्रा खार्थ का अ भा स क रि म हा क वि नि की उ पा स ना क
 रि थ र्म रूप स र्म सा यो ग ज स का का र ण जै सी का व क रूं हं। ७३। अर क वि नि कूं द हूं
 य न क र नां जी को रूं मि थ्या द र स नी ह मा री का व कूं द स न तं गा वें गा क हा उ ल के न
 य तैं स र्ग ग ता र हैं। ७४। को उ रा नी हो क अ थ वा म ति हो क। उ त्त म क वि अ प नां क र

नकी रचना के करन ह्यो रति नि के करण कमल मे रे म न रूप म रो वर विवे ति छे ॥ नि चरण कम
ल म हा को म ल है ॥ ७ ॥ ति नि की र्वा नी म हा नु ज ल अर चं ड मां स मां न नि मी त की र्हि स म स
नु व न वि वे न द्यो त क र न ह्य ॥ ति नि कूं मे वारै वार न म स्का र क रूं लं ग्ग अर गुर ज य से न
वार् य ह्य मारी रि द्वा क र ज ॥ ति पं क्रि त नि के स मू ह वि कै ल य ॥ णि त प रू प ल त्मी की ज न म
नं मि अर अा स्र के ण र गं मी अर अां न ता के स मू ड ॥ ७ ॥ सो क वि ति क रि पू ज्य पं क्रि त नि
पर मे स्वर स म स ज गृ क है सं ग्र ह ज भे ॥ यै सा पु रा ण ता का नि र्भ य क र ते न ॥ ८ ॥ अ्यो र
रू क वि अ ने क है ॥ ति ति का ना म मा अरू क य न क र ने कूं को न स म र्थ ॥ जे ज ग त पू ज्य लो क ॥
वि वे प्र सि द् है ॥ ते मै गं त के अ र्थि वं दौ ॥ ८ ॥ लो क वि वे क वि ते ही ॥ अ्य र ने ही वि व रू ण जि
न की वा णी ध र्म की क था के अं ग कूं अं गी का र क रै ॥ ८ ॥ जो ध र्म की प्र रू ण हा री क वि
ता सो ही प्र सं सा यो ण है ॥ अ्यो र स व ना वं ना य क ही है ॥ तौ नू ण प के अा ग म का का र ण है ॥ ८
कै य क मि णा ड ही कां न ति कूं सुं द र अ्यै सी का व य ता वै है ॥ प रं तु ता मै ध र्म का सं वं ध नां ही
ता तै स त पु र ष ति के प्र सं न क रि वे कूं स म र्थ नां ही ॥ ८ ॥ कै र्द क उ छ पं क्रि त क वि ता के का
जि उ द म क रै ॥ अ्य र क रि त स कैं ति नि की लो क वि वे द्या स्य हो य ॥ जै सैं गू ण दो ल्या चा है ॥
अ्य र दो ल्या न जा य तौ द्या स ही हो य ॥ ८ ॥ अ्य र कै र्द क अ्यो रू के व च न का ले स ले य क रि
अ्या प क वि प ने क्क मां न ध रै है ॥ से अ्यै सैं जा न ते ॥ जै सैं छी पा प रा ये व ना ये व स्र वि वे रं ग व

निकेसिरकासेहरा है॥ अ० वक्ररिसिवकोटिनांमामुनीसुरद्वमारीरित्ताकरकु॥ आके
 वचनकरिअवयवीवमोक्षकामाराजोअपराधनात्मादि॥ दरशनशनचात्रितपति
 निकंअपाराधिकरिसुधीमये॥ अ० वक्ररिजटाचार्यद्वमारीरित्ताकरकु॥ अ० निके
 चितवनविषेजिनिकीबुद्धिअसेमेंविसरी॥ जेमेंवडकीजटाविसरै॥ जिनिकेवचनअ
 र्थकंअगटादिषावैहै॥ भ० वक्ररिकांणमित्तुनामामुनिअयवंतहोका॥ जिनिकेवचन
 रूपरततथर्मरूपसजमेणे॥ अ० कथासूपस्वीकेअप्राप्पणकेभावकूंनजैहै॥ अ० अरक
 दिनमेंवनेकवितीर्थकरिएआखतिनिकेकतीदेवमुनिहै॥ तिनिकाजसकोंनवर
 ननकरिसकै॥ जिनिकावचनरूपजलपंडितनिकैमेंलकूंओवैहै॥ अ० वक्ररिजटा
 कलंकअरश्रीपालअरपात्रकेसरा॥ इ० निकुंगणरूपरतनपंडितनिकेद्वदयविषेअ
 ररुजयो॥ निर्मलहारकेभावकूंअसहोयहै॥ अ० कविपनेकीपरमहद॥ अ० रटीकाकर
 तापनेकीअवधि॥ अ० अरकापानकरनहारेकीनिमीमा॥ अ० सेवदिस्मंयनामाअचा
 तिनिकोंकोंननपूजै॥ अ० अरश्रीवीरसेननटारकपवित्रहै॥ अ० आत्मानिनकासोद्वमकूं
 पवित्रकरकाकविनिसेमहाश्रेष्ठ॥ आनटारकविषेलोककेस्वरूपकाजोनपनां॥ अ०
 महाकवि॥ दोउदाततिहैहै॥ अ० अरवनेकविजिनिकावक्तापनां॥ अ० हस्यतिरुते
 धिकजावैहै॥ आकेवचनमुनेवहसपतिरुकीबुद्धिअत्यपकाहैहै॥ अ० वेगुरु
 सिद्धा

वतिहेयतिनिहीकैर्मैकविमर्दं॥ अथैरदृष्टाजेआपकुंकविमर्तेतिनिकरिह॥ १०
 नमसकारहेजापुराणकेकर्ताकेवलीभुतकेवलीतिनिकोंजिनिकेमुखरूपकमलवि
 षैसरस्वतीप्राटहोयहै॥ अथरजिनिकेववनअथैरकविनिकुंसजथारकेसजसमानहै॥ १
 सिद्धसेनकविजैवंतहो॥ ज्ञानिप्रियावादीरूपगजनिर्कुसिंघसमानअथैकनयरूपहैके
 जिनिकैअथरसोनरूपहैनवजिनिकै॥ अथवज्ररिसमंतजद्राचार्यकुंनमस्कारहोहुनेक
 निमैमहाश्वरहै॥ जिनिकेववनरूपवज्रपातकरिकुमतरूपपदीनचूरेगयो॥ अथसमंतन
 दसांमीकाजसकविकहिएनवीनकाठकेकर्ता॥ अथगमनैकहिएटीकाकेकर्ता॥ अथवा
 टीकहिएस्पादवादकरिएकांतवादकोजीतनहो॥ अथरवागमीकहिएआरव्यांनक
 रिअथनेकप्राणीनिकेचितहरनहो॥ तिनिकैमंथैचूडामणिममानहोयप्रवर्तहै॥ १४
 वज्ररिश्रीदत्तस्वामीकुंनमस्कारहो॥ ज्ञानपररूपलक्ष्मीकरिही॥ सिंहैमूर्तिजिनिकी॥ जे
 वादीरूपजेगेनिकेगंनवेकुंरूपदरूपहोतेनयो॥ अथ॥ वज्ररियसोनदसांमीहमारीरिक्ता
 रक्षापंदिनिकीसजाविषेतिनिकानामरुक्तासंतापंठितनिकेगर्वकुंदरैहै॥ अथवज्र
 रिप्रजाचंद्रसांमीकुंमैसवृं॥ चंद्रमांकीकिरणिसमांनजलहै॥ जसजिनिका॥ तिनिकुं
 मुदचंद्रोदयनामशृण्वक॥ ज्ञानतर्कअनंदरूपकीया॥ अथ॥ तिनिकैजसकीकोतप्रसं
 माकरै॥ कल्पानपर्यंतजिनिकानसस्वरूपहोएसदाप्रफुलितरहै॥ गामदासतपुरष

कथा मार्गता विवे मे रागमनक विन नां ही वा को ॥ १ ॥ म न करै तो को न निवारे ॥ अ गि द
 णी पुरष अगौ चले जां हि ॥ ति नि कै पी छें को ज मा ऊ अ म हा ग ज रा ज नै व न विवे मार
 की या ॥ ध ने व ने ह द मार ग के रो क न हा रे तो रि फारे न व हा थी न के छु वा मु ष सं च रे
 जा ऊ अ ॥ अ र स मु द के न ल विवे म हा न म ज के म ग र नै अ प ने वि स्ती र्ण नां क क रि
 पं थ की या त व म छ ति के वा ल क य थे छ च ले जा ऊ अ ॥ अ र यु ध विवे म हा सा वं न नि
 ख नि के नि पा त क रि प र च क्र के थो धा द टा ये ॥ त व उ छ न ट रु नि सं क न ये ग र्ज ना कर
 ३ ॥ अ रे सा जं नि प्रा ची न क वि नि का ह स्मा व तं व शु द्ध क रि म हा पु रा ण रू प स मु द के रि
 वि वे का ज द म क रूं ॥ ३ ॥ य ह म हा पु रा ण रू प स मु द ता मै अ वां त र क था रू प क लो ल
 सो क दा वि प्र मा द थ की मै नि ग रूं तौ पं नि त ज न द मा क रि वे को यो ग्य है ॥ ३ ॥ क थ
 रू प अ म त वि वे क वि के प्र मा द क रि न प ने दो ष ति नि कूं टा रि क रि स त गु ण नि कूं प्र हो ॥
 म त पु र ष गु ण ग्रा ही है ॥ ३ ॥ य ह क था रू प स मु द सुं द र व व न रू प म हा र त न नि सं न स्या
 ता वि वे दो ष रू प ग्रा ह नि कूं टा रि क रि सार सं श्र द का य त न क र ऊ अ ॥ ३ ॥ क दा वि को ऊ
 द म कूं क वि ज्ञा नै ग सो क वि तौ सि द्ध से न दि वा क र सा रि थे है ॥ अ र ह म सा रि वे क दि वे के
 क वि है ॥ जै से म णि तौ प द रा ग दि क है ॥ अ र का व का षं न म णि सा रि षा मा सै है ॥ प र
 उ म णि नां ही ॥ ३ ॥ ॥ ति नि के व व न रू प दर् ण वि षो म म स्त सि द्धां तां का र ह स्प अ ति विं

॥ दैत्यमहापुरषसंवंधीकथाजामैमहाकल्याणकाकारणयाहीतैमहाविषनियाकूं
 दापुराणकहा॥ भइ॥ विषनिकापररूपातानैअविषिकहिद्योअरसस्यकेकषनतैस
 त्पार्थकहिद्येअरधर्मकेप्रबंधनैधर्मशास्त्रकहिद्ये॥ अरनाताप्रकारकीअवां
 रकथानातैइतिलासकहिणअरपरंमरायउपदेशवत्याअथा॥ निनशासनकी
 अमनायरूपतानैअमनायकहिण॥ अथदपुराणइतिलासगाणधरदेवनिगाया
 सेनिअयकरिमैमंदकुक्षीकेवलनक्तिकाधिस्याकहावांरूंरूं॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
 रिनाथापुराण॥ ताहिमैंकहिदेकीइच्छाकरूंरूं॥ सोमहाजार उवाचदेकाउद्यमक
 रूं॥ जैमैंदृषनश्रेष्ठतिनिकरिउवाचवेयोगजोमारताकूंवालकवछराउवांचाहै
 ॥ अकदांगंजीरपुराणरूपसमुद्रअरकदांगंमोसारिषाज्ञानदरिद्रमैनुजानिकरिमहो
 दधिकूंतिस्याचारूंरूं॥ सोहास्यकेनावकूंआनरूंगा॥ जावाधी॥ पंक्तिजनमेरीहास्य
 करहिगो॥ अथवाअसैसैहाहो॥ सोमैंअलपकुक्षीअपनीशक्तिप्रमाणयतनक
 रूं॥ जैसैंलंवापूंछवालेवेनपूंछउचीकरिटांमैं॥ नवकटीपूंछवालावैलरूतौ
 पनीकटीपूंछकूंउचीकरिटांमैं॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
 एताकेकषनकामैउद्यमकरूंरूं॥ तौयामैकछुटोषनांही॥ तासांमैंसं
 हितामारासैमहारूजायतौवहरूजारूं॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥

सूर्यसमांताशतितिकेमुरवतैमरथकापुत्रमाभीवसुनताभयागोयहअंतिकातीर्थंकर
वर्धमानस्वामिहोदगासोमुनिकरिर्धकाभस्यालीलासहिततांवताभयाभक्तकेहैव
खजाकौशखदनावांनआदिदेवागानिशजाकापुत्ररिषभशेषनकीहैखजाकाकैभ्रा
ह्मिनेनभीनरुहोयवारंवारनावधरितमस्कारकरूं॥२५॥वक्रिअभितनाथस्वामीकूं
आदिदेवाभीर्थंकरतितिकीआशयनाकरूं॥वेधर्मस्वरगाजाकेनायकैहो॥२६॥वक्र
रिसमस्तगाणपरदेवतितिकीसुनिकरूं॥केवलनागरूपराजकेदुगगजहैअरनाग
दानमुल्यहैसंवदातनिषदीणहैंअहोममजीवहोबुभतिनिकाप्ररूप्यादादजांगना
खरूपवक्रतार्कभेदकुसोअनादिनिधनहै॥उंचहैमहाफलकाटायकहैअरविस्
एहैछायाजाकी॥२७॥आमांतिगवांनअरनावांनकेवधनतितिकीसुनिकरिभंगल
अएकीयाधितिकेप्रसादतैत्रैमविमलाकापुरषनिकापुणकंठगा॥२८॥चौर्धसतीर्थ
करुधारहचक्रवर्तिनवनारायण॥नवप्रतिनारायणनववलिभद्रएतरेसतिसत्ताक
पुरषतिनिकायहपुराणहै॥२९॥पुरातनकथाकोधरे॥तातैपुराणकहिणअरमहपुर
षतिकेआश्रयतैअथवामहपुरषनिकरिउपदेशा॥३०॥कहैंकल्याणकामस्तता
तैमहा॥३१॥पुराणकविनावांनतितिकीआश्रयकरिविस्तारतातैपुरा
णअरअपनीमहिमाकरिमहामहत्वताकोधरे॥तातैमहापुराणयातांनिकैर्धआशयव

धायेष्वनफलषाड्जद्वरपूर्णैकरीभाप्ररहेनागावांनपुरषोत्तमतिराहारतपकरतेनये
 सर्वसुधात्रादिपरीसहसहिदेदीयोष्यहैत्रैसाविधाशिवाईसपरीस्याकेसहनदीशे
 नराकाकारनजांतिनपकरतेनये॥७॥प्रजारदर्षनपक्षीयाजिनिकेभिरपरिकेनत्रैसेसो
 दतेन॥मांनेस्यांनरूपत्रागनिकरिईश्वरदगधकी॥१॥तिनिकामंमावैहीनिकसीहै॥
 दिगंवरीदिज्ञायाशीनादिनछमासउपवासकापवषांकीया॥सोत्रमदीमांउपवास
 शिष्यादाधादकरिवेकैत्र्यर्विअहारकेतिमनिदिह्यरकरतेन॥सोषनर्कुंदिह्यरकर
 तेदिषिसुरनरअसुरत्रैसजांनतेन॥मानेचालनामुभेरपर्वतही॥२॥छदमदीमांनोउ
 दासकी॥त्ररछदमदीमांत्राहारकात्रंतरायअयाःकाहेतैजोत्सवाएकोडाकोडिसाग
 रजोगम्भिप्रवर्तीसोक्कर्मभूषिकरीतिकेज्जातैमांही॥मुनिकाधर्मअरयावगकाधर्म
 कर्मस्मिदितांमांहीसोकालकीत्रादिलोकमुनिकेत्राहारकी॥तिनजातैमांनैत्रंनरा
 नया॥द्वरसवैदिनहथतापुरअयेसोराजश्रेयांसर्कूप्रदवमवसरणनये॥श्राकरि
 निकेत्राहारकीविबिजानी॥धनुर्कुंनिरंतरायअहारदीया॥नवपंचाश्वर्षये॥रतनदो
 र्छिंदंदिनिदाजोप्सीनलभंद॥मुग्धपवनजैजैशृष्टा॥२॥वक्रिहजारदर्षवित्तीसमये
 जिनिकेदातियाकर्मकेनासकरिकेवलसंनलोकातोक्काप्रकासकप्रगटनया
 १२॥तवकर्मकानासकधर्मप्ररूपाभावातनअरूपकमलनिकेप्रफुलितकरिवेकं

[illegible]

त्कारक रिड रिजाय है ॥ १५ ॥ अरणी हावा लक के नाव कूं प्रात होय है ॥ जैसें वात क प्रयोधर
 जे माता के अंग वलति विनै पय कहिए ॥ १६ ॥ अत्र अहि रुवा धी कै है ते सैं पया हाय प्रयोधर जे मेघ
 तिन सैं उखाय कहिये न त ताहि अत्रि मित्र ये पीवै है ॥ १७ ॥ अत्र मं नृग मेघ कि साण ही
 है ॥ कि साण मस न ड होय है ॥ ए महा न तरूप है ॥ अत्र कि साण वेती का अवर्त कहै ॥ १८ ॥
 ती के अवर्त कहै ॥ अत्र कि साण घर में त था वेत में सदा स्त्री सहित रहै है ॥ अत्र ए मेघ दि
 नुरी रूपव निता सहित है ॥ अत्र कि साण रुवर्षा का ल कूं वा है ॥ अत्र मेघ रुवर्षा का ल
 के अत्र नुरागी है ॥ १९ ॥ मेघ अत्र न व र्षा कहिये दग ल परमाणु नि की वि वि ज ता सैं ना
 ना प्र कार के रंग धार ते नये ॥ २० ॥ मुक्ता फल समं न जल की वृंद जल धर तैं परी ॥ सो ए
 प्य की कूं सी तल करती नई ॥ सूर्य की किरण नि की उ स ता कहिये प्य की त प ता प्र मा न ऊ ती र
 सो सी तल नई ॥ २१ ॥ मेघ के वर सिवे कहिये प्य की विवे हरि न अंकुरे विसरे ॥ २२ ॥ अत्र ये त
 नि विवे भू मि की सामर्थ्य सैं विना वा हे धां न जगे ॥ प्रजा के पूर्व पुन्य सैं ॥ अत्र काल के प्रजा
 व तै रु धा के दूर न दारे सर्व धा न प के ॥ २३ ॥ जै सैं पिता के प्राणं त नये पुत्र पाद वैवे ॥ तैं सैं
 कल एव रु नि के व्यती त न ए धा न प्र गट नये ॥ २४ ॥ ना स मे न अति व र्षा न अ ता वृष्टि ॥ चा
 ही चा ही वर्षा होती नई ॥ सव धा न फले ॥ अत्र औषधी प्र गट नई ॥ २५ ॥ ति नि के ना म ॥ उ
 ऊ ल मिष्ट वां व ल ॥ अत्र सावी चां व ल ॥ य व ॥ गो रुं ॥ वर दी ॥ सा जं ॥ को रं ॥ को ग ॥ २६ ॥ तुषा

न॥ ८४॥ तिल॥ अलसी॥ मसर॥ सरसं॥ धाणं॥ दोन॥ नीरा॥ मंग॥ मोठ॥ उड॥ चौं॥ ला॥ अर॥ द॥ दि॥
 च॥ १॥ ८५॥ कुत॥ ध॥ विपु॥ ५॥ द॥ त्या॥ दि॥ धा॥ न॥ अ॥ र॥ औ॥ ध॥ धी॥ अ॥ र॥ क॥ पा॥ स॥ क॥ स॥ ना॥ ५॥ द॥ त्या॥ दि॥ ध॥
 जीवन॥ के॥ कार॥ ण॥ प्र॥ ग॥ ट॥ हो॥ ते॥ भ॥ यो॥ जो॥ न॥ न॥ यो॥ ण॥ अ॥ न॥ ना॥ ८६॥ सी॥ तो॥ क॥ द॥ नि॥ का॥ उ॥ पा॥ य॥
 नें॥ नां॥ ही॥ न॥ व॥ वा॥ रं॥ वा॥ र॥ सो॥ व॥ कू॥ प्रा॥ म॥ न॥ ए॥ ८७॥ अ॥ र॥ क॥ त्या॥ व॥ रु॥ स॥ म॥ स॥ जा॥ ते॥ र॥ हे॥ न॥ व॥ ए॥ नि॥
 प्र॥ य॥ अ॥ ति॥ द्या॥ कु॥ ल॥ धि॥ न॥ भ॥ यो॥ अ॥ र॥ र॥ नि॥ कै॥ रु॥ था॥ की॥ वे॥ द॥ ना॥ रु॥ क॥ र्म॥ नू॥ मि॥ कै॥ प्र॥ जा॥ व॥ नें॥
 धि॥ क॥ हो॥ ती॥ न॥ र्द॥ अ॥ ग॥ नी॥ व॥ का॥ का॥ न॥ पा॥ य॥ की॥ या॥ वा॥ है॥ औ॥ सा॥ सं॥ दे॥ र॥ न॥ या॥ जो॥ ह॥ म॥ जी॥ वै॥ भो॥ क॥
 ही॥ त॥ व॥ जु॥ ग॥ वि॥ धै॥ सु॥ र॥ व॥ ना॥ मि॥ रा॥ जा॥ वो॥ द॥ कै॥ कु॥ ल॥ क॥ र॥ सां॥ नी॥ पु॥ र॥ य॥ ति॥ में॥ मु॥ ष्ठा॥ ति॥ नि॥ धै॥ अ॥ ग॥
 वी॥ न॥ ती॥ क॥ र॥ ते॥ न॥ ए॥ अ॥ प्र॥ ति॥ दा॥ न॥ है॥ द॥ सा॥ जि॥ नि॥ की॥ १०॥ ते॥ क॥ है॥ है॥ है॥ ना॥ य॥ ह॥ म॥ क॥ त्या॥ व॥ रु॥
 ति॥ धि॥ ति॥ अ॥ ना॥ य॥ भ॥ यो॥ अ॥ व॥ कै॥ सैं॥ जा॥ वै॥ ए॥ म॥ न॥ वं॥ छि॥ त॥ फ॥ ल॥ के॥ दे॥ न॥ हा॥ ये॥ ह॥ म॥ ये॥ कै॥ सैं॥ वि॥ र॥
 सा॥ रे॥ जो॥ हि॥ ह॥ म॥ पु॥ न॥ ही॥ न॥ ता॥ तैं॥ ति॥ नि॥ का॥ वि॥ यो॥ ग॥ भ॥ या॥ ११॥ हे॥ दे॥ व॥ अ॥ व॥ कै॥ द॥ क॥ जा॥ ति॥ कै॥
 व॥ रु॥ मु॥ ते॥ सु॥ भा॥ व॥ नि॥ प॥ जे॥ हैं॥ फ॥ ल॥ नि॥ क॥ रि॥ न॥ मी॥ भू॥ त॥ जे॥ सा॥ धा॥ ति॥ नि॥ क॥ रि॥ मं॥ नं॥ र॥ म॥ कू॥ बु॥ ला॥ वै॥
 १२॥ द॥ हि॥ दू॥ कै॥ फ॥ ल॥ त॥ नि॥ वे॥ यो॥ ग॥ है॥ अ॥ व॥ क॥ प्र॥ ह॥ वे॥ यो॥ ग॥ है॥ फ॥ ल॥ नि॥ कू॥ सें॥ तैं॥ ए॥ ह॥ म॥ सं॥ वि॥ वा॥ द॥
 न॥ क॥ रैं॥ गो॥ व॥ स॥ न॥ हो॥ य॥ हं॥ म॥ कू॥ फ॥ ल॥ दै॥ भो॥ क॥ न॥ दे॥ गो॥ १३॥ अ॥ र॥ द॥ नि॥ व॥ रु॥ नि॥ कै॥ स॥ मी॥ प॥ धे॥ न॥ नि॥
 में॥ ए॥ कै॥ य॥ क॥ सा॥ ति॥ कू॥ अ॥ ग॥ दि॥ दे॥ व॥ त॥ ए॥ नि॥ में॥ क॥ ए॥ फ॥ ल॥ क॥ रि॥ न॥ मी॥ भू॥ त॥ भ॥ यो॥ सो॥ नै॥ है॥ १४॥ सो॥
 सें॥ जो॥ ग॥ में॥ अ॥ ग॥ वै॥ ए॥ म॥ गे॥ तें॥ फ॥ ल॥ दै॥ गो॥ क॥ ह॥ म॥ तो॥ नि॥ तैं॥ गो॥ सो॥ स॥ व॥ उ॥ पा॥ य॥ क॥ हो॥ १५॥ हि॥ अ॥

नो उमसवजातो हो ॥ अररुमतौ अममक है ॥ कछु समफै नां दी ॥ ता तें तुम कूं सवने दू है ॥
 उमहु पा करिक हो ॥ ए ॥ या सों तिक रनवता विधै मूढ ॥ अररु बा निषादिक रिअ तिअ
 उर ॥ अरक लपहु क निके जाय वे करिअ ति विं ता वां न ति नि कूं ना भिराजा कह ते ॥
 ए ॥ अर हो न द परिणामी हो तुम का रू नां तिका नयन कर ॥ ए ॥ ह क लपहु क निके गा
 रें नि प जे है ॥ या के क ल निक रि न ग्री म न है ॥ अगों क लपहु क ति ह रा उ प ग र क र ते अ
 व ॥ क रै गी ॥ ए ॥ प रं उ वे मा गे दे ते ॥ निके क ल तो रि त्यो गो ॥ ए सा ति गो रूं अा दि र्दुषु अा दि
 षा य वे के है ॥ अर रं द वा स एी अा दि ध र अा दि वि ष ह क है ॥ सो या हा नो ही ॥ ए ॥ अ
 र ए सं वि मि र चि जी र का दि ॥ उ ष धि है ॥ सो इ नि क रि गो का ॥ ना स हो य है ॥ अर नो ज न
 शु क रै है ॥ ए ॥ यं न ना दि क मै प रै है ॥ अ र स व वा र ता क ही ॥ अ र सा लि गो रूं अा दि धा न
 के षा य वे को वि धि व ता र्द ॥ २०० ॥ अर र मां थी के वा स रा त या धा तु के वा स रा व रा य वे की
 अर र ल ने सो ठ ने ॥ रां य वे पी स वे की स व वि धि व ता र्द ॥ अर र क ही ॥ ए ॥ यो नें सो वे के वा
 उ है सो वं न मै पे लि इ नि का र स पी वो ॥ त या दां त वि क रि वूं स ऊ ॥ इ त या दि उ या य व ता
 य म हा द या ल ना भि रा जा तो क नि कूं धी र्ज व धा या ॥ अा जा प्र मां ए लो क क र ते न ये ॥
 अा जो ग भूं मि की री ति वि षा दि वे क रि उ धि त लो ग ति नि कूं हि त के क र्त्ता भिरा
 जा अर द नु त क ल प हु क की सो ना कूं थ र ते न रा ॥ ४ ॥ प्र ति श्रु त कूं अा दि दे य ना भिरा

जापर्यंत चौदहकुल कर परसे सब विषे महा विदेह के अनिवर्य संसके उपजे पुर पड़ने पर
 सो समझ उपजिसे परसे पावना दिखन अथवा करि जोग भूमिका वंधकी या छ
 तापी छै जिते स्वर के समीप का एक समस्त उपर्ज्या ता के अभाव करि कुल करन
 ए पर वनव विषे श्रुत के धारक ऊते ॥ ८ ॥ निमै के एक अवधि मा नी है अथ के द
 क निरुं जाति समरण है एक र्म नूतिके विद्योग प्रजा कुं उपदेश कर ने भग स्व वात
 निपुण है प्रजा के जीवने का उपाय ता के जाति वे है द निरुं मनु कहिए अथ आ
 र्ज जोग मियां तिनिके कुल कहिए समस्त तिनिके स्या मन है द निरुं कुल कर क
 हिए अथ कुल के धारण तें कुल धर कहिए अथ दु ग की आदि प्रगटै ता तें दु गा दिपु
 ष कहिए ॥ १० ॥ चौदह कुल कर कहि अथ विष न देव आदि तीर्थ कर अथ पंद वे कुल
 कर अथ र विष न के पुत्र न र थ व क्रव र्त्ति सोल सैं कुल कर ॥ ११ ॥ तिन विषे प्रथम कुल
 कर प्रति श्रुत कुं आदितो पां व दे कुल कर सी संकर त क तो प्रजा सैं को ई अथ रा धी
 मया तिनिकुं दा दंड व द रा या ॥ १२ ॥ अथ वृ वा कुल कर सी संध प्रमुख दश वां अ नि
 वंदन क इ निदा अथ मा ए दो य दंड व ला ये अथ रा मां वं ज म ता कुं आदि पंद मे रि
 ष न देव इ निदा मा धि कार ती न दं र व ला ये ॥ १३ ॥ अथ न र थ व क्रव र्त्तिके राज सैं लो
 क विनेष अथ पराधीन ये त व व धं या दिशारी र दं र था पे ॥ १४ ॥ कुल कर निकी अथ दु

अथमत्रट्टादिवर्णनकरीताकेतिश्रुयतिमत्तिनिर्णयकरैहै ॥५॥ चौरासीलाघवकाएक
 पूर्वागकहिएअरचौरासीलाघवपूर्वागवितातहोयतवएकपूर्वकहिए ॥२६॥ अरचौरा
 सीपूर्वकाएकपूर्वागकहिएअरपर्वगकुंचौरासीलाघवरसगुणकरियेतवएक
 पर्वकहिए ॥२७॥ अरचौरासीपर्वकाएकतदुत्तोगकहिएअरचौरासीलाघवरस
 गुणतदुत्तोगकोकरिएतवएकतदुत्तकहिए ॥२८॥ अरचौरासीतदुत्तकाएककु
 मुदागकहिएअरचौरासीलाघवरसगुणकुमुदागकाएककुमुदकहिएअर
 चौरासीलाघवरसमुत्तकुमुदागकसकभदमोगकहिएअरचौरासीलाघवर
 रगुणपदमोगकाएकपदमकहिएचौरासीपदमकाएकनत्तिनोगकहिये
 अरचौरासीलाघवरसगुणनत्तिनोगकाएकनत्तिनकहिएअरचौरासीनत्ति
 नकाएककमत्तोगकहिएअरचौरासीलाघवरसगुणकमत्तोगकाएककम
 लकहिएअरचौरासीकमलकाएकतुदागकहिएअरचौरासीलाघवसगु
 णतुदागकाएकतुदिककहिएअरचौरासीतुदिकाएकअट्टांगकहिएअ
 रचौरासीलाघवरसगुणअट्टांगकाएकअट्टकहिए ॥२९॥ अरचौरासीअट्ट
 टकाएकअथमर्कहिएअरचौरासीलाघवरसगुणअथममोगकाएकअथममकहि
 एअरचौरासीअथममकाएकहांगकहिएचौरासीलाघवरसगुणहांगका

जगत्प्रतीर्षः॥ प्रज्ञानाद्वा तपगतिसि॥ प्रज्ञा॥ ३॥ तिमैलोककावर्णिनाः त्रैसाजिन
 रदेव नैकं द्या॥ साकैः अतुसारिक हि॥ सोल्लोकात्मानक हि॥ अरत्तो ककार
 देवावर्तनाः परमतविधैः पुरषनिल्लोकका निरूपणक्या है सो प्रमाणं नदी॥ सर्व
 प्रणीति प्रमाण है ॥ अरत्ती पसमुदादिक का व्याख्या न सो देसा ॥ अं न कहियो
 ज्ञानवंत नि कुंज लीलांति जाननं योग है ॥ अर एतत्पथे अत्रादि तिमि विधै अयो
 आदि रजधानी ताका वर्णना सो पुरवर्णिन कहि ॥ ६ ॥ अहो अर देश नगर का वर्ण
 न करि देश का पति ॥ राजा ताका कथन सो राजा व्यान कहि ॥ ७ ॥ अर संसार सागर के
 तिर तेका उपाय समझ दर्शन ज्ञान वा रिज ॥ सो तीर्थ कहि ॥ ताका कथन सो तीर्थ
 कथा कहि ॥ अर महा पुरष निके वरि ॥ तप अर दान महा गुण निके पुंजना का
 कथन सो तपोदान कथा कहि ॥ अर नर नारक देव तिर यं च ॥ एच्चा रिगति नि
 का व्याख्यां न सो गति निरूपण कहि ॥ १० ॥ अर जीव निके पुनपप के फल सुषड्य ति
 निका कथन सो फल व्यान कहि ॥ सकल फल निमै सो फल फल श्रेष्ठ है ॥ सो पुनपप
 पर है ॥ ११ ॥ प्रथम ही लोक का निरूपण करै है ॥ ओर रुसवतिका निरूपण अर वसरपाय
 कहि ॥ ११ ॥ १२ ॥ जा विधै जीवादि कपटार्थ वि लोके सो लोक कहि ॥ तत्त्व दर्सी
 सर्व जती राग देव तिमि लोक का टह अर्थ कहि ॥ १३ ॥ जीव पुट गल ॥ धर्म अर्थ धर्म

लाए पदार्थ जा विषे सो लोका का सकहिए ॥ अथ व लोकि एहै गुण पदार्थ स हि त भ सक ल जी व
 अजी व जा विषे पदार्थ ॥ यद लो क का अर्थ त व जानी कहै है ॥ अथ य लो क कैं द्रे त रूप
 कहिए ॥ निष्ठ है जी वा दिक द्रव्य जा विषे ॥ ४ ॥ लो क अ क र्त म है ॥ सक ल पदार्थ को अ द
 का ज दे है ॥ सा स्व ता है सु तै स्व भा व निः षं न है ॥ सो लो का का स अ नं ते अ लो का का स न
 वै म धा व र ती अ नं त वै जा ति है ॥ १ ॥ नै या दिक वे मे षि का दिक है है ॥ या लो क का क र्त
 को ऊ है ॥ ति नि का अ म ति वा रि वे नि म ति सि द्धि वा द की व र वा क रि ऐ है ॥ १ ॥ दो नै या
 दिक वै शे षि का जो अ द्धि प ह लै न ऊ ती ॥ अ र क र्तो ने न र्द क री तो व ह क र्तो सि द्धि
 वि नो क हार ह्य ॥ अ र क हं ति हि क रि ज ग त व ना या ॥ व ह तो नि श था र ॥ अ र क र क र स्य क हि
 ए प रि ण म र हि त ए क रूप म द का ल स र्व त्र व्या पी सो ज ग त कें व ना य क हं थै ॥ १ ॥ अ र व ह
 ए क रूप ना ता रूप ज ग त कें वे सै र वै ॥ व ह अ रूप अ द्धि प अ र य द ज ग त रूप वा न म र
 ती क म ति न सो अ म र ती क अ द्धि तै म र ती क ॥ अ अ द्धि कें सै नि प जै ॥ व ह नि श का र ॥ अ र
 ए स री रा दि सा का र प दार्थ सो नि श का र तै सा का र कें सै नि प जै ॥ १ ॥ आ र द्हा य पां व
 इं दी ॥ म न प्र नु कै नो ही तो क र्ण क हि ए क रि वे के उ प क र्ण ति न वि न लो क कूं कै सै नि प
 जा वै त व अ न्य म ती वो ले प ह ली का र ए नि प जा य स द्धि कूं करै है ॥ त व जै नी क ही ॥ व
 ह का र ए का है क रि की या ॥ त व व न क ही अ न्य का र ए नि क रि ए की ए त व जै नी

कहीवे कहै करि की धी प्रहो तैं अनव स्याना मा दोष लागै है ॥ १८ ॥ तव वादी कही एक
 ॥ १९ ॥ स्वभाव ही है तव तेनी कही जो वै स्वभाव सिद्ध ही है तो लोक रुस्वभाव सिद्ध ही है
 जै सैं ईस्वर स्वभाव सिद्ध है तै सैं लोक रुसु तै स्वभाव सिद्ध है ॥ २० ॥ तव तेना विक वै रोषि

ही

दो स्याना वां न स्वतंत्र है पर तंत्र नो ही ॥ विना संमग्रा नीव नाय ते ईश्वर की इच्छा
 करिय रहना न जग है तव तेनी कही इच्छा की वात नौ तुम अयुक्ति कही ॥ २१ ॥
 अयुक्ति की को न श्रद्धा करै ॥ २२ ॥ इच्छा नौ अपूर्ण कै है दोषा वह जग वा न कार्य न
 कृत्य वा कृकरिवे की इच्छा कै सैं संज वै ॥ जो न कार्य है पूर्ण है ॥ ना कै करिवे की इच्छा ॥
 नो ही अपर जा कै इच्छा है सो कृत्य नो ही ॥ ना कै करिवे की मज्जि कही जा कै करि
 का इच्छा है सो कुंन कारवत है ॥ २३ ॥ सो ईस्वर वादी हो वह जग वां न परमात्मा अ
 मरती कनि क्रिया सर्व व्यापी ॥ कै सैं या जग त कुर वै ॥ वह वि क्रिया रहि स्वभाव
 ए परा वृत्ति ना कै करिवे की इच्छा सर्व धानो ही ॥ २४ ॥ अरवा कै सहि के रवि वे सैं अ
 रवि ना सिवे सैं फल कलाय रहि चारु रूप रि पूर्ण जा कै धर्म अर्थ काम मोक्ष के
 साधन का प्रयोजन नो ही ॥ २५ ॥ तव वादी बोले वाका अस्मा ही स्वभाव है जो विना अर्थ
 है तव तेनी कही विना अर्थ करै है तो अनर्थ का प्रसंग जग ॥ तव कर्त्ता वादी कही
 ईश्वर की अस्मी ही करि है ॥ तव तेनी कही ॥ की ना तो मोक्ष काल कण है अपर जा

कै मोह जात है। अर माया कहि लिस है सोई प्रहर कहै का॥१॥ संसादी है। तब पद पाती वो
 ले प्रभु तो निर्दिष्टि दी है। परंतु जै से इति नीव निकै कर्म है। ता प्रमाण गति सरी राहि
 करवै है। भव जै नीक ही। जै से नीव कै कर्म हीं हि। जै सी देहा सिद्ध है। तौ वह स्वतंत्र नां ही
 परतंत्र है। ईश्वर तो पराधीन नां ही। जै सें वस्त्र के वृण नें बांधे। जै र्म मदी मोटा सस होय ता प्र
 माण वृणो। सो परतंत्र है। २६। तै सें परा एक र्म निकै अ नुस्सा रिफ ल देतौ। समर्थ कहै का। ता
 व पर मती कही। जीव कै देहा दि कु नुप निवे कै मूल कारण तौ कर्म है। अर ईश्वर निम
 न कारण है। भव जै नीक ही। अर सैं है तौ वह कर्ता सिद्धो पस्याई नया। सिद्धो पस्याई कहि
 करै को नु अगोरा। अर य नी होय अ पा। अर सी निः कारण कर्ता क्यों पोषो हो। २७। ब्रह्मा
 याद करो हो। सव कर्ता बादी वो। तै ब्रह्म प्रभु न क्व ल है। जगत का एक नाथ है। सो अ
 नुग्रह करि रहै है। ब्रह्मा रु नां ही। अर य पराधीन रु नां ही। तव जै नीक ही। जो जग वा न न
 क्व ल स है। अर अ नुग्रहै करि रहै है। तौ निर पद व सुष मर्द शुद्धि रहै। दाह डष मर्द शु
 द्धि कूं रवी। जग वा न अ नंद धन। अर सा ता मर्द सद्दि कूं रवै। २८। ता तै निहा रा द ह
 सद्दि वा द ब्रह्म है। अ न ना दि नि धन द ह जगत ता का क ह रा चै। अर या न ही तौ न वा कै
 भैरवै। जै सें अ का मा विषे क म ल क दा। पिन हो या २९। अ न ग वॉ न मु क्त है। अर उ दा सी न
 है। सो कै सें जगत कं अ न ना चै। भु क्त कै तौ र वि दे का प्र यो जन नां ही। अर संसा दी सैं मा म

जज्ञौज्ञा॥५॥ अरमभलो क मै अ सं षा ता दी प अ सं षा ता समुद्र दी प सं द्र णा समुद्र भ
सं द्र णां दी प भ्या जं ति दि गु ण दि गु ण वि सार अ सं षा ता दी प समुद्र है ॥ ५ ॥ भव नि
कै म भ जं वृ दी प है सो ला ष जे न के वि सार है ॥ ता के म भ सु मे र प र्त न ना नि व न सो
है ॥ अर य द्र जं वृ दी प ल व ण समुद्र क रि वे द्य है ॥ ५ ॥ जं वृ दी प मे ज र न है भव न द
वि दे र म क है र ण व न ऐ रा व त सा त धे न ॥ अर हि म वा न र म द्वा हि म वा न र नि ष
३ ॥ नी ला भ रु क नी ॥ ५ ॥ सि ष री ॥ ६ ॥ ष ड् कु ल वै ल है ॥ अर गं गा दि क व नु र्द सि न दी है ॥ ५
य द्र जं वृ दी प मं नु स क ल दी प समुद्र नि का रा ना दी है ॥ रा जा के मु क ट हो या द्य के
मु क ट है ॥ अर ल व णो दी षे स मुद्र क हि स त्र है ॥ ५ ॥ भ्या जं वृ दी प वि धे मु मे र नै प श्रि म दि
म का दो र प श्रि म वि दे द्र वि धे गं धे ल ना मा दे श स्व र्ग लो क म मं न सो नै है ॥ ५ ॥ ता दे श
पूर्व दि श्वा का न र दे व मा ल ना भ व द्वा ल प र्त न है ॥ अर प श्रि म दि सा की न र ज र्म मा
नी ना मा वि भे ग न दी है ॥ अर द क्रि ण दि सा की न र सी तो द्य न दी है ॥ अ नु न र दि सा की न
नी ला व ल प र्त न है ॥ ५ ॥ ज द्वा क र्म भ ल के अ ना व तै मु ति रा ज म द्वा का ल वि दे द्र क हि
हो य है ॥ ता तै ता क्रे त्र का वि दे द्र म त्प र्ण ना म है ॥ ५ ॥ ज द्वां प्र ना प्र मो द रू प उ द्वा ह रू प व
र तै है ॥ अर स द्वा स व सा म गी ण ई है ॥ ता तै त द्वां के लो क स्व र्ग की द्वां ह्य न रा वै है ॥ ५ ॥
द्वां ना री स्व तै स्व ना व म तो ज ॥ अर न र स्व तै स्व ना व सुं द र ॥ न र ना री स व ही व नु र अर न

हां धर धर विवेचन कमु हा वनें मनो हर व व न म ध ध प्रजा म हा पं नित म हा प्रवीण म हा सुंदर अर
 भुत कत्र अमृषण अमृत ल रि हि म हा वि स नो यो व न के अरं न विवे दे व न से दी धे ५ ५ न
 हां दान विवेची ति अर र ह न दे व की प्रजा सी ल प ल ने की म कि ओ व धो प वा स विवे अर
 नृगा ५ ५ न हां नि न सा स व उ र वि धि सं धू म हित प्र व र्त्तै ओ र ने ध अर म त क दा वि
 नां ही भ दा नि न स र्ज का उ द्यो त ना के प्र ता प क रि ओ र मा र ग का प्र का स नां ही जे सैं दि
 व स विवे अर जा व म ल क र न क रै ५ ५ न हां उप व न स दा र म णी क फ ल स हि न ब्र ह्म निक रि
 सो नित म नं को कि लं ति के मि ष्ट ज्ञा ष्ट क रि पं यी नि कूं वृ त्त वै है ५ ५ अर ज हां सा ति अर
 दि स र्व धा न्य वे त नि मै फ लि र है है जे सैं ध र्म रू प क्रि या भु न फ ल को फ लै ५ ५ अर ज हां सा हि
 न के वे त विवे अर का स नैं प ड नी स वो नि का पं क ति सा ति गो पि का क हि र के सा ण की र्त्तु
 नि कूं त्रै सी जा सैं है मां नृ म र क त म णि ति के तो र ण की सो जा र है ६ ५ सी त ल मं द सु गं
 ध प व न क रि हा ल नी फ ल न क रि न श्री भू त सा वि ति नि प रि पं धी प र है मां नृ ध न की रा सि
 प रि लो मा हा प र है ति न कूं त्रा ष्ट क र नी कि सा ण ति का र्त्तु ना वै है ६ ५ अर ज हां पो
 रु सां वे ति के वा ड घ ने नं व सैं सां वे ति कूं प रि र स का दे है मार ग मं जा ते नि कूं बु ला य दु र
 य र स पा वै है ६ ५ अर ज हां कृ क ड्डा उ नां ण त नी क न नी क गं व स क ल गं व था त क रि म र
 और तौर धा न फ लि र है अ हां वि ण ज त था न की क मी नां ही ६ ५ न ल के ति वा ण घ ने व न

उपवनयत्नो फलफलनिका कमीनां ही। नर अरतिरयं वसवही सुधी ॥ ६५ ॥ जहां लो क वि
 के अस्मासी मरु कला तां न ए क कला पूर्ण दुर्ग अर और क लामी धंज हंगु ए वं त निके
 उधत पतां तां ही को उ गुण निके अरि पण विधे उरु त पनां दे ष्ण चा है लो धनुष धारा निके ध
 नुष कै गुण क हिए कि उ चित्त के आरोपण विधे उरु त ता दे ष्ण अर ज हां मु नि वि के अ
 र विधे म न रं नि क न हू षी न पनां है समा धि जा विधे षी न पनां तां ही अर जा दे अ
 विधे म न रं नि का नि ग्र ह है जी व नि का नि ग्र ह नां ही ॥ ६६ ॥ जी व नि की सर व अ द या है विष
 का त्या ग है इं दी नि का नि रो ध है अर उ द्रा स ध नि क हिए हिंसा का ग र हं सो दु ष्य षी निके
 नि वा स विधे मु नि है म नु ष्य नि विधे नां ही अर व र न सं क र ता वि श्रं म मे दे ष्ण म नु ष्य नि
 को उ व र न सं क र नां ही व र ण सं क र क हिए जार जा त क अर व र ण सं क र क हिए रं ग का
 प स्मो वि श्रं म मे षा द दा वे है अर ज हां ज र त की त रं ग विधे का रू कै सु ष सा ता विधे
 जं ग नां ही अर म द वि क्रि या ग ज विधे है लो क नि मे नां ही अर क वि न दं र ग ज से नां ही
 वो र दं र क म ल वि धे दे ष्ण क म ल ना त कां दे नि क रि यु क्त क वो र हो य है अर अ ड का सा
 ग र ज न नि मे नां ही म रो व रां नि मे नां ल क सं ग्र ह है ॥ ६७ ॥ अर जा दे अ विधे स्व र्ग पु री स मां न
 पु री अर दे व कु र उ त र क रु सा हि धे म तो र द्रा जा र अर स्व र्ग के वि मां न स मां न द र प्र
 ना दे व नि स मां न अर स्त्री दे वां ग ना स मां न ॥ ६८ ॥ अर दा षी दि ग ज स मां न दि ग ज नि के

अथ द्वापयंकर
 स ६

नामा एव न पुंडरीकः नाम न कुमुदः अंजनः फुल्लदंतः सार्धं नैमः सुप्रतीकः ॥ अ
 वा ॥ अरराजादिगणसमांतः दिगविभक्त्यकरादौ ॥ अरवापिका निर्मलतकी
 ॥ ७० ॥ निर्वैतीरमनोहररत्नतिलिकी ह्यायाकरि ॥ अतापनत्रावै ॥ अरवऊत
 जनपीथैषां नाजिनिको ॥ ७१ ॥ अरनहं रूपतडागादिकनद्यापि नत्तास्य कहिएउ
 रूपहै ॥ अथापिरसकेभरे तो कनिक ॥ अतापहै ॥ ७२ ॥ अरनदी सों नृनगरतायका
 समस्तही है ॥ नदीका पद्म तौ विपंका कहिए कर्दम रहित ॥ ७३ ॥ उजल ॥ अरवे स्या
 की पद्म विपंका कहिए अंतर्हकराण विषै ॥ अतंतम लीन ॥ अरवा सुनिर्मल वस्त्र
 ॥ अमृषणा निकरि संहित ॥ अरनदीका पद्म ग्राहवती कहिए ॥ ७४ ॥ अरवे स्या
 की पद्म सुख कहिए न्यायवै कवि जनत ॥ अरनदीका पद्म ऊटिल वनिक कहिए वक्र
 गति ॥ अरगनिका कुटिल वृत्ति है ही ॥ अरनदी अलंघ्य कहिए चातुर्मासिक मैल
 दीन जाय ॥ अरवे स्या ॥ अलंघ्य कहिए कुविसनी निधैं ॥ संधी न जाय ॥ अरनदी सर
 व नो गिताका जल पसुषी मनुष्य सव नो गवै ॥ अरवे स्या ॥ सरव नो गि जों हि ॥ जंवनी
 स सरव नो गवै ॥ अरनदी विवित्र गतिक कहिए ॥ ना नारंग ॥ अरवे स्या ॥ रुवि वित्र गति
 कहिए ॥ ना नारंग ॥ अरनदी निमन गा कहिए नीवी नर पट्टै ॥ अरवे स्या ॥ नीव की
 नर पट्टै ॥ ७५ ॥ अरनदी सों नैव नो निर्वैतीर हंस सद्ग करै है ॥ कंवकै लपटिर है ॥ मना लक

हिएकमलनिकेतांनूजिनिकै ७५॥ अरवनविषैवनगजमदकरिमुद्रितहैलोच
निकैसोअमणकरैहैं। मंनूदिगनैकंजुडकैअर्थिदुजायावाहैहै॥ ७५॥ अरजहोमं
वैलसीगकेअग्रजागलगिरह्यहैकर्मजिनिकै। सोधरतीकुंसीगनिसंघोदहेटां

लविषेस्यलकमलिनोहैताहिउपारैहै॥ ७६॥ अरजहोवोरवोरजिनमंदिगतिनि
विषेनाताप्रकारकैवादिजवजैहै। संगीतहोयरहै। तिनिकेजहदुअैसेहोयहै। मंनूमे

ला

गाजैहै। सोधुनिसुनितितांहीसमैवर्षाअर्द्धजाति। मयूरजन्मनअनृत्यकरैहै॥ ७७॥
अरजहागयनिकेसमूहमंनूमेयसमानहीहै। पहलीगर्भग्रहहैं। वक्रविषसतिहोय
है। शसुकरैहै। अरपयकरिघंणानिकुंघोषहैं। मेघरूपहली। गर्भग्रहहैं। वक्रशिगा
है। वरघैहैं। पयकहिएनलताकरिपृथ्वीकुंघोषहैं। ७८॥ अरमेहवरसतैत्रैसेसोसै
मंनूमेतेगजराजहीहैं। भेषकीपक्षतौवुगलंनिकीपंकतितिनकरिसोभितहैं। अ
राजनिकीपक्षमुपेदपताकाताकरिसोभितहैं। अरमेघरुगाजैअरगजरुगाजै। गेनी
शसुकरै। अरमेहतौजलवरसैगनमदकरै॥ ७९॥ अरपजाअतिसुधीहैं। धर्मराज
हैप्रजायंजानैहैं। यहराजाहमारैसिरपरिब्रजविगयाहै। जहांप्रताकुंकरकीवाधा
नोही। कारूपकारकाउषनाही। सिरपरिन्यायवंतधनीविराज्याहै। जहांकवरुडु
कालनपरै। सदासुकालहीरहै। अतिवहिएअनाहिए। मूषकटीनीसूबा। मुचक्र

परचक्र एसा तर्हि ति नो ॥ ही अरना रुका नय नो ही एक पाप का नय है ॥ ला हो अना
ति ॥ नो ही ॥ न्याम का चलण सो गंध सदैव शका क हा ल ग द ग भि क है ॥ ७ ॥ ला है
स के म भ वि ॥ जयार्ध पर्वत रूपा मई मां नै अ प नी उ न ल र्का ति क रि कु ला च लो
नि कुं द से है ॥ ७ ॥ प वी स जो न न उं च भ जा के न व सि सर ति नि क रि मां नै अ का स हो
कुं स पर स की या चा है है ॥ ७ ॥ ८ ॥ वी सैं द श जो न न व य रें व टि च न हो ल ग प वी स
जो म न चौ डा त हां दो य अ ए ॥ एक द द ए अ ए एक अ न र अ ए ति ति सैं वि द्या भ
र न से व रु रि द श यो ज न अ प रि व टि ए त हां स क नी स यो ज न चौ डा त हां दो य अ ए
दे व ति का जि न में दे व व से व रु रि पां च यो ज न वैं व टि ए त हां ॥ ८ ॥ स यो ज न चौ डा ॥ ८ ॥

১৫৫

निमिंहही है। सिंघरूपका। कीभुतिरूपकाकी। सिंघरूपनिरमयभुतिरूपनिरमय। सिंघकेन
 धतीरूपभुतिके बुद्धितीरूप॥ ७० ॥ अरपर्वतदेऊश्रेणिरूपरुचिविस्तारिकरिमांनूरु
 रालक्ष्मीकेदेखिवेकूंनंचावात्या है। ॥ ७१ ॥ जाकेतटमहारमणीकानिनिविषेकेनराकिं
 पुरषासुर। असुर। नागकूमारकीडाकरहैं। सोपर्वकीमनोजतादेखिदेवनिजसोव
 काविस्मरणकरहैं। ॥ ७३ ॥ जाकेरूपमईतटनिनिपहिसरदकेमेदअपवैहैं। सोगाजिवे
 करिवरामिवेकरि। जानेपरहैं। मांनरिसरदकेवाटगंनिकाअरयापर्वतकाएकरं
 गसोजानेनपरहैं। ॥ ७३ ॥ अरविषयाईकेनवकूटहै। निनिमैंप्रथमकूट। सिद्धातनभतामैं
 अकनिमिनमंदिर। औरअवकूटनिमैंदेवनिकेस्थानकसोचूडामणिसमांन
 अपनोसिषरनिकूटपर्वतपरहैं। ॥ ७४ ॥ असोत्तिकरतननिकरिविविजताकूं
 धरेसुरअसुरनिकरिप्रसंसायोग। जेसैराजामुकटकूंधारे। तेसैपरवतनरु
 सिषररूपमुकटूंधारेहैं। ॥ ७५ ॥ अरपर्वतदीउगुफाकूंधारेहैं। निनिकेदेदिष
 मानयुगलकपाटहैं। मांनसारधनमेह्वेकेमहाडगहै। ॥ ७६ ॥ अरनी
 लावलपर्वतकेसिषरतै। निकसीगंगासिंधुमहानदीजापर्वतकीनैहदीहोयममुड
 कूंवलजीजायहै। मांनयाकूंअसंतनिर्मलजानियाकेचरणसपरसिनीसैहै। ॥ ७७ ॥ क

अरु मां नं विजयार्धपर्वतनीलां वरधाजीवलिमडतिनिहीकी सो मा कं धरै है वलिमड गौरव
ए अरनीलां वरधरे अर पर्वत जलव है अरनीला व करि देहि त है ए अर

वौ गिरद को द है सो अर तं त मनो सता की हृद मां नं का रु नै व एा ई है अर को रु का व
एा या नां ही अकर विम है ए एा अर ज हां मं द प्रजा तिके कल्प वृक्ष नि की कुं ज विषे सी त
ल मं द सु गंध प्र व न वा नै है अर वि द्या धरी नि कै र एा निके न प्र रति नि का सुं द र स व द
है पर्वत जे सैं लं वा व ल्या ग या है ते सैं वा व ल्या जा ता तौ ज ग त मैं कै सैं स मा व त ग र सो
पर्वत निर्मल अ प ने ज व सिष र नि क रि कु ला व ल नि सों मां नं स प र धा क रै है ग ता की उ
त्तर अ एा विषे अ त न का ना म उ त्क ष न ग री सो अ त न क क हि ए के स ति नि म हि त वि द्या ध
री नि के सु ष ति नि क रि मां नं स क लं क वं ड मां कू द सैं है ग उत्तर अ एा विषे व ह पुरी म ह उ
रूप कै सी सो है है मां नं पां नु क सि ला विषे जि न र ज के न त मा निषे क की क्रि या ही है ध
व ऊ रि व ह पुरी ज त र म्मे एा विषे त्रै सी सो है है जै सी व्या क णी वि द्या विषे क्रि या सो है है
ऊ रि व ह पुरी ज त र अ एा विषे त्रै सी जा सैं है धै सी भा वां त की दिव्य ध्व नि विषे ना ता मा
षा सैं है धा अर व ह न ग री न वा को द अर ऊं दे द र वा जे नि कूं ध रें है त्रै सी जं दू दी प की
ली दे ह का क हि ए को द र्त्त कि रि सो है तै सी पुरी सो नैं है द अर नि र म ल ती र की न सी षा र्द

जा मेकमलफलिरहे है ॥ ति ति पतिनवरगुजार कर है ॥ मां नृषाई तौ मदी है ॥ अरकमलनेत्र है ॥ नवर
 अंजन अति नि करि सो नित है ॥ मां नृ विद्या धर नि कुंद रे है ॥ ७ ॥ कोट पठ कोट धाई केवल
 नगरी की सो जानि मति है ॥ नगरी कार कर कतौ विद्या धर नि काई ॥ विराग्य है ता की भुजा
 निके प्रताप करि पुजा मुख संति है ॥ ८ ॥ जाना गरी के मंदिर नि की पंक नि नि निके सिषर परि
 परहर तीव्र जा मां नृ कै लास के सिषर तें उरती जो हंसा नि की पंक नि ता की सो मां नृ जी तै है
 ॥ अरजा नगरी विषे दर दर में बापिका ति ति मेक लहं सगद कर है ॥ अरकमल फल
 लिरहे है ॥ मां नृ व हपुरी मान सरोवर ॥ कुंद से है ॥ १० ॥ जहां तौर तौर निर्मल जल की नरी
 बापिका मां नृ नारी ॥ दी की उल्लास ता कुंधर है ॥ ति नि कै जल ही वस्त्र ॥ अरनी लकमल क ॥
 फल ॥ अररक कमल मुख ॥ अरमी ननेत्र ॥ ११ ॥ जाना गरी विषे मुख अरानी तां ही ॥ अरखी
 मी लर हिन तां ही ॥ अर उपवन दिना कोऊ स्या न क तां ही ॥ अर उपवन फल र हिन तां
 ही ॥ १२ ॥ अर जहां अर दंत की पूजा विनां कोऊ जव वतां ही ॥ अर संन्यास की विधि विनां
 रण तां ही ॥ १३ ॥ अर विनां ही बंदे जनि में धान फल है ॥ सो अति सो जे है ॥ मां नृ व जा के मुख
 त ही फल है ॥ १४ ॥ अर जहां बाग नि में बाल बल नि कुंज लक रि सी वै है ॥ सो मां नृ व लक
 नि कुं दूध ही पाव है ॥ अर जे सें बाल क नि कुं सहा रा देय पडा करै ॥ तौ सें बाल वर नि कुं दे व क

देषषडेक है ॥ १५ ॥ अरजागरीकावाजारसमुद्रसमान है ॥ समुद्रनीरतनेकरि

अरवाजारनीरतननिर्करिसम्पा है ॥ अरसमुद्ररुगाजै है ॥ अरवाजाररुगाग
 हा है ॥ समुद्रविषे मगरविच है ॥ अरवाजारविषे वनीयां विच है ॥ १६ ॥ जहां सव
 निके घरदवकें नं पारकरि नारे ॥ हैं ॥ को सकदि ए जंगर अरविको सकदि ए जं
 डाररहित सो कोजविको सटे प्यावा है ॥ तौ कमल कुंदे षऊ ॥ जावार्थ ॥ को सनामक मो
 रुका है ॥ सो कमल विषे क मोदका अभ्याव है ॥ अरजहां कायरता को मितो ही ॥
 धे है नरनि में नां ही ॥ अर अथरनामनीवका है ॥ अर होठ रुका है ॥ सो मनुष्यानि
 नीवडरावारी नां ही ॥ जो को उ अथर दे प्यावा है ॥ तौ होठ दे षऊ ॥ अर जहां निर्द
 षडा विषे है ॥ जीवको ऊ निर्दनें ही ॥ १७ ॥ अर जहां जावना ॥ विचार विषे दृष्य
 छुजावते है ॥ अर और जावना नां ही ॥ अर मुरजावनां फूल निकी मात्मा वि
 षे है ॥ मनुक निके मुष विषे नां ही ॥ अवे धनगन अस्वादिक कूं है मनुक निके नां
 १८ ॥ अर जहां गोर गौरवाग अति मनोहर है ॥ वीदसमान सुंदर है ॥ वीद कुं लो गज
 दकरि दे धै ॥ अर वीद वयकरि सुंदर है ॥ बागवयसने पंथीतिन के जगद करि सुंद
 है ॥ वीद नाना प्रकार के पुष्प निकरि सो नित है ॥ अर वागरुना नाप्रकार के

कं

पन्तिकरिसो नित है अरवी दवाण करिसो नित है अरवा गवांण जाति के वृद्ध
 रति करि संयुक्त है अण नगरी का वरि न कहं लग कहैं प्रसिद्ध है महा तम जा का
 विजयार्ध विषै वदपुरी इंदपुरी समान है जतम वत के आवरन हारे मनुष्य ति नि क
 रिनरी अरु तम अवा वरना जतम रूप ता करिसो जायमाना मं नंद वरु अरु का पु
 री विजयार्ध का तिल कह ही है अता का पति अति वल नामाने रेंद्र विद्या धर नि
 का इंद समस्त विद्या धर जाति ति के मुकट परि आरी पण करी है अजा जा नै
 गानु नि के सेना कुंजयं कर अमहा सरवीर अरि मंजु ल का जीतन हारा महा
 मातमा धरा कर् रक्ष का नाणवल दैव वल मंत्र वल गारी वल सावत नि का व
 ल ति नि करि संयुक्त संधि विग्रह दान आसन संस्था अश्रय राजा नि के ष
 टगण ति नि करि नृकुंजी नता नया सद विद्या धर जा के अजा कारी को नृप्र
 पत्नी नां दी षटगण अर्थ पुन ऊ संधि कहिए भिलाप विग्रह कहिए द्युद्ध अया
 न कहिए असवारी असासन कहिए मुकाम ध संस्था कहिए वचन की इट
 ता ॥ अर अश्रय के दीये ने द जो अश्रय है प्रवल होय ता का अश्रय ग्रही अर
 प पै अश्रयै ता कुं अश्रय रा वै सरणागत प्रतिपाल होय ॥ एरा जा नि के षटगण
 है अश्रय वदरा जा नि का राजा इंद्री नि का निग्रह करण हारा अंतरंग के षट गानु

आ० पु० गो० कास० १) कोषभातो जा० ३) मोक्षधमदा० ५) मच्छा० ६) तिनिकाजी ननहा राना के सदा

४५

कालसुबुद्धी निका संगति। सुबुद्धी निका प्रवेसनां ही। महासेना करि सो नित
मात्र ही ज्ञाना नाँ विमुष जे परचक्र के न पसावत। तिनिकुं जी तना जया ॥ ३ ॥
हाउ दय कुं धरें मां नं दिगा नही हैं। गाज के उतंग पी। विहोय है। प्या के उवा वंस है।

वत्तना न है। पहरु महावलवां न है। पज के लांवी सं। रुहोइ है। प्या के लांवे हा

है। महाजोहा महावाऊ महादां न करि उपनें ज्ञा। अति कुं पोषता जया। गज
कै मद ऊ है। प्या के निरंतर दो नव दौ ॥ १ ॥ अरजा का मुखवां दिनी सहित चंड मां के
विंव कुं जाति करि सो हरूप धजाव डी करताना या चंड मां के किरणिया के सुंदर
ननिका जोति चंड मां दि कुं ने छिपि जायत या जांति रहे तना सो यह सदा उद
रूप नि सिद्धि न कांति कुं धरें। महा मनोहर जा सो अर चंड मां दोषा कर कहिए रा
त्रिका कर नहा रा। अर यह महा गुण क र अ पूर्व चंड मां ॥ २ ॥ या की उपमा को न
को देवे मै ज्ञा वै। या काम सग मां नं त्रिकुटा चल का सिषर ही है। या काम सग तो पु
स निमहित के स नि निति निकारि सो सित। अर त्रिकुटा चल का सिषर पुष्प कना
मादि माण के स्वामी करि सो सित। अर या काम सग सदा नवंक हि ए सदा नवी
जा मे से रे के सकाले सनां ही। अर त्रिकुटा चल का सिषर सदा वै कहिए दां न

न

४५

वने असुरति किरियुक्ता अरया के सिरपरि ववरद है गिर के सिरपरि नी ऊरने
ऊरै प्रदुष्प्रया का वरु स्यात्त विस्तीर्ण मतो हर मो ति निकै हार कि सी सरा सोई
उई वे लि ति नि क रि मं डित मं नुं लक्ष्मी के श्री डा क रि वे का दी प ही है रा जा अहि
वत्त गुण तिका समुद्र ता के गुन कौन क हि स कै भू जा के कर ग न की सं हि समं
न तां वे अर नि ते व काम के तर क सं मं न अर जां द प द म रा ग म णि के किरण निकै
अं कूर समान अर चरण कमल समान भू या के अंग अंग का व र्ण न क हो ल्या
करै जे म तो हर वस्तु है ते स व अ प ने अंग की सो जा क रि जी ती है रण ता कै मनो
हर तो म रा नी मनो हर है अंग जा कै रा जा कै अति वल्लभा जा के रूप मं नू का म के
वां ए ही है अर अ प ने अंग की अजा क रि जा नै अ नंग जो काम ता की अंग जा जो
रति ता रु की प्रजा जी ती है ७० सह रं नी मं नू का म ल त ही है मु ल क निरूप पु स्क नि
क रि मं तित अर व ह प ति वृ ता मं नू जि न वां नी ही है नि न वां नी आ ल क ल्यां न क
कर न ह रा अर रा नी रु आ त म क ल्या ण की कर ण ह रा नि न वां नी दया रूप
अर रा नी रु द या रूप नि न वां नी ज स का षां ति अर रां नी रु न स का षां ति नि न वां
नी ति र्दोष अर रां नी रु नि र दोष सो रा जा कै रां ना स अ ति धी ति अ ति नि कै महा
वल्ल ना मा म हा उ दार प्र ता पी क पु त्र हो ता म या जा के न न म विषै सर्व वं धु न न कै

तत्तर्ह्यवद्या॥ अ० कुमारसवनि कुं प्रियदिनदिन हृदकुं प्राप्नया॥ नृन्मृजारी
 बहै त्मोत्सो गण अशिकवधने मये एकस्यानकवोरिनि कै सपरधावधै है सोमां
 ने अशीरकी सपरधाकरि गणवदे अशीरकी छोटी वय॥ अरगणवदे अ० कला
 विधै महप्रवीण महासखा रमहादाता रमहाबुद्धि वानमहाह्म मावानमहाद
 नमहाधीर्जवानमहासत्यवादी महापवित्र एतन कुमार निर्गुण कुमार सै विनो र
 सिषा ऐ सुते स्वप्नावहे ते न ए॥ अ० राजानिकी विद्या व्याहि ते गुरसमी पसीषता म
 तिनिकरि अत्रे सा मो है ते साकिरण निकरि सूर्य सो नै॥ अ० ते व्याहि विद्या रोजे को न
 विकी॥ अ० नयी॥ अ० वाता० अ० दूरनी ति० अ० आनीषकी कहिये अपनै स्वरूप कुं
 पिछाने अथ नांव लपिछाने अ० न लेवुरे कुं पिछाने फरे सावे कुं जानि जाय॥ नै सै
 जो हरी जौ हार कुं पिछाने॥ अ० अरनयी कहिए आस्यता विधै धर्म अथर्म का स्वरूप
 याहे ताहि नीकै जानै अथर्म की प्रवृत्ति मेढै धर्म की प्रवृत्ति कै रै॥ अ० अरवाता कहि
 यी विधै अर्थ अर अनर्थ होय है सो नीकै सुनि अपनर्थ मेढै हलकारे निके मुख
 वार्ता सुनि प्रजाका दुष निवारण करै॥ अ० अरदूरनी निकहि ये ने म्पाय वंत है ति
 सं प्रीति राधै अरजे अन्पाय वंत है तिनि कुंदे शतै निका सिद्धेय नै सा अणधही
 य नै सादूर देया दुष्ट निका निग्रह करै न ले पुरष निप रिअनुग्रह करै॥ अ० अ०

न्नीषित्वात्मविज्ञानं धर्मधर्मोत्रया स्थितौ ॥ अर्था नर्षो विवर्त्तयिष्यते ॥ दंष्ट्रनीक्ष्यो गन्ता
 यन्तो ॥ याश्चो ककात्रार्थ उपरि तिष्ठा है सो राजकुमार मसविद्या गुरु के
 गतै पटता नया ॥ सो पटिक रिश्चा धि क प्रकास कूं प्राप्ति नया ॥ ३६ ॥ जै से अर्गा नि
 पवन के योग तै अर्थिक है दीप्य मं न होय ॥ ३७ ॥ विनय कूं अर्गा दिदैया विवै अर्ने क
 गुण सोया हि दोष जों निराजा युगल जप देत नया ॥ ३८ ॥ पिता पुत्र विवै अर्ति स
 वहरा जलक्ष्मी पिता पुत्र विवै विं ना ग कूं प्राप्ति नई तथा पित्र पंडथार सोहती नई
 कारु प्रकार भित्त ता ना ही ॥ जै सें गंगा हिम बोन पर्वत तै निकसी ॥ अरस मुद्र पय
 धं रथारावली गई करुं धं रत न नई ॥ ३९ ॥ सो राजा अति वल वक्र त पुत्र निक रिपु क
 है तथा पि एक म हा वल पुत्र करि अर्पा कूं पुत्र वां न मान ता नया ॥ जै सें अर्का स वि
 वै अर्ने क प्रह नक्षत्र है परंतु सूर्य स मं न ओ र जो ति वं न नो ही ॥ ४० ॥ एक दिन राजा
 विषय नि विवै अर्ति वैराग्य भाव कूं प्राप्ति नया ॥ काम नो ग विवै न स्वारहित होय नो
 नें ॥ ४१ ॥ दिक्षा का नृद्यमी नया ॥ काम क हि ऐ स पर स इंद्री अरर स ना इंद्री ति नि के
 षय अर नो ग क हि दो ता सिका ॥ नेत्र अर क ए ति नि के विषय अथवा काम क
 एने विषय विद्यमान नां ही ति ति का अर्नि ज्ञा ष अर नो ग क हि ए ने विषय प्राप्ति
 नये है ति नि कूं अर्ति अर्सा सक्त होय सेवनां सो राजा काम नो ग तें विरक्त होय राजा

कुंटाग्रजानतामया॥१॥ कै साहै राजविषके फूलसमं न अर्पितै विषप्रज्ञाणी निके प्रा
णनिकाहर्ता अरमहादृष्टी विषसर्पके स्थानसमां न अर्प्ये तज्या न को॥२॥ अरपरा
पहरी पुष्पनिकी माला तासमां न मली न मद्गुरण निकुंजो गिवियोगतां ही अर
दीखी की नोर्दजासका कर्ता न्नि सार्ह राजनजिवेही योग है ॥ फ्रै सै मानता जया
॥ वक्ररिव द्रु द्विजो न मन मै खिंतवता नया जो मै समर्थ होय ध्यां न रूप कुवारी क
समारूप वे लिकुंकाटं प्यह संसार विष वे लिसहा दुष की देन हारी है ॥३॥ अयाका
मूलमि प्याला अरजनमजरादिक पुष्पा अरमरण फलमहाकष्टकारण यद्
दीदी वे लिताना हिए जीवरूप जमण विषयरूप मकरंद कै काजि सै वै है ॥४॥

धकानात्राकरिया कुंछे हूं योवनपिण नंगु अर ए सो गह्वर जल सम

हिका कारण नोही उत्तरी वि रूप जाला कुं वटा वै है ॥५॥ अर यद्वारा रुम
संनद्वरगंध विनछ विनसरुण नंगु रम्य कुं व जकुरि वस्या पिणमत्र मै दि
जायगा ॥६॥ प्यह मरारी वां ससमां न विकल दुष रूप गां वि निकरि नस्या का ल रूप
अगनिक रि नस्म होयागा ॥ जे सैं वां सपर सपर अगन ड ते शह कर ते नस्म होय ॥ ते सैं
द्वारा शह कर ता नस्म होयागा ॥७॥ ए वां धव वं धन के कारण ॥ अर यद्वधन दुष
कामूल ॥ अर ए विषय विषमि श्रित आहार समान आहार नोही ॥८॥ ज्ञाना नै यारा न

जोग करि पूर्णता है ॥ होऊ परलक्ष्मी अति चंचल जल कल्लोलं वर अघिर ज्ञानी श्री
 वनिकुं ग्रही वेद्योगनां ही ॥ यह संसार की माया अंधा दृष्टि की अविवेकी अज्ञिदा
 षा करै ॥ ४९ ॥ जैसे साति श्वयकरिव दूध रघुवका राजा भिषेक करि राजका भार पु
 न्ने कै मिर पुरि ॥ ५० ॥ आपु नमन गज की नोई सनेह के बंधन नुराय दार तै निकम्पा ॥
 अनेक विद्या धर नि सहित जै नें दी दित्त आदर ता जया ॥ ५१ ॥ सोम दान गम ह्यप
 वित्र जैने सरकारूप धरि करि मस्तन पकर ता अत्यंत सोहसा जया ॥ कै सा है जैने
 स्वरकारूप मस्ताना ग के कण परित नता समान दुर्लभ है ॥ अरपंच मम तिनी न गुरु
 सिर्द्धि कर्म वक्र के जीति वेकी आक्ति नि निरुंधर है ॥ अरपंच मस्तान रूप मस्ताने
 धा ति निक रिमं दित है ॥ ५२ ॥ अर जै से नी जाक स्त के अंति अंति मकुल कर कै समै
 क न पद द्रव स्त्र आभूषण निक रि रहित होय है तै मानि रयं ध है ॥ अर मम स्त दी
 षा निक रि रहित है ॥ ५३ ॥ मां नुय द मुनि राजा रूप अविनासी सुषका कारण निन
 वचन समान है ॥ अर पंछी नि का वृत्ति कंधर है ॥ एक स्या न क वास नो ही ॥ ५४ ॥ अ
 र विषाद जग दीन तार हित मां नूं सिद्ध स्या न समान है ॥ अर जै से दान वत्त य जो
 क का आधा रहै ॥ तै से रिषि का रूप न मस्त मादि दान रुका धर्म का आधा
 रहै ॥ अर मां नूं सरव संघ रहित परमा एकी चेष्टा कंधर है ॥ जै से अविनामी पर

माणं ह्यजीपश्मिमाणं के संगतैरहित है तैसै परसंबंध तैरहित है निर्वणिका साधन
 नृराजन त्रयका स्वरूप ही है ॥ भा० ॥ अति उदार निर्विकार महागुण रूप तेजक रिद्धि दीप
 मानमहापवित्र राजनीका स्वरूप धारत्वा ॥ अरक्षणं कालतपक्वता यथा ॥ अरम
 हावल तत्र निषेक करि संधासन विराज्या ॥ राजका नाराज कुं मो है ॥ सकल विद्या
 दीन श्रेणिके अया यथा य निपशे ॥ तिनिक रिपू जित है चरण जाके ॥ भद्र सो राजा
 महावल तत्र तिवल का पुत्र दैव वल करि मंथित महाबुद्धि दान प्रणये कर तव कुंज
 हा धीरवीर अ पनी मुजा निकावल विस्तार तावेरी निकावल कुं दुरिक रता
 यथा भूरा जमंत्र की आह्निक रि सामर्थ्य रहित की ॥ है वैरी रूप विषधरा जैया के
 प्रताप करि सव विक्रियारहित होय गये ॥ ५७ ॥ अरय रुम हारा नाम हा मधुर
 ता कुं धरें मिष्ट आं मफल समान सो हता यथा ॥ नापरिष्रजा की दृष्टि अ नृणां रूप
 ती भद्र ॥ ५८ ॥ न तौ यद् अत्यंत कठोर न अतिकोमल राजा निका मध्य भद्र ति
 अं गीकार करि जगत कुं वसिक रता यथा ॥ ५९ ॥ मोहि ते वैरी को मत्रो धत्तो भे मद्र
 दूर्ध्वजा ते ॥ अरवा रि ते वैरी राज के विगारा अत्ता यदुत्ता अत्ता ते विमुख ते सव
 आत्ता रूप की ॥ जै सै शेषमके योग करि जीवी जो रजता हि मे दद वा वै ॥ तै सै शत्रु
 निकुं द वाये ॥ ६० ॥ धर्म अर्थ का मजा के परम पर वा धारहित वा का निपुनता तै ॥

दाधवताकेजावकुंजासनये ६२ और राजपायमंनेहाथीकीनार्दमहोनमतहोय
 है अरयहराजपायअधिकसांतताकुंजासनया ६३ और लोकाधनजोवनरूप
 कुलजातादिकरिमदकुंधरैहै अरयाकै ६४ निगर्वताकेकारणनए ६५ जैसैं
 कामविद्याकरिआंएाउनमतहोयतैसैं राजलक्ष्मीकरिजनमतहोयहै अरया
 विवेकीकैवहराजलक्ष्मीसांतताकै निमित्तहोतीनर्द ६६ अरयायकानावना
 जाकेराजमैनसुभं अरयजाकुंयाकुलतासुपनामात्रवीधेनीकदेननर्द
 जाहिजनकृष्टराजाकरिहोसोयहमहावलवाननया ६७ जाकेकार्यकैदेविवेक
 आंषितोवीरवीरगटपुखविखरै अरदोयनेत्रसोमुखकामंनद्रूपपदार्थनि
 कंदेवै ६८ अथानंतरयोवनारंनविधेयाकारूपजागतप्रियहोताजया ६९ जैसैं
 एवासीकैवंद्रमांकासकलकलासहितपूर्णप्रकासहोय ७० याकेरूपकीउ
 पमाकामकोनवनैकाहै जैकोकामतौअटस ७१ अरइहसुंदरसरीरद्वयगोचर
 ७२ याकामसागभवरसमंनसंमकेसकोमलकुटिलासुगंधस्त्वामलंवेति
 निकरियुक्तमुकटधरैत्रैसासोहै ७३ मंनेत्रप्रपटलसहितसुमेरकासिषरहीहै
 ७४ अरललाटविसीएाउसतअतिसोभाकुंधरैमंनेलक्ष्मीकैविश्रामकैअ
 र्षिसुवर्णमर्दसिलातलहीरव्याहै ७५ अरजाकीदोउजोहकुटिलमंनेम

दनके धनुष ही है ॥ ७५ ॥ अर दो जने जौ दन के समीप कै से सो है मां नूं ज गजी न जो क मता के
तीरु एवांण ही है ॥ ७६ ॥ अर नन कुं मलति निक रि मं हि त दो न को न ज्ये से जा से मां
ति रूप स्त्री के ही दि वे के हि डो ला ही है ॥ ७७ ॥ अर महा म नो हर ज तं ग ना सि का दो ज ने
त्र नि कै के सी सो है मां नूं दो नूं ने स पर धा के नि रो ध कै नि म सि से न ही बां धा है ॥ ७८ ॥
अर जा का मुष क म म मां न दां त नि की दी ति रूप के म रि अर अ ध र रूप सु गं ध पु न नि क रि
जि त ॥ ७९ ॥ अर गिर के तट समं न म हा वि सी एं व द स्य लं सी सि न के दार रू प न ल के
प्र वा ह क रि मां नूं ल द्मी के मुष का का र ण म हा उ दार धारा मं न प म ह त ही है ॥ ८० ॥
के नु न सि पर के दूर सा हि त दे दी प मां न मां नूं ल द्मी की की डा के अ र्ण की डा गिर के सि प
ही र त न म र्द र वे है ॥ ८० ॥ अर दो नु नु जा नू डा स मा न लं ची सुं द र ह ये ली नि क रि सो नि न
मां नूं क ल्प व रु की उ न त सा ष प ल व क रि मं हि त ही है ॥ ८१ ॥ अर जाल र कै म ध गं जी र ना
मि द स एण व र्त्त सो मा कूं ध र ती म र्द मां नूं स मु ड का न व ण ही है ॥ ८२ ॥ अर के द रि की सी क
दि अ ति सुं द र कां ची दा म क रि वे छि न सो ह ती न र्द मां नूं वे दि कं स हि त जं बू दी प की ध
ही है ॥ ८३ ॥ अर दो नु नि तं व म हा म नो हर मां नूं सो जा रूप गिर के नि तं व ही है ॥ अर

जै के दी चि
स पर

निके ने त रूप वा ण नि के नि म नें ही है ॥ ८४ ॥ अर दो नु जं घा व जू के षं न स मां न
अर के नि के षं न स मां न को म ल म हा म नो हर मां नूं का म के ती रा नि के त र क स ही

है। ७५ अथ एक मत्तसंनवरण अंगुली रूप पत्र निकरि सो चित नम नि की कंति रूप के स
 रि कंधे में नंल द्मी के निवास ही है। ७६ या नांति राजा का रूप नव द्योवन विषे
 अति सोहता मया। मां नं सव सुंदर ता का संवेंक रिया का अरी रर था है। ७७ सो के
 वल रूप की सो जाही करि जात कुंजी तता मया ७८ सो राजा दी रवद र सीता के था रि
 त की सक्ति ता करि जात कुंजी तता मया ७९ सो राजा दी रवद र सीता के था रि
 मंजी महा बुद्धिवान मां नं ए था सो मंजी राजा के था ए ही है जे सें जीव के ईंदी व
 त अथा दुस्वा स ए था रि था ए जीव तें के भूत कार ए है तें सें ७९ महा मति १ सं
 सि त्त मति १ सं मति ३ सुयं बुद्ध था रि राजन रूप मं दि र के मुत्त यं न हो ते नये
 ए०॥ तिति मै सुं यं बुद्ध स म्पा दृष्टी सुद्ध बुद्धी औ र तान् मि थ्या दृष्टी परं दुस्वा मि का
 य विषे था सों दी सावधान राजा के हित विषे न दृमी १९ म हावल का राज सो ई
 मया खंद ता के ए था सो मंजी पद स मान हो ते नये १९ सो राजा कद रु था रि नि
 स्र मंत्र करै कवरु ती न सं कद रु दो य स्र कवरु क सं १९ ३ ए सव ही राज क
 य विषे ति पुण्य थार्य मंत्र के वेता १९ राजा अपव कृत सावधान राजा न का य मै नि
 पुण सो या के मंत्र की मंजी अति प्र सं सा कर ते न ए तें सें जा वोन ती र्थ कर स्वयं बुद्धि
 निके वैराग्य जाव का लो को तिक देव सु ति ही करै है १९ सो राजा मंजी नि कृ था सा

品

सुमेर सो है ॥ ४ ॥ राजा के वरु ल विवै मोति व का हार वं ड मां की कि रणि समान उरु ल
 अरै मा सो हता मया ॥ जै मा हि मा व ल के त ट विवै नी ॥ ५ ॥ राजा सो है ॥ ६ ॥ अर मोति नि के हार के
 मभ्य दं ड नी ल म ए के सी मो ह स्ती क नी जै सा हं स नि की पं क ति मे स्यां म कं व का हं स
 सो है ॥ ६ ॥ मं जी प्रो हित ॥ से ना प ति राज श्रे ष्ठी ॥ तथा अमो र अ धि कारी राजा के निक दि
 कृते ॥ ७ ॥ सो राजा का रु सं मु क ल नि का रु सं सं ना ष ए का रु कूं दां ना का रु का स ना
 मां न का रु कूं स्था न का द र ता डि वे हा क रि स व नि कूं त सि क र ता रा जा क प की द हि
 क रि चो ध ता सं ता स व नि कूं भ फु लि त क र ता क ता ॥ ८ ॥ अ र गी त नृ त य वा दि न हो य र
 हे क ते रा जा अ ति प्र वा ए पुर ष ति सं गो ष्टि क र ता क ता ॥ ९ ॥ अ र ना ना प्र का र के गु ण वं त
 लो ग अ प ने अ प ने गु ण दि षा व ते कृ ते ति नि की स भा के च शु र स्तो क नि स हि त रा जा प
 री का क र ता क ता स व नि कूं य था यो ग प दा न दे ता क ता ॥ १० ॥ अ र व ने र ग जा म हा
 सा वं त ति नि अ प ने अं शे हि पुर ष नि रु धि ने ट ने जा क नी ति नि कूं दार पा ल ल्या य क रि
 ष णा म क रा व ते कृ ते रा जा अ नु ग्र ह की द हि क रि यो ष ता क ता ॥ ११ ॥ अ र ति नि
 की ने ट ले ता क ता ॥ प र च क के व डे च डे नृ प नि के म ह न र म भु क ति नि कूं व स्त्रा न
 र ने दे ता य था यो ग स न मां न क र ता क ता ॥ १२ ॥ या जो ति प र म अ न न द कूं वि स त स
 अ द भु त न द य कूं भ रं मं जी व ग सि हि त य थो ष अ र्ज न द मं ड प वि वै वि रा ज क ता ॥

सवही

। तासमैस्वयं बुद्धमं त्री पूर्ण है बुद्धि जाकी सो रा जा कूं प्रीति रूप देखि स्तामी के हित
 महि म हाइ छ मिष्ट व व न क र ता म य ॥ ४ ॥ हे ष ग ॥ ५ ॥ स मे री बा त सु न क ॥ ६ ॥ मे ति हो थै क
 र्पा ए की क रूं रूं हे व सो य ह वि दा ध र ॥ वि भू ति पु न्य का फ ल ज ॥ न क ॥ १ ॥ ४ ॥ ध र्म ते द्रष्ट
 प दार्थ नि की प्राप्ति होय है ॥ ता तै म न वं छि त सु ष हो य है ॥ सो भु र तौ षे कूं ध र्म स् ॥ प्री ति क
 नी यो ण है ॥ ४ ॥ ५ ॥ य ह स व रा ज संप द ॥ ना ना प्र का र के नो ग उ त्त म कु ल वि वै ज न म सुं द
 र ता ॥ स्वरूप ता भू मि त ता ॥ दी र्घ आ यु ॥ आ रो ण ता ॥ ध र्म का फ ल आ नो ॥ १ ॥ ६ ॥ का र ॥ वि
 ना का र्य की उ त्त प ति नों ही ॥ जै सैं दी प वि नों दी ॥ ति नों ही ॥ १ ॥ ७ ॥ दी ज वि ना अं क र नों ही ॥ मे
 दा वि नों वर्धा नों ही ॥ छ त्र वि नों छा य नों ही ॥ तै सैं ध र्म वि नों संप द नों ही ॥ १ ॥ ८ ॥ अ र जै सैं वि
 जी त द्य नों ही ॥ स्ता र भू मि तैं ध न की उ त्त प ति नों ही ॥ आ ग नि तैं आ ल्हा द नों ही ॥ तै
 ध र्म ते सु ष नों ही ॥ १ ॥ ९ ॥ ता तैं ध र्म का सा ध न क र ॥ ज ॥ ता तैं दं ड ॥ ध र्ण ॥ दा व क र्ति
 द दी पा र्दे ॥ दि व ग ति पा र्दे ॥ अ र प रं प रा य भु क्ति की प्राप्ति होय ॥ स्व र्ग मो
 र ॥ १ ॥ १० ॥ ध र्म ही है ॥ ता का वि स्ता र सु न क ॥ १० ॥ ध र्म का मूल द या है ॥ आ णी नि के ड ष
 षि वि त्त को म ल हो य प रा ये ड ष ति वा रै सो द या क हि ॥ एक द या की र र्ता के
 नि म ति स म स्त गु ण क है है ॥ ११ ॥ म न दं दी ति का नि रो ध ॥ रु मा ॥ अ हिं सा ॥ त प ॥ दा
 न ॥ सी ल ॥ आं न वै रा ण ॥ स र्व ध र्म के वि नू है ॥ १२ ॥ अ हिं सा ॥ स त्प ॥ अ दौ र्य ॥ ब्र ह्म च

योपरिग्रहकात्याणधर्मकेल्लक्षणहै। यद्द्वीतरागदेवकानाध्याधर्मसारहै। २७२।
 तैस्सर्वशर्मादिधर्मकेफलजानिधर्मविषेस्थिरबुद्धिकरु२७३। हेबुद्धिमानमहाम
 गयहैलक्ष्मीवंचलहै। याहिसाम्प्रतीकायात्वाहैतोअपनीशक्तिप्रमाणधर्मकोस
 वनकरु२७४। त्रैलोक्याकेकारणधर्मरूप। अर्थरूप। यसरूप। वचनकहिस
 यंबुद्धमंत्रीमौनगहिरह्या। प्रहृतवडरमतीमहामतिनामधर्मकेवचनमहिंस
 क्यासोभूतवाक्कहिएनास्तिकतादताकीवरदाकरतानया२७५। चारवाक्य
 शकेअभिप्रायकरिजीवतलकाअभावकहताजया। दहोकोउबलकहै। जोमह
 विदेहमेंद्वयमिथ्यात्वनांदीकुरुतबुद्धदेवनांदीसोनास्तिकवरदाकैसैंअर्थ। ताक
 समधान। नावमिथ्यातजीवनिक्केअतादिकालकात्तागाहैसोसदासर्वत्रहै।
 जाकैसमक्षउपजैताकैमिथ्यातज्ञायासमक्षकालरुणार्थस्तिका। अरमिथ्यात्व
 कालरुणतास्तिकसोमिथ्यादृष्टीजीवनिक्केनास्तिकबुद्धिउपजैहै। ताकाअश्व
 यनांदीनास्तिकबुद्धीमंत्रीराजासकहैहै। २७६। हेदेवजीवपदार्थहोयतौधर्मका
 साधनसंसंवै। अरजीवहीनांदीतौधर्मकेनकरैअरफलकोनजोगवै। २७७। दृष्टी
 जल। अगति। पौनद्वनकेमितापतैंचेतनाप्रगटहोयहै। जैसैंमधुकेकारणगुडावो
 रजडीइत्यादितिनिकेसंयोगकरिप्रदसक्तिप्रगटहोयहै। २७८। कायातैंनिलको

जन्मिषपदार्थहमावेजानिवैमं नांही। आरीरही आत्मा है। जैसैं आकाशका पुष्पकारू नैदे
षानां ही कहिवे मात्र है। तैसैं मशरूखें जुटा जीवकारू नैदे षानां ही कहिवे मात्र है। ३९
तातैं तथर्मनपापनकोऊ परलोक ए। जीव जलके बुदबुदावत शरीरके मास होतैं

यहै। ३९। तातैं परलोकके सुषनि। मिसि या लोकके सुषन जिजै पैंक रै है। ते दोऊ
लोकके सुषनैं रहित ब्रथा कलेरा जोग वै है। ३३। तातैं दिन जीव निकै परलोकके अर्थ
अमिताषाष्टया है। जैसैं मुख विवै आया न्ना। मिसना हित जिकरि स्यात्। मीनके
सकी आसा करि जल में परै। सो दोऊ षोई करै है। तैसैं या लोकके सुषन जे सो गे।
र परलोक नां ही तातैं दोऊ षोई होय है। ३५। परलोकके अरणी प्रतल जोगनि

तजि सुषकी द्रव्या करि परमवर्के जोग दा है है। सो ग। सका त्याग करि आंगरी चा
है। इनि में बुद्धि नां ही। ३६। या जोति वरु पापी भूतवादी नास्ति कअपने मत कै। युक्ति
कहि सुपहो परसा। वरु रिमं श्रीसंमि तमतवा दरूप षानि कुंषु जावता। मुलक सा अ
नंदिना नादेन वादका प्रकास करि जीवकी नास्ति कहना नया। ३७। वरु पापी दरा
री स्वयं बुद्ध संक है है। हे जीव। वादी तजीव मानै है। सो कोऊ जीव पदार्थ है। कारू
नैदे षाको उजावका दृष्टा है। यह सवर्ज। गत धि ए। नंगुर जे यतायका दिजे दरहित स
कल विज्ञान मात्र ही है। ३९। अरवद विज्ञान अग्र संकल्प नारहित अग्र जे द्यै। सो मरि क

श्रंतिकारि

वक्रविजयजैनांही॥ श्रैसाधिएभंगुरहै॥ २॥ एववनवाकमुनिस्वयंवृद्धवोत्पाहैविज्ञानवादी
तेगविज्ञानअंगकल्पनारहितविनमंगुरहैनाकेंयहसरणादिककैसेसंभवे॥ नववाने
कहीजैसेंतोकमरैहैपरंतुसंज्ञानसदावलीजायहै॥ तेसंज्ञानकास्मरणदिकसंभवे
हैभोसादेसपरणदिकतैजुदानांहीहै॥ ४॥ ४॥ एभंगुरजोवसुताविधैस्मरणदिकहै
सोभूमकरिहै॥ जैसैनवकेसादिकद्रिकरिएहै॥ वक्रविवेजपजेहै॥ तिनिविवैश्रीसीमुं
तिदेयहैमोनेवेहीहै॥ ४॥ ४॥ अरसंसादीजीवनिर्कैएपांचहीडषहै॥ विज्ञानवेदना॥ आ
सा॥ इत्यादिभ्रंरदंडीपांचतथागार्हृदिविषयपांचअरमना॥ ४॥ वक्रविधर्मयतनुएवा
रहडखहीहै॥ तातैसमसपदार्थविज्ञानसंज्ञानतैनिननांही॥ कोईपरलोकविवैफत्ता
काजोक्ताजीवपदार्थउममानोहोसोनांही॥ ४॥ ४॥ तातैतुमपरलोककेसुषकेअर्थअरप
रमवकेडषनिवारणकेअर्थयत्नकहीहो॥ सोब्रथाहै॥ जैसैंफोदाआकासकेपरिवे
काजयकरैसोब्रथाहै॥ ४॥ ४॥ श्रैसाकहिकरिसंज्ञितमतिविज्ञानवादीबुपहोयरहा
अरसतमतनामासत्यवादीअपनीप्रसंसाकरतासंज्ञानेरात्मवादकाअवज्ञं
नकरिवोत्पा॥ ४॥ ४॥ हेस्वयंवृद्धयहंजगतसमस्तभूतहै॥ अरभोगतिकरिमिथ्याहीमा
सैहै॥ जैसैंस्वप्नअरइंद्रजातादिविवैहस्तीअरयोडकादिदृष्टिपरैहै॥ सोमिथ्याहै॥ ४॥ ४॥
सातैंकहैतिहागजीवअरकहापरलोकयहसर्वमेदपटलवसधिएभंगुरहै॥ अरसा

त्प है ॥ ५७ ॥ या तैतुम जैनी परलोक के निमति तपश्चरण दिक है ॥ सो इथा कसे अकरो
 हो ॥ परमार्थ कूं नां दी जानो हो ॥ ५८ ॥ जैसै ग्रीष्म रति विषे सग सगत ह्मा कहिए आइती ।
 कूं देविक रिज सकी बुद्धि करि दौरे सो जन कहां ॥ जैसै तुम परम वविषे मुख के अर्थ वि
 या तप संयमा दिक रिक्त स करौ हो ॥ ५९ ॥ यो नांति वेती नो मिथ्या ती मृतवा दी ॥ वि
 स्तानवा दी ॥ अरस न्यवा दी ॥ षो रे दृष्टां तयो दी युक्ति करि इथा वचन कहि चुप हो
 तव सयं चुड़ती नुं काषं न करती दोली ॥ ६० ॥ अथ ममृतवा दी सों कहै है ॥ स्निग्धता वा दी
 त इथा आत्मा की नासि कता कै सें कहै है ॥ ६१ ॥ अथ तेज वा यु ॥ ६२ ॥ निर्योग तैं
 जाव हो है ॥ ज्यो सीत मा नै है ॥ सो प्रह्म मिथ्या है ॥ ६३ ॥ निभूत नि तैं जीव जु दा है ॥ ६४ ॥ अनासि
 रि ॥ ५८ ॥ काय अर आत्मा एक ना दी ॥ काय जड है ॥ अर जीव चैतन्य है ॥ दोउ पदार्थ के
 स्वभाव भिन्न है ॥ ५९ ॥ ६५ ॥ निमै एक नां दी ॥ जैसै षडग अर म्यां न भिन्न है ॥ षडगतौ
 अम्यं तर है ॥ अर म्यां न वा दा है ॥ तैसै जीव अम्यं तर है ॥ आरीर वा दा है ॥ ६६ ॥ अर जीव के
 लक्षण चेतना सो दृष्टी अपते अवा युक्त रिज सन नां दी ॥ ६७ ॥ निमै जाति जे दृष्ट है ॥ सो ॥ नि
 भिन्नता तैं चैतन्य का जान पनां होय है ॥ ६८ ॥ देह के विकार जे इंद्रिया दिक ते चैतन्य सोय
 दे कूं समर्थ नां हो ॥ अर न स्या दि दृष्टी के विकार ति तैं चैतन्य जु दा है ॥ अर मूर्ति के सें
 ध तै रहित है ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ अदि जड चैतन होय दे कूं समर्थ नां हो ॥ जैसै धर अर दीपा

अथ मजीव

कासंवधनिन्ननिन्नहै। तैसैं जीवअरपुन लकासंवधनिन्ननिन्नहै। ५६। जीवकाअरसा
 नादिगणकाएकीभावहै। जीवअरजडकाएकत्वनांही। अरसर्वसरीगैविषैएकअज्ञात
 मातांही। अंगअंगमैगुदगुदंजीवहै। ५७। हेअज्ञवादीजीवतौअमूर्तकहै। अरपृथ्वीआ
 दिजडहै। तिनितैजावकैसैंनिपजै। मूर्तीककारणतैमूर्तीकनिपजै। अमूर्तीकननिप
 जै। ५८। जैसाकारणतैसाकार्य। तवअज्ञवादीवोत्या। हेस्वयंवुद्धअमूर्तीकइंदियज्ञानमू
 र्तिवतइंजीवतैनिपज्यादे। पिहै। सोकारणतौमूर्तीक। अरकार्यअमूर्तीकक्यो।
 जया। तवस्वयंवुद्धकही। इहइंदियज्ञानकथेंचितप्रकारमूर्तीकहै। ५९। काहेतैजो
 एसंसारजीवनिश्चयकरितौअमूर्तकीकहीहै। अरव्यवहारनयकरिअज्ञादिका।
 लकेकर्मकरिवंधैहै। अरीरकासंवधधरेहै। तातैइतिकुंकथेंचितप्रकारमूर्ती
 करूकहिए। याहातैइंदीयज्ञानितज्ञानरूकथेंचितप्रकारमूर्तीकजानइभइंजीविके
 योगकरिषाटहोयहै। इंदीयाकेतिमतिरूपकारणहै। अरमूलकारणजीवकाअमूर्त
 जावहै। ६०। जीवतिकेअमूर्तपरिणामकर्मकेसंयोगतैहै। अरकर्मकासंयोग
 गादिजावतिकरिहै। ६१। तवअज्ञवादीवोत्याजीवतिकेकायरूपपरणमनकरिवेकुं
 कोऊऔरहीकारणहै। तवस्वयंवुद्धकहीकर्महीहै। सारथीजाकेऔसासंसारजीव
 सोहीकारणहै। ताविनाऔरनांही। ६२। अरतत्कहैहै। जीवअविनासीनांही। पद

लाग्यारखेफिरहोतआयेअरयहसमरखेडिआगेनजाये। जलकेबुदबुदावतन
उपजेहै। अरविलयजांयगे। सोअैसेमाविपरतिअक्षमतिकरजाजीवअविनासीहै। स
रविनिसरहै। नवेनवेशरीरजीवणहैहै। ६४ अररहेननवादीकारणदोयहै। एकमूत्रका
एअजातिमिसकारणसोजीवकेदरुआरीरमूलकारणतोनवनैकाहिनैदनिदे। उति
कीजातिभिन्नभिन्नदावेहै। तातैमूलकारणनोही। ६५ अरकहोगेनिमसिकारणहै
तौ। निमसकारणतौआरीरनया। मूलकारणकौन। कदाविकहोगेमूलकारणसह
मनरवचुष्टयहै। प्रथीआदिसोयहूरुअसम्प। ६४ एअरतौदेहकेकारणहै। आत्मा
केकारणनोही। आत्मासब्यंभूहै। कारुकरिकीयानोही। अरदहदेहमूलमई
त्मादेहिनैभिन्नअर्थां ६५ जैनतलजलएलीएविराजेहै। सोजैनमलजलएकामूल
रणआत्मादीहै। ६५ पृथ्वीआदिनउहै। उमजोमदिरकादृष्टानदीयाजोगुडवो
जडीआदिसामग्रीमिनिकरिमदिराहोएहै। तैसैपृथ्वी। अपनिनवायुकेमि
पकरिजीवहोयहै। सोयहदृष्टानयादीतैमिथ्याजोमद्यकेकारणरुजडअरमद
किहूजडकराणतैजडहोया। जडनिसैंवेननाकेसैंहीय। भूतवचुष्टयतौजड। इनि
तैवेनमाकीप्रादत्तानहोय। ६६ हेमूतवादीजानिएहैनूनूनकरिग्रहीतहै। तौ
भूतलागाहै। तातैजगतकुंनूतमात्रकहैहै। सोतेएकहोनोअसम्पहै। ६७ पृथ्वि

वी आदिभूतचतुष्टयविषैर्धैवतनांसीत्यौजनकेसंयोगविषैवेतनाकैसैंशुयजै अभवेतनवि
 धैवेतनासक्तिनांसीयह्नातप्रगटहैनकहैहैयह्नागतजीवरहितहैसोअसजीवनिकरिअ
 स्माहैएवातस्वांशुधुक्कीसुनिकरिभूतवादीवोत्याहैस्वयंशुक्कीवतौहैपरंतुपरलो
 कनांसी॥६॥तवस्वयंशुक्कीहैनासिकतुमजीवकावर्तमानशरीरमानांसोवर्तमा
 नसरीरतौआगैशरीरयाताहिछेडिकरिआपानवभयाअथ्यहह्नाशरीरनरहैगा
 तवओरसरीरविषैजायाजैसैवर्तमानशरीरद्विषैतानमईजावतिहैहैतैसैंहीअस
 तअनागतदेहविषैनीतिहैयाअरतिहैगा॥६॥सोशरीरसंरुजैसरीरनांएहीपर
 लोकायह्नुमनिसंदेहजानोयह्नाजीवजैसेकर्मकरहैतैसेएअवविषैसोगवैहै॥७॥
 अरकैयकजीवतिकंजातिसमरणहोयहैसोपरभवतथातौजातिसमरणकै
 सैनयासोजातिसमरणतैअरजिनवचनकीप्रतीतितौअरअनेकदेहनिविषैग
 मनागमनतैजीवसदासासताहैहैअसतानमावकरिसंसारअयावतुर्गतिसें
 प्रमणकरहैअरज्ञानमावकरि॥६॥सिपदविषैअचत्तरहैहै॥७॥जैसैंअक
 दियेवादित्रसोवादित्रीकावजायाजाजैहैतैसैंयासरीरकीसुषुप्तकेअभिप्राय
 कुंसीएंजोवेष्टासोजीवकेयोगतैहै॥७॥अरभूतसंयोगतैवेतनाकीउदयनिहो
 यतौगंधिवेविषैवृक्षेवटाईएजोहांडीताविषैमाटीसोष्टयीहैअरहांडीभैंज

लज्जगानिकासंयोग है पवनकार्फकनाही। एतुत्तवउष्टयमेत्तेनोचन
नदीपजी। याज्ञांतिनरवादी निर्माणाभोमतनाविधेद्रूपणकैउपभिवेतेतिनका
तमृदितिकेप्रतापवतदृष्टाहै॥ अतवादीकेवचननरनागेपुरपकमेहैभिन
मेसारनाही॥ अथाज्ञांतिस्पादवादक्रीयुक्तिकविनरवादीकोदृष्टायस्ययवृ
ज्ञानादेतवादसंकरतेमये। हेवित्तानदीदीनकरहेहै॥ अउवेतनसमस्तानमात्र
है। द्रजापदार्थनांहीसोतेरेहीकहिबैमेदेतनावमासहै॥ एकनोनवकदायाप्रव
उद्गजाहै। जोवित्तानमात्रएकहीहै। सौकरनांकोपस्यात्यरमाधिकदिगैअकर्म
विएअरसाधनकहिएसाधिवेकानपायसोएदोउनांएकहीहै। नानवाकानिअ
कोनसोतिनया॥ ७५॥ अरउपदार्थनोज्ञानवर्जितहै॥ अरनअसीकरहेहैसोभ
कलज्ञानमात्रहीहै। सोतेरेअमेववनहीनैअप्यपदार्थनिकामिदिस्येयदेअर
नोकदावितकरहेगायद्वित्तानमात्रसाधकववननवित्तानदीहै॥ ७६॥ नोहेम
इद्वित्तानमात्रकष्टनकोनप्रमाएकविभिरुनया अरकोननेमाअरअय
दइहितनोअर्धैतवादताविधेदृष्टगृहिदेवाभाअरयदृष्टगृहिदेवापयेमानेद
कैसेमया॥ एकहीवसुहैतोपुरुशिष्यसंवेदकारेकाअरसोतकानपायकरहे
कावित्तानदेतनावसाधननाही॥ ७७॥ अरसाधनवित्ताननकातिश्च्यतांदी। जोनि

द्यपदार्थनहोहितौज्ञानजननैर्कोनको। अरजानैविनिज्ञाननामकैसैपावै। नैसैष
 काभिवेयोसवसुहीनहौहितौप्रका सकनामकैसैकहिदेसैआवै। तातैप्रकासिवेयोपप्र
 रप्रकासनेवाएअनादितैहै। सियअरज्ञानकासंवंधअनादिनिधनहै। अरनृकहै
 हैएकविज्ञानावैतवादहीहै। तोइहअपनाइहपरकाओसाजानपनातैहै। यहैअक
 नाही। जोतकहैगाहोयहै। नौयाकहिदेसैअवैतवादकारवंडनमया। ७७। अरजोकेहैगा
 मेरेअपनेपरयेकावेदनाही। तोतैरेओसाविद्वारकाहैतैमयाजोइहसैअएपरजोतकहै
 गाअतुमानकरिजाना। तोतैरेइजोपदार्थकीसिद्धि। तिश्रेकरिजई। जोइजापदार्थयातौ
 अनुमानकीया। ७८। अरजोसर्वपदार्थविज्ञानरूपहीहै। तोइहवचनकल्पनासकल
 दयाइजापदार्थही। तांहीतोसांवधवकनिर्नयकाहैतैमयाजोतैरेमेदकल्पनातोहीतै
 स्वप्नपरमतकाविकल्पकाहैकाएकहीपदार्थहै। तोसत्यअरनिष्ठाकेसैवनें। ७९। ता
 तैसाभ्रमाधनकेमेदतैवाह्यपदार्थहै। अरसवनिकाज्ञानानहै। तहेयज्ञानदोषभ
 नांही। मानैहै। सोइहदयावात्तकतिकासावचनहै। मूढतैकुं प्रियलागो। विवेकीभ
 निरुंनलागो। ८०। याजोतिवरचाकरिविज्ञानवादीकूहटायस्याबादीपुन्यवादीसो
 दोसेहेपुन्यवादीनसर्वपुन्यमानैहै। ककुहीनांही। तोतेरायहपुन्यवादकाकहनहा
 रासाखहैअकनांही। ८१। तोतकहैगाहै। तोतेरापुन्यवादहत्तागया। अरजोकेहैगा

नांहीतौतैँइहस्सवाटकीवरंवाक्कांनैँनांनी॥इहश्मपवाटकौंननेवतायावहृक्कंनहा
हैकनांही॥जोकहनहाहैअरकथकहैतौश्मपवाटकाहेका॥अरजोकहोकोउव
कासोही॥अरयहवाटरुनांही॥तौसर्वश्मपनुमकैँसैँजायां॥७४॥नातौँनिहोरेशुमपवा
दीनिकेववनवावरेकेसेहै॥जीवपरलोकअरदयारूपसंयमरूपधर्मषण्ढहै॥७५॥य
हसर्वज्ञकाभाषासिद्धांततत्त्वज्ञानीनिकुंअियहै॥अोरसंसारजीवनकेभाषेब्रथावाट
त्याअहै॥७६॥यानांतिसयंवुडकेववनकारितीनृवादीहटै॥अरसकलसमानि०सं
जई॥जिनसासनकीनविसवनिक्कैँजई॥अरराजावकृतप्रसन्ननया॥७७॥वेपरवादीप
र्वनरूपकृतैँसोस्वयंवुडकेववनरूपवज्रकरिबैँ॥सकलसमा॥अरसजाकापति
नहोयतिहे॥७८॥नवस्वयंवुडदेवीसुनी॥अरअनुनवीजोकथासोराजाकूंकरता
नया॥होमहाराजनुमएकप्राचीनकथासुनऊ॥तिहारवंसविधैँएकविद्याधरनिका
सिरोमतिराजाअरविंदषण्ँइनया॥७९॥सोएणकेप्रभावकरियापरमपुरीकी॥
।करतानयागर्ववंतनेपरवक्रकैँसावेततिथिकीनुजा॥निकागर्वनिवारतासं
ता॥८०॥अरविद्याधरनयनिकेउल्लंघनोगनोपवतानया॥ताकैँदीपपुत्रएकहैरिवं
इजाकुरविंद॥८१॥सोराजाअरविंदवकृतअरंजपरिश्रहकैँयोगतैँरौँइअानीहोय
रकायुवोषनानया॥सीवअसाताकाहैउदयजहां॥८२॥सोताकैँसत्पुनिकटआईतव

दाहस्वरूपं अत्र निदुःसह्यतापविस्मया ॥ ४ ॥ सो क म ल नि के ज न क रि या कूं सी ध्या
 अस्मत्ता स्वका वी ज णां की पो न क री ॥ अस्मत्ता नि णा ग र वं द न का र्त्त ए की ध्या ॥ सो ति नि के हा
 र ए हा ये तो उ दा ह न मि द्या ॥ ५ ॥ अस्मत्ता ज अ रि वि दं का वि द्या स व वि मु ष ह्ये य गर्द ॥ मु
 त्त के क य तै र्हा ज त्र कि न य ॥ नै सैं ग न रा न का म द न त रि ना य ॥ अस्मत्ता नि र म द हो य जा य ॥
 ६ ॥ सो दा ह का त्र आ ता प न स हा रि स क्पा त व व ने पु त्र ह रि वं द कूं दु त्ता प त्र आ ता क री
 ७ ॥ अस्मत्तो पु त्र मे र्हा ग वि धै सं ता प व क्त न व ध्या है ॥ द्वि ष क्त मे र्हा ग के सं ग तै क म ल नि
 के हा र मुर जा य ग ये है ॥ ८ ॥ आ तै सो रि ज न र कु र भो ग न भि वि धै ति हा री वि द्या क रि य
 ता व क्त भो में जा य वे की त्र कि नां ही ॥ स हां भो ग न भि के म नो ह र व न वि धै सी ता न दी क
 त रं ग नि कूं स प र स ती ॥ ९ ॥ क त्प ह क्ति कूं द ल व ती सी त त मं द मु गं ध व प न है ॥ सा
 क रि मे रा दा ह सां त हो य गा ॥ १० ॥ स व पु त्र नै अ प नी अ का स गा मि नी वि द्या पि ता पैं
 तार्द सो ता पा पी कूं भो ग न भि न ते जा य स की ॥ ११ ॥ त व वि द्या के वि मु ष हो वे क रि पु त्र
 नै पि ता की ध्या वि अ सा ध्य जं ती ॥ अस्मत्ता व क्त न विं ता वां न म या ॥ अस्मत्ता क उ पा य विं त वै स
 क ह्नु व नै नां ही ॥ अस्मत्ता दि न रा जा के अं ग प रि र ह को कि ल

॥ १२ ॥ हा र ते क ते ति त का पूं ह्नु तै र्हा का वूं द प री ॥ अस्मत्ता क रि क ह्नु
 ॥ य क ता के स मा धा न म या त व पा प के यो ग तै वि चा री ॥ इ ह्मे जा ति नै प र म अ भो ष दि

पाई । भाद्रनेकुरविंदनामापुत्रकेंचुलायकहीहिपुत्रएकवापिकामोहिरुधिर
पूर्णकरिदुं॥ विभंगअवधिनैजाभिकरुतानयाजोयावनमैमृगवद्रनहै
तिनिकेरुधिरकरिवापिकापूर्णकरिदुं॥ सोएवचनमुनिकरियहपुत्रपाप
रवेकंकायरसोसलेकेचुपहोयरहा॥ वद्ररिपिताकाआज्ञातैवनमैगया॥

वधिजानीमुनिकादरसएनया॥ सोमुनिकहीतेरेपिताकीआयुअसपहैअत्र
मरिकरिनर्कजायागा॥ सोनताकैअर्थिअसैअनर्थमतिकरै॥ नवदहमुनिकेउपदे
सतैपापकार्यसैपराभुषनया॥ नयापिपिताकावचनउलंछानजाय॥ सोअ
ननाकेरंगताकीवापिकाजरायदर्दएअत्ररपितकंकंहीवापीतयारहै॥ सवद
पापीअतिहरबितनया॥ नैसैंकोउदरिदीनिभानकंपायहवितहोय॥ सोकर्तुम
लरंगजलजाकरिवणवहदुष्टतावापीकोदेखैवद्रनमुषमानतानया॥ तहंवाहि
प्रवेशकरायासोप्रवेशकरतामानैवैतरणीहीमैंप्रवेशकीया॥ तहंपषेअगारहक
रिनाजलहैंकुरलेकरिआलताकेरंगकीवावरी॥ जानिपुत्रकेमारिवेकाउद्यमी

॥ सोननरकायुकाबंधपूर्णकीयाचाहै॥ अत्रविंदपापरूपसमुद्र॥ केवसाय
चंदहीहै॥ सोरोसकरिपुत्रकेहलिदेकंछुरीसिकरिदोहासोआपछुरीपदि
साउदरविदात्यागयामरिकरिअधर्मनैनकविषेगया॥ अषरुकायाअरुका

गरी विषै के एक जनक रे है ॥ १५ ॥ पुत्र पि तारूप जगु के अपस होय के सैंक मत की नार्द मुद्रित हो
याया न प्रर सोव की दसा कूं प्रात नया ॥ १५ ॥ सैं लुपी का दांत दू टि जाय अप्रर सप के फल
की मलि जा तीर है ते सा हो या या ॥ १६ ॥ यद्द कया प्रसिद्ध है ख डरि ति हो रे वंस समुद्र सा रि सा
वि सी ए ता विषै दं ना मा रा जा न या व सि कां या है वै रा नि का मं प ल जा नौ ॥ १७ ॥ ता के मलि
मा ली पुत्र जै सम मुद्र विषै मालि क नि प जै सो रा ना दंड पुत्र कूं यु ग रा न प द देय अप्र प नो ग
नि दि विषै अप्र सक्त न या ॥ १८ ॥ जूं जूं जूं जूं जूं जूं जूं विषय की वा ला बट नी नर्द स्त्री वर ख
अप्रा न रा दि दि विषै नि हा अप्र सि क न र्द ष्ण सो अप्र तं त विष या सक्त महा कु टिल ति र्थ च
आ यु का वं ध कर ता न या ॥ १९ ॥ अप्र यु कै अप्र ति अप्रा र्त्त धां न क रि म्वा सो अप्र प नो जं डार वि
बै महा अप्र ना र न या ॥ २० ॥ ता हि जा ति स म रा न या सो पुत्र कूं नं डार में अप्र य वे दे अप्रौ र नि
कूं अप्र य वे न दे य ॥ २१ ॥ त व म लि मा ली मु नि रा न कूं पू छी मु नि क सी य द य ते रा पि ता है ते
न के योग क रि स र्प न या है ॥ २२ ॥ स व द र पि ता की न कि क रि ता की म म ता नि वा रि वे अप्र
थि नि क दि विषै वि क रि ते द की न रा वा ना क ह ता न या ॥ २३ ॥ हे पि ता उ म ध न रि दि विषै मे
हि त कृ त न अप्र र विषय की ति हो रे अप्र सक्त ता ड ता ता नै कु यो नि सैं प रे ॥ २४ ॥ धि का र हो
या विषय रू प अप्र मि ष कूं अप्र व डु म ड र न ना नि व च न क रो य द विषय फ ल न सम न डु य
दा र्द है ॥ २५ ॥ अप्र रा डी के प रे की ना र्द सं सा र की न र नि रे न र वा लो अप्र न जै सैं कं व स्य प्रां रा

दुषर्तेकुट्टेहै। तेसैंउषतेछूटैहै॥२८॥ अरअहरीकेरागकीनाईविस्वासउपजायैमनुष्यरूप
 मगति कुट्टोहै॥२९॥ सांवलकीनोईरागकुं वटावैहै। अरअंधकारकीनोईमारागका नि
 रोधकरैहै॥३०॥ अरउजैसैंजिनमतैं कागिराकएकैरेतेसैंइहधर्मकूटैहै। अरविजु
 रीकेवमत्कारवतचंचलहै। इंदुधनुषवतनातारंगकुंधरैहै। अरअरषिणमंगुरहै। वक्रत
 कदिवेकरिकहादेखऊएविषयमीवनि कुंसंसारवनविषेजटकावैहै। धिकारहोऊनि
 जिनिकेसेवनकरिजीवनकर्निगोदमेंपरेहै। अरअरमस्कारहोऊमहामुनिनिर्कुंजेवि
 षयविकारतैंविरकतमए निष्पलहैवुद्धिजिनिकातपहोधननिनिर्केयानांतिपुत्रा
 एनकुंनिंदताजया॥३३॥ औसेपुत्रकेधर्मरूपवचनतेईजएस्वर्गतिनिकरिहरिहोय
 मोहरूपअंधकारअनगरका॥३४॥ सोधर्मरूपऔषधकुंपायविधैयाजिज्ञाषरूप
 विषकावमनकरतामया॥ अरअपनेपापकर्मनिकाअतिषय्यातापकीया॥३५॥
 मसाविरकतहोयअनमनतपकरितनकुंतजि स्वर्गविषेवडीरिद्धिकाधारादेवन
 ॥६॥ सोअप्रवक्षिज्ञानकरिपूर्ववर्तानजा निमध्यलोकाविषेआयुकरिमतिमालीकी
 सुनिकरिमहामणिनिकाहादया॥६॥ कासरूपहैक्रांतिजाकी॥३७॥ सोवहसाराअ
 उमपरदेहो। रतननिकीकिरणनिकरिअतिदेहिप्रमानमानेंलक्ष्मीकेहासका
 पहीहै॥३८॥ वक्ररिहेदेवऔरकप्यामुनिनैकेदेषनहारेकेईछठविद्याधरअव

रुहै॥८॥ तिसरादादाजासतवलजानै प्रजा कूं अर्पने संदरगुणा निकरि मोहित
करि सव निजानां हमारे सिरपरि स्वामी है ॥९॥ सो धिरकातरानोग करि जोग है नि
मदभया ॥ तिसारे पित कूं राने देय ॥१०॥ सम कूट छी आवन के ब्रत धरता नया

कृपरिणाम के योग नै देव गति का वंश की पा ॥११॥ अगन मन अमोदरी आदित पक
रिसमाधितै देहन जि ॥१२॥ अरबै वेदे वलोक सातसागर का आदुपय अणिमादि
करि ॥१३॥ दुकाधारक नया ॥१४॥ सो सुमेरपरि नंदन वन विषे आया कृता अर आप
वहां को डाहति गये दम रुत्नारकते सो देव तुम कूं अ पनां पोता जा निसमेह करिक
दत्ता नया ॥१५॥ द्वेकुमर जैन का धर्म जीव निकुंक त्याग कौरै ॥१६॥ कवरु विसरै म
ति दह सिष्ठा दर्श ॥१७॥ अर तिसारा पडदादाजा सतस्व वल विद्याधर निके रजेंद्र
जाहि नवै है ॥ सव निके मस्तक परि आरु दहै आजा जाकी ॥१८॥ सो तिसारे दा दे कूं
राज दे यजेन की दिष्ठा आदरी निर्वाण की साधन हरी ॥१९॥ अर पृथ्वी विषे वि
रकी पासा स्नान ससर्ज समां न जान रूप किरण करि निष्पान रूप अंधकार हरि की
या ॥२०॥ धर्म के प्रभाव करि केवल ज्ञान नउ पजाय सुरनर मुनि निकरि पूजा होय पर
प्रथा मधारे ॥२१॥ अर तिसारा पितारा जा अति वल मसाधर्म आउम कूं राने देय दिगं
वर सदा ॥२२॥ पुत्र पौत्र अने कवि द्याधर तिनिसहित नय करै है सो मोद पधारे गे ॥१॥

मक्ति

एधर्मअधर्मकेफलदिषायोपतिहोरेवंसकेनपनिवीप्रसिद्धकथाउमकूंकह्णिमधए
 ध्यानकेफलकहेराजाअरविंदतोरुद्रध्यानकरिनिर्विगयेअरराजादंडआर्ति
 नकरिसर्पनेयेअरराजासनवलधर्मध्यानकरिदेवनयेअरसहअवलधर्मध्यान
 मोक्षगयेअरतिवलमुक्तिजोहिनेधर्मधर्मकाजीवनिर्कसर्गमुक्तिदुर्जनोहीअगवां
 काउपदेसनयअमाणरूपहैअमाणपरोक्षअरअतक्षाभद्यह्निनधर्मप्रसिद्धपर
 मपदकाकारणहै। उमजोमहाफलवाहोहोतोंप्रमाणधर्मकूंसेके५७भुयंवुद्धकेव
 नअतिगंभीरहैअतिउदारतिनिकूंमुनिकरिसकलसनाकेलोकजिनधर्मकीअ
 विषेद्रदनये५७अपदीअरहंतदेवकामारागारहैअौरसर्वकल्पनाहैस्वयंवु
 केवचनतैसनाकेलोकनिकैयह्प्रतीतेआवतीनर्द्धभएअरसर्वश्रेसीजानतेनर
 यक्षसम्पकृदृष्टीअतकाधारकगुणवांनसीलवांनसरलस्वजावगुरनक्तआख
 देनाविजोषदुर्दी६०परमश्रावककेगुणनिकरिप्रसंमयोगहैयह्स्वयंवुद्धम
 तिवुद्धहै। यथासांतिसनाकेलोकप्रसंसाकरतेनये६१
 नामहावलस्वयंवुद्धकेवचनप्रमाणकरिअतिप्रससाकरतानयाअनमैंजानीस्वयं
 बुद्धमहाबुद्धिवांनहै६२एकदिनस्वयंवुद्धकेसगवांनकेवैत्यालप्रवंदनाकेअर्थि
 रपर्वसगाया६३सोसुमेरनद्रसालनेंदनासौमनसापंडुकानिआरिवननिकरि

शासनतत्तमास एणवध असाक तपू छद अम प्रवपक एव्वा रवनतससुम
 धेरुआरिवेनहै अरजे सैजिनसासनअनादिनिधनसप्रमाणहै नैसैसुमेररुअना
 दिनिधनलक्ष्यो जनकाप्रमाणली एहै ॥ ६४ ॥ अरमांनूयहसुमेरमदाउनेतव
 आहीहैराजाननिकाआधीसयहपर्वतनिकाआधीस अरणजातौसद्वनक
 एनलाआवणकाभारक अरयहसद्वनकहिएनलागोलहै अरणजातौसदा
 स्थितिकहिएमर्यादाकाभारक अरयहसदाकालहै स्थितिजाकी अरणजाकै
 तौविस्तीर्णकटक अरयाकै विसीर्णतट ६५ ॥ वक्रियहसुमेरमांनूआदिपुरष
 उपमांकं धरेहै आदिपुरषतौसर्वलो कमेंउनेरकहिएउनकछ अरयहसर्व
 कमेंउनकछहै आदिपुरषतौसर्वराजा निकेद्र अरयह
 सर्वगिरिनिकाद्र अादिपुरषरुवनेअरयहरुवनवेकस्वर्णवर्णयहसर्ण
 वर्ण ६६ ॥ वक्रियहगिराजामांनूसुराजहीहैसुराजकै वज्र अरयाकै वज्र
 हिएहीरावाकै अपवृष्टानिकाआश्रय अरयाकै अपसरकहिएनलकेसरोवरव
 ज्जोतिकरिमंदिता यहजोतिषीदेवनिकरिमंदिता ६७ ॥ अरयाकीचूलिककेउप
 रिप्रथमसर्गाकारितुविमोनआयरहाहै सोमांनूयहसुमेरसर्गसो ककेधार
 एकमोटाधंनहीहै ६८ ॥ अरअपनीकटिमेबलानिकरिवेनकीपंकतिधरेहैवन

मद्सुंदरसर्वरतिके फलफल है सो नृकलत्ररुनिकी सपक्षी करि सर्वरतिके फ
 फल है ॥ ६७ ॥ सो नरेय हसु मेर सुवर्णमई महान न त रतन न निकी जों तिक रि युक्त
 पावन के जन्मा विषे क अर्थि अना दिकाल का देव नि पीठ ही वांछा है ॥ ७० ॥ जग वां
 अगि विषे क का कारण अर नि न मं दि र निका धर न ता क रि उ पा र ज्मा पु न्य ता क रि
 नं नि सं दे ह सर्ग कुं व त्या गा था है ॥ ७१ ॥ अर य ह सु मे र जं व दी प रूप रा जा का मु क ट ही है
 है जं व दी प रा जा ल व ल स मु द का नी ल ज ल सो ही है मनो मे व स्व जा के ॥ ७२ ॥ अर सो नं
 ह सु मे र जा त रूप त ला व के म भ का ल रूप प व न क रि क म ल नि की के स रि का पुं ज ही
 द्वा है मद्सुंदर पी त है प्रजा जा की के सा है जग न रूप त ला व कु ला च ल रूप क
 जो ल नि क रि सो जा य मा न है अर संगी त की ध्व नि सो ई ज ई पं थी नि की ध्व नि ता क
 रि सो नि त है ॥ ७३ ॥ अर नंद का दि व नं अर सु र ज्म सु र नि सै ना सो ही फ लि र है है क म
 ल जा वि धे ॥ ७४ ॥ अर विषय निके फ ले सुष सो ही ज या म क रं द ता वि धे आ स क र
 रूप न त र ज्म ल क र है ज हां अर य म द्वा न दी नि का प्र वा ह सो है ॥ ७५ ॥ ज ल जा वि धे ॥
 अं रे सें स सा र स रो व र वि धे य द गिर व र सो नं क म ल नि की के स रि का पुं ज ही ॥ ७६ ॥
 सो स्व यं वु ध मं जी द रि तै गिर रा न कूं दे ष ता ज या के सा है गिर रा ज नि त रा न के मं
 र नि क रि मं दि त है र त न म ई है त ट जा का अर है दी प्य मा न है सि ध र रूप मु क ट जा

की

७७ सोसयं चूड्य द्रुतसोमाकातिधानजोसुरगिरताहिदेविपरमदर्षकं प्राप्नया ॥ प्र
थमतोयाकोतत्तहटी अरत्रासिपासिकीसोमादेविअतिप्रमन्नहोयमनमेविचा
रतामया ७८ यदगिहिंद्रअपनेसिषरकेअग्रमागकरित्राकासर्कुं सपरसकरैहै ॥
मांनंयदसुमेरुलोककेमांपनेकाप्रमांणागजहहै ॥ ७९ महारवणीकछायाकरि
सहितजेवदरतिनकरिसोमितजोइहसोयाकेसिषरअतिमनोहर ॥ तहांदेवदेवां
गनातिरंतरक्रीडाकरैहै ॥ ८० अरयाकेचरणतगिरहेजोगजदंतगिरतेनीलाच
संतंगेहै ॥ जोवनकेचरणसेवैसोलसुंदीरघदोय ॥ ८१ गजदंतपर्वतअनादिकेया
केचरणानितंगेहै ॥ सोमांनंनिषाचसनीलाचलनैयाकीसेवाकुंदायदीपमा
रैहै ॥ ८२ अरएसीतासीतोदानदीदेयकोमटरिकरिनिकसीहै ॥ सोमांनंसमुद्रकेन
यतेंयाकासंपरसनांदीकीयाहै ॥ ८३ अरसोमाकरिमंकिनदजालवनसोमांनं
जोगान्मिकीसोमाकुंजीतैहै ॥ ८४ अरनदसालकैउपरिनंदनवनहै ॥ अरताकैउ
परिपांठकवनहै ॥ ८५ आसोवनछरंतरतिकेफलफूलनिकरिसोमितहै ॥ ८५ अर
यासुमेरकेदोउदोरअर्धचंद्राकारैदेवकुलउत्तरकुरुनोगभूंमिसोमैहै ॥ अरजंवूह
रुएकदोरसोमैहै ॥ एकउरसालमलीवदसोमैहै ॥ समवद्रहांतेंदंष्ट्रियरैहै ॥ ८६ अ
रएआरिवनसितिमैंएकएकवनमअआरिआरिवैटालयहै ॥ सोरतमजहि

नसिपरनिकरिआकसमसिधेउद्योतकरहै। ८७॥ अरसदापुन्याधिकारीजीवनिकरिअ
 सहगिराजवैत्यालयनिकरिमंथितअरवौगिरदवननदीसोमनूंसोदानगर
 है॥ ८८॥ अरयहगिरिदुमांनजेंवृक्षीपक्ष्पकमतकीकिरणिकोहै। ८९॥ कसहैजंवू
 परूपकमलनरयादिसमसेवहैपत्रजामेंअरअनेकजीवरूपनूसरमहैअहो
 ९०॥ अगदहैउदारमहिमाजाकीअ्रेसापर्वतनिकापतितारिसयंवृक्षी। ९१॥
 अ्रेसीमानतानया। तीनलोकमैयासमानओरउच्चनोही। ९२॥ मेरकुंनिरषता
 मंत्रीआबागया। निनमंदिरतिनिपरिधुजाकरहैहै। सोमोनूंजानादेवेयाहि
 लावैहै। ९३॥ यद्विवेकीश्रीमगवानकेअहनिममंदिरअनदिनिधनसदाप्र
 कासरूपदेवनिकरिअर्चिनितिनिर्कुंदे। धिपरमहर्षकुं। प्रासजया। ९४॥ सववन
 केवैत्यालयतहांप्रदक्षणादेयनक्तिवंदनाअरप्रजाकरि। ९५॥ सोमनस
 वनिकापूर्वदिदिसिकीतरफवैत्यालयजहांप्रजाकरि। ९६॥ केवैगार। ९७॥
 मरुपुरषगगनचारणसाधप्रवरविदेहकेअरि८८॥ पुरतैंआये। ९८॥ यगंधर
 मीकासमोसरणसोईनयासरवराकेराजहंसएककानोमआदित्यातिदूजे
 मअरिंजय। ९९॥ तिनिर्कुंस्वयंवृक्षप्रदक्षणादेयचारवारप्रणामकरिकह
 या। १००॥ हेमगावानमैंकबुभेरेकदेकीवालपूखूं। १०१॥ आपजगतकेप्रतिवोधिदे

कुं समर्प्य है। अथ अने विनेत्र के भार क है। मेरा नाम भी
नव है। एकादशी की रात के मारग की अर्धा क रात क

ए। ए। तव सामी अगदित्तागति दोस्ते भ० ०॥ हो नव वरुस भू है भो।

या नव ते देस वै नव जे वृद्धी पके भर रका अगदिति न होयका ॥ २० ॥

वज्र तां त में तो हि सं दे प सं क रू रू सो सु नि या नें भोग नि की द छा क हि भ र्म क भी अ

वो या। आ जे वृद्धी पके प मिम वि दे ह वि वै गं धन दे स स्यं य पुर न य न हं श्री वि ए

रा ना ता कै म हा सुंदर सुंदरी तो म रा नी अता कै न य व र्मा अर भी व र्मा ए दो य पु

अथा सो मा ता पि ता कुं छोटा पुत्र प्पा रा होय ही है। अर गुण वां न तो प्पा रा होय ही

होय। इस म स लोक नि का छोटे सं अ न रा ग दे वि छोटे कं रा ज दी या अर व न ज

य व र्मा म हा व न का जी व ता हि रा ज न दी या सो म र्म व र्मा अ प ने पूर्वो पानि न च सु

न क र्म की निंदा कर ता सं ता प ह त्पा ग क रि ख यं प्र नु ग र कै नि क टि मु नि न या ॥

सो य ह न वी न दि च्छा का ध र क आ का स वि वै एक म ही ध र नाम वि द्या ध र कुं व ड

दि डि स हि न जा ता दे वि नि दान कर ता मे द्या ॥ ८ ॥ जो मे है अ न्न ज न म वि वै वि द्या ध र

निके म हा जो ग हो डा ता ही स मे न यं कर मु जं ग नै रु स्या ॥ ९ ॥ भोग नि ला बी मू वा सो

य ह म हा व न होय अ प त्र सि ता के क र एा ह रे भोग ति नि में अा म क न या रा ज भोग वै है

१७॥ अथ वत कया हि वैराग्य न उपमा ॥ अथ वतैरेजपदे सकविरहसी द्राही विरक्त हरेष
गा ॥ ११॥ अथ रज्या नि कीराति वानैस्वप्न देष्य है ॥ जो अथो रत्नोती न मंत्रि न मोहि कीच
वो या ऊता ॥ १२॥ सो स्वयं बुद्ध न कूं निर्धादि मोहि विषम कीवतै का दृष्टा अथ रत्ना
कया या सिंघासण परिपथ गया ॥ एतौ यरह स्वप्न अया है ॥ १३॥ अथ रत्न जाय रह स्वप्नो
एक दै दीप्य मान अग नि कीन्ता विजुरी समान देषी अथ रषि एमा अमें विले
ई एस्वप्न रात्र कै अंत न रपति नै देष है ॥ १४॥ सो तो मर्द वित हो परहा है ॥ नेरा
गम देष है ॥ सो तो हिन कहै ताप हत्ता कहियो ॥ १५॥ एदोय स्वप्न अया पकूं अया एत
व वरह अवि रज कूं या स होय तेरा क ह्ता करै गा ॥ १६॥ जैसे तिसाया पपीहा मेघ की
दरु विकरि ग्रह है ॥ अथ रत्न मका अं भा अं भा ॥ धिस वारणे की उषा वि अति रु वि
ग्रहै ॥ तैमें अग नि ही वरह सु बुद्धि तेरा न उपदेस तै धरम वि धै स चि करै गा ॥ मुक ति की
तीस मान तै सें अथ व वाकै काल लब्धि निकटि आई है ॥ १७॥ परहत्ता सुपनो तो वाकै पर
व विवै रि द्विकाम स्वचक है ॥ अथ रत्न से सुपने का फल अया युवा की मासमात्र ही रि
॥ १८॥ ता तै वाकै कल्याण निप्रति सी द्राही यल करि वग स्वा मिधर्म यही है ॥
स्वामी का पर नव मुधा रि ॥ १९॥ अथै सा कहि करिवे ॥ दोउ साध अंतर अ्यान होय
गाये ॥ २०॥ अथ स्वयं बुद्धि ति निकै वचन सुनि स्वामी का अथ लप अया युजा निक छुद्र

कसोचवंतमया॥२॥वक्ररिसीडहीअलकापुरीआया॥सोआएकहिराजामहावत्सं
 मिनिचाएणमुनूकेववनसकलकहे॥अरस्वप्नकेफलकहे॥२॥अरराजाकुंदि
 तकीवारताकहीहेराजनसवडुषनिकानासकरनहाणनिनजावितधर्महै॥तातें
 ताविबेरुविकरऊ॥२॥नवरराजामहावलसवयंवुडकेवचनतेंअपनीआयुअल
 यजानिआतमकल्याणविषेवितधत्ता॥२॥अष्टाहिकाकीआवदिनविशेषपू
 जावैत्यालयमैकरि॥२॥अपतेपुत्रकंराज्यदेयसवतिसंत्ताकरिआपस्वतंत्र
 होय॥२॥सिद्धकूटवैत्यालयजायनावांनकीवंदनाकरिनिस्सुहहोयसंत्यासधा
 त्या॥२॥जावनीवच्यास्योआहारकात्याकायागुरनिर्कुंसाविदेयपंतिनमरणमं
 ना॥२॥वद्विवेकीआराधनारूपनावपरिविदिकरिसंसारसागरकेतिरिवेका
 अनिल्लाषीस्वयंवुडकुंषेवटियासमंनसंनतानया॥३॥सर्वत्रेममत्तजावधरि
 सकत्तजावजिस्मंमित्रताकरिविषयकाअभिलाषतनिमुनिजया॥अंतंरत्नाह
 मकलपरिश्रुतजे॥३॥देहिपयंतअहारकात्यागकरिपरमसमाधानकुंझासा
 होयप्रयोगामनसंत्यासधत्ता॥३॥प्रायोपगमनकरिएसरीरकात्रोरवैवेया
 व्रतनकरावनांअरआपकूनकरतां॥निरादराकरिशरीरकुंतननो॥३॥सोम
 हातीव्रतपकरिमहावलमुनिकात्रारीरणीहोयायाभरंतुपरिणामअतिपु

दृश्ये पंच परमेष्ठीका स्मरण करतौ ॥ ३५ ॥ अमुन कर्म की निर्जगद्भिर्निराकाङ्क्षा
 ताका गात्र सिद्ध लक्ष्मी गणा प्रवृत्तता सिद्ध लज्जार्द्रा मत्स्य पुरुषं केचिन्न ॥
 जैस सरदर तिके वादरे सपेद अरणी न अत्र निमै रस कहिए जल नो ही ॥ जैसै याका सरी
 रस कहिये यादर हित बीण सुपेद होय गणा मां स अर नो ही सू कि गया सो मां
 मां सरु थिर रहित देव निही का आरी रहै ॥ ३६ ॥ अर नेत्रा नि गये सो मां नंदा का
 ए देवि सो च कहि डरि गये पद ली विन्ता स देव्या पा सो विद्योग न देवि स के ॥ ३७ ॥
 रया के कपोल सू कि गये तौ ऊव हर रूप की सुंदरता न मिटी ॥ ३८ ॥ अर पद ली
 नुन सिंघर के दूर ना मा अनाखण क रिक र्स कृते सो महु होय गये ॥ ३९ ॥ अर न
 र स कु विगया विवली रहित सो हरता नया ॥ जैसा सूका सरोवर तरंग रहित नवल
 रहित नि अलज्जा सै ॥ ४० ॥ अर तपस् पत्रा ग वि के ता पतै अंधि कहै दीप्य मां न म
 या ॥ जैसै सुवर्ण अग नि संदहा थ का मल रहित होय ॥ ४१ ॥ अर सं न सहा परै अ
 सा सरी रका संताप क्रीडा मात्र सहा ॥ यद परी सह सहि वै विषै अचल सो या कूं परी
 बहनी तिन स की ॥ ता तै न जिगद्भि ॥ ४२ ॥ चर्म अर्धिर दिगये ॥ रु थिर अर मां स सू कि
 गया तौ उ समा धि के वल तै वार्द स परी सह रूप नो छा जी तै सां चा म हा व ल जया ॥
 विषै भिक्षु जग वां न था पे ॥ अर रु द द्य विषै अर हं न था पे ॥ अर अगा वा र्य के ध्यान का सि
 ॥ ४३ ॥ अर आचार न की कान् ॥ जज्ञ न का टो प अर उभा ॥ ध्या य मी का म न स र की था ॥

रकाटोपकीया अरुणाय केन जनकावगतरकीया अरसाधसुमरणकाशख
 कीया अमुसुनरूपरिपुकेनीतिवेकंपरमात्माश्री अरहंतदेवभानकेप्रसादनैदेवप
 रममंत्रकाश्रवणकीया ॥४४॥ मनरुपगर्भग्रहविवेकरमरूपकालिमोतैरहितजे
 निरंजनदेवभावंतैतिनिकूंस्यापिआनकेतेनकरिदापगकीनाईअज्ञान
 अंधकारकोसंगेराहाजानया ॥४५॥ दिनबाईससंन्यासधारिषोचपरमेष्टीवि
 धैअपनामनलगवकरि ॥४६॥ पंचनमोकारमंत्रअंतरभ्यानकरिनिश्चजन
 पतासंताहायनोरिप्रभुकेचरणारविंदकृतमस्कारकरिसमाधिहैंप्राणतने
 जैसैभ्यानतैषरुगन्यागतैसैदेहजीवकोजुटाजानतासंतासुषसोंप्राणछोनेस्व
 यंचुवकैसंमीप ॥४७॥ स्वयंचुडमंत्रीमहाउपगारकीया जैसैपहलीमंत्रकीत्राकि
 करिवतुरंगसेनाकूंमहावतकेधारताकृतगतैसैमहामंत्रकीसन्निकरिमहाव
 लकापरमवसुधास्याधमंत्रीपनांसयंचुडनैसवाकीया ॥४८॥ पहलातौअर्थई
 अर्थिसेवाकरता अरअवअर्थरहितधनोहोयकाअर्थसुधास्याधर्मकास
 हाईनया ॥४९॥ महावलकानावसरारकेजरकुंतजिनतकालइजोईसांननोमं
 स्वर्ग ॥५०॥ तहांश्रीअनविमोणकास्वामीसलितोगानोमोदेवनय ॥५१॥ जतपाद
 कशायाविषैउपजामहाउदयकंधरेजैसेंउरुलमेधकैमध्यविजुरीसोहै ॥५२॥

कर

सैयाकावैक्रियकरादीरमासतामया॥५३॥ नवयोवनपूर्णसर्वलक्षणमंदिनैः श्रुतं
 रुतमैत्रागटनया॥ जे सैंको न सुतापुरिषसेन सैंउवैत सैंउवा॥५३॥ देदीपमंनकुं
 लकेयूरमुकटनुनवंधनिनिकरिसोमायमंनक ल्यहृत्निकेभुष्मविकीमालाप
 रंमुंदरक्खधरंमहायोनिकाधारकमासतामया॥५४॥ ताकारूपमंनूरोवरहै
 दोऊनेत्रनिमेषरहितमंनंमीनरूपहै॥५५॥ वक्रजिगारीरकल्यहृत्कीसोम
 कंधरहैजाकैजुनसाषा॥ अरु कंवलनवमंजरीनेत्रमरा॥५६॥ स्तलितोगंदेवकादि
 रूपविनायोनिउपमाताकाकरावर्ननकरौदेवनिकामारूपदेवनिहीकाहै॥५७॥
 मैपदुपहृदिआकासतैं कल्पहृत्नितैंपरीअरुदुंदनियोजि॥५८॥ सीतलमंदसु
 गंधपवनमंदारजातिकेक ल्यहृत्निकंल्यवतीर्भर्त्तिर्मलजनकेकलानिनिकरि
 मंदिन॥५९॥ तवदहदेवसेनपरिवेवाहीकल्लुपकद्विपसारिदसोंदिसिविलोकनक
 रतामयासोकहांदेवै॥ कोटिकदेवक्रोतिकेधारकएकै॥ लारद्विहैंनमस्कारकरै
 ०॥ तवस्तलितोगंदेवअचिरनकुंपाया॥ कणोकविचारतामया॥ अहोवना
 चिरजहैअेसास्यानकदृष्टवीदिवैमैंदेष्टानांदा॥६१॥ अहकोनलो कहै
 मैंकोनदुं॥ अरएमोहिद्विहैंनमस्कारकरैहैसोकोनहै॥ मैंकहांआया॥
 जिमेगामनवक्रतप्रसन्नहै॥ अहसेजकोनकीअरएदहआअममहामनोग॥६॥

पवनकाजनी

नैकदां

त्रैलोक्यविवर्तनकरैः कृणुमात्रमैः अवधिप्रगटभर्तृत्वनामैः स्वयं बुद्धकृतं आपकं उपगारा
 जायां दृश्यं प्रहोषरूपकाफलमहादिव्यसर्गलोकैः अपर एते देवैः जिनिकैः देवकीकान्ति
 लहताटकैः अपरमैः इति मंत्रैः छिद्रं तातैः मोहिप्रणामकैः दृश्यं एविमालाकलावत्
 निके वनकरिवेष्टितं हैः अपर एप्रियवादिनामुंदरदेवांगना हैः नानाप्रकारके अपभर्तृ
 परं रं हैः समृद्धकैः मणिनिके नूपुरजिनिकैः दृश्यं एप्रपखरां निके समुद्रनृत्यकैः रं हैः ग
 वै हैः मधुरध्वनिकैः रं हैः मंदंगवाजैः हैः वीनिवाजैः हैः अपप्रच्छाकोत्तरस्यकैः रं हैः मुलकैः
 हैः दृश्यं त्रैलोक्यानि प्रयकस्मिन्नात्रकारकीरतननिकीयोतिकस्मिन्निजोसेजतापरि
 विराजोः दृश्यं नवद्वनिके परिवारके सकलदेवजैः कारकरैः तैः मयैः दृश्यं कतुमविर
 कालद्वंद्वसुषकरैः जैवंतहोऽसहाजोतिकधारकरुमारेनेत्रनिकुं अपभर्तृका
 रीनांदौः विरथोऽस्तोऽफलोऽयावांणीकरिस्तुतिकरते मणदृश्यं वक्रिअति
 विनयकरि निकटि जायजे सुविधादेव हैः तेन मीनरतहोयवीनतीकरते म
 योऽऽहे देव प्रथम तौ स्नानकरुऽवक्रिभगवांतर्का प्रजाकरुऽदेव तिकुं
 जिन प्रजादीपुष्यकाकारण हैऽऽवक्रि तिहारे पुन्यकरि यदृश्यामभर्तृदेव
 तिकी सेनाताकामहोलातेकाऽऽवक्रि नृत्यसालादेषकाऽऽहृदेवांगना नृ
 त्यकारिनी स्त्रीलासहितमौहृतचवै हैऽऽमनोहवस्त्राभूषणपदरे नृत्यक

वेकं जलमाहैति निक्कंति रषट् देवगतिपाये कायही फल है ॥ ७३ ॥ ति नि के व च न
 तैव ह सुबुद्धी ताही भोति कर ता जया ॥ वने पुरष निकाय ही आभूषण है जो अप्रणी
 तिकं न ज संधै ॥ ७४ ॥ ताये सुवर्ण समान गरीर जा का सा तदा ण जं च म ह ज के व र ख
 ज णि मा र्ण्या दिक ति नि करि सो नित ॥ ७५ ॥ म दा सु गं ध म नो ह र है स्वा स ज के सो
 अ णि मा दि सि द्धिक रि सं यु क्त्वा दि व जोग नो ग व ता न या ॥ ७६ ॥ ल सि तां ग का एक
 ग र का अ ग्रा यु सो एक ह जार व र स ग णं म न सा अ ह रा ग एक प र ग णं स्वा स अ र ग
 सं नो ग या कै का य का त र ति की तां र्द् ॥ ७७ ॥ अ र क त्प ह र नि के पु ष्प ति की म ल
 र मं ध रे सो द ता न या य ह ल सि तां ग दे व र ज र हि त दि व य द भू ति कूं ध रं है जै सैं
 द र ति नि र्म ल अ का स कूं ध रं ॥ ७८ ॥ ता र्के ज प रि च्छा रि ह जार दे वां ग न ति
 ने सैं च्छा रि म हा दे वा अ ति सुं द र लो व ण ता कूं ध रं ॥ ७९ ॥ एक स यं प्र जा ॥ ८० ॥ क न
 क प्र जा ॥ ८१ ॥ ती जी क न क ल ता ॥ ८२ ॥ चौ ष्ठी वि भु ल ता ॥ ८३ ॥ म हा म नो ह र अ स्तो प ट
 नी ॥ ८४ ॥ ति ति स हि त अ द्रु त नो ग नो ग व ता सा ग र प र्यंत अ ग्रा यु व ती त न या सो मु व
 नं ज्ञा तां ॥ ८५ ॥ सा ग र प्र मा ण अ ग्रा यु वि धै अ ने क दे वां ग न त रं ग स मा त य ती त न र्द्
 वी ति का अ ग्रा यु प त्थो प म ॥ ८६ ॥ सो ल सि तां ग की अ ग्रा यु प त्थो प म दा की र ही त व
 कै एक स्त यं प्र जा दे वा न ॥ ८७ ॥ सो व ह म हा सुं द र म नो ह र अ ग्रा न र ष ण प ह रे वि

जुरीसाधिषीप्रसारूपपतिकैसमापयेसीसोहैमांनंसाक्षातभूर्तिवंतस्वर्गकील
 द्मीहीहै॥४॥ सोमुप्रनाललितानां गकैअतिप्रियहोतानर्द्धजैसैतवीनआवकी
 संजरीमधुरकंप्रियहोय॥४॥ सोललितानां स्वयंप्रभाकामुषतिरषताताकैगात्र
 ससपरसताअैसैरसै॥ जैसैहृषनासंआमकनयाजनमनहस्तीरमें॥४॥ सासहि
 तसुमेरकेतंदनादिवनविषेजहांवंद्रकांतिमणितिकासिलाहै॥ अरनवरगुंजा
 रकरैहैकोयलवोलेहै॥४॥ अरनीलावलादिकुलावलानिविषेतथाविजया
 र्दगिरकेतदविषैकुंफलगिररविकगिरअरमानुषोत्तरपर्वतविषै॥४॥ तथा
 दीस्वरदीपविषैतथाअसंभागतदीपसमुद्रनिविषैअथवाभोगनूष्णादिसभो
 हरजमिविवैकीजाकरतामया॥४॥ यानांतिवहदेवदिव्यभोगमहारिकिवा
 रकअनुपमस्त्रीनिसहितभोगवतानंयाअदनुतहैतच्मीजाकैमुलकनां
 सनांवितासभुंदरवेष्टानिकरियुक्तअपनेपुन्यकेउदयतैएकसागरकछुय
 कअधिकअधिकभोगभोगये॥४॥ पहलैमदअपनांतनदुरधरतपकरिन्ती
 एकीयाऊताताकेप्रभावकरिस्मविषैभुंदरदेवांतासहितसुषभोगएतातै
 धर्महीउपार्जनोभोगहै॥४॥ सोप्रांनीहोतपविषैअनिलाषाकरऊभोगतथात
 नेऊभोगअविनासीलद्मीवाहोहोतोजितेस्वरकाधर्मआराधनाभ्रीजितेस्वर

सकलपापरहितधर्मके स्वरूप है होन अजीव हो उमजिन कं पूजो अशजिन वचन की
 अलंकार का भ्रमो रकु क विनि के जा घे पा पसत्र नि की अलं न कर का ए२ प्र संसा यो
 ग अर्थ को म मो ल का टाय क वी तरा ग का जा म्मा धर्म कु कर्म रूप विषम वती के
 का दिव कुं कुं गार स मां न ता के से य वे के सी प्र ही उ ह मी हो डा प द जिन म न कु म ति का
 ना स क मु कि का मूल है जे मु ष के अ नि ला षी है ते नी व द या रू प जि न स म न को से
 क र ड ॥ २९ ॥ इति श्री भा व त जिन से ना चार्य क थित त्रे म वि सि ला के म हा पुर ष
 ने का पु रा ण वि षे रि ष व दे व का पूर्व न व व र्ण न हो ल ति तां ग दे व के अ ग यु वि षे मा
 प र्व पू र्ण ज्ञ या ॥ ॥ ५ ॥ । उ न मा ॥ अ था नं त र ल ति तां ग दे व के अ ग यु वि षे मा
 स छ ह वा की र हे त व स रा के अ ग न्त ष ण मं द ज्यो ति न ये जे सै नि सा के अ न वि षे दी षा
 मं द ज्यो ति हो इ अ र चं द मा की कि र णि मं द हो इ ॥ २ ॥ क ल्प ह र्द नि के पु स्फ ति की मा
 ला या के उ र स्य ल भें स दा वि रा ज ती सो मु र जा ई ना स ने ल गा मां न्या की ल क्ष्मी का
 व यो ग जा नि मु र ण या ग ई है अ र या के नि दा स सं वं धी क ल्प ह र्द कं पा य मा न दृ ष्टि प
 मां न्या के वि यो ग रू प ती च्छ प व न क रि कं वि न भ ये है अ र ता के स रा र की क्रां
 ति मं द प री पु न्य रू प छ त्र के वि यो ग तें छ ा या क हां र है अ व ता हि क्रां ति र हित म
 ली न व द न दे वि इ जे स र्ग के दे व नि कूं सो व न प न्या ता क रि वा कूं दे वि वे कूं स म र्थ

नमोऽथऽत्राकेसेवकयाकीदीनतादेवि अत्यंतदीनहोयगोपे जैसैदत्तकेकंपु न
होयवेकरिमात्तापत्रादिकसवहीकंपायमांनहोयऽहो नो नमपयंतनसितो गदे
वतो ककासुषनोगयाया सोसवमरणसमै दुषरूपहोय परणमां ७७ अत्रया के क
वकीमात्ताकीमंदताकीवातदुजेसर्गके अंततकसवनिजानीजैसैंपरमां एसी
प्रगमनकरै तोवोदहराजुगमनकरै तैसैंप्राके मरणके तिकटआवनैकीवा
र्त्तापहलेदुजेसर्गमैसवनिजोता ८८ तवसामान्यकजातिकेवनेवनेदेवयापेअ
यकरिउपदेआरूपमसामनोहरववनकरहेनेजये ९९ होधीरअवजुमभीरताक
धारुसोकसजडा जनममरणसवहीकूंसागोहै १०० स्वर्गनैवि वनांसवदेव निकु
समातजातडाजवअत्रादुकाअंतहोहै तवस्वर्गजिणमात्ररुनांहीराधिसकैहै ११
यहस्वर्गलोकसदाप्रकासरूपहै १२ दारातिदितनांही १३ षट्तिनांही १४ परंतुमर
णतिकटअत्रावैतवपुनरूपदीपगकेबुजिवेकरिसर्वप्राअंधकारजासैहै १५ जै
मांअनुगगयास्वर्गविषेपुन्यकेयोगतैहोयहै तैसाहीपुन्यज्जिणयोंविषादजप
जैहै १६ केवतमात्ताहीताहीकुभितार्जनसैहै १७ पापकेजदयस्वअत्रातापकरिदे
है जा निजोतिरूपहोयजायहै १८ प्रथमतो ददकंपायमांनहोयतापीहै
कत्यहत्तकंपायमानदीधैवहु रिसवाराकीक्रांतिविलयजायअत्रारु

जाती रहै विलाप करै ॥ १५ ॥ अर लोक नि का अचराग मिदि जाया जं जाई आ वै व
विरूप दृष्टि परै ॥ १६ ॥ काम का अ नि लाष मिदि जाय मान का जंग होय मन कूं सो ॥
रूप अंध कार दवा वै ॥ १७ ॥ अरि अंधे रा अ बा नि आ वै ॥ १८ ॥ जव म तु आ वै तव देव
नि की दुःख अ व स्या होय जाय नै सा न र क वि वै ॥ १९ ॥ नै सो देव लोक के छूट
ने का देव नि कूं दुष होय ॥ २० ॥ सो अ व उ म कूं य रह दुष आ प प्रा प न या है ॥ २१ ॥ स र्ग उ द य
य सो अ र त र होय ॥ २२ ॥ ते सें देव उ प जै सो का ल पा य अ व स्य म है ॥ २३ ॥ को सु देव
वि ता सी नां ही ॥ २४ ॥ जग त का प्र पंच वि ला प कूं ली एं है ॥ २५ ॥ ता नैं उ म सो क न कर क
इ रह सो क कु ग ति के न व रा वि वै नां वि वै व रा है ॥ २६ ॥ उ म कूं य रह विं ता है म ति में कु यो नि
वि वै जा य प र कूं सो जि न धर्म के प्र सा द तैं कु यो नि वि वै न प र कूं ॥ २७ ॥ धर्म वि वै बु धि ध
कूं धर्म ही प र म स र है ॥ २८ ॥ कार ए वि नां कार्य की उ त्प ति नां ही ॥ २९ ॥ सो स्व ग मो
द का धर्म हा का र है ॥ ३० ॥ ता तैं तु म नि न सा स न वि वै अ प नां म त ज गा व कूं वि वा
न क र क ता तैं इ रा ग ति न हो य गी ॥ ३१ ॥ ए व च न दे व नि के सु नि व रह ध र्मा त्मा धी र्य
कूं अ व लें वि स म स चै त्पा ल यां नि की पू जा दि न पं द र ह क रि ॥ ३२ ॥ म र ए स मै सो ल
स्व र्ग त हां इ नि का मि त्र अ च्यु ते इ द या कौ लो ग या ॥ ३३ ॥ अ च्यु त स्म र्म के स क ल चै त्पा ल
यां नि की पू जा करी ॥ ३४ ॥ अ र वै न व रु के मू ल म र ए स मै म हा स मा धी न रू प ॥ ३५ ॥ पंच

नमोकारैकाग्रं न करिदो ऊहाए जो रिभगवोन कूं नमस्कार करितत काल अइअपहे
याया ॥ २५ ॥ सहां सैंवय करि जं वूषी पविषै सुमेर के पूरव दिसा की वीरमहाविदेहत
हां पुष्कलावती देअ ॥ २६ ॥ ता विषै सर्ग भूमि समं न त पत्तषेद नगर नहां सा लिभ
आदिना ना प्रकार के था न्य अति फति रहै ॥ अरक मल निक रिख्यी सो जित
॥ २७ ॥ तहां राजा वज्रवा ऊइइस मां न ता कै रानी वसुंधरा सो सात्ता तव सुं भग कहि
एष्यी हा है ॥ २८ ॥ प्रति वि कै वहल सितंग देव वृजं यना मा पुत्र भया ॥ सो वज्रसमं
न है जं य जा को ॥ २९ ॥ जै सैं दो जिका चंद दिन दिनि वट है तै सैं दिनि दिनि वटि कुं
धार ता नया ॥ अयने कुं टं वरुप क मोद ति नि कुं प्रफुलित कर ता संता ॥ अरज
नु निके मुख कमल ति नि कुं मुद्रित कर ता ॥ ३० ॥ नव योवन कूं आसन याया के
रूप की सो जा पूर्ण वा सी के चंद मां समान हो नी न दी सिर विषै के सअति स्यां म
अति वक्र ॥ सिध ॥ स वि क ए ॥ स्तं बाय मां ज सुगंध ॥ स्तं चम सो हते जये मां नें क
म रूप का रेनाग के पुत्र ही विस्तर है ॥ ३१ ॥ अरया का मुख कमल समं न नेत्र नुमर
स मां न मंद हा सि के सरि अरमधुर वाणी मकरंद सो सो भा कहने में न आ कै भ्र
अरने अति कै समीप दोऊ कान भुति के भार क कै से सो है है मां नें नेत्र निकुं स्त
मदर सी पनां सिषा वने कूं पं कित ति कंट रा वे है ॥ ३२ ॥ अरकं च विषै मो ति निका

हारहिमकणसमांनजज्ञकैसामोहैमंनंमुषरुपवंदमांकीसेवाकैअर्थितारा
 निकेसमूहहीआयेहै॥अरकुमारकावत्तण्यलविस्तीर्णवंदनसंवरचा
 औसामोहैमंनंसुंद केतरसंज्ञागीसरदकावांदिनीहोमोनेहैअरमुकद
 पचूत्तिकोमंनितयाकामिरसुमेरसमांनताकैसमीपदीऊदरदनुजामंनंनो
 लावलनिषधचलहहै॥अरयाकेसरीरकैमअनदीकेनवलणसमांनगोनी
 नासिमोहतीनईमंनंनारीनिकोदहिसोईनईदृषनीतिनिकेरोकनेकागर्भ
 है॥अरकोचीदामकरिवेष्टितहै॥अरदोउनितंवमहासुंदरस्थिरवर्तु
 स्यालमुवर्णकीवेदीकरिवेष्टितहै॥अरदोउनितंवमहासुंदरस्थिरवर्तु
 रसोहतेजएअरदोउजंघकदलीकेतरनैअतिकोमलमार्त्तस्त्रीनिकाम
 नसोईनयागजताकेवांशिवेकेमहाधंनहीहै॥अंघवनसमांनद्विदितिवि
 कदाबर्णनकरैभ्याकेनामहीमैअर्थआययया॥अरअरताकेचरणजुग
 तिकोमलमहासुंदरअतिआरक्तपरमसोनाकुंभारनेनेयेमंनंवाले
 कमलहीहैकमलकासोनातौराविकुंसुदितहोयहैअरयाकेचरणरात्रि
 दितमदासोभितहै॥अरयाकीरूपसंपदाश्रुतिसंपदासहितमनुक्तनिकेम
 हरतीनईजैसीसरदकावांदिनीकरिद्युक्तचंद्रमाकामूर्तिजोकिवि

धिनिकुं प्रिय हे यः ॥ ४३ ॥ अरता की नुक्ति गृह गमयुक्ता गमपरमागम विषे प्रवर्णा
 सर्वमास्व निविषे दीपिका ज्ञानमा नदीपती नर्द ॥ ४४ ॥ सो विनयदां नयते दीपक लका
 लाका वेता राग्य लक्ष्मी की कटा धिरूपवा एका निमणं होता नया ॥ ४५ ॥ ता के स
 ह जगण विना सिषा एन गन के जीव निके मन मोह ते नये ध्या की अत्यंत योग्यता
 जनने के मन विषे अनुराग वटावती नर्द ॥ ४६ ॥ यह सरस्वती विषे अनुराग कर ता
 अरकी तिर्कुंद संदिशि बिलसता ॥ अरत्न लक्ष्मी कुंवटावता विवेकी निके सिरप
 रिछत्र समान सोहता नया ॥ ४७ ॥ सो पुन्यवानयो वनकुं आसन या ननु स्त्री निविषे
 निस्पृह स्वयं भगवद्वा गता के अनुराग करि अनुरक्त है चित्त जाका ॥ ४८ ॥ ताका
 परम आनंद है का सत्य सीत होय है अरव हृदयं प्रभादेवी देव लोका है चयक
 रिक हां नयनी सो कहिए है ॥ ४९ ॥ जवत्त तितो गका स्वर्ग है पतन नया ॥ तब स
 यं प्रजापति के वियोग है अति बेट धिं न नर्द ॥ नै सैं वकवी वकवा के वियोग है बेट
 धिं न होय ॥ ५० ॥ अर नै सी ग्रीषम रति विषे भूमि संताप की भरन दाही होय है सी अ
 ता पर रूप होई ॥ ५१ ॥ अर नै सी वर्षा के आगम विषे कोय तम धुरव चन नै र हिन हो
 य जाय ॥ नै सी होय गर्द ॥ ५२ ॥ दिव्य ऊषधिसमां नय तिका संयोग है या कुं आधिक
 हि एवित की चिंता सो व्यधिरु नै अधिक पीडा उपजावती नर्द ॥ ५३ ॥ तद ए कद

तर्थात्तामादेव्याकृतं उपदेसदेयम्भोक्तुं न भविता रमयिषे सावधानं करतानया भवस्यो
 चिन्तामकी प्रतिमासादिषीमोगनिविधे निस्पृहो मीमर्षी मीमं सरवीरपुरुषकी बुद्धि रत्नुके
 नयसे रहिसरेभ्य भवस्यो स्वयं प्रजाश्रीमती हीणस्य रथर्मकीभ्यारकमहा विवेकवंती ह्यमही
 नातक त्रिनपूजा विधे तस्य रत्नर्ष भवजा कनकेभ्यः करमयै त्याज्य नि निविधे पूजा कर्तुं
 सुमेरु पर्वतक सोमनसमा मनुष्या न ताके पूजयिष्ये के त्रिनमंश्चि विधे विवेकं तत्र के तत्रै
 कारमंत्रका समस्त कर्तुं भवस्य भविकरिष्वाणत त्रिजगत्स्य नर्षी मीमंश्च विवेकं च तत्र वि
 त्तस्य उपद्रव्य हीय भवस्य पूर्वकस्या पूर्वविदेहता को पुंनरकणी नगरी विधे रागाद
 दंनचक्रवर्तिभ्यः प्रति विधे राणी तन्ममती तन्ममसा हि मीमंश्च रराजा ता कश्चिदुक्त
 त्रैसा सेहै मीसा क सपुत्रेति कश्चिदेष्टा क तपवक्तो ह्ये भवति नि के वरस्य यं
 अश्रीमती तामा पुत्री हीती नर्षी मीमंश्च रत्नं दत्ता की सो जा कश्चि का मकी पताका
 है ६० भोक्तुं मा हि क्वा व संत रिति स मंन न वयो व न कं पाय कश्चि अ धि क सो रती न
 र्षी मीमंश्च दं मां की कत्ता वधती संती लोक नि कं र्धव टावे सै सं कुटं व कं र्धव
 टावती नर्षी ह्यस्ता के रूपकावर्णन कं ह्युदक कश्चि है जा के चरण नि के नव
 ह्यमुं द र अरुण ता भरे क मल की से जा कं जी तै अरण्य ण र्नी मीमं जा अ सो क ब्रह्म
 की कृपल की मीमं जा कं जी तती नर्षी ६१ अरुण के चरण क मल तन्ममी के निवा

मवानतेनपरतेईअणुंजारकेकरणहारेनवरतिनिकरिसो नितहै ॥६२॥ मांनूंकमलवि
रकालनसमेंनिवासकरितपकीया ॥अरअप्रतांतनकंदककरिमंनितकीयाक
यकलेअरूपतपवैरेमांवसंयुक्तकीया ॥अररात्रिकूंमुद्रितहोतांमोनपकरनां
इहवजाइतहैसोमान्अचत्पाताकरिकमलयाकेवरणनिकीउपमांकूंवा
सप्रया ॥६४॥अप्रयाकीजंघामान्कामकेनरकसहीहै ॥६५॥अरहोजवोरमांनूंक
मरूपमांतेहाणीकेवांघिवेकेषंनहीहै ॥अरदोजनितंवसरोवरीकेपुलिनस
मांनसोमायमांनवस्वरूपनीरकरिआछादितअतिसमोपताकूंधरतेनये ॥६
॥अरसोक्रयासरीरकेमध्यददितणवर्तगंनीरनाजिकूंधरतीभईजैसेंनदीज
लकरिपूर्णभवणकूंधरे ॥६७॥अरयाकीकटिकेहरसमांनअतिथीनमतिकद
विसतनकेजारकरिल ॥वकिजायअेसाविचारिनामकर्मरूपविधाताहैमांनू
रोमावनीकेमिसिकरिआधाररूपषूंणीधराहै ॥६८॥नानिरंद्धकैअधोआग
सत्त्वसेमनिकीकेपेंतिअेसीसोहै ॥मांनूंकस्यानतेंद्रजेस्यानगमनकरताजो
कामरूपसर्पिताकेषोनहीहै ॥६९॥अरवदकन्यालतासमानमहाकोमलदोजवा
द्रसाषासमांनधारतीभईनवतिकीक्रांतिसोईभईपुष्पनिकीसोजाताकरिस
हितहै ॥७०॥अरकुचरूपकुंनसांमवीटनीकूंधरेअेसेसोहै ॥मांनूंकामकेरसके

नरेकससनीलरत्नकीमहोरसंपुक्तसोहैहै॥१॥ अरताकीकंचुकीसजापंथीस
तटसलजाअैसीसोहै॥ मानूकमलनिपरिसिवाचहीआयागयाहै॥१॥ अरजर
धैमोतिशकाहारहिमसमंनजलकुचनिकैउपहिआयरहाहैसोकैसीसोनाकूं
रहै॥ मानूजागकापुंजहीकमलनिकूंसपरसैहै॥१॥ अरकन्याकीग्रीवारेंवां
करिअतिसुंदरसंघकीग्रीवाकीसोनाकूंधरैहै॥ अरकिंवितनग्रीनतदोउनुसिख
नितिकूंधरेंअैसीसोहै॥ मानूंरसनीदोउपांषनिकूंधरैहै॥१॥ अररताकामुषवंद
अरकमलदोऊकीसोनाकाजीतनहाअरदशुतसोनाकूंधरेंनेत्रनिकूंअानेद
कारीमुलकनिरूपचांदिनीकूंधरेंअरदैदीपमंनदांतनिकीजोतिसोईहैकेस
रिजाविषै॥१॥ मानूंवंदमंविशकासकलाकासुंनिहदि रूपवंदयाएतएक
रियाकेमुखकीउपमंनूअसजयाहै॥१॥ अैसायाकामुखतैसावंदमाकहा॥
रकमलकदाअरयकैकर्णकरणाभरणसहितसोनेत्रनिजलंछिअपपनीदी
ताकादोदणहागनिकटवरनीताहिकौनदेधिसकैमावार्थानेत्रनिकीक
र्णपर्यंततीरुणकटाऊहै॥ यानयकरिशेत्रकांननिकैजलंछनहारैकहि॥१॥
रताकेनेत्रनिकैनिकठिकांननिमेंकमलनिकैकर्णफूसकैसेसोहै॥ मानूं
याकेनेत्रनिकीसोमोकूंरसनहारहैताकेदेविबेकूंकमलआयेहै॥१॥ अरमु

रूप

धरूपक मत्तसंश्रयुरक्तप्रत्यकनिकीर्णकतिताहिमिरपरिश्रीमतीधारतीमर्द्ध
 मोवन्ननिकीयहीति है। जो मतितावारीरु होय अर अममं अशा अय लेय
 ताहिनीकैणवै ७९७ के सनिके सारको मत्तवक्रमुगंधमिति यस्त्वस्योमं
 दीर्घनिश्रीमत्तप्रोत्तयद्वंद्वनके वृत्तकी साध है ताकै कारे तागत गिरहे है
 ८० श्रीमती के रूपका कृतोत्तावर्णिनकरै मदनके जन्मादकी जपजावनरु
 मीयाकी रूपसंपदाप्रोत्तदेवागमाकारूप एकत्र करि निर्मापी है ७९ नैसैं कोऊ
 चने राएक विनां मतीकानवनादै तवद्गजाविनामतीकावनाय अमपतां
 अपनमजता है तैसैं कर्मरूपवतेरै नैं तस्मा कृंचपलवनाय अपनमजता
 र्थाकृतासोमं नै श्रीमतीके सर्वलक्षणपूर्ण विनाय अपनोपपद्यतां सै कथं
 मातापितापुत्रीकृंदेषि अतिदर्शकं प्रामयेयदृष्टीचंद्रकलाकी नोर्द्ध आन
 दकारणी ७९ एक दिन दहकत्पारतनमर्द्धमहलहंस की भांष मज्जुजल सो
 जाकरि देव निके विमान कूं हसै ताविषे सयन करती कृती ७९ तासमै एक व्रत
 तमया सो सुनऊ याका पितावज्जदेन वक्तवति ताका पिताय सो धरती र्थे कर
 ति विष्कं मनोहरनामज्जान विषै केवल ज्ञाननुपपन्ना कृता ७९ सो देव विमान
 तिच दे केवल कत्पाणक की पूजा कें अवाते कते ७९ सो पुष्कनिकीवर्षा हो

तीजतीअरसवरगुंजारकरतेकतेमानूसर्गकीलक्ष्मीनैप्रभुकेदेबिवेकूंअ
 पनेनेवहीपचाये॥७॥सीतलमंदसुगंधपवनमनोज्ञवाजतीकती॥७८॥अरदेव
 इंदमिवाजतेकते॥तिनिकरिदसंहिसासवदायमोनहोयरहीहुती॥अरदे
 वनिकेजैकारावहोयरहेकते॥७९॥सोकंन्यापछिलीरातिदेवनिकीधुं
 निमुनिततकालजयी॥जैसेमेघकीधुनिमुनिहंसनीरहेतैरही॥८०॥वक्रि
 वनिकेदेबिवेकरियाहिपूर्वजन्ममरणनयासोललितोगकूंणदिकरिमू
 कूंआमजर्द॥एतवसवसधीनिसीतोपचारकरिपवनद्यानिसमेतक
 तौकुमोनिगहिअथोमुषाहोयरही॥८१॥वहललितोगकासखूपमहा
 तोहरकांतिरूपसुंदरलछिनमोन्याकेजरविषैजकीरेकाट्याहै॥८२॥स
 निपूछ्यातिहाराकहादमाहै॥सोपरमोनिगहिरहीकबुक्कहैनोही॥वहस
 लितोगकाअनुप रूपयाकेजरमेंछायरह्यासोवचननिकसैनोही॥मनमें
 ग्रहविचारनेयोवमैंसोहिवानीवकीआसिकेसैंहोयमों॥नगहिरही॥८३॥त
 सवसधीदृष्टोजानिकूंजारसेययाकेमातापितापैंजायपूछाकाअरसो
 निगहिवेकासकलजतातकह्या॥८४॥सोमुनिकरियाकुलहोयतनका
 पुत्रीपैंआए॥याकीअवस्थादेबिसोवकूंआमज॥८५॥अरकहतेजएहे

पुष्करह्वारेभ्यो गते उपमासेभ्यो गतस्तथा तिष्ठातीति हेष्ठविह्वारा गोदमवति मद्रा-
 विष्टाद्विष्टेवचनबोलासासेसंबोलात्तिष्ठातां तिसंबोधा नऊयहमौननतजैमोहकं
 ममर्दतानि तांगारूप है विज्ञानाका ॥ ९७ ॥ तवराजा अतिवजुरसकलवेष्टाकेव
 तारासीसंकहरनेमण है विद्ययहनेरापुत्री अवरपूर्णयोवननर्दी ॥ ९८ ॥ हेविद्याका
 जारीरअतितांतिरूप अस्मिमनोजतादेवांगाना निरुक्तं दर्शन है ॥ ९९ ॥ सोको
 कयोवनकाविकारयाकेउप जग है ॥ रोगविकारनांहीतातैतमयनकरि
 हिवाधानांही ॥ १०० ॥ मूरवजनमविषे टुट्टे वांगना दुती ॥ देवलोकके
 तयोगविक्रीमोगनहारासो पूर्वभवकादेव अोरदेवनि कंदे विद्याकं यादि अथा
 हैतातैमोहितचित्तनर्द है अथाजोति जीवनि कं पूर्व संस्कारयादि अथ वे है अरम्भ
 विं तहोय है ॥ १०१ ॥ अहकहि अरवक्रवतिरा नीलस्मीमती महितजवे ॥ अथरा
 यंकितायय कं याकै निकटिरा पीरा जवाह रिगयो ॥ १०२ ॥ ताही समै दोयषवहि अथा
 ईएकमनुष्यसौ करतानयाति हारे पिता कूंकैवलजानउपज्या ॥ अथररुजेक
 हीतिरसी अथुधमाता विवेचकरतनउपज्या ॥ तवराजावोऊवातसुनिदोऊ
 मनुष्यनि कं वधार्दमनमै विचारी पहली कहाकरतव्या ॥ १०३ ॥ सवअैसी बुद्धिउप
 जीजोपहलीकेवलीकी पूजाकरनी ॥ १०४ ॥ छैचक्रकासाधनकरनां ॥ १०५ ॥ सर्वकार्य

मैधर्मका काममुख है अर धर्म कार्य में निन पूजा मुख्य है ७। कहते जो विवेकी नि की
हरीति है अति दुर्लभ जो णि र प द का न पाय सो मुख है निन पूजा अ विना सी प
द का कारण है सो प्रथम करनी अर व क्र का न त म व विना सी क मुख के कारण है
सो पीछे करूंगा ॥ अथ सा विचार करिय सो धरती र्थ कर की पूजा कूं व जू दंत नि क द
वर्ती लोग नि सहित ग य ॥ जाय म हा पुत्र का कारण निन पूजा कर ता न या अ फु
लि न है मुख क मत जा का ॥ सो न ग वान के वर एण र विंद कूं प्रणाम कर तैं ही अ
धि जा न न प ज्ञा वि सु क प रि एण म क रि क हा फल न हो य ॥ १० ॥ न व अ व धि क रि व
दंत जा नी मै प्र व न व वि वै अ व्रु ते द ऊ ता ॥ न हों तैं व य क रि व जू ते द न या ॥ अर
दू जे सर्ग का दे व ल ति तां ग मे रा मि त्र सो व जू नं द न य र्क्ष अ र ल ति तां ग की स्त्री स
जा मे रै पुत्री श्री म ती न र्द है ॥ य ह स र्व वृ तां त ज्ञे त्या ॥ व द रि न ग वां न की पूजा क रि ध
व ल क रि पा छा द रि आ य पं दि ता थ य कूं पुत्री की रक्षा सो पी ॥ ११ ॥ अ प च क्र पूजा
रि दि ग्वि ज य कूं व द्या ॥ हा पी थो रे र थ प द्या दे दे व वि द्या ध र ए ष डं ग से ना
सा ॥ १३ ॥ व क्र व र्त्ति कूं ग एं पी छे पं दि ता अ ति ति पु ण श्री म ती कूं ए कां त वि वै द्र ति
ध ती न र्द ॥ १४ ॥ अ सो क व नी म थ वं ड को त म ए की सि ता प रि श्री म ती स य
ती ऊ ती ता कै ति क दि वै दि अ ति स ने ह स ॥ ता के अंग अ प ते को म ल हा य ति क

रिसपरसनी ॥ १५ ॥ अपनेदोतनिका कोंतिरुपजलके प्रवाहकरिताके फुट्यका सं
 यनिवारती संती अमृतरूपवचनकरती नर्द्ध ॥ १६ ॥ हे पुत्री में पंडिता सर्वकार्य विषे प्र
 वीण तेरी प्राण समान मयी अर्धाय सो जननी तुल्य ॥ १७ ॥ ता ते तू मो सं दु रावन करि
 हे क ने धन्य है मागे ते रा मो हि मोंनिका कारण कांन विवैक फु जो अपनो दुष होय
 सो माता सं न छिपाई ॥ १८ ॥ भैंन ती मांति अपने चित विषे तेरी पी रा का कारण
 विचा स्या परंतु जानि वे में न आया ता ते हे न वयोवने तू क फु ॥ १९ ॥ ते है य ह कोई म
 द न का उन्माद नुपया है अथ वा कोई ग्रहणी न है ॥ २० ॥ योवन के आरंभ विषे मदन
 का उन्माद अवस्य होय है ॥ २० ॥ या मांति पंडिता श्रीमती कृं प्रह्ला ॥ न व श्रीमती
 नां मुख रूप कमल क चूर्क नीचा करि कहती नर्द्ध जै सा दिवस के अंन विवैक
 ल मुद्रित होय जाय ते सा मुद्रित होय स्या है मुख कमल जा का ॥ २१ ॥ सो कहती नर्द्ध
 हे मातें नृप्य के योग ते ॥ २१ ॥ का रुवै कहि वे की नां ह्य ॥ २२ ॥ त था पि त मा ता स
 जान है मे रा ते प्र ति पा ल जो क रा है स्ते रा वि स्वा म है ता ते रूंक रूंक रूंक ॥ २३ ॥ मे रा
 था वि स्वा र कूं ला ॥ २४ ॥ मे रा पूर्व जन्म का च रि त देव नि के दे वि वि क रि मो हि या दि
 या है सो च रि त के सा है अरव के रुक्मा सो संपूर्ण में क रूंक रूंक सु नि ॥ २५ ॥ जै से सु
 य नां दे था ला दि रहै ते से मो हि या दि है ॥ २५ ॥ भैंन वन व विषे धात की पं फु ना मा

वती नर्द भै प्रसो मे रा अग्र पण धल मा कर का पा नो ति मु नि की स्तु ति क री ॥ २ ॥ अर
स्तान का क ले व र द रि मा स्ता सो उप सं त मा व क रि अ स्त पु न्य उ पा र ज्ञा ता क रि
म नु ष्य ज न्म वि धै द रि दी कै ध रि उप नी ॥ ४ ॥ अ व ह क स्त ण रु पि णी क स्त ण
का का र ण जे नि र्द्वै र्म ता हि अंगे गी का र क रि आ वा ग के व र अ द हे नि नें द गु ण सं
प ति ना मा त प अ र श्रु ति स्तान ना मा त प अंगी का र क रि ॥ ४ ॥ हे क प ठ र हि त
की ये भे क र्म ति ति का वि पा व ता त प तै हो य है सो त प नि में मु ष्य अ स न क हि ए वि
धि पूर्व क उप वा स है सो न क र्मु ॥ ४ ॥ नि न गु ण सं प ति के उप वा स त रे स वि अ र श्रु
त स्तान के उप वा स ए क सो अ व न्म ष्य ष म नि नें द गु ण सं प ति की वि धि सो ल ह का
रण ज्ञा व न की सो ल ह प नि दा ॥ अ र पां व क स्त ण ए की पां व पां वैं अ वा ज्ञा त हा
र्य की अ वा ज्ञा वैं ॥ ४ ॥ अ र वौ ता स अ ति स य की वी स द सैं ॥ चौ दा चौ द सि ए त रे
स वि न प वा स नि नें द गु ण सं प ति के क है ॥ ४ ॥ अ र श्रु ति स्तान के ए क सो अ वा व
ने उप वा स ति वि की वि धि क हि ए है ॥ ४ ॥ श्रु ति स्तान का मूल स ति स्तान ता के उ
प वा स अ तार् द स ॥ अ र सार ह अ ग का उ प वा स ग ण ॥ अ र प रि क र्म के उप वा
स दो ण ॥ अ र स त्र के ए द अ द्या सी ता व ति ति के उप वा स अ द्या सी ॥ अ र प ण मं
नु यो ग का उ प वा स ए क ॥ चौ द ह पूर्व के उप वा स चौ द ह ॥ अ र पां व वृ ति का के

य

उपवासपांवाधलप्ररप्रवधितानके उपवासछहः प्ररमनः पर्ययके उपवासदे
 प्ररकेवलसतानका उपवासएकं ध० एएकसो प्र वावन उपवास है ए दो ऊ
 धित प्रंगीकरक शि० ध० इ० निदो उ निका मुखफलके वलता न है प्ररगो ए फल
 गादिक है ध० है कत्ता ए रूपि एा दे विवेमहा मुनिसव वात निममर्थ आ प
 वुरा होय है प्रर प्रनुग्रह करे तो कत्ता ए होय जाय सो दया धर्म के धारक
 रूकं सराप न दे हिं० ध० सब जीव नि की दया ही करे जो पापी मुनो की वचन क
 निंदा करे सो नव नव विधे निंद्य होय प्रर जो मन करि मुनिकी प्रवर्ण करे सो
 नव नव विधे मन को या करि पीरित हीय ध० प्रर जो काया करि मुंनो न्युंका
 विनय करे सो को न से दुष न पावै तातै नयो धनं की प्रवसा कदा विनकर
 है जो रीवे महा पुरुष चत्ता माध० न के धारक ति निरुं पापी को धरूप प्रग निम्र प्र
 लित कर है है को सी है को धा ग निंदु रव चन रूप है फुलिंग जा विधे प्रर मोह
 रूप इंधन तै उपजी है प्रर प्रवत्ता रूप पवन करि वेरी है से निमूट प्रे सी को
 धा प्रम नि उपजावै है ते प्रपने दोऊ नव विगा रहे है प्र रसा धकं अनेक उपस
 है ध० को ध प्रज्जलित की या बा है न ऊति निरुं को धा नि न उपजै ध० ए मु
 नि के वव न प प्य स मां न मु नि करि निरना भिका प्र ए द्रत धा र प्र र निने इग

भास्वमसमै आ
 धादिन है

ए संप्रति श्रुतज्ञानदीवतपत्रं जीकारक रिदेहत नि॥५५॥ नै स्वर्गि ललितो गंदे
 वकै स्वयं प्रजा ना मा देवी नर्द्ध सो हे मातृ पूर्व नव चिता रिम अ लो क विषे आद्य
 पि हिता श्रव सां मी अप नो गुरु ति नि की प्रजा क री ॥५६॥ इं जा देव लो क महा रि
 दिका नि वा स त हां प्री प्र न वि मा न का अ धि प ति ल ति तो ग दे व ता स हि त में
 देवै के सुष भो ग दो क्ष हां नै व य क रि च क व र्ति कै पु त्री नर्द्ध ॥५७॥ प र ली त
 लि तो ग न हां नै व ए त व मे रा अ या यु छ र म हा ना र हा या सो छ म हा ना त क में नि
 न पू जा क रि च र्द्ध सो श्री म ती न र्द्ध ॥५८॥ अ व मो हि प र्व न व या दि आ या है ल ति सां
 ग क सं ज प न्या न्प्र र कै सैं मे रा वा का सं वं ध हो य य ह र्ति ता मो हि न प जी है ता नै
 मो नि ग हि र हा है ॥५९॥ अ व ह दे व दि टा रू प का धा र क मे रे म न में मां नं उ क र रि रा
 षा है य द पि स्व र्ग नै वं य क रि म री र र हि न हो य ग या है त या पि मे रे म न में सां
 गो पं ग वि है है ६०॥ हे क म ल व द नी व ह त लि तो ग का ल ति त रा रा र म हा सुं
 द र व स्त्र आ भू ष ण प ह रें मे न में व सैं है ६१॥ दे वि मे रा स री र सु ष म आ र्ती ति नि के क
 र क र्ति ल ना या अ व ति ति के अ लो न क रि क म हो य ग या है ६२॥ अ र मे रे ने त्र नि
 तै ए अं सू नि की वृ द्ध नि क सैं है सो मां नं मे रा दु ष दे वि वे कूं अ स म र्घ हो य ता
 क टु दि वे कूं उ द मी ना है ६३॥ अ ह स र्व वृ त्तं त क रि श्री म ती पं दि ता सैं क र्द्ध

तीजर्द्धमेरेपति केटुं दिवे कृतही समर्थ है अग्रे तांही ॥ १४ ॥ हे मग नें नीतोहि होतें
 मोहि दुष कहि का भस्म र्य की किराणि उद्योत होतें कमल नीकूं काहे कामुद्रित
 पनां ॥ १५ ॥ तसो चिनी पंनि ताहै सर्व कार्य करिवे कं प्रवीण तातें मेरे कार्य
 तों हिलि जाहै ॥ १६ ॥ आंण नाथ केटुं दिवे करि मेरे अंग निरकार ता कहि स्त्री
 निकुं विपति विवे स्त्री हास हाई होय है ॥ १७ ॥ ताकेटुं दिवे कानपय मै तोहि क
 रूं सो सुनि मै मेरे पूर्व नवका संबंध चित्र पट मै लिखा है ॥ १८ ॥ तामें मेरी अपर
 पतिकी कैयक गटवार ता लिखी है सो तय हर पट सेय करि मरुत नाम
 वै त्याज्य है तहोना ॥ १९ ॥ अनेक धूर्त पुरष तिनिके मन कूं मोह का कारण यह
 ॥ २० ॥ जो सिव्यावादी थी वपुरष ब्रथा पति रुवावा है ॥ तिनिकुं तगरु वार
 पूछि करि फाटि पाहियो ॥ २१ ॥ अनेक कह्यो तव पंनि ताया कूं वक्र न थी यवंधा
 तीजर्द्ध अरअपनी मुल कति रूप मंजरी करि मा नूं फूल सुवषे रतीजर्द्ध ॥ २२ ॥ पं
 निता थाय कहै है ॥ हे मधुर ना धणी सोहि होतें तेरे मन कूं कहां आता पंनि
 की मंजरी कूं होतें कोयल कूं कहां विंता ॥ २३ ॥ जो सैं कवि की बुद्धि सुंदर
 थी कूं हेरे ॥ अरल च्छा नद्यमी पुरष कूं हेरे ॥ ते सैं मेरे पति कूं हेरूं ॥ २४ ॥
 तेरा कार्य मै अरव सकलं ॥ २५ ॥ मोहि या नागत विवे को न कार्य कठिन नोही ॥

नातैतविंतातजि॥७४॥हेसुंदरीनाताप्रकारकेआनहनकीरचनापूर्वकरना
 तैसैंकरि॥जैसैंवंसंतविषैवेतिनाताप्रकारकेप्रवातअरअंकूरैतिनिकरिमं
 दितहोयहै॥तेसैंवंस्वाम्मषणकरिसोमितहो॥७५॥अरतसंदहनकरि॥तेरा
 कार्यअवस्यसिद्धिहोयगा॥जोश्रीमतीचाहैसोहीहोय॥श्रीमतीकीप्रार्थना
 विफलनजाय॥७६॥जोतछिमीकासामिनीहोयताहि॥श्रीमतीकाहिए
 त्सीवानकाचाहासबदाहोय॥ज्यैसाकहिपंदिताश्रीमतीकुंभीर्यवंधाय
 कादीयापटसैयप्रहापूतनामावै॥तथा॥७७॥कैसाहैमहापूतनामावै
 तालयअतिउंचैतन॥जदित॥सिषरतिनिकरिसोनायमानमानं
 तालतैनागेंदहीनिकरणाहै॥७८॥जानाप्रकारकेरतनतिनिकरि॥जदितजोतिजोति
 देवांगानाउत्पदाहै॥७९॥जानाप्रकारकेरतनतिनिकरि॥जदितजोतिजोति
 केहैविआमजहांसर्यकीकरि॥एकंजीतैज्यैसीनाताप्रकारकीमणिनिनि
 करिसोमितजंवेसिषर॥नितिकरिमोनेस्वर्गकुंदेष्माचाहैहै॥८०॥अर
 जसंक्षितरसाधुजननक्तिकेपावकरैहै॥नितिकरिबैसातयागंजिरहाहै
 मान्जव्यजीवसरसनकुंआवैहै॥नितिसंसेनाषणहीकरैहै॥८१॥अरजाके
 सिषरपरिपवनकरिधनाफरदरैहै॥नितिकरिमोवंदेवनिकुंजिनवंदना

कै अर्थ बुझावै है ॥ ७२ ॥ अरु जाके ऊरोषा निकरि धूप की धूम निकसै है सो नूर
स्वर्ग तो कर्म से उपलब्ध जग है ॥ ७३ ॥ अरु जाके सिधर परि है दीप मो न

सो है है ॥ अरु देव नि कुंठे से जासै है सो नृनगवान की पूजा के पुष्प ही है ॥ ७४ ॥
नृवह वै त्याज्य सुंदर का व्यका प्रबंध ही है ॥ का व्यका प्रबंध रुसमी चीन
त कहि ए छंदति नि कुंठे है ॥ अरु इह वै त्याज्य सद्व्रज कहि स मीचीन
त के धारक पत्नी आ व कति नि कुंठे है ॥ अरु का व्यका प्रबंध ना प्रका
पीति नि क रिसुंदर है ॥ अरु यह वै त्याज्य ना ना प्रकार के विजो म अर सुंदर
प्रतीति नि क रिसुंदर है ॥ अरु का व्य रु सुंदर राहु कुंठे है ॥ अरु यह वै त्या
य रु सुंदर राहु कुंठे है ॥ ७५ ॥ अरु नृनग वै त्याज्य मा ताग र न ही है ॥ ग
ज र न कै नी पत्ता का अरु या कै नी पत्ता का ॥ ग ज र न कै नी घंटा अरु या कै
घंटा ॥ ग ज र न कै घंटा सारि बे चरण ति नि कुंठे है ॥ अरु इह पंज नि कुंठे है ॥ ग
रा न रु गंभीर राहु क रियुक्त अरु यह रु गंभीर राहु क रियुक्त ॥ ७६ ॥ अथ
निके राहु क रियुं ग र क रिर द्या है ॥ विनो ही स मे मो र वि कुंसे रु का नृम उप
जाय न चा वै है ॥ सो नृवह वै त्याज्य मंदरा च स ही है ॥ ७७ ॥ चा है सिधर जा का अ
निरंतर चरण नृक रिवं दि वे गो प है ॥ अरु विद्या धर कहि ए पंक्ति त र

या आकासगामी विद्याधरतिनिकरिवंदनी कहै ॥ ४७ ॥ वैत्यालयके कहों लगव
 ननकरों ॥ वक्रवर्तिनिकाकराया अदनुतवैत्यालयतहों पंकिना धायनायजिन
 वंदना करिवैत्यालयके वारि बित्रपटकुं ऐलायदर्शन कूं आवै जे भूमि गोव
 रीतया विद्याधरतिनिकुं बित्रपटदिष्टावनी तिथी ॥ ४८ ॥ स्तितितागके परबिदे
 की है अतिताषाजाके तहों अनेकराजकुमार आए के इकतौ महाबुद्धी देखि
 करिवैतेगये ॥ अरकै इक देखि करि कहै है हरकहा है ॥ ४९ ॥ इतिनिके वचन सु
 निपंकितामूलकती संतोषयाजो गजतरदै ॥ ५० ॥ अथा नंतर चक्रवर्तिदिग
 विजय करि पाछा आया सेवा कहै है नरविद्याधर देवजाकी ॥ ५१ ॥ वती महजा
 रमुकटवं अजाति करि कीया है रागा निवेक नाका ॥ षट्ठं अष्टमी काराजा
 ताकी महिमा कहों लग कहै ॥ ५२ ॥ सकलराजाकुसक रितसमोनपरंतु पु
 न्यके प्रभाव करि सो सबनिकापति ॥ ५३ ॥ अजौ पम है सरारजाका वंदन सो समा
 न सौ म्बवदनकमत नेच पुन्य करि समस देवमनुष्य निविधै प्रताप वं तसो ह
 ताजया ॥ ५४ ॥ संक्षेप वक्रभ्रं कुसादि अनेक सुमल दण जाके पांयनिमै ॥ ५५ ॥
 माने वक्रवर्तिसंपदाके चिह्न नही है ॥ अर अमोघ अताजाकी कोऊ मेदि
 नसकै ॥ जाके राजपमैं प्रजातिरापराध सो कोऊ दंडि वेगो पनाही ॥ ५६ ॥ वक्रवर्ति

वत्तस्य तद्विधै तन्मीकूं धरोऽप्ररमुषकमलविधै सरस्वतीकूं धरेऽकीर्तिकूं सर्व-
 लोकमै विस्तारतामया एका चंद्रसारिषां काशरीभ्यः सारिषां तेजसी चंद्रमं
 तैर्तौ एकक्रांतिदीकागुणः अपरसूर्यतेजही धरेऽयद्दसवगुणमं हितता तं या-
 की उपमां याही कौव नैः सूर्यकाशत्रिविधै तेजनां ही चंद्रमा की दिनविधै क-
 नां ही यद्दसदा प्रकासरूपसे जायमानः एण पुन्य रूपकं त्याह दके फलन
 वनिधिवौ दहरतन तिनिकूं धरे सोहतामया १२० जाकै नवनिधियप्रसै भंज
 तिनिकरि कालवात काकमी नां ही दृष्ट्या कापतिसवरा जनिका राजा या
 वहवज्रदंत चक्रा कै यकदिना तिमै दिगविजय करिष रंगसे नासहित या
 आद्यमहाप्रवीण नगरमें प्रवेश कर ता मया ३ सैं देव निकी से नासहि
 द्रुप्रभर वैता में प्रवेश करै कै सा है दंड अपर कै सा है दहन विंद है दीप्यमान है
 सिरपरि मुकट जाकै अपर प्रकासरूप है कान तिमै कुं रुत जाकै सो पुरमें प्रवे-
 स कर ता अपत्यंत सोहता मया १४ षट् षंड कारा ज्यमुष संक है रत्ना १ निरि

नी ३ नगर धर्मे जय आसन द्धसे ना ७ नान न ८ नो जन भू ना दुसा
 ला १० एदसां गो गो गधै भू सकल कार्य तैं निरसु निर्भया परं जपुत्री के
 विवाह की चिंता ता करि कहु यक चिंता वां न षट् रवं रुष्ट्या विधै अपरां

रिंसी चतासंता कहता भया ॥ हे पुत्री तू सो कनकरि मौनत निमै जा नैरुं अवधिरा
 नक हितेरेपतिकासर्वत्र तो त ॥ तस्मात् कश्चिन्मन्त्राणादिपरिदर्याण विधैषुष
 दधि ॥ ३ ॥ नो जनकश्चिन्मन्त्राणादिपरिदर्याण विधैषुष ॥ ४ ॥ मैत्र सो धरती र्विकर के समो सरण मै ग या ॥
 लापतो हि संजसकारे मै होयगा ॥ ५ ॥ मैत्र सो धरती र्विकर के समो सरण मै ग या ॥
 षा सो सो हि च्चवधिरा न जयगा ता कश्चिन्मै के इक नवकी जां नैरुं सर्वो इक्का
 नै ॥ ३ ॥ काला भाव तै के वली जान नै च्चपरमावधिकरि मुनि परमाणं मा ॥ ३ ॥
 जा नै च्चपरमै देस वधिरा किं चित्तां नैरुं ॥ ४ ॥ हे पुत्री तेरा च्चरतेरेपतिका च्च
 रमेरा कछुय कवसां त पूर्व जनमका मै तो हिक रुं लो ॥ ५ ॥ या जनम तै पहली पां
 च वै जनम मै या ही सर्ग पुरा समान पुरी विधै ॥ ६ ॥ नारायण का पुत्र चंदकी ति
 ना मरुता ॥ ७ ॥ एक जयकी तिमैरा मित्र सो पिता के पीछे मैरा जपाया ॥ ८ ॥ मि
 त्र सहित या पुं नरा कनी पुरी विधै मै वं ऊत दिन की जा करी ॥ ९ ॥ आद्या वा के वत
 मै धर ही तै धरो वक्र रिचंद से नगर के निकट संन्यास धारण करि ॥ १० ॥ श्री ति
 वर्दन वन विधै प्राणत निचो यो देव सो क देवनया ॥ ११ ॥ सात सग रुका मे
 ला आ युजया ॥ १२ ॥ मेरा मित्र जयकी तिमै रूत रुं ही उपन्या दो उवनी रिधि
 के धाणी देवनये ॥ १३ ॥ नि नि का इंद मा सा पित गुर जे पाया पउत्य विनया ॥

प्रतापघाटकशिवडीसेनासहितपुंनरीकणीनगरीआया॥ जैसैंइंददेव

नासहितअप्ररावतीमैंआवैसोपुरीमहारवणीकअपारसत्मीकी

फरदरहैमंदिरनिपरिशुजाजहांधर्मोनेइंदपुरीहीहैअरवक्रवर्तिकेसावं

तटप्याविबेनिःसंकसमुद्रकीतीरकेवनतहोवेदनकीसाषाबूरसेसवंग

वेनिषूंदसेबिगुट्याधर्गरकीगुफाविबेविचरतेजयोतहांसिहतीजेदेवां

गनातिनकेचपसनेत्रकटाकरसहितिनकरिदेखेसैंतैसावहचक्राधिप

पनेपुत्रकरिफत्तीजोसंपदाताहिभोगवतामयादेवांगताअविरजकं

प्रासमईचक्रवर्तिकेजसगंवैहैंजोअैसेरुगजापट्याविबेहैंजिनिका

तापसर्वत्रकेतिरहाहैसोपट्याकाजीतनदारासमस्तवनअरवनवेदि

कातिनिर्कूंतलंघिंमलेखधंनकूंजीतिमागयादिसमुद्रकेदेवनिकूंवसिकार

कुत्ताचलैकरिवक्रकूंआगैंधरैपछाराजधानीआया॥ निनसासनविषेअ

पीहैबुझिगानौ॥१०६॥ इतिश्रीभगवत्सन्निसेनाचार्यकछितमहापुराणवि

षेनतिसंगदेवकास्वर्गतिंचदनवरुननामसुखापर्वपूर्णभया॥ ॥६॥

नुत्ताःसिद्धं॥ ॥अथानंतरवक्रवर्तिधरेआयपुत्रीकूंधीर्जुवंधावता

इयद्विंतारूपयाधिकरिपीकितताहिवक्रवर्तिप्रियववनरुपअमृत

हयुत्री

परिअमृत

कथैश्चरितसुंनैचयकरिपुक्करार्धदीपविधैमंदरावलनैर्पूर्वदिसाकीन
रपूर्वविदेहतरहा॥३॥मंलावतीदेजारतनसंचयपुरश्रीधरनामाराजाता
कैरातीमनोदराताकैपुत्रश्रावर्मानामवलिनद्रमयाअरराजाकैद्रजीरां
नीमतोरमाताकैमेरेमित्रअथकातिकेजीवदिनीषणनामातासुदेवनया॥सो
हमदोऊमार्दराजपदपायविरकालयानगरीमेंरमे॥४॥अररहमंरापिता
हमकुंराजदेयसुधर्ममुतिकैतिकटिमुनिहोयअनेकप्रकारकैतयकरि
सिद्धनये॥५॥अरमेरीमातामनोदरामेरेसेहतेअत्रिकानतर्हीवरहीवि
षैपवित्रआवककैव्रतपासे॥६॥सुधर्मगुरकैउपदेअतैविरकालअनेक
तपकीएअरकर्मक्षयलानामातयकैउपवासएकसोअवतालीसकीये
सोसुनऊआतवौछितीनसानैकुतीसनीमीएकदसमीसोलावारसि
पिअासीचौदसिएवंपकसोअवतालीसाअरअंतसमैसमाधिमरए
करिस्त्रालिंगछेदिद्रनैस्वर्गललितोगानामादेवनया॥७॥अरमेंवासुं
देवकैवियोगासैसोककुंआमनयास्ववमोहिमाताकैजीवललितोगानैसं
मोध्या॥८॥दे पुत्रतसोककौतजिसोकतौअज्ञानीजनकथैस्त्रस
वसंसादीजीवकैववनसुनिमैसोकतजिधर्मरूपमयाअसन्नमईहैवुदिजा

एणावतीसदिनएकसौसत्तरहिरकातपमोक्षफलकादायकहैअरमहाडरधरहै
अरइनामपसर्वतोमइकीयासाकीविधिउपवासएकपारणोएकउपवास
इपारणोएकउपवासतीनपारणोएकउपवासव्याधिपारणोएकउपवास
पंचपारणोएकउपवासतीनपारणोएकउपवासषोडशपारणोएकउपवास
तीनपारणोएकउपवासदोयपारणोएकउपवासएकपारणोएकउपदा
सपंचपारणोएकउपवासव्याधिपारणोएकउपवासभूपारणोउपदा
सअपारणोउपवासअपारणोउपदासअपारणोउपदासभूपारणोउप
णोएकउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपार
दासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदास
णोउपदासपंचपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपार
तिउपदासविचरुनरिपारणोपवीस००दिनकासर्वतोमइनामानपसर्व
कस्याणकाकारणअअरमहासर्वतोमइकेउपवासएकसोछिनिवैपार
णोअएदिनदोयसेवेतालीसकानपताकीविधिउपदासअपारणोउपदा
सअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदास
अपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदासअपारणोउपदास

[illegible]

यञ्जयवर्माकापुत्रसोच्चक्रवर्तिप्रदपाया अनिनेदन्तसंभार्कभक्तिकरिर्वादिशेगया से
 दर्शनकरिपापश्रवद्भरिकीये तातैप्रिहताश्रवतानमपाया ४५ अरविरकालचक्रव
 र्तिप्रदकेसोगसोगए ४६ एकदिनमैतादिसंवेध्या होनव्यहोइहविषयतजिबेयोप
 है तइनिकाअमुरागामतिहोइ ४७ देषिविषयकेत्यागहीमैतसहै भोगमैतसिनो
 ही एहीवातविवेकीजनकहैहै तेदेवनिकेअरमनुष्यानिकेभोगसोगए सोइनिमैसा
 रनाही ४८ वारंवारभोगनेमैकछुनवीनसुषमांही दहीरसक हावावेकावावन
 जोतिहराआत्माइंद्रपदकेसोग निकरितसिनमया सोमनुष्यानिकेअल्पभोगनि
 करिकहातद्विदोयगा तातैएषिणभंगुरविषयसुषतिनिकरिक्दाधूणताहोय ५०
 एभेरेवचनसुनिधिहिताश्रववीसहजारगानिसहित ५१ मंदरस्थविरस्वामीकेनि
 कटमुनिजया सोतपकरिअवधिसानअरचारणीरुद्धिर्कुंआसमया तिनिकाअं
 रतिलकपदरपरि ५२ निर्नामिकाकेभवमैतोहिदर्शनमया अरतैनिनगुणसंप
 तिअरश्रुतज्ञानतपसुर्गसुषकेकारणतेजावतैआदरे ५३ तातैवेपिहिताश्रवसां
 मीतेरुप्रअरमेरामातामनोहराकेजीवअरदेवहोयमोहिनुपदेअपातातैमेरेगुरसो
 लकैसामिंवाईससागरकीआयुभोगया सोवाईससागरमैइजैस्वर्गवाईसललितो
 गमये ५४ तिनिमैपह्लातौमातामनोहराकजीवजेतन्मांतरमैपिहिताश्रवसांभीन

तपस्तविषैप्रडिवापंचैदसेभ्यःक्रेष्टपक्षविषेदेषजाह्विभ्यारसिगमोति एकमंस
 न्यवासवहसोवर्ष एककेनपोवासवहतृतिभ्यरवहमहीधरकोजीवचौदकैदेवयो
 दीमसागरसुषमो गिवयासोधातकीषंडक्षपकेप्ररवमेरसंवधीपञ्चिमविद्वद्विषे
 धगांधितनामादेसभ्ययोभ्यानागतहंराजाजयवर्मोराजीसुप्रजातिविकै अभिजंज
 नामापुत्रमयाधरसो जयवर्म अभिजितं जयकूरानदेय अभिजितं दनस्वामी कैतिक टि
 मुनि होयभ्याचासुवर्धननामातपकीया ताकी विधि एक उपवास एक पारणो दो
 उपवास एक पारणो तीन उपवास एक पारणो चारि उपवास एक पारणो पां
 वन उपवास एक पारणो च्छत्र उपवास एक पारणो सात उपवास एक पारणो आ
 प्त्वा स एक पारणो नव उपवास एक पारणो दस उपवास एक पारणो नव उपवा
 एक पारणो आ वन उपवास एक पारणो स्यात उपवास एक पारणो छत्र उपवास
 एक पारणो पांच उपवास एक पारणो चारि उपवास एक पारणो तीन उपवास
 पारणो दो उपवास एक पारणो एक उपवास एक पारणो धनुसो जयवर्मो मु
 नि इत्यादि महत्तप करि मुक्ति पक्षे जहा अभिजितं अभ्यावाध परम अथै सुषध अ
 नयवर्मा कीरा नीसुप्रजा सुदर्शना आर्जुन कैसमी पञ्चार्क दोय रत्नावली आ
 न्यनेक तप करि स्त्री लिंग छेदिसो लकै स्वर्ग सा मातृक देव मया धध अत्र अभिजितं

॥ अरवा र्सवां ललितो गते रापति सो मे वा र्सं गृह्णु द्विक रिपु जे ते रा पति ललितो ग
 प हलै न वरा जाम हा वल कृता सो स्वयं दु ह्मं श्री के उप दे सक रि त प ध रि ललितो ग दे व
 जया ॥ ५५ ॥ अ व ल लितो ग स्वर्ग ते च ष्ट क रि म नु ष्म न या है ॥ मेरी व र्ण का पुत्र है सो ते रा
 व र हो या गा ॥ ५६ ॥ अ र ए क श्री रा ता सु न कृ व ह्ये ष्म अ र तां त वे द ति ति मो हि क ही
 जो ह्म यु गं ध र ति ने द्द कै स मै स म क पा या है ॥ ता ते न न का च रि त क ह्यै न व मै ग ए ध र
 दे व कै नि क रि जा वि धि सु न्यां कृ ता ॥ ५७ ॥ ता वि धि ति ति कूंक ह्या ॥ सो है अ र ते रे प ति रु
 सु न्यां ॥ ५८ ॥ अ र अ व तो हि क रू रू सो सु नि ॥ ५९ ॥ जं व दी प के पू र्व वि दे ह वि वै व द्ध का व
 ती ना मा दे स भो ग नू मि उ त्प म नो ज सा ता न दी की दं क्षि ए दि सा का त र फं ॥ ६० ॥ त ह्म
 सु सी मा ना म न ग र रा ज अ ति ते न य ता कै सं वी अ भि त म ति ता की स्त्री स त्प ना मा ॥
 ६१ ॥ ता के पु त्र व ह्म ति त्पे त र्क वा द वि धे वि वि कृ ण अ र ता का मि त्र वि क सि त सो ए दे
 उ मि त्र स दा ए क त र है क व रू न्या रे नां ह्म अ र पं नि ता र्द मै व वी ण ॥ ६२ ॥ मा ध न अ र
 सा ध ना मा स ॥ ६३ ॥ ज ति नि ग्र ह्म इ त्पा दि वा द वि द्या वि धे व वी ण ॥ अ र द्या क र्ण इ
 प त्रा ख स मु द्द्र के पार गा मी ॥ अ र स ना के रि णा य वे कूं त त प र ॥ ६४ ॥ अ र ए दो क र ज
 मा न्य वा द रू प षा ति के षु ना य वे ॥ मै व वी ण ॥ अ र पं नि त नि का गो हि ह्ये य त रं ए सु
 धि या श्री र ति के प र धि वे कूं क सो दी स मां ता ॥ ६५ ॥ सो ए क दि न ए दो ज रा जा कै ला र

मति सागरनाममुनितिनिकैदरसनगणेशो मुनिअमरत्नाविणीरिदिके धारका ॥ ६४ ॥
 नार्कप्रहसैमुनिजीवतलकानिरूपणा कीया तव एदोउकहै तेजो ॥ ६५ ॥ जीवपदा
 कारुनैदेष्टानोही सो अइस्पवसुकी कै संप्रतीति करै तातैं आत्माही नांही तो प
 नवविषै फलको नमो गवै ॥ एववनइतिके मुनि मुनिकर ते मये अहो उमजीवकी
 नासितुछजानी निरुं जीवतदीसै तातैं कहै सो इहकथन ऊदा है या भेंदऊनदोष है जो
 तुमदेष्टाही मानो हो तो सरत्तमपदार्थ परमाणुपिसा च आदितिनिकुं मानूँ है कै अं
 ॥ छदमसकहिए इंद्रीजनि रत्नानके धारक नितिकुं आत्मा का दरसन नांही परंतु
 आत्मा प्रत्यक्ष है अरु उमकही हो इमदेबे सो मानै ॥ ६७ ॥ सोति हारा दादा पउदा दा तुम
 कवदेष्टा ॥ तथापि वरनासि नांही ॥ ते सैं जीव है कै कहै कि अरा रके विना सहै ते मा
 वका दरसन हो नांही ॥ ६८ ॥ तातैं जीव नांही सो इह अद्यामि पण है ॥ काहे तैं जो या
 लोक विषै नेत्र निकरिन दा वै असे सत्सपदार्थ कहै ॥ ६९ ॥ जीव औ सा राह कहै ने भौ
 आवै है ॥ सो जीव वसन होय तो औ सा सवद रूप होय ॥ अरत्न का अस्ति त्वप्रतद
 वै है ॥ सो जान है तो जीव भी है ॥ जीव विनां सा न नांही ॥ ७० ॥ इह जीव औ सा राह ही जी
 व कुं प्रगट दिषावै है ॥ ने सैं घट पटादि पदार्थ है तो कहि वे सैं आवै है ॥ इत्यादि अस्ति
 कवरवा करि मुनि इह निका नरम इरिकी या तव वेदो जमि अर्घन नि मुनिकुं नम

रकरिमुनिनये॥ सुदर्शननामानपञ्चरत्रावाहवर्धननामानपञ्चादिअनेकतपकर
 तेनये॥ सोअत्रावाहवर्धनकीविधितोत्रपरिनिषाहै॥ तातैजानहुअरसुदर्शनतपकी
 विधिसुनहुअमपक्ततीनप्रकार॥ नपसम॥ २॥ वेदक॥ २॥ द्वायिक॥ ३॥ सोएकएककेनि
 संकितादिआवत्रावअंगसोसमपक्तकेजेद॥ २॥ अतिनिके॥ २॥ अथवासएकांतरक
 है॥ सोदोऊसिजनितोत्रतपकीए॥ मद्युसमैविकसितकेजीवनैवासुदेवपदकानि
 दानकीया॥ दोनपरिकरिदसमैदेवलोकोसोत्तहागारकीआयुर्द्वप्रत्येदसये॥ सो
 स्वर्गलोककासुषा॥ मोजतहोतैद्यकरिधातकीषंरूपविषैप्रवविदेहपुष्पजाव
 तीदेसपुंरणीकणीपुरीतहोराजाधनेजयताकै॥ रानीजयसेनाताकै॥ ग्रहसितकाजा
 वमहावत्तनामावतिनइनया॥ अरतादीराजाधनेजयकी॥ रानीयमस्वतीकै॥
 विकसितकाजीवअतिवत्तनामावासुदेवनया॥ सोवासुदेवतौराजकरिपरलोको
 गाय॥ अरमहावलवलिनइनसमाधिगुहिनममुनिकै॥ निकटतपकरिचौदवैदेवलोको
 प्राणतेइनया॥ नहोचीससागरसुषनो॥ गिधातकीषंरुकेपूर्वविदेहविषैवस्त्रकावती॥
 देवाप्रजाकरीपुरीमहाप्रतापीराजामहासेन॥ ७॥ अरानीवसुधरातिनिकै॥ जयसेनना
 मापुत्रचक्रवर्त्तिचंद्रमासमानआनंदकारानया॥ ८॥ सोदऊनदिनराजकरिविर
 कतहोयसीमंथरतीपंकरके॥ निकटमुनिनया॥ ९॥ अत्रतीचारहिनतपकीया॥ सोल

दकारणभावनाभायसमाधिसरणकशि० ५ ॥ अथ मी० गी० वेवेधै अथ द० मि० दस या० ती० स
 गरसुखजोगि० ६ ॥ तद्वां तै० चयपुष्करार्द्धदीपविधै प्रवविदेह० भंगलावती देसरत्न
 संचयपुष्प० ७ ॥ तद्वां अ० जितं जयराजा रानी वसुमती ति नि कै० युगं धरना माती र्थिकरं द०
 मनुष्यनिकरिपूज्यनया० ८ ॥ भार्जजकतपकल्पा एक की पूजा द्र० द० निकरी व० द्र०
 रिकेवलजया यसमो सरणसैति है है ८ ॥ यद्भवकथ्यसै युगं धरसमो सरणसै ब्रह्मे द०
 लां तवे द्र० अ० रते रे पति कृ० तो कृ० कदा ॥ वे न गां न क्वा सति सागरदेव लोक के सु
 णि अ० रद्दं तदेव पद० कृ० प्रास नये ॥ ९ ॥ ते युगमैव मे नृगं धर० धर्मरूपरथ के बोरी

र्थिकरदमा री तिला री तिला कर० वे प्रभु जयजी वरूप कमल निके वन ति निके प्र
 फलित करि वे कृ० स० र्यसमान है ॥ १० ॥ सो ए मे रे वचन मुनि अ० ने कदे व सप्र क० द० र्मा
 प्रास नये अ० रत्नै रा पति प० रम धर्मा नृ रा कृ० प्रास नये ॥ ११ ॥ अ० रद्दे पुत्री पि हि ता अ० व
 मी कृ० के वल जप या० तव आ पुति सव निके वल पूजा करी सो तो हि या दि है ॥ १२ ॥
 अ० रद्दे पुत्री सयं न० रव रा स मुद्र की की डा अ० र अ० ज न गि र पर्वत की की डा ए सव वल
 तो हि या दि है ॥ १३ ॥ तव श्री मनी कही दे ता व सै स व जा न० र्हे ॥ १४ ॥ मु० गी० के वल पूजा
 अ० वर तिल क मिरि प रि करी सो मो हि सव या दि है ॥ अ० र अ० ज न गि र का की डा त था
 न० र म ए की की डा मे रे द्र० द० य विधै व्रत त० द्र० ति जा सै है ॥ १५ ॥ प० रं तु मे रा प्र ति क द्वां ज प

आसोमोहिगमनोही ॥ ९७ ॥ तववक्रवर्त्तिकही ॥ हेपुत्रीत ॥ अरनेरापति ॥ तौजवसर्गिही ॥ मैं
ते ॥ अरमैंतिहारी ॥ आयुमैंधवासरजार ॥ पूरववाकी ॥ धेतववया ॥ ९८ ॥ सोयापुंरही ॥ क
णीनगरी ॥ विषेयसोधरती ॥ र्थकरकैरानी ॥ वसुंधरा ॥ तिनिकै ॥ वज्रदंत ॥ पुत्रजया ॥ ९९ ॥
अरउममोपी ॥ छैं ॥ आयुपूर्ण ॥ कस्वर्गितैं ॥ वदेसो ॥ तेरा ॥ पतितो ॥ मेरा ॥ वदन ॥ के ॥ पुत्रजया ॥ अ
रत्सेरै ॥ पुत्री ॥ भर्द् ॥ १०० ॥ आजि ॥ स्तनी ॥ जे ॥ दिन ॥ तेरा ॥ लति ॥ तांग ॥ के ॥ नी ॥ वसुं ॥ मिना ॥ पहे ॥ यगा ॥
अरअवारही ॥ पं ॥ निता ॥ था ॥ य ॥ वाकी ॥ सव ॥ वार ॥ ता ॥ ते ॥ आ ॥ वै ॥ है ॥ १ ॥ वह्या ॥ अव ॥ रु ॥ में ॥ तेरा ॥ पति ॥ अ
वअहो ॥ यागा ॥ जो ॥ वत्तु ॥ औ ॥ र ॥ वोर ॥ है ॥ रिये ॥ सो ॥ धरि ॥ ही ॥ मैं ॥ है ॥ २ ॥ अरवा ॥ के ॥ मा ॥ ता ॥ पि ॥ ता ॥ ते ॥ र ॥ मां
मा ॥ मां ॥ मां ॥ है ॥ अर ॥ फू ॥ फा ॥ फू ॥ फी ॥ नी ॥ है ॥ सो ॥ आ ॥ ए ॥ है ॥ में ॥ उन ॥ के ॥ स ॥ न ॥ मु ॥ ष ॥ जा ॥ उ ॥ रूं ॥ य ॥ द ॥ क ॥ हि ॥ रा
जा ॥ तौ ॥ वा ॥ द ॥ रि ॥ गा ॥ या ॥ ३ ॥ अर ॥ ता ॥ ही ॥ स ॥ में ॥ पं ॥ निता ॥ था ॥ य ॥ अ ॥ र्द् ॥ फू ॥ लि ॥ र ॥ ह्या ॥ है ॥ मु ॥ ष ॥ क ॥ स ॥ स ॥ जा
का ॥ मु ॥ ष ॥ के ॥ द ॥ र्ध ॥ क ॥ रि ॥ का ॥ र्ध ॥ का ॥ सि ॥ छि ॥ ष ॥ ग ॥ ट ॥ दि ॥ ष ॥ व ॥ ती ॥ भ ॥ र्द् ॥ ४ ॥ अर ॥ क ॥ द ॥ ती ॥ न ॥ र्द् ॥ है ॥ क ॥ से
त् ॥ र ॥ मं ॥ ग ॥ ल ॥ क ॥ रि ॥ ज ॥ छि ॥ कूं ॥ प्रा ॥ ष ॥ हो ॥ दु ॥ ॥ से ॥ रे ॥ म ॥ नो ॥ र ॥ ष ॥ सि ॥ छि ॥ न ॥ ये ॥ मैं ॥ स ॥ व ॥ वा ॥ र ॥ ता ॥ क ॥ रूं ॥ सो
त् ॥ सा ॥ व ॥ धा ॥ न ॥ हो ॥ य ॥ क ॥ रि ॥ सु ॥ नि ॥ थ ॥ अ ॥ ति ॥ अ ॥ ष ॥ र्ध ॥ का ॥ न ॥ स्या ॥ म ॥ हा ॥ पू ॥ त ॥ ना ॥ मा ॥ नि ॥ ना ॥ ल ॥ य ॥
त ॥ हां ॥ मैं ॥ ते ॥ री ॥ आ ॥ ज्ञा ॥ तें ॥ ए ॥ ट ॥ हो ॥ र्द् ॥ अ ॥ र ॥ प ॥ ट ॥ कूं ॥ फे ॥ त्या ॥ य ॥ त ॥ हां ॥ ति ॥ छी ॥ ६ ॥ सो ॥ कै ॥ द ॥ क ॥ तौ ॥ व ॥
हो ॥ ए ॥ प ॥ ट ॥ का ॥ भे ॥ द ॥ न ॥ जा ॥ न्मं ॥ ७ ॥ अ ॥ र ॥ वा ॥ स ॥ व ॥ त ॥ धा ॥ ड ॥ र ॥ द ॥ त ॥ ए ॥ दी ॥ न ॥ रा ॥ न ॥ कु ॥ म ॥ र ॥
प ॥ ट ॥ कूं ॥ दे ॥ षि ॥ द ॥ र ॥ वे ॥ अ ॥ र ॥ वा ॥ त ॥ व ॥ ना ॥ य ॥ क ॥ द ॥ ते ॥ न ॥ ये ॥ ८ ॥ य ॥ प ॥ ट ॥ का ॥ अ ॥ र्ध ॥ द ॥ म ॥ ना ॥ न्म ॥ का ॥ रु

राजपुत्रीकंजातीस्मरणमया है सो अपने पुरव नवकी चेष्टा विप्रद विधे लिखी है ॥
 यामोतिवजुर्गर्दीवातकरने लगे अर आपर्कुं हथा नायकमानने भये तव मेह
 कही अये सें ही सो यगी ॥ १७ ॥ छै मे जनका आगु रहं नि विप्रपद के गह अर्थ पूछे
 तव विलिखे हो यमों निगहिव सो पाये ॥ १८ ॥ बक्रिते रावरव जे छंद आया महादि
 रकाधार कनवयोवन को तिक रिषट्ट विविधे अ नुपम ॥ १९ ॥ सो आया निन में दि
 की प्रदक्षणा देय स्तुति करि प्रणाम करि मेरे नि कटि आया ॥ २० ॥ विप्रकूट के देवि
 कहता जय मेरे पुरव नवका विजया विजय पद में लिखा है ॥ २१ ॥ वर्णन में न आये असा
 विजय मकी या है ॥ नंवा र्ग चौडार्ग नवा र्ग सव रुजे देव लो क की लिखी है ॥ २२ ॥ अ हो म
 निपुण यद् विप्रकर्म जगट है ॥ रसभाव करि मंदिन म तो हर रेखा ॥ अति माधुर्य ता कूं
 धरै है ॥ २३ ॥ या पट विधे हमारे पुरव नवका संबंध विस्मय करि लिखा है ॥ श्री प्रवही मांण
 विपति में ललितो गदेव सो मेरा स्वस्य या पद में प्रगट दे पूरुं ॥ २४ ॥ अर स्वयं प्रजा देवो
 नामे श्री अति वल्लभा ता काय हरूप मोहि अति सविकारी ॥ नाना प्रकार के आन
 क री मंदिता ॥ २५ ॥ अर या में कि ते कवा त तो लिखी है ॥ अर कि ते क नो हा लिखी है
 नि ए है ॥ जगत कूं जम उपजाय वे अर्थिय रह जा देव लो क लिखा अर रह श्री प्रम
 दिमान दे दीप मो न अर विमो न का अ विपति में ललितो गदेव अर यद मेरे निक

८ मेरी प्रिया स्वयं प्रजा सो विप्र पट में लिखी है ॥ १६ ॥ अरु इह कल्प चर नि कावन अ
 रय ह सुंदर सरोवर फूलि रहे है कमल जामें ॥ अरु गहरी दिव्य का स्यां न कये की डा
 क रि वे के मि ॥ १७ ॥ अरु यह मोन की मरी स्निह रूप को पकूं धरे दूध संपरा न्मुष हो
 यमं देरें मैं वैवी पवन क रिहा लती लता समं न सो यह सम य प्रार्थ दिषाया ॥ १८ ॥
 अरु मेर कै सट ह मारी की डा अति मनोहर सो दिषाई कै सा है सु मेर का सट के लती
 मणि नि की प्रजा सो ई न या पट ना क रि में डित है ॥ १९ ॥ सो ए स व ना व दिषाये परं तु अ
 न रंग है प्रम का स डा व ना कै अरु वहि रंग मानव ती हो य मि षाई र्षा ता क रि मे
 संग नैं नि क सि ॥ २० ॥ स्वयं प्रजा मणि नि के न मुर ति नि क रि फं कार कर है है वर ए जा के
 अं से वर ए क रि मे रि प्रम क रि ता इती कारु एक स धी नैं नि वारी कृती सो जा व न
 लि षा ॥ २१ ॥ अरु एक दिन मैं प्रजा मां न की या कृता अंत रंग तो ह मारे स्निह सं जे रे
 सो या नैं प्रयाय मे रे पां य नि मे सि रष ॥ २२ ॥ सो यह दि षा या ॥ २३ ॥ अरु अरु च्यु ई तें पै न
 नां अरु पि हि ता अव की पूजा का वि स्ता र अरु परमं स्निह की वा र ता का वि स्ता र स
 व लि षा है ॥ २४ ॥ अरु एक दिन स्वयं प्रजा मान की या कृता सो मैं पा य ति प स्या सो म ह
 को म ल कर ए पू र ता की मे रें ई सो न लि षा ॥ अरु रंग का न स्या प्रि या के प ग का ॥
 अं गु ष्ठा का मे रे ज र वि षे चि न्द की या त व स धी नि क ही अं सा अ वि न य प ति क

नकरांतो तव वल्लभा कही स्मरु मोर वल्लभ कै वल्लभता का विरुकी पाहै सो घर जाव
 या पट मै नहि पाया ॥ १६ ॥ अरए कदि न प्रिया के कपोल कटिक के पट समान जगला
 ता विधै मै विजाम कर ता कृता सो न लिखा ॥ १७ ॥ अरो यहर निपुण ता स्वयं प्रभाही के
 षकी है ॥ १८ ॥ मै प्रवीणता औ रस्ती जन मै नां ही ॥ १९ ॥ या मोति स्रयं प्रभा की सुति
 रिचा कुल होय धिले क मै सु म होय गया है ॥ अंतः करण जा का मुद्रि न होय गये
 नेत्र ॥ २० ॥ अर अं स न रिआये मरण की सी दसा कुं प्राप्ति होय गया सो मान् स्
 पम षी नैव चाया ॥ २१ ॥ ता हि मुखि आया ग ई वा की घर अग्र वस्या देखै मै ही बिंता
 दा न न नई ने पाषाण चित्र रूप ते ने ज पद्य लिगये ॥ २२ ॥ तव निकट लो क निसी लो प वा
 करि सवेत की या तो विधै लगाई है मन की हति जा नै सो सर्व दिमा तो मई देखे ता न
 ॥ २३ ॥ दानी वेर से सावधान होय मो हि प्रसन्नता नया ॥ देन इय हर विज पट को न नै लि
 षा है ॥ या मै मेरे पर वन व का व रित्र है ॥ २४ ॥ तव मै क ही तिहारै मा मा की पुत्री श्री मती
 दाह योग नई है ॥ २५ ॥ स्त्री नि की सहि मै एक अदनुन क मा है ॥ ता हि तुम मंद की प
 ता का जानऊ ॥ २६ ॥ सुंदर है को ति जा की ॥ मधुर ववन माषणी सर्व स्त्री नि मै जा वे र षा
 समा न ज रु छ है ॥ २७ ॥ पूर्ण नव योवन है ॥ संपूर्ण जोवन के आरंभ कुं दिषांवन ही
 जैसे कटाक्ष युक्त नेत्र ति नि क रि का म अप ने वा न ने की प्र सं सा कहै है ॥ भावा

यत्तो विद्योगतैसंयोगकस्यै सोऽहमरै वि वि अत्र नुक्ल नयाऽभवदैवसन्मुषहेयतव
दीपांतरतै अत्र दि संतरतै अत्र समुद्रके अंतरदीप तै ईष्टय दार्थ कृन्मा निमिल ।

वैभ्रष्टाया नोति कस्तसंजावदवज्जंषकु मारयसे वत्रा यगये है जाके करप
वविषेम सक्तुत्स्नी मेरे ह्यथ तै वित्रपट अणने द्यथ में लीयाऽऽऽ अत्र अत्रपने द्या
यका वित्रपट विमो हि सौष्णाया विषे ते रे वित्रपट समं नमवना वप्रगटदी वै
या वित्रपट विषे मो रचना जहां चा हि ये तहां यथारथ है अत्र रवस्तु निके अत्राकार
यथारथ है अत्र रवे रकीटसायथारथ है इह लय रूव क्रत अर्थ कं जता वै है अत्रा कर्णे

प्रत्याहारकी नार्द्रऽऽऽ यद् अथ ने द्या यका वित्रपट मो हि न सौष्णा मो ने अत्रपने जं
का अत्र नरागत रे मनो रथ का सिद्धि का मूल मो हि अर्था एकी याऽऽ वक्र रिदो न
यजो रि मेरी वक्र तस्तुति कसी अत्र कही है कल्याण रूयिणी तेरा दर्शन वक्र रि
अवतज्जा क्र अत्र मै रूं अत्रपने स्या न कजा नरु अत्रै साक हि चै स्या लय तै य रि गयाऽऽ
अत्र मै यद् सवदा ताले यते है निकट अत्रा र्द्रां फिता के ये वचन मुनि श्री मनी रूथप
रि वित्रपट लीयाऽऽऽ सा हि दे वि वि स्वा म उ यन्मा अत्र ति प्रसं न्न नर्द्र नै सै य नो
न सं अति सं ताप का नरी पपी दी मेरु का अगा म दे विहर वि त सो यऽऽ अत्र र हंस नी
सरदरति विषे पु लिन कुं दे वि प्रसन्न सो य अत्र न वजी व नि की पं क ति जै सै अत्रात्म

शास्त्रकं पाय प्रमोदवंतस्योय ॥ ५६ ॥ अरको फलमंजरी ॥ ५७ ॥ अयाय अयाव नि के व न
 कंदे वि प्रसन्नस्य अरदेव नि की से ना ने दी सुर दी प कंदे वि प्रसन्नस्योय ॥ ५८ ॥ तै सें अ
 मती विष पट कंदे वि प्रसन्नस्य म न वं छित्त अर्थ की प्रा ति को न के म न कं न हरे ॥ ५९ ॥
 त व या की प्रसन्नता पुष्ट करि दे कं पं नि ता अ व स र पा य दो ती ॥ ६० ॥ हे क त्या ण रु पि
 टी त सी प्र ही क त्या ण कूं आ स हो ऊ ने रे आं ए ता य का स मा ग म नी प्र हो य ग ॥ ६१ ॥ य ह
 नि श्र य क रि त य ह अ वि स्वा स क रे जी व ह मौ न ग ढि ग या मै बा का ना व नो ही रू प दे ष
 है ॥ ६२ ॥ अ य नी वे र ल ग द र वा ने ष म र ह्य ॥ अ र मे री बो र वा रं वा र दे वै अ र स थे म र ग मे
 जा ता ये न ये न मे अ ग ष है ॥ ६३ ॥ मु ल के जं म र्द ले य क छु ष म ष मा चि त व न क रे अ
 या जा य व क रि मे री नु र कां के लां वे लो वे अ रि ज ह न सा स नां षे ता वै मे अ रे सी जा
 नी वा कै का म न्व र प्र व ल है ॥ ६४ ॥ अ र व ह ते रे वा प का तौ भां णि जा है ॥ ६५ ॥ अ र ते री मा
 का म ती जा है सो ए दे ऊ री वा हि ते रा ज त म व र मो ने है ॥ ६६ ॥ अ र व ह म हा ल त्मी वां
 न है कु ल वं त हो व अ र है अ रि स रू प है सं त नि का षा रा है जो व र मे गु न वा हि
 य सो वा नै है द द स्त ल त्मी ॥ ६७ ॥ स र स ती की सो कि हो य ता के ज र स्य ल मे वि र का ल
 व सि दे क त्यां ण मूर्ति त सैं क रां क त्यां ण की नो क्त हो ऊ ॥ ६८ ॥ सि री नु त्प ल त्मी अ
 र स र स ती नां ही ॥ अ र अ र्प र्द ल त्मी अ र अ र्प र व स र स ती है ॥ ६९ ॥ ल त्मी तौ क म ल

रूपकुटीकी निवासिनी जके पञ्चपवन सैं चंचला अर सैं को वरूप अर रज युक्त ता सैं
तो हि देष तैं लक्ष्मी दरिद्र रूप है ॥ ८९ ॥ अर सरस्वती मुख विवै जप नैं सो मुख छिष्ट
निवास है सो वे दो ऊहा तैरा समता कै सैं करै तरत न निकै मंदिर मैं रह न हारी
पवित्र है जन्म तेरा ॥ ९० ॥ हे सुंदर वदनी लता समान ललित अंग की धरण हारी त
लितो गकै पवित्र चित्र रूप मन्मथ से वर विवैरा जहूं सनी की नोई ललितो ग प्रसां
ने वर सरमि ॥ ९१ ॥ तिसरा दो उ निका उ वित संयोग करि दोऊ निकै माता पिता क्र
तार्थ होऊ अंशै से योग संबंध विनां लोका पवा द कै सैं मिटै ॥ ९२ ॥ अर हे जे देव स्व
म करिते रावर सी ब्रह्मा आ दे है अर वा के माता पिता नो अपाये वा की माता सो तैरा
वा है ॥ अर वा का पिता तेरा फूफा है ॥ अर मां मां है तेरी माता वा की भवा जगै है
जन के आ पवै करि सवन ग रज छास्या है ॥ ९३ ॥ अर तेरा पिता ज न कै सन मुख गण
है ॥ इत्यादि छिपे वचन करि पंक्ति वाया मुख जप जाया ॥ तथादि श्री मनी कै अति
तुरता सो पतिके पर सें विनिष्ठा कुल तान मिटै ॥ ९४ ॥ अथा नंतर वज्र दंत व क्रव
राजा वज्र वा ऊकुं सन मुख नाय अ पने मंदिर त्याया ॥ ९५ ॥ वरुने कवद न अर मां
णिजा नि कूंदे छिपर मग्रा ति कूंडा समया ॥ इति समां न अंगो रहित जहां ही ॥ ९६ ॥ मु
र्तिक रि किंचित् काल तिष्ठे वक्र रिड नि की पाऊ न गतिक रा ॥ ९७ ॥ चक्रवर्तिका

कीया वक्त सनमो नपायरा तावजवाङ्गा अतिहरणा ॥ धनी अतिसनमो नकरै तव
 सेवक को न प्रसन्न होया ॥ अथ अतिसुषम संसवति हेतव वनी वहने ऊ संकहता म
 या ॥ ७९ ॥ हेरा जन जौ तिहारी श्री तिमो संज्य पार है नो नु कु छि मेरे दश विधै नली वस्तु
 रुचै सो नु मने का ॥ ८० ॥ तुम मो संज्य विक सने रजनाया सो कुटं वस हिन मेरे दहि आण
 ता कहि मेरा मन अति हरि त है ॥ ८१ ॥ तुम सा विषे परम हिन पखि वार सहित मेरे अया वै
 तव त्रै सी कहा वस्तु जो तुम कुं न छुं ॥ ८२ ॥ नातै तिहारें दखा होइ सो लेऊ है सेइ दवा
 न मेरी प्रार्थना संग न करे का ॥ ८३ ॥ त्रै से प्रेम के जरे वचन चक्रवर्तिक है तव वज्रवाङ्क
 क ही है देव तिहारें प्रसाद तै मेरे सर्व है कहा प्रार्थना क सं ॥ ८४ ॥ तुम राज नि के रा जो दे
 व नि के देव त्रै से सने रहै के वचन अति आ ॥ ८५ ॥ दे सं मो हि कहौ होया समान और कहा
 तिहारी मो सं अउल क या है ॥ अथ कण की दृष्टि कहि मो हि रागत मै वन की या ॥ ८६ ॥ क
 हाय ह संसार की लक्ष्मी धिन नै गुह मै मागं तिहारी मुद छि रं क न कुं राव करण हा रा मो
 विधै अर पण क रो होया ही कहि मै अति पूर्ण ॥ ८७ ॥ अथ अर अपा कै क खु देवै की नां ह
 रा ॥ मै अना नि धन्य नया मेरा नन म अर नीत व सफल जो अपा पट थ्या पति स्नेह प्र ए
 द छि कहि ह म कुं देवो हो ॥ ८८ ॥ अथा पसा विषे पुरष जग नं के प्रति पा ल क ति नि य द ल
 क्ष्मी पाई है सो पर न पा रा नि म ति जै सै सु ग द है सो आ ग म कै अर्थ है ॥ अथा प कै तौ ॥

यही अर्थ है जो पद्या अर्थ सिद्धि कर नां अर्थानि के अर्थ पूर्ण करे सो आपका
 न तो सवही कै अर्थ है अरु मसंद धी लो क सो ह मारे अर्थ नो विमोष होय ही हो
 ॥ ८८ ॥ सातैं औ र वस्तु का तो ह मारे क छु काम नां ही अथापसा विषे दा ना नि निमेष
 न करु मा गे अरु मेरे कोऊ मान मति जान ऊ ॥ ८९ ॥ अरु तिहा री आजा सिर प रिव
 एक वस्तु मां ग रू मेरे पुत्र वज्र जंघ कं तिहा री पुत्री श्रीमती देऊ ॥ ९० ॥ इति हा
 जो निजा अरु वर मेरी जानि जो दो जु ही वने कुल वं त है या कं य ही योग है अथवा
 ह मारे क ह ने करि क हा इति हा र जा नि जा सो तिहा री क न्या पर नैं ही पर नैं ता
 नैं हे नाथ श सत्त होऊ जानि जे कं अ पनी क न्या देऊ ॥ ९१ ॥ अरु मेरी आ र्थ ता स फ
 ल कर ऊ अरु वस्तु वां द न धन धर ती तो ह म म दा प य वो हा करैं हैं एक लु अ प
 र्व नां ही क न्या र त देऊ ॥ ९२ ॥ औ सी वी त ती रा जा व ज्ज वा ऊ करी त व व क्र व नि ड
 ए क री इ ति का सं योग योग ॥ ९३ ॥ ही दो न स मां न गुण है ॥ ९४ ॥ य ह सु जा व दा सं
 या कार व ज्जंघ क न्या क र व र होऊ अरु य हा श्रीमती गुण वं ती या का व धू होऊ
 ॥ ९५ ॥ इति का ज न्मां तर का स्नेह है जै सैं चंद अरु चां दिनी का सं योग ज चित
 ॥ ९६ ॥ अरु मै तो इह वा त तिहा रे क हें प ह त्ना ही विचारि पा है इति का सं
 ध तो पूर्व पि नित क र्म करि ह्य है ह म को न ॥ ९७ ॥ ए व क्र व ति के व च न सु नि

राजावज्जवाङ्मतिप्रतिक्रमसन्ना ॥ १७ ॥ अथवसुधरागनीवज्जंघकीमाता
 तारिपुत्रकेविवाहकीवारतासुनित्रैसाहर्षजपमासोत्रंगमैनसमावै ॥ १८ ॥
 योमांघरोयत्रार्दमानंदर्षकेत्रंकरहीजगै ॥ १९० ॥ मंघासेनापतिप्रोदितसाव
 तसवहीयासगारणकीवक्रतप्रसमाकरसेमये ॥ १९१ ॥ हरकुमारवज्जंघकीमा
 मदेवसमानत्ररयहकंत्थाश्रीमतीरतिकेरूपकूंजेते ॥ १९२ ॥ सोइनिदीकनिकासं
 मंघयोगहीहै ॥ १९३ ॥ जोदेवदेवांगनासमानहीहै ॥ १९४ ॥ निकेविवाहकोब्रतोंसमु
 सकलनगरमेंजुहाइमया ॥ अरगजमहलमेंअदभुतसोनाहोतीनई ॥ १९५ ॥ विवाह
 मंघपकात्रारंजकरवर्तिकात्राज्ञासैंसित्तावदरतनकीया ॥ अमोलिकम
 णिसुवर्णमईमंघपरचा ॥ १९६ ॥ सुवर्णकेषंजनिनिकेतलेंकुंजरतनजटितसोजै ॥
 सैंसिंघासनपरिनृपसोहै ॥ तैसैंतलकुंननिपरिसंजसोइसेन ॥ १९७ ॥ अथरफदि
 मणिकीनीतिनिमैनननिकेप्रतिदिवत्रैसेसोहै ॥ मानूवित्रांमकरिराधै ॥
 दशनिहारेनिकेवित्तकुंदरै ॥ १९८ ॥ अथमणिकीचौकनीसरतननिक
 तिसोहै ॥ तामेंपुष्पनिकेसमूहत्रैसेनासैमानूत्राकासविधैताराहीसोहै ॥ १९९ ॥ अ
 रमोतिनिकीमातामंघपकैमध्यत्रैसीसोहैमानूकेनसहितमणबत्नीहीसर
 कैहै ॥ अथपदमरागमणिमईवेदीसोहतीनईमानूसवनिकाअनुरागही

एकत्रहैयरह्यहै। १०॥ अर अमर समान जनमणि निके सिधर जैसे सो है मां
 नें अयनी सो जाकरि देव निके बिमान कूं रहै है ॥ ११ ॥ अर कोट रूप कहि मेखला
 विमंजित वरु मंनय मां नें मनोपता की रह्यहै ॥ १२ ॥ अर रतन निके रिजडिन
 मंडप का द्वार ऐसे सा सो है मां नें रतन निके कांति करि रंग कां इंदु मुख ही वनि
 द्यहै ॥ १३ ॥ सर्व रतन मई मंनय का द्वार मां नें लक्ष्मी के मुखे अंजिमति रह्यरि
 गलरूप ही निरमाप्य है ॥ १४ ॥ सो वास में चक्रवर्ति अष्टाङ्गिका की कल्प
 दत्ता मा मत्त पूजा मत्त पूत वै त्याज्य विधे कर ता जया ॥ १५ ॥ वक्र रिशुन दिन
 मरुत सो मल ग्रविधे विवाह का निश्चय कीया ॥ योतिष ग्रासु के वेत्ता पंक्ति
 निवंद वल ता रावल देवि मरुत दीया ॥ १६ ॥ नगर में अति सो जा मई वारै कां ।
 एरचे स्वर्ग लो क समा नगर सोहता जया ॥ राज महल का अगण वंद
 गां धस खाट्या ॥ अर पुष्प निके समरुति निपु विनवर गुंजार करै है ॥ १७ ॥ अर सु
 के कलसरतन जटित पवित्र जल कहि पूर्णति निके रिधात के वेत्ता वि
 र्वक वीदवी दनी कूं स्तानक रावते न ए अर नगरे निकी ध्वनि मई भंष नि
 हेन ए ॥ १८ ॥ श्रीमती वज्र भंष के विवाह के स्तान विधे सब ही दुर्वक रिपूर्ण
 ये ॥ ऐसे सा को जना ही जाहि दुर्वन जया ॥ १९ ॥ पुर के लो क अर अंतः पुर के लो

॥

॥

१२ मां नें दिर विधे भंष के भेद होत नर

३॥ चक्रवर्तिप्रपन्नेराय तैजसकीधारावज्जंघकेरायपरिगरी अरअसीसद
 ईनुमदोजविरंजीवहोऊ॥ ४॥ तववज्जंघकन्याकाकरग्रहणकीया श्रीमती
 पतिकेरायकेकोमलमपरसंकेसुषतैमुद्रितनेत्रनई॥ ५॥ अरहायविषेपसेव
 कीआईताधारतीमंनूवंदमांकीकिरणिकेयोगतैवंदकांतिमणिकीफूत
 लीअमरतकेऊरिवेकरिआजनईहै॥ ६॥ वज्जंघकैस्यार्तेमानूयाकेतनुतैसं
 तापनिकसिजा^आहै। तैसेमेयकेआगमविषेजोमिकासंतापजातारहै॥ ७॥ श्री
 मतीवज्जंघकेयोगतैत्रैसीसो। हतीनई। तैसीकल्पवेलिकल्पवृत्तकेसंयोगतै
 सोहै॥ ८॥ अरवज्जंघरुयाकेसंयोगतैपरमसोनाकूंधारनाअया। तैसारतिकेयो
 गतैकामसोनावंतहोइ। कैसीहै श्रीमतीस्त्रीनिकीसहिमेंपरमजत्कष्टहै॥ ९॥ शु
 रानिकीसाधितिनकादिवाहलोकनिर्कंपरमअनेदवहावताअया॥ १०॥ श्रीमती
 काकरग हैवज्जंघकूंदेखिनोकअतिप्रसंसाकरतेनए। यह श्रीमतीसत्यही श्री
 मतीकहिएसंपत्तिवतीहै॥ ११॥ श्रीमतीवानीसवकैमुखनिकसी॥ १२॥ तेदंपतिसुअआ
 कसकेधरनहारेदेवदेवीसमानदेखनहारेलोकनिकेचित्तद्वितीकतेनए। मांनू
 मातातअमतरूपहीहै॥ १३॥ यहविवाहकाउखवदेविसकललोकप्रसंसाकरते
 नये॥ त्रैमानखवदेवलोकरुमेंदुरत्तसर्वहीकरतेनए॥ १४॥ चक्रवर्तिमहाजाग

सुंदरशतक रिसो नित कमल सो है ३१ इत्यादि आनूषण निकाधारण अवस
है ता तै धार ते नये अर वे नौ अये से सुंदरा कार है ति निक रि आनूषण सो है ये आ
नूषण ॥ निक रि कहा सो है ३३ श्रीमती की माता लक्ष्मी मती सो तो अपनी पु
कं सिंगार नई अर व जे नय की माता व सुं धरा सो पुत्र कं सिंगार ती नई भू भरी
संगार करि विवाह की रत्न वेदी में आया विराजे पद ली करी है मंगल क्रिया जहां
३५ मणि निके दीप गति निक रि अर मनोहर मंगल द्रव्य निक रि सो नित वहर
त न दे दी ति नि दो क निक रि अये सा सो रत्नी नई जै सी सु मेर की त दी दे व दे वां

रिसो है तव मधुरांगी एटी लवा जे मा नै मे द ही गंजी र धु निक रै है ३७ अर दारं
गता मंगल गीत गाव ती नई अर माग भवें दी जन न छुट के पाव पट ते नये ३८
रत्न लका रिणी वर्धमान लय करि म नो दर लप र अर क टि मे ष लं निके स
रत्ना नो हं न चाव ती न त्य कर ती नई ३९ अर वी द वी द नी के सिर परि न ग वां
न के चरणो दक का छांटा दीया जा करि ति निका म स ग प वि न म य अर सु व
पादा परि वे दायो ४० अर व क व ति आ प र त न ज टि त मो ति निक रि न ल सु
ए म र्द ज री दा खि ल दी ४१ जा का म ष अ सो क के प ल व क रि ट क या सो र ता
न या मं न दे अ सो क की प ल व व धू र के क र प ल व की सो जा धा र्णा चा है है

उवक्रवर्तिअपनेहाथतैजसकीधारावज्जंघकेहाथपरिगरीअरअसीसद
 ईनुमदेजविरंजीवहोऊ॥४॥तववज्जंघकत्पाकाकरग्रहणकीयाश्रीमती
 पतिकेहाथकेकोमसमपरसकेसुषतैमुद्रितनेत्रनई॥५॥अरहाथविषेपसेव
 कीआईताधारतीमांनंबेदुमांकीकिरेणिकेयोगतैवंडकांतिमणिकीफूतर
 लीअमरतकेऊरिवेकशिआजनईहै॥६॥वज्जंघकेसर्जतेमांनंयाकेतनुतैसं
 नापनिकसिनाहैजैसेमेघकेआगमविषेजोभिकासंतापजातारहै॥७॥श्री
 मतीवज्जंघकेयोगतैअसीसोहतीनईनीसीकल्पवेलिकल्पवृक्षकेसंयोगतै
 मोहै॥८॥अरवज्जंघरुयाकेसंयोगतैपरमसोजाकूंधारनामयाजैसारतिकेयो
 गतैंकामसोजावंतहोइकेसीहैश्रीमतीस्मृतिकीसदृष्टिमेंपरमजल्लहै॥९॥
 रनिकीसाधितिनकादिवाहलोकनिकुंपरमअनेदवद्वतानया॥१०॥श्रीमती
 काकारणहैवज्जंघकूंदेखिलोकअतिप्रसंसाकरतेनए॥११॥श्रीमतीसत्यहीश्री
 मतीकहिएसंप्रतिवतीहैअसीवानीसबकैमुखनिकसी॥१२॥तेदंपतिसुजआ
 कसकेधरनहारेदेवदेवीसमानदेखनहारेलोकनिकेचित्रदूर्धितकर्तनएमांनं
 सात्ताअमतरूपहीहै॥१३॥यहविवाहकाजल्लवदेविसकललोकप्रसंसाकरते
 जयेअसैनछेवदेवलोककरुमेंदुरतनसर्वहीकरतेनए॥१४॥वक्रवर्तिमहाजाग

त्रैसीपुत्रीरतन त्रै सेयोग्यवरकंदर्पयद्रूपसंभावैरद्वैरलोगनिके मुखहोती
 नर्द० ५४॥ अरयाकन्याकी मातामहापुन्यवतीपुत्रवतीनिकैसिरूपसिंहैहै॥ आ
 त्रैसीपुत्रीजनीपरमात्मातलत्सीहीहै॥ ५५॥ अरयाकुमारनैअन्यजनमविषे
 कहावनेतपकीएजाकरि त्रैसीस्त्रीरतनजगनविषेसाशपाई॥ ५६॥ अरधन्य
 नासोकमान्य॥ त्रैसीपुन्यवंतीत्रौरनांहीकल्याणकीमोक्ताजानैवज्रजंघ
 शिषेपतिपाए॥ ५७॥ इतिदोननिकैकोनकोनतपकीए॥ कोनकोनवृत्तधरेक
 कहादानदीयेकौनकोनपूजाकरी॥ ५८॥ अहोधर्मकामहातमअहोतपका
 प्रभाव॥ अहोदानकेवेडेफलजीवदयारूपवेतिसीचीताकेएफलहै॥ ५९॥ इ
 तिअरहेतदेविकीमहापूजाकरीपूज्यकीपूजापरमसंददाकुंआसकरैहै॥ ६०॥
 तातैजेआतमकस्यांएवाहैअरमहाधन॥ बड़ीरिद्धिविस्तीर्णसुखवाहै॥ तिनिकुं
 अरहं तकेमरणमैमतिट्टकरनी॥ ६१॥ इत्यादिलोगनिकेवचननिकारिष
 संसायोग्यएदंपतिएकसेजपरिविरोजेसवपरिवारकरिवैहिरत्नासमैमहादां
 नदीये॥ ६२॥ दीननिकीदीनतादरिभईअररूपएनिकीकपणतागई॥ अ
 रअनाथरुतेसैसनाथहोयगये॥ ६३॥ अरवक्रवर्तिनैयाजछेवविषेजाइनि
 कावहुतसनमोनकीया॥ सवहीकुंदांनमोनसनमोनकीया॥ सवसेधिय

नकहे सवमेवकनसकीये ६४। एरपरविषेमहाहर्षनयापरिश्रुजावंधीष्टारिद
विवरकीकथापरिघरिदीदनाकीकथा ६५। दिनदिनमहाउल्लव। दिनदिनधर्म
कीनक्तिदिनिदिनिसवदीवीदनीकीसेवाकरौ ६६। अथानेनएकदिनवज्रजंय
संभ्यासमैअपनेनेनकरिदसंदिभिविषेनद्योतकरतामहापूतवैत्यालयाया ६७।
ताकैलारमहायोतिकुंधरेश्रीमतीरुगईजेसैसूर्यकै लारसूर्यकीप्रजाया ६
८। मदापू जाकीसामग्रीसेएएनिनमंदिगगयो। सुमेरकेसिषरसमानहेजेवेसिष
रजाके ६९। सोस्त्रीसहितनिनमंदिरकीप्रदत्ताकरताकै सासोदताभयाजे
सासुमेरकीप्रदत्ताकरताक्रांतिकशिमंदितसंयुक्तसूर्यसोहै ७०। र्धर्माप्यसुदि
करतायहमनोहरनिनमंदिरमेंगयातहांदीक्षितपरिदिकेभारकमुनिद्विराजेऊते
तिनिकीवंदनाकरणी ७१। वक्रशिमंथकुटीकैमध्यनिनेंद्रकीरतनमईप्रतिमंतिनि
कीजलवंदनादिअष्टद्वयसंपूजाकरणी ७२। वक्रविरहमहाबुद्धिवोनभगवांनभ
कीपूजाकरिअर्थसंयुक्तस्तुतिकरिसोत्रकरताभयाकै सैहैभगवांनसबभिक
रिस्तुतिकरिवेगोगर्है ७३। नमस्कारहोऊहेजिसेस्वरतिहारतांईतुमसर्वअपि
व्याधितैरहिनहो। उभक्तमैआराधंरुं हेईसकर्मज्ञातुकेजातिवेअर्थ ७४। तिह
रेअनेतगुणगताधरदेवनिषेवर्णनकीये जोहिनो औरकोनकरिसकै। नक्तिकरि

तिहारास्तोत्रक संज्ञा न किं ही कल्याण की कर्ता है ७५॥ तिहारे न क सुषर्क पावे भति
 हारे भक्त नि कुं लक्ष्मी की प्राप्ति होइ ॥ तिहारी न किं जीव नि कुं नु किं कहि एइं जा दि प
 दी ॥ अर मुक्ति कहि ए नि र्वाण ता की दे न दारी है ॥ न किं स मान और पदार्थ सो ही ॥
 ता तै मन व व न काय की मुक्त ता कहि न व नी व उ म कुं न जै है ॥ उ म सा दा त क ल प ट
 अरणी ति कुं से य वे यो ग है ७७ ॥ तु म धर्म की वृद्धि की सो पाप कर्म रूप धाम की
 तप ति ह रि क री ॥ तु म न व नी व रू प पयी हां नि कुं मे ध रू प हो ७८ ॥ तु म मोक्ष का मार
 दिषा पा ॥ जै सै सर्ज मा ग का ज द्यो त क है ॥ सो हि त के बांछ क आत्म का र्थ के अरणी
 रे मार ग को से वै ७९ ॥ तु म से मार सै नि र वृ त्ति क र ए क ब्बी ज आत्म तत्व दिषा पा ॥
 लोक पर लोक के अर्थ की सिद्धि तिहारी आज्ञा तै है ८० ॥ हे प्रजेव न अ वि र ज
 म स व ल क्ष्मी त जि अर ज त्तु छ रा जं का वि न व त नि मु कि न क्ष्मी व री ॥ सो तु म वी त
 ग ति हारै मु कि का वा छा के से न र्ध ८१ ॥ तु म दया रू प वे नि क रि वे डे अ द नु त स र न रू
 प हा ज त कृ ष्ट क ल के दा ता अ ति न तं ग अरणी ति कुं म न वं छि त अ र्थ द्यौ हो ८२ ॥ तु
 क र्म रू प म हा स नु नि कै न छे दि वे नि म ति ध र्म व क हा थि की या ८३ ॥ तु म जो हे
 न क री ॥ अर मु ष रू प क म ल त्रौ र जं ति न की या ॥ हो व न ड से ॥ अर स रू न त न त जी ॥
 अर क र्म रि पु जी ते ८४ ॥ तु म पर म दया ल म हा डु र्ण य मो ह न नु के जी ति वे अ र्थि

पंकविनकुठारकाधारणकीया॥५॥इहसंसाररूपवेति अज्ञानरूपजनकरिहृदि
 कुंआसनर्भाजाडवफनकीफलनहारीतुमअैसेछेदीजोवज्ररिनवधै॥६॥तिम
 हास्वरणारविंदकेप्रसादतेंलक्ष्मीवसिहोय॥अरतुमसंविपुंषनयेकमत्ताविमु
 षहोय॥अरतुमतोरागधेपरहितमअस्यभावकेधारकहो॥७॥हेजिनेंद्रहवडाअवि
 रजहैतुमवीतरागनिरविकारहो॥तिह्रैअष्टप्रातस्त्यार्धअनोपमविनहै॥अ
 सीविन्रतिनानलोकमेंनांदी॥सोधीतरागकैविन्रतिककहासंवंध॥८॥तिहारैपर
 सीतलछायाकंधरेअसोकत्रलसोहैहै॥मयजीवनिकेसोकममसदरिकरैहै॥८
 ॥अप्रतिहारैआसिपासिदेवपदोपतिकीहृदिकरैहै॥जैसेसुमेरुकैआसिपासि
 कल्पवृक्षपदोपनिकीवर्षाकरैहै॥९॥तिहारीदिवधनिममस्तनीवतिकीभाषा
 रूपजासनामिर्दयवतिरुंकेमनकाअज्ञानरूपतिमहरैहै॥१०॥अरतिहारैदो
 उत्तरफवमरटरतेओसेसोहैहै॥जैसेंपरवतकैदोउतरफचंद्रमांसमांनजरतेनी
 फरनेंसेहै॥११॥अरहैजिनराजतिहारैसुवर्णकासिंहासनगिरेंद्रकैसिधस्समानसे
 हैहै॥१२॥अरतिहारीप्रजाकामंलप्रगटहोताअदनुतप्रकामकरैहै॥जाकीप्र
 जाकेप्रजावकरिसर्यकासेजहुष्टिनांदापदहैहै॥अरजगतकेअंधकारकरैहैहै॥
 ॥अप्रतिहारैगंगीरडंदनीआकासमेंअतिगंगीरवाजेहैसोतिहाराजातपतिपर

नां प्रादक रै है ॥ ८५४ ॥ अर एती न च्छत्र चंद्रमा के विंवकूं नीतै अति निर्मल उत्तम
 सिद्धारे सिर पारि कि रै है सो तीन लोक कूं जलें दै औ सा ति हारा प्रभाव ट्यी मै प्रगट
 ॥ ८५५ ॥ हे जिनें ड ए अष्टया ति हार्यति हारै सो मै है ॥ मां नं ती न लोक का सा रसर्व
 एक त्रमेता नया है ॥ ८५६ ॥ हे देव ति हार्य वै रा प संपद कूं एरो कि वे स क नां ह ॥ देव नि
 प्रक्ति करि रै है ॥ ति हारै रा नां ह ॥ ८५७ ॥ हे नाथ ति हारे वराण र विंद के स्मरण तें ॥
 के हरि दावा न ल पर्व वट पारे समुद्र ॥ रोग ॥ वंधन ए सर्व उपद्वर रि हो जाय ॥ ३०० ॥ कुं
 ल तै विरै है ॥ वक्र त म द रूप न न जा के ला करि ॥ करि रा घा है मे घ का सा दि न जा
 नै ॥ औ सा ह सी मार नें कूं आव ता होय सो ति हारे ना म स मरण तें भक्त नि कों दे वि दू
 र ही तें ट रि जाय ॥ ३०१ ॥ अर ग न रा न निके कु न म म ल वि दार न ह रा क जो रहै न ष ना
 औ सा म प रा ज ता के व र ण नि मै प्राणी आ य प त्या हो इ सो न ति हारे व र ण स म र ण तै
 हारे दा स नि कूं न ह तै ॥ ३०२ ॥ अर दा वा न ल की जा सा अ स्मं त अ न्न न्ति सो ति हारे न
 न रूप ज ल की था रा क रि बु कि ना य ॥ ३०३ ॥ अर को ध रैं जुं वे की ए है फ ए जा नै ॥ औ सा
 स र्प विष कूं जाल ता ति हारे स म र ण रूप ॥ ३०४ ॥ औ पा दि तैं त न का ल नि र विष होय
 ॥ ३०५ ॥ अर व न विषै प्र चं द व ट पारे प ट्यी कूं तू ट न हारे य नु ष च टा यें च ले आ वै
 नि पैं ति हारे दा स इ द्य के नै सु ष सं जा हि वै ल टि न स कै ॥ ३०६ ॥ अर ति हारे व र ण हा का

है समरण निर्वैः ॥ असे पुरष प्रवर्तय नकार कला न रूप समुद्ध्वं नीला मात्र मैति
 रिजं हि ॥ अरमर्मस्थान कविषै उपजे तीव्र एति नि करि पीति न जे प्राणी नेति
 हरे न जन रूप मखे ज ते तला न नि रोग होय जाहि ॥ अर उम कर्म बंधन है रहित
 सो तिर स मरण करि दद बंधन करि बंधा प्राणी तन को र बंधन होय जाय ॥ नाम
 की ए है समस्त विषय न के सम ह तु म सो तु म कर्म समस्त विषय न निवारि दे अर्थ भक्ति रूप
 चित्त करि जं रू ॥ उम एक जगत के दीपा है ॥ अर उम एक जगत के पति है ॥ अ
 र उम एक जगत के बंधु है ॥ अर उम जगत के गुरु है ॥ उम सर्व विद्या की आदि अ
 र सर्व योगी खर निमै मुरख ॥ अर उम तीर्थ खर स कल नी र्थ निमै मुरख ॥ अर धर्म के व
 र्ता नी व नि के आदि गुरु है ॥ उम सब नि के हित सब विद्या नि के र्स खर सर्व स्तो
 क के अव सो कन हरि हो ॥ तिर रे गुण अ पार ह म स्तुति कै सैं करि स कै ॥ २२ ॥ हे देव मे
 ति हरा अ पार ॥ येन करि और फल न मागं ॥ घर सब जगत की माया विण नं गुरु ता हि तु म
 से दा ता पै क ह मां नं ॥ हे जिन सति सरी अ म ब ल न कि मो हि दे क सो ही सर्व भुक्ति मुक्ति फ
 ल कं उप जा वै है ॥ २३ ॥ या मां ति नि न पति को प्रणाम करि स्तुति करि अ प नी प्रा र्थ ना करि
 म न्युं प्रे आ या वे ति ॥ पाप नि ॥ से ग ति नि क विंद ना करि श्री म ती स हि न व ज्जं द कु
 मार पर म रि क्षि की ज री पुं न री कणी पु री ता मै प्र वे स की पां दारं दार नि ने स्वर के गुण

काहै सपरण जाकै १४ वह श्रीवज्रजंघमहासस्त्रीवां तना का वज्रदंत कै वही सह
 रमुकटवंद अति वै ककरि वत्सर्त्तनेरण पहराय पूजते मये सो श्रीमती सहित वक्र
 तदिन पुंशरा कणीपुश मैजिन राजकूपं जतो नया ॥ ३४ ॥ इति श्री राजवत्तज्जिनसेना
 वार्यकथित महापुराण विषे श्रीमती वज्रजंघका विवाह वर्तन नाम सप्तम पर्व पूर्ण
 जयाः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ दुःस्मिहं ॥ अथायानं तद्वज्रजंघवक्रव

कै मेदि रसदा जव्व क रि पूर्ण महासो गोपयोग संपदा क रिवि रकाल निवास करतान
 १॥ श्रीमती कै मुखक मलता कै अवलोकन क रिव दृष्टा है हर्ष जाकै ईष्ट वस्तु का सं
 प्रमोद ही का कारण है १॥ जैसें नंदरक मलतै त्रपति नंदो यतै सें श्रीमती के मुख रूप
 मलका विलोकन करतान पति न नया पद का मसेवा त्रपतिकारण नोही ॥ ३५ ॥
 लह निका मुख सोई नया वेंदु सुंदर दसन ति निका प्रजा सोई नोई ॥ ३६ ॥ इति ता क रिसो
 तताहि अति जाष रूप दृष्टि क रिते विवेका दीकौ ॥ ३७ ॥ अथ श्रीमती महाचतुर्गो
 दा रुसहित देवि वै क रि अरत्नी लारूप मूलक निक रि अरमधुर जाषण क रिय
 निका मन आ पविषे वाधती नई ॥ ३८ ॥ सो वज्रजंघ श्रीमती कै अति सुंदर को मल
 तकी हृदये लीता हि सपरसता अरमुखक मलतकार संग धत्ते ता अरत्ता कै मधुर अ
 वणक रंता रूप निरषता अपनी पां चोईं दीत द्विक रतानया ॥ अथ वद रूप वं

॥६॥ अथ कवचकमगारवाहेति वनत्रिनिमैलनामं पव्याय रद्वै अरकीडा कश्चि के है मंदि रज
निमैतदा उच्छादका नत्वा कांता सहि न की ड्रा कर ता मया २०

गुणवंती अपनी को मलवा कृतना सोई जई काम की पासिता हिया के कंठ में ना स्थि
कामन वां धनी नई कै सी है श्री मती मन स्थिनी कहिए सदा सुषरूप है मन जा का ॥२०॥
अथ पत्तिका सेवा विषे प्रदीण कार्य विषे स्थिर सो रा न कु मार प्रिया रूप अंभ स कूं
पाय सप्रप्रमाण सेवता सुधी हो ना मया ॥२१॥ नै से रोगी दिव्य गुण भि कूं समै सिर से व
ता रोग र हित हो ॥२२॥ कवचक नंदन वन समान घर के न हां न महा सो जा के निवास
ता हां प्रिया सहित रमता मया ॥२३॥ अरक वक्रक नदी निकै पुलिन विषे विहार कूं
ना मया फूलि र ही है लता अरस्वय मेव गिरै है फूल ज हां ॥२४॥ अरक वक्रक सरो वी के
जल कर्मे मे रंद कर ज के पुंज करि पी रे महा गुं ध ति नि विषे प्रिया सहित न ल की ड
करता मया ॥२५॥ जल के लिकी विषि विषे व द्रु दीण सुवर्ण मई पिव कारा ॥२६॥ निकहि
जल तै प्रिया कामुषक मल सी चै सो वरु नेत्र निकूं मूंदिनी ची रो य जाय ॥२७॥ अरव
दरुवा का मुरव पिव कारा निकै जल करि सी व्या जा है परं जु न सी चै काहे तै जो तल का
वख पिव कारा वसाय वे मै उ द डि जाय ता नै न वलावनी स्वी कूं ल ज्पा ही मुख है ॥२८॥
जल की के लिविषे प्रिया के अंशे मुंदर से ही वस्त्र सो तन सरल भि जाय सो मा नं जल ही क
दुत्पता कूं ध रै है ॥२९॥ वरु श्री मती कमलिनी की सो मा कूं ध रै है भुषरूप कमल करि
सो लित को मल वा क सोई है रना ल जा कै ॥३०॥ सरोवर के जल करि प्रिया के कमल

निके कर्णपूर्वजसंभेतिरे सोमानं अपनेकमतनिकरिवाका मुख्यकमतनजीत्या
 याभाते जलतैग्रह्या ३७ अरकवृक ग्रीषमरतिविषेयामं पमहसविषेका
 करतेमयो अरकवरुकवर्षा रिति विषेमहसुंदरजुमणिनिके मंदि रविषे वि
 रासमानधिया ता सहितं सुषसं क्रीडाकरतामया ३८ अरकवृक सरदरति वि
 षे जलमहसकै उपरिचो मे तागनिके सोय रहै ३९ धितिविं ० नहो सो रात्रि विषे
 यो दिनीकी ४० क्रीडाकरता रमतामया ३९ यानां तिविरकालमनके हरनहा
 रे भोग उपभोगतिनिकरिदं पतिरम तेनये सर्गके भोगनिर्कुं जनें दी ३९ ॥ ३९ ॥ अये अरदभु
 तभोगतिनिकरिं निनेंद्रकी प्रजाका वृद्धव अरया जेदां नकरु एणदां नतिनिकरि ३
 कालवितल होतामया सो सुषसं का तवता तहो ता नजानां सदावने वेने वृद्धव अर
 चकवर्तिका क्रपा के लाना अरपुत्रादिक की जतपसि ४० अरदजाना ३
 विना ससोक संतक कहिए ३९ अया नंतरा जाव जलाऊ आपनी पुत्री अनंधरी व
 ज्जंघकी वहन सो चक्रवर्तिका वेने पुत्र अमिति ते जकुं परनाई ३९ सो अमिति ते
 जकुं पाव करि अतिरिर्विजमई जैसैं को या तव संतकुं पाप प्रसं न होय ३९ अरव
 क्रवर्तिसं वज्जंघ अयनें दारकुं सीष मां गा तव चक्रवर्ति अति सनमां न करि वि
 दाकी ॥ ३९ ॥ दाया ॥ दोरे ३९ पयादे ॥ देस ॥ मंजार रत नव कुत दीये ॥ अरपुत्री कुं

वरसो धिकरिदर्शजो प्रतिवर्षपङ्कविबोक्तैः॥३६॥ अरचक्रवतिवक्रतसममं
 करतामया॥३७॥ अथानंतरवज्रं वज्रमतीकं कुर्वकेसमाचारसुनिगारके
 लोकवक्रतत्राकुत्तताकूं प्राप्तोकेभ्योतिनिविधेवक्रतत्राभिलाषरूपहैवित
 तिनिका॥३८॥ वक्ररिसुनदिनविधेकृचकेगंभीरगृहकरिवज्रं वज्रमतीमहि
 तत्रातिविनूतिसंक्रवकरतामया॥३९॥ अरवज्रवक्रमहागजाभररांतीवसुं
 रावज्रं वक्रेमातापितासोपुत्रअरपुत्रवधूकेपीछेंवाले॥४०॥ नगरकेलोका
 रवक्रवत्तिकेमंजीसेनापतिप्रोहितप्रहोकायवेकंवालेकतेतिनिक्वज्रवाकूने
 नतीकहीतैंसीषदीनी॥४१॥ अरदायी॥ दोरेया॥ पयादेभ्रट्यादिप्रचुरसेना
 महितगमनकरतागजावज्रवाकूपुत्रअरपुत्रवधूसहितजनपक्षवेदजगप
 कचे॥४२॥ केसादेनगरअद्वयतरचनाकरिमंदिनहैसोवज्रं वज्रमतीमहि
 दं वक्रतीनांर्ध्रअतिक्रंतिकाधारकजछाहसहितनगमैंपरवेसकरतासोदता
 मया॥४३॥ स्त्रीसहितराजमारागमैंगमनकरताताहिनगरकीस्त्रीजनमहत्ता
 निउपरिवेदीफलनिका॥४४॥ नुरीवधेरतीमर्द्ध॥४५॥ पद्मपद्मअरअदितिसंयु
 क्तोपवित्रासिकाप्रजासवबोरसैंअपार्थीदवीदनीकूंदेतीमर्द्ध॥४६॥ व
 क्रिवज्रं वज्रमतीगारकूंदेवतेभयोवक्रिवज्रं वज्रमतीगारकूंदेवतासंतारा

जमंदिरमें प्रवेश करत नया धैसा है न प्रवाजते ने दो लज्जा दिअने कवा जिबै न किमी गंभीर
 निकरि पूर्ण है अर सो जाय मा न है और तो र ए न हं ॥ ४४ ॥ न हं म हं म नो हं सरवर
 के सुषका दे न हं र जो महि त ता विषे श्री मती स हि त सुष सं र म ता न या ॥ ४५ ॥ व जूं जं
 म हं श्री तिक रि अति र मणी क अ प ने में दि र श्री मती कूं दि षा व ता सं ता ता हि त हं र मा
 व ता न या कै सी है श्री मती मा ता पि ता के वि योग तैं अ ति षे द विं न है वि न जा का ॥ ४६ ॥
 र पं फि ता था य श्री मती की स धी न में सु ख जो लार अ र्द्ध कृती ता हि व जूं जं द गी त न
 वा दि जा दि वि नो द क रि अ ति य अ क र त न या ॥ ४७ ॥ या सों ति व जूं जं द का श्री मती स
 हि त अ द नु त भो ग नि क रि सु ष सं का ल वि ती न क र ता न या अ र श्री मती के गुण वा
 स गुण ल पु त हो ते भये ॥ ४८ ॥ अ य था नं त र ग ता व जूं क म हं जो ति का धा र क म हं के
 परि उ मा सर द के वा द रा नि कूं अ व लो क ता कृ ता ॥ ४९ ॥ सो त न का ल वि ल य हो ते दे
 रा जा वै रा ग कूं आ स हो ता न या ॥ ता वि र क त के वि न वि षे औ सी विं ता उ प नी ॥ ५० ॥
 दे खो ह मा रे दे ष तैं दे ष तैं ग्र ह सर द का वा द रा जो म हि त कै अ का र दि षा र्द्ध दे ता कृ ता
 सो षि ण मा त्र में वि ले दो य ग या ॥ ५१ ॥ तैं सैं ही वा द र स मां न य ह र ज संप द षि ण मा त्र में
 ले जा य गी ॥ य ह र स र्त्त मा वि नु री व त च प ल है अ र य ह र मा री यो व न अ व स या वि
 ने रि णी सी का नां र्द्ध अ वि र है ॥ ५२ ॥ अ र य भो ग भो ग तैं भ ले जा गै है ॥ परं उ द नि का

परिपाक आतापका दी है अर जै सें घृजवसिका कृत्रोरा सें निरंतर जल जाय है वै
सैंधि ए विण आ यु जाय है ॥५॥ रूप आ रोग ए सूर्य दृष्ट संयोग वंधु समागम स्त्री नि
की रति यदृ सव अ धिर है ॥५॥ अथै सा धि तवन करि यदृ मुबुद्धी चंचल सत्त्मी के त
निवे की है दृ ह्वा जा कै सो अ प नें पुत्र व जू जं ध कूं अ निवे क कराय राज विवैषा पा ॥५॥
द अर आ प राज का ज ते न दा स हे य सी प्र ही णं च सै न पति सहि त य म ध र स्वा मा कै
समी प नि न दि षा आ द री ॥५॥ अर आ म ती के पुत्र वी र वा ऊ आ दि अ गुा ए वै नाई
दा दा कै सा धि सं य मी भ ए ॥५॥ व जू वा ऊ मु नि मो ल मार ग कूं आ रा थ ता सं ता दृ धी
विषै वि लार करि के व ली हो य पर म धा म कूं आ स म या ॥५॥ अर व जू जं द र ज सें य
दा प य पि ता की नाई प्र जा कूं प ल ता न या अर दे व नि के से जो ग भो ग व ता न या
६० अथानंतर व जू दं त व क्र व निवे डी रि डि का स्वा मा सिं हा स न विवै वि रा ग्या
ऊ ता अ ने क रा जा नि करि मं कि त ॥६॥ सो ता स मै व न ए ल क आ य क रि न वी
न मु गंध क म ल त्या य न य कै हा धि दी या ॥६॥ सो प्र ध्वी प ति क म ल कूं हा य मै ले
य कि रा वै या ॥६॥ सो क म ल मैन म र मु गंध का लो ल यी रु कि क रि प्रा णं त म या
ऊ ता सो भ व र कूं दे धि मु बु धी विष य नि तैं वि र क म या ॥६॥ मन में वि वा रै है अ
हो य दृ म दो न म त न म र मु गंध का लो ल यी म क रं द कूं भो ग व ता नि क सि न ग या

कमलमैरुं कि गणा दिन कै अस्तसैये कमलमुदित नया भूमे प्रमद मृता ता नै
 कर होई ईद निअ निष्ट फल दाता निरुं ददा अ हो धि कर होई सो ग का कार ए
 य ह आरी रं कुं वित्त य होय है सर द के वाद रे नि की ना ई श्री द्रा ६७ अरया ल
 विजरी के वमत कारव त वप ल ता हि धि कर होई अर द ई द्रा निके सुष धि
 ए मंगर है अर सुप ने की माया समं न धन शि धि विन सर है ता तै ६७ बुद्धि वान द
 निमो ग निरुं कै सै नो ग वै नै प्रांणी निरुं व गिं कुं आ वै है अर जा ते रह है ६७ य
 मरी र आ रो प ता ऐ स्व र्ग यो व न सुष म प दा व सु वा ह न स व दं द्रु स नुष व त अ
 खिर है ७० मा म की अनी प रि ता गी वो स का वं द प रि वे दी कुं स न सुष है सै सै ।
 ए नि का अा यु प त न सी ल ही है ७१ ज रा तौ अा गै अा गै जा य है रोग पी वै
 है अर क बा य रु प नी ल नि स हि त का ल रू प लु टै रा प्रां ए द रि वे का ज द्य मी है
 ७२ ए विषय विषम स्या न उ य नी वे द ना ता की ना ई आ ए निरुं पी ड है ए न स्या
 विषम ज्ञा ता क रि त त म न कुं द है है प्रांणी निरुं सुष तो अल प अर द्रुष अ नं
 संसार विषे ७३ ता तै द ह सं सार द्रुष रू प ता में सुष क हो तै आ या ७४ द्य द्रा
 षय नि की अा मि ला षा क र ता सं ता क ले स क रि ड धी हो य है अर नो ग व ता
 द्रु हि के अा जा व क रि ड धी हो य है अर नो ग नि के वि योग विषे प आ ता प क रि ड

षी होय है ७५॥ जो अवारधनवान है अरसो गो गवै है सो निरधन होय जाय है
 अरजो अवार निरधन है कष्टमो गवै है सो धन वंन होय जाय है ७६॥ इह सुषु
 षदी रूप है अर इह धनता सक्तो ए है ॥ अर इह संयोग वियोग कृत्वा ए है ॥ अर इ
 ह सपदा अपदा हो है ७७॥ आमांति समसतो कर्क असा स्वतामांति विषय नि कं
 विषय तमांनता मया ॥ ए विषय अंति विरस है ७८॥ आमांति सो गति विषै उदा
 सहोयराज्य का भार वने पुत्र अमि ते जकंदे नां विद्या त्या ७९॥ दारं दार दाहि
 क हूि परं तु वहरा जनने या ८०॥ दारै क हूि है देव दहरा न हूि भला होय सो तुम क्यों
 तजो ॥ तातै मै रजन ले हूं ॥ दाता न करि ति हारी अगण संवि मुख तानां हो ८१॥
 ति हारी साधि मुनि ब्रत धारुंग ॥ जो ति हारा गति सो मेरी ८२॥ तव याका निश्च
 य जांनि ओर पुत्र नि संक हूि सो सध ही न डिगये ॥ तव राज अमि ते जका पुत्र पुंन
 री क दातक ताहि राज दी या ८३॥ अर अपय सो धरती र्थ कर दितानि नि कै क्रि
 त्त गुण धर मुनि तिन पैंति नदि ता आदरी ८४॥ स्नार सा विहरा रानी अजि
 का नई ब्रह्म स्वारिणी ॥ आ वि का नई भय हूि पंक्ति पनां जो अंध ने आत्मा कूं सं
 सार तैं उधा रै ८५॥ अया नंतर वक्रवर्तिके वै राण होय वे करि अर समस्त पु
 त्र नि के मुनि होय वे करि वक्रवर्तिकी रानी तत्त्व सीमती पुंनरी ककी दा दी अर

न अर इह जार पुत्र बीस दजारा जा मुनि स ए अर पंक्ति ता धाय स द कुल मै ऊती सो अर्धिक न धर

अभिततेनकीवधूअनुं धरी॥ पुंनरीककीमाता सो अति सो कर्कशा समर्द्ध जैसे
 र्मके वियोगे क मत्तिनी मुरणाय जाय ॥ ७७ ॥ पुंनरीकवा त क ताहि लेय करि ए दोऊ
 मासवधू ना र भें आर्दी सो क करि इ नि का को ति ओ र ही दोयार्दी ॥ ७८ ॥ त्तमी म
 तीवनी सो म हा विंतावान रा ज व नी अर रा जा वा त क सो ए ही म ल प्र जी ॥ ७९ ॥ मैया
 कै सैंया स्त्र अ र वि नां प च रा र्ज कै सैं र है ॥ ता नैं व जू जे द स मां न ओ र ह प्र रैं नो ही स्म
 रा ज र है तो वा स र है ॥ ता सैं वा क नैं भ ले म नु क्क जे जि व ता वै ॥ ८० ॥ स्ता के स हा य हैं
 ह रा ज निः कंठ क दो य ॥ अ न्य था न र है ॥ रा ज ग या व त वं त दा वि नैं गो ॥ ८१ ॥ ह नि श्व द
 क शि गं ध र्ध पुर का रा जा मं दार मं ता वि द्या ध र ता का राणी मुं द री ॥ ८२ ॥ ता के पुत्र हिं
 ग ति अ र म तो ग ति के व ने स ने ही म हा प वि त्र म हा व नु र व ने वं स के ज प ने म हा वि द्या
 वां न स र्व का र्थ वि धै प्र दी ॥ ८३ ॥ न का र्थ वि धै मा व था न ति नि कूं वु ला य ॥ पि टा रे भें का
 के प त्र ति थि क रि ध रे ॥ अ र व ज जं द कै नि क ट अ द नु त भे द दे क रि इ नि कूं वि द
 अ र मु ष मु वा वी स व स मा चार क है ॥ जो व क व ति तो व न कं ग ए स व पु त्र नि स हि
 ती ॥ अ र व ने व ने र जा ते ज व क व ति की ला रा ग ॥ अ द क म ल स मां न है मु ष जा का
 ओ सा पुं न री क पो ता ता हि रा ज वि धै या प्पा है ॥ ८४ ॥ सो क हां च क व ति का रा
 र क हां द र हा ल अ ति दु र्व ल सो व ने धो री वै ल नि क रि ज ता वे यो ग जो वो

वासकवखरेपरिधस्पाहै॥१॥इहत्तो वासकअरहमदोउअवलासोइहराजता
 यकरहिननयाहै॥जीएवस्ससमानहैसोयाकापाजनउमकुंयोपक्षै॥मातैहैमहाबु
 दिदोनउमइहांसीअआजंतिहारेआयवेकरिइहराजनिरुपइवहोयगा॥१॥इ
 नांतिइकुंसमाचारकहेअरपत्रसोंपासोएलेकरिआकासकैमारगचादोसमी
 पआवतेसदपटनतिनिर्कुंइरिकरतेसंतेचाते॥१॥करुंइकनुंचेमेइमारगके
 ऐकएहारेतिनिर्कुंनेदतेचातेसोतिनिर्मेतेजनकीबंदपरहै॥सोमोंनेचक्रवर्ति
 केवियोगकरिआंसहीनारहै॥१॥अरदोउमाईआकसविषैगमनकरतेइहि
 तेंअसंनदीएअरमुपेदनदीतिनिर्कुंइषतेनएमांनेवहनदीवर्षाकालरूपा
 कोनताकेवियोगतेंअसंनहसहीहोयगईहै॥१॥अरअभिबिबैपर्वतइहितें
 अतिरुत्तमनिजिअगदैंहै॥सोएदोउमाईअेसाजानतेनएमांनेइहगिरस
 र्यकेआतापकेनयकरिइथवीविषैरुविरहैहै॥१॥अरअनेकचौमुखीव
 वरीअरगोलसरोवरसोएइरितेंअैसादेषतेअयेमांनेएइथवीरूपनारानै
 तिलकहीधरहै॥१॥यानोंतिएअवसोकनकरतेअनुक्रमतेंउतपलषेदना
 गरआयपहोंचै॥कैसाहैनगरगंभीरजीगतितिनिर्केअदकरिददरीहोय
 हीहैदसंदिसाजहों॥सोएनगरकेद्वारहीतेंनगरकीसोआदेषतेराजदारअ

एतवदनिर्कुंचक्रवर्तिकेसेवकजानिषारणतनिप्रणमकीया॥ अरुद्रतआ
 दरसंराजाकैनिकटितेगये॥ सोदनिजायकरिवज्रजंघर्कुं प्रणमकीया॥ ३॥ अर
 वाकैटिगश्नननिकापि टाराजोनेटयाएङ्गनेसोमेत्स्या॥ अरकागददीये॥
 सोराजापिटभाषोलिकागदवांये॥ अरचक्रवर्तिकोदिष्णकेसमाचारसु
 तिअप्रचिरजकुंआमनया॥ ५॥ मनमैविचारैहैचक्रवर्तिमहामुन्यवोनसकलरा
 ज्यकाविभवअरसुंदरस्त्रीसमोनदहप्रथीताहितजिकरिजिनदिक्षाआ
 ॥ ६॥ अरचक्रवर्तिकेपुत्रमहापुन्यवानअत्यंतसंहसकेभारकतेराजनसि
 पिताकैसंगसाधनये॥ ७॥ अरमुंनरीकफूलेकमलसमोनहैमुखजाकोसोअति
 दासकतुरतषणचूंछैहैताहिराज्यविषैयाणा॥ ८॥ अरलक्ष्मीमतीमेरीज्वा
 अरमोमीअरमेरीस्त्रीकीमाताअरअनुद्धरीमेरीवहनसोदनकुंपुनरीकके
 राजकीवनीषितारहै॥ ९॥ वरदरअसैसाजिनिकेप्रतापतैसवहीमुखसंरहै॥ अरस
 वराजोनिकेवेषाजाअप्रवमेरीनरनिरवैहै॥ अरराज्यकेदृढकरिवेनिमजिमो
 हिवुसावैहैसोवेसवनिकेसहाई॥ अरमेरासहायचारहैं॥ यद्वनअवि॥ १०॥
 रवेसांवी॥ राजातोवासकवेअवलायद्वनीविपरीतिनई॥ अवमोहिसीप्र
 जातोकासदेपतकरनो॥ १०॥ ६॥ हनिश्वैआपकरिस्त्रीमतीकुंकहतेजये॥

सोकागदकेसमाचारप्रमुप्रवानोसमाचारसुनिश्रीमतीव्याकुलनर्तनाकोधीर्विंधा
 यतासहितपुंरशकनीपुशीवातिवेकानिश्रयकीया॥१३॥नेहननिमेप्रव्यतिनिका
 अतिसनमानकरिविदाकीएअरआपनाहीदिनवलनेकाउद्यमीनया॥१३॥भवज्ज
 धर्केमतिवदमंजीअनंदशोहितधनमित्रसेअकंपनसेनायतिएआरिप्रधानपु
 रषा॥१४॥अरओरसदहीपयांणकेउद्यमीनएअसैंद्रकेनिकहिदेवअपदैनेसैरा
 जायेअनेकराजाआए॥१५॥राजाकाप्रयांणसुणिसदहीकोमदारअपनेअपनेका
 र्यकुंउद्यमीनए॥१६॥सेवकनिकंकहैहैभुमएदृषानीमदरहितकुलवधूममानसु
 दतिनिकूरतनसुवर्णादिककेअभक्षणपदराए॥१७॥रानीनिकैअर्थिनयारक
 रऊअरतुमएववसिसीडांमेनीरांनानिकीमारवरदारीकुंसौपौ॥१८॥अरउ
 मकरारस्यावकातिनिकेकांधेपुष्ट॥१९॥अरतुमपोरेनिकेसमुदसीद्यामीति
 निकैजीभकरायचटिवेकुंतयारीकरावऊदोरेनिकीसवधोनीतिहारी॥२०॥अ
 रउमरसोईवारेसीइत्यावऊजेसर्वकार्यविधेसमर्थअरकैदकरसोईदरस्त्री
 रांनानिकासेवाकुंरांधतहारीअनसोधनहारीवीनिवेदारीचुनिवेदारीका
 र्यकेकरिवेदारीत्यावऊअपनेअपनेकार्यविधेसवसावधानहैऊ॥२१॥अर
 उमसेनाकेअग्रगामीहोयराजाकेरेआगाउनीकीजायगाकरवैऊसदांससत्र

एविशेषहेयत्तहंराजाकैरै॥२४॥ अरतुमराजीरसोर्दकेअधिकारीसवसाम
 ग्रीनिरावाधकरवाङ्काकरवसुकीकमीनआवै॥२५॥ अरतुमगायत्रैसिनिक्कि
 धिकारीतिनिकेवछरा॥पाता॥जतनसंख्यायकैस्वला॥अरजहंजलकानि
 सहोयनहंराषङ्ग॥२६॥ अरतुमस्त्रीनिकेसमस्वकीरत्ताकरङ्गदैदीप्यमांन
 षरुगदायमैधरेसावधानरहैजेसैजेतकीतरंगजन्नवरसहितहोइ॥सैसैतुमषड
 गकेधारकहोङ्ग॥२७॥ अरषोजेनिसंक्कहैहैतुमवृद्धहैअंतःपुरकीस्त्रीनिकीअं
 रिकीसावधानीतुमराषङ्ग॥२८॥ अरतुमइहाहीहैहोयहंकीसावधानीतिहा
 सै॥अरतुमत्तारत्तानङ्गअपनेअपनेकायीवैसैसावधानहोङ्ग॥२९॥ अर
 सकेअधिकारीअगाजजायकरिप्रयांणकेगांवनिमैसवसामग्रीतयारकरा
 वङ्गजहंजोवत्तुनहोयसोअ्योर्गांवनिसेमगायलेङ्ग॥३०॥ अरतुमहायीनिके
 धिकारीतुमद्योरेनिकेअधिकारीतुमऊंटनिकेरत्तकअरतुमप्रचुर॥३१॥
 कीदेधनहारीवछरातिसहितगोतिनिकेअधिकारी॥हमसववाततिहोरेमे
 है॥३२॥ अरतुमजिनेस्वर्काप्रतिमांनिकीपूजाकेअधिकारीराजाकेकस्या
 एतिमतिज्ञांतिकर्मकरवावङ्ग॥३३॥ नगवानकीपूजाकरवायप्रशुकावरणोद
 अरअसिषासांतिपावसहितराजाकेसिरपरिनरङ्ग॥३४॥ अरतुमवरेयोति

सव

धाही सो पुरुर्त्त विवैरा न का प्रयां ए क राव ऊ ३२ ष्या नांति का मदार सेव क लो क
 निर्कं क रह ते न ए ता का अति को ला ह न मया कू व के नि म नि स रं जा म के रा ह न मे
 सब साम ग्री विद्य मान ऊ त ॥ अर वा हा सो व ना य ल र्ही ३३ हा षी दो रे र ष्य प या दे
 ति नि क रि रा जा का आ ग ए स व न रि ग या आ त्म के धार क सां वं त स व आ य ने से न
 ए ३४ अर खे त छत्र अर म पुर पि छ की सूर्य मु षी ति नि क रि आ का स व्या स म
 या मां न स्वे न स्या म वा द रे ति की य टा हा म हि र ही है ३५ छत्र नि के स मू ह क रि सूर्य
 का ते ज रु कि ग या सो ठ चि त हा है ॥ जे स दू ते है ति नि के नि क ट ते न र ष्यो का ते न
 न म है स दू व्र त क हि ए स मा ची न व त के धार क सो व्र ता ति पे ते ॥ ज स्त्री नि का ते न के
 सें ना सें अर छत्र की पट स द व्र त क हि ए गो त ना क रि सूर्य का ते न के सें आ दौ ॥
 ३६ अर र ष्य नि की अर हा षी नि की ध्व जा प व न की प्रे री पर स प र मि त नी न र्ही जे
 सें व ऊ त दि न के वि छु रे मि त्र मि त्रै ३७ अर दो रे नि के पु र ति नि क रि उ वी रे ए फे
 ल ती न र्ही सो मां नें लो क नि कूं अ्रे सा न त वे है तु म मे रै पी छै पं छै आ वो ३८ व ऊ
 रि व ह र ज ग न नि के म द की धा रा क रि दो रे नि की ला ल रू प न न क रि वै वि ग र्ही ३९
 ए सो से ना न ग र तें वा ह रि नि क स ती म हा न दी की नां र्ही सो ह ती न र्ही न दी में न रं ग न
 छ ले से ना में न रं ग न छ ले अर दी में जा ग ४० से ना में छत्र न दी में व ने व ने न ल च र से

निकरिवाचान
द्रव है उठे हैं सर

आदि० मा०

१०४

सेवन

ए म हान सी रु दिदी कुं भार है वर रा जा का कटक यो रे निकी ही स अ रा जा निकी गर्जना अरना
उक मे म र्क सरो वर कै तीर आ पा ॥ यो सरो वर क भूल निकी रा के पुं उ क रि पी त हो य र सा
जा विषे अ र म हा सा त ल ज ल क रि पू र्ण है ॥ २ ॥ वर स र व र न बं र के म अ जा के जो ग र द ब्र ह्म
ना में वर के रा न न दी में सी न निकी आं वि वि म के से ना में व र ग वि म के सो से ना मा नू
दी ने दी है ॥ ४ ॥ नी ची जं ची ध र ती व रा व रि क र ते जा य है ॥ ५ ॥ र से ना अ धि क सो मा
रा की सं का र्ण ता तें व रं वो र के ल ती इ छ्वा पूर्व क व ती ना य है ॥ ४ ॥ व न के ग जा
निके कुं म स्या ल त नि क रि न व र से ना के हा णी नि के कुं म स्या ल प रि गुं जा र क र से न
॥ ४ ॥ अ र म नो ग जे व न के व ल नि नि कुं त नि क रि न व र रा न के ग जा नि प रि गुं
र क र ते न यो सो इ र रा ति दी है लो क नि कुं न र्द व सु छि ये ना गो ॥ ४ ॥ रा जा वा ल्मा
सो मा रा वि वै र म णी क व न छा या स हि न म हा द्र व फ ल प म्फ नि के ना र क रि न
नू त नि नि क रि मा नू रा जा की पा ड ण ग ति दी क र ते न यो ॥ ४ ॥ अ र व न की वे सि ति
के पु म्फ अ र प ल व र ती ज न क र प ल व क रि म्फा न क रें ॥ ५ ॥ र वो र जा ते र है अ र म
ग रा ज क ट क का अा पं व र दे वि अं वि दो ल ते न यो ॥ ४ ॥ क ट क के न रा यी व न के
ल ति त सैं ति छे सा षां नि प रि ल ट का ये है अा नू रा नि नि के व ल अे से सो र ते न
जै सैं नो ग नू मि या नि के यु ग ल क रि क ल्प व ल सो है ॥ ४ ॥ अं जूं लो क फ ल फ ल
है सूं तूं व ल न मी स न हो य सो मां न लो क नि के पा ड ण ग ति दी क रें है ॥ ४ ॥ अ र
न न गो र प्र मा ण ज ल में लो न क रें है सो वु न की ले य वा हर नि क सैं है सो नू रू
ला व ण के लो न क रि म रो व र नें दू नि कुं गि ली कु ली सो रा जा के न य क रि गि ली
व र ह्म ल अ र मं द मं द व है है वा यु अ हं ॥ ४ ॥ व न के नी व दु र्द ल सो क ट क के लो क नि कुं व ल वां न जां नि ह्म
नि न ध मी रा जा नि का क ट क दु र्द ल जी व नि कुं दु ष टा र्द नो दी प रं तु व छी म्ग अ प ने अ प ने ॥

क मी न न मं
प्र का र के अ द्दि ति
त्रु क न क म्ही का
रु प के कि र ल र
र कुं न न पा रे अ
ह वा न उ वि न दी
जो म दू न व न स
न दो य अ र अ
र्द क हि ये द्वा ल
न हो य ना हि के
ऊ ता प न उ म्म ज प
सो स रो व र म दू
क हि रे व र्जु ल
र गो ल है अ र अ
र्द क हि ये ज ल क
रि पू र्ण है ॥ ३ ॥ पं
निके रा क्ष न क रि
र स र व र म नू रा
की से ना कुं व ल
वै दी है अ र ल ह रि
है र्द अ र्द वां
ति नि क रि मां न
ग दे य है न व म नो
र ल ल दे वि न हं
क के र रा न य व
बे लि गु ल वि नि क
रि मा १०३ नि न हं
न य क रि टि टि ग ये

नाही वाहरि काटी ॥५६॥ अर गोविपरही है कां धे नि नि के अये से कहार सो न
लेन रि वे अर्थ सव मै पें पें ॥ सो मां नं सरोवर अति न स के जाय वे करि कं पें
है ॥५७॥ चौ गिरद मां ति मां ति के वस नि के न राख रे है ॥ सो मां नं हो एहार सार्थ कर
यहार जाव जंघता की मक्ति करि वन स स्त्री नैं नवाना गरव साया है ॥५८॥ कट क
के उर गट थी मै लो टि अर उ विक रि ही मै है ॥ जै सें उधर महा मज्ञि तै न नैं न विक नां
करि आया म करै शब्द करै ॥५९॥ अर महाग नराज सवर ति के गुजर करि को ध
रूप न एऊ ते सो महा वत नि सवर न पाय वसा त कारै ब्रह्म नि सौं बांधे कै सै है हस्ती
सवं सा क हि ऐ न द जा ति के है ॥ अर उ वे है पी वि नि नि की अर न मा न्य है ॥ ६० ॥ वे स
के पुरष ॥ सो को ध रूप को न ये धर
कारु नैं पूछी ता का स मा या न ॥ नैं सें वे नें वं स के जात प्रपु रष सो म धु पां नी कहि
ये मा दि श पां ना ति नि के प्र स करि को ध रूप हो हि अर नि क टि व ती लो क ति नि म
द्यां ना ति कं द रि क है ॥ न व वे प्र स न्न हो हि नैं सें ए ग नें द म धु पां नी कहि ए ॥ म म र ति
नि के स प र स करि को ध रूप न एऊ ते सो महा वत नि प्र म नु न ये त व हा थी को ध र
हि त न ये म धु क हि ये स क रं द ता हि पी वैं ता तैं प्र म र नि को म धु पां नी कहि ए म धु क
म मा दि श रु का है ॥ अर म धु ना म म क रं द का है ॥ ६१ ॥ के लो क य था यो ग द न

मैंने राकीये। वही रके तो कअ राग जाके कारषा ने तथा व्यापारी आदि नौ पद
 आये कुते अर राजा वने वने सावंत नि सहित तेज नुरंग पश्चि द्या आया ॥ २० ॥ दोर
 निके अस पवार ए क रिरंगि रह है मूर्ति जिनि की सो रा जा के लार स आन स मे अ
 ये दर राजा के वने वने सरवर के तीर भये कुते सो रा जा डे श नि मे प्रवेस की या कै से
 है ने रे ना ना प्रका र सु गंध रूप अर जल की तरंग क रित तथा प हो प निके प्रसंग
 रि सी तल मंद सु गंध पवन ता का र मार ग का धे द ह र है म हा सुष रूप है त हां रा जा
 कै र सो ई की त या सी न ई कुती अर रा जा मार पे षण कूष टा ता स मे रा जा के पु
 त्र श्री मती के न दर ते न प ने गुण वा स युग ल्पवी र वा फ आ दि अर्वा ए वै न ई दा द कै
 लार दि गे व र न ए कुते ति नि मे अंति का युग ल द म व र अर मा ग र से न चार ए मु नि अ
 ए ति नि कै कां तार च र्पा क हिए य ह प्र ति हा फ नी व न ही मे को कु आ व ग का योग
 हो य त हां अ हा र व ने तो लै तो सो व न न जं य कै मं दि र आ ए रा जा हरि ते मु अर्क दे वि
 अ ति अ नंद रूप म या मां नं मु निं द र्प ग अर मु कि के मार ग हा है नी ए की य है पा प
 जि न अर ति निके अंग की दी सि क रि अंध कार हरि हो य दी क्षि त प रि द्वि के धारी
 धी र ति नि कुं रा जा अ ति न क्षि क रिस न मुष जा य न म स्कार क रि प ड ग हा ता न या
 राजा र नी स हि त दो न हा य जो रि न म स्कार क रि अ र्ध दे य ग्र ह मे प्र वे स क रा व ता न

याः ५५ मङ्गा हि पाथो यजञ्च स्थां नरा विष्णुका करि श्रोणा म करि मनवचनका
 यकी मृदना करि ५६ श्रीमती सहित अक्षा दिगुण संयुक्ता मृद अक्षर विधि
 र्वक दीया मुनिके दान के प्रभाव करि पंचाश्वर्य ज्यो ५७ तिनिके नाम रत्न हहि
 पदोपहृष्टि सीतल मंद सुगंध धवन ५८ दुंदुभि नाद अरक्ष मधम राहृद संदिता
 देव निके ज्यो ५९ राजा मुन्युक्ते नमस्कार कीया मुनि आहार लेयवा ले एक ब्रह्मो
 जारा नारिकर ता मया ॥ जोग तिसरे तद्यु पुत्र है ६० तद राजा श्रीमती सहित मुन्युक्ते
 निक दिगया अरण्या वाका धर्म दान प्रजा सीत उपवास ६१ निके सवने दमुनिके मुख
 विसार ते सुनें व करि स्त्री सहित अपने प्रवम वपूछे ६२ तद दूर स्वामी कही
 ७१ देन पत्न्या नम्य ते पद लीखो ये जन मने वृक्षी पके पश्चिम विदेह गंध लदे त्रा वि
 धे सिंध पुर नगर श्री वेण राजा ७२ रानी सुंदरी तिनिका नयवर्मा नामा नेष्ट पुत्र
 कता सो जिन दिक्षा लेया ७३ विद्या धरु के जोग विधे अजित्वा सी नया सो मरि क
 रिता सी गंध लदे स विधे विजिगर्ध गिर की उतर श्रेणि विधे ७४ अतकानगरी
 तहां विद्या धर तिका इंदराजा अति वलना के महावलना माधुन मया ७५ विरका
 ल राजकीया व करि स्वयं वृद्ध के उपदेश ते प्रायोग म न संन्यास धरि समाधि मरण
 करि हे जै स्वर्ग ललितो ग देव नया ७६ तहा ते वदरा जावने जे दनया अर श्री

मती धामकी धं ड दी प के ॥ ७॥ पूर्व मेरु पश्चिम विदेह विधे गंधर्व देश पत्ता लपर्वत
मता विधे अल्प पुण्य के न दय तै ॥ ७८ ॥ देवल नामा कुडू दी कै धन श्री नाम पुत्री सो
करिता दी देश मै पारती नाम ग्राम विधे निर्गमिका नाम वणि क पुत्री नर्द सो पिहि
ता श्रव स्वामी का न पदेश पाय ॥ ७९ ॥ तप करित सितांग देव कै सयं प्रजा देवी नर्द
तल तै वय क रिव जू दे न व क व तिकै श्री मती नामा पुत्री नर्द ॥ ८० ॥ ललितो गका नीव
व ज्ञेय सो तै प नी रे ॥ ८१ ॥ पूर्व नव अप ने अरस्त्री के मुनिक रिरा नामु निरा ज क पूख
नया ॥ ८२ ॥ हे प्रमो ए मति वर मंत्री आदि चारि नीव मे रे नार्द निममान है ता तै क
पा करि इति के व क हो न व द म व र खां मी वो ले ॥ ८३ ॥ हे नृप द ह मति व र नो मति ह म
मं श्री पूर्व नै वि के न व दी प पूर्व विदेह व छ का व ती दे म स्वर्ग समान त हो ॥ ८४ ॥ अना क
पुत्री ता विधे अति प्र प्र नाम रा ना क ता विषय विधे आसक्त सो व क आ रं अ प रि
ग्रह के योग करि ॥ ८५ ॥ धौ ये न किं ग या दश सागर नर्क के दुषमो ग ॥ ८६ ॥ न हो तै
निक सिव दी प्रजा क री पुत्री ता कै समीप पर्वत न हो अति प्रध के न व मै धन मा
ऊ ता न हो व्याघ्र नया ॥ ८७ ॥ अरता समै प्रजा क री पुत्री का पति रा जा श्री ति व र्द न
सो अथ नां ह्यो टा नार्द कि रा न न या ता प रि व टि ग या सो ना य ता हि आ ज्ञा र्क री
करिते आया पर्वत कै समीप रे रा की दो ॥ ८८ ॥ न हो ओ हिन रा ज सं क री हे रा ज न

मुनिदानके प्रसाद तैरुमकुंडरुंमहात्मानहोयगा ॥ २ ॥ सोमुनिकै सैं आर्वे यहु
 णयमैं निमत जानक रिजाया है सो मुनऊ ॥ २ ॥ नगरमैं इहोषण फेरै आ निराजा
 कैवलाउछाहै सो नगरमैं सबनोक दहि दारिद्र्य जा अपर तोरण वांछियो ॥ ५ ॥ अ
 र धरनिके आगण अपर नगरकी गली भुगंधसंछांठियो ॥ अर पुष्पनिकरि पूरि
 त करियो ॥ ६ ॥ अत्रै से काएं मुनि नगरमैं न जां हियो ॥ अर कटक मैं आहार कुं आवे
 गो सो अणय योग आहार देऊ ॥ ६ ॥ एप्रो हिनके वचन राजा श्रीतिवर्दन मुनि हारि
 त नयायूं हकीयामुनि आये ॥ ७ ॥ मुनिकानाम पिहित अश्व सो मा सो पदासीरा
 जा के नेरा विमैं आहार कुं आये ॥ ८ ॥ राजा अखादि गुण सहित होय नवधा
 न किकरि मुनिकुं विधि पूर्वक आहार दीया तव पंचाश्व र्य नये ॥ ९ ॥ अपर वर
 नारराजा असि गडिका जीवता निसर एहोय सो तिखित नया ॥ ममता मिदि
 ग ईषो नयां तका त्याग करि ॥ १० ॥ संन्यास धारि सिताप विवैठा ॥ ताहित न काल अ
 वधि ज्ञान करि जानि ॥ ११ ॥ दानी जा संकहते नये ॥ हेत पयागिर प रि एक सिंहर अ
 वक के ब्रत धारक से न्यास प रि ति हे है ताकी तोहि से वा करनी ॥ १२ ॥ वरुं के इक
 नव मैं नर नवे व विषे विष न देव का पुत्र चरम सरीरी आदि चक्रवर्ति होय प
 र मया मय धारै गाया मैं संदेह नो दी ॥ ३ ॥ एमुनिके वचन मुनिराजा मगर मयै गया

कैसा है मरेंद्रकी या है अति संहस जातै ॥ राजा सिंध कूंदे पि अति हर्षि सनया
रमुनि सिंध कूं न मोकार मंत्र दीया ॥ अरक ही तस्वर्ग विधै देव होय गा ॥ भस्मो व्या
दित अग्राग मंदे हन जिह्मै स्वर्ग दिवाकर प्रभना माविम ॥ विधै दिवाकर प्रभ
नामा देव नया ॥ ६ ॥ यस्मिं रकाज तं देविराजा श्री तिवर्धनका सेनापति मंत्री ॥
मोहि एसांत नाव कूं प्राप्ता मणे ॥ मुनि दानका अनुमोदना करि नगर कुं
गम सिंधि वै नो गम सिंधि जं यो ॥ ७ ॥ सीन पत्न्य सुषमो जिह्मै स्वर्ग गे ॥ ८ ॥ मंत्री का
जाव तो कांवन नामा विमान विधै कनक प्रभना मा देव नया ॥ अरक्षो हितका जी
वरुषित नामा विम ॥ विधै प्रभंजन नामा देव नया ॥ अरसेनापति कानी वप्र
नाकर नामा विमं ॥ विधै प्रभाकर देव नया ॥ भुमल तितो गदेव कृतै ए सवति स्म
रे सेवक कृतै ॥ १० ॥ तहां है चय करि नारका जीव दिवाकर प्रभना मा देव सो मति
सागर मंत्री ताकै श्रीमती नामा मस्त्री कै मति वरना मा पुत्र नया ॥ ११ ॥ अरराजा श्री
तिवर्धनका सेनापति जो गम सिंधि या स्वर्ग विधै प्रभाकर देव नया ॥ १२ ॥ सो अ
व अग्रराजित सेनापति कै अर्जवना मस्त्री ताकै अर्क पनना मा पुत्र नया ॥ १३ ॥
अरराजा श्री तिवर्धन कै मंत्री का जीव सो गम सिंधि कनक प्रभना मा देव न
या कृत सो श्रुति कीर्ति नामा मोहि त कै अर्जनं मती नामा मस्त्री तिति कै अर्जने द

कैसा है मरेंद्रकी या है अति संहस जातौ ॥ राजा सिंध कुंदे धि अति हर्षित नय ॥ अ
 र मुनि सिंध कुं न मोकार मंत्र दीया ॥ अरक ही तस्वर्ग विधे देव होय गा ॥ ५ ॥ सो व्याघ्र
 दिन अरजा रा में देह न जिह नै स्वर्ग दिवा कर प्रनना मा विमल विधे दिवा कर प्र
 नामा देव नया ॥ ६ ॥ यस्पर्क ज्ञातां तदे धिरा जा धीति वर्धन का सेना पति मंत्री
 प्रो हिरा संत जा व कुं प्रा स नरे ॥ ७ ॥ मुनि दान की अशु मो दना करि न सर कु स मे
 ग म्भिविधे नो ग म्भियं नये ॥ ८ ॥ नीन पस्य सुष जो जिह नै स्वर्ग ग ॥ ९ ॥ मंत्री का
 जाव तो को व न नामा विमान विधे क न क प्रनना मा देव नया ॥ अर प्रो हित का जी
 व रुषित नामा विमल विधे प्र नं नना मा देव नया ॥ अर सेना पति का जीव प्र
 ना कर नामा विमल विधे प्र ना कर देव नया ॥ १० ॥ मल लितो ग देव कु ते ए स व तिर
 रे सेव क कते ॥ ११ ॥ त हों नै चय करि ना हर का जीव दिवा कर प्रनना मा देव सो मति
 सा ग र मं त्री ता कै श्री मती नामा स्वामी कै मति वर नामा पुर नया ॥ १२ ॥ अर राजा धी
 ति वर्धन का सेना पति जो ग न्ने भिजाय स्वर्ग विधे प्र ना कर देव नया ॥ १३ ॥ अ
 व अपरा जित सेना पति कै अर्जव नामा स्वामी कै अर्क पनना मा पुर नया ॥ १४ ॥
 अर राजा धीति वर्धन कै मंत्री का जीव सो नो ग म्भियं क न क प्रनना मा देव न
 या क ता सो म्भु तिका र्तिता मा प्रो हित कै अ नं न मती नामा स्वामी ति नि कै अना नंद

नामा पुत्रे नया ॥ २३ ॥ अर राजा प्रीतिवर्धन कै प्रोहित काजी वनो गन्धर्व विधेय पति प्र
नंजन नामो देवनया कृत सो धन दत्त नाम सेवक धन दत्त नाम स्त्री नाम का पुत्र
धन मित्र नया ॥ २४ ॥ एति वर मंत्री आनंद प्रोहित अपना सेनापति धन मित्र राज
प्रेष्टी तेरे अतिवल्लभ नए ॥ अये मै मुनिंद्र के वदन मुनिक रिए जाव नंद अर
राजी प्रीम तीर मर्के अग्र गी भये ॥ २५ ॥ राजा वक्रि मुनि कुंनम स्कार करि पृ
ह प्रमो ए नहर सर नो ल वां दरया वन के चारि जीव ॥ २६ ॥ सो मनुस नि के
स मरु मैति रा कुल नये ति है है ति हारे मुषार विंद के दरसन विधेयरी है हृ
जिनि सो ए को न जीव है ॥ २७ ॥ अर कदा हो ए हार है तव मुनिक रह ते नये यद्
ना दरया दीपु कलावती देस विधेय ॥ २८ ॥ हस्तिनापुर नग त हो सागर दत्त वै
अप ता की धनवती स्त्री का उग्र सेन नाम पुत्र कृत ॥ २९ ॥ सो रूत की स्त्री क स मां न
अष्ट त्याषां नी कौ भता करि ति र्ध च आ यु वां धी ॥ ३० ॥ सो दुर्बुद्धी राजा के को
चार का अशिका रा को चार के लो क ने कंद वा य वला त कारै धी वां वल
त्याप करि वे स्यां कंदे य ॥ ३१ ॥ सो चार ता राजा सुनी त वगाटा वां ध्या अर ला
न म्स्की नि नै कुटाया सो मरि करि ए नहर नया ॥ ३२ ॥ अर यद् स कर प र न व
विधेयि नय पुर नामा नग राजा म हा नंद राजा नीव संन सेना ति नि कै ॥ ३३ ॥ हरि वा

हृन्नामापुत्रकृतासोऽप्रत्यात्तांनमंनदाकैः षंभसमंनताकूंधरंमहामानीमा
 पितारुकाविनयकैः ॥ १४ ॥ सोतिर्येवआयुकावंधकीयापिताकीआत्तानमानैः
 सातोपिदोस्वाजाययासोसित्तकैः षंभकीचपेदतागिमांषानर्नराहेयग
 यासोऽपारतिष्ठांनतैमरियद्वनसस्करनयाऽअरुद्रबांनरपरजवविषैधाय
 पुरमैकुवेरनामावणिक ॥ १५ ॥ ताकीमुदतानामास्त्रीकैः नागदत्तनामापुत्रहृ
 तासोमीदिकेसीगसमंनअरप्रत्याष्णानमायाताकरितिर्येवायुवाधी ॥ १७ ॥ याकी
 नकेविदाहृतिमतिथाकीमातानैर्द्वययाकैः छानैः हाटमैर्मंलीयासोयानैर्जंघ्यात
 ॥ १८ ॥ वाधनके सेवेकूंअनेकवगविद्याकेजपायकीयेपरंतुतेनसक्त्यासोऽप्रा
 र्त्थ्यानतैमंरिकरिमर्कद्वयया ॥ १९ ॥ अरुद्रस्योलपरनवविषैप्रतिष्ठितनामापद
 ॥ २० ॥ ध्वजकाजोलपीलोलपनामकंदोर्ध्वापरीपूवानिकावेवणहारा ॥ २१ ॥ सोएक
 समैरजावैत्पालयवनाश्चताकृतासोमज्जरुद्रदृष्ट्याचलेसोयानैर्वनकूंप्रदापापडीदे
 र्दृष्टवर्ध ॥ २२ ॥ सोकोदयकर्दृकोरेसंतैवमैकनकदेष्वा ॥ २३ ॥ नवयहसोजकाभार्यावक्रि
 वेकूंजयमीनयासोप्रवाणपरीदेयर्दृष्टलेय ॥ २४ ॥ एकदिनयद्वअपनीपुत्रीकैर्गायगयासो
 पुत्रकौकहिगयात्समन्तरनिकंपकवानेदयर्दृष्टलीप्तो ॥ २५ ॥ ज्यैमाकहिकहिगयापुत्रयह
 मनकीयात्तदपाह्वअप्यपुत्रसंकोपकरिताकासिर ॥ २६ ॥ लावीपाषाणादिकरिजर्ज

कृते

करिनास्या ॥ अरु अपने पावनो स्या ॥ ३५ ॥ वक्रिराजदं पाया सोमरि करि अत्मा ध्या न
 लो न के योगा नैं दह न्यो ल न या ॥ ३६ ॥ वास्यो वन के जीव तिहार दान कूं देखि दखि न ज
 ये ॥ अरु दनि कूं जाति समरण न या ॥ सो ए च्या स्यो दरा चार नैं न रहे ॥ ३७ ॥ दनि कूं संसार नैं
 विरक न जाव जय न्या है ॥ तिहार दान की अरु न मो दना करि दनि जल्द छोगा नू निका ॥ अ
 युवां ध्या है सो नयन निधर्म स्नेह के अर्पी हमारै मन मुषति है ॥ ३८ ॥ या न वतैं आ व मै सं
 व ज म न वर हित हो क्रो ॥ न व ए न तिहारै पुत्र होय सिद्ध पद पावै ॥ ३९ ॥ अरु आ व न व
 लग ए ऊ तिहा री तार सुर न र पद के सुषमो गवै ॥ ४० ॥ अरु उ म अा दि ती र्यं कर हो क्रो ॥
 न व द द श्री मती म्ना जी वरा जाये सां सहो द दान ती र्यं का प्रव र्त्तक होय ता ॥ वक्र रि मु
 ति होय मुक्ति पावै ॥ ४१ ॥ ए चार ए मुनि का व व न सु निरा जारो मां च होय न्म्रा या ॥
 नै द हर्ष के अं कू रे दी जोगे ॥ ४२ ॥ द ह न रे द दोऊ मुनिं द की वंद ना करि प्रिया सहित अरु द
 स्यो म ति वरा दि सं ब्री अरु च्या स्यो व न के जीव ति नि सहित अरु पने निवा स ग या ॥ ४३ ॥ अ
 र वे मु नि द संहि सा ही है व स्र जि नि कै प व न की नां र्द स दा वि व रि वो दी क रै मु नि कै का सं
 ग र हि त आ च र ए ना दि प्र ग ठ क र ते चार ए मु नि अा का स कै मार ग वि हा र करि ग
 ये ॥ ४४ ॥ अरु राजा न के ग ए नि का ध्यां न कर ता ता दिन तो न हो दी र द्या ॥ ४५ ॥ वक्र
 रि कै एक दिन मै पुं री कणी पुरी प ऊं दे ॥ त हां व क्र व ति की रा नी ज त्मा मती ॥ म ह

सतीन्द्रनिकीनवाऽअरअमितेजजकीवधूअनुधरीन्द्रनिकीवहननिकिकेअ
 तिसोकवतंदेधिऽधद्वकृतधीर्जवंधायाअरद्रनिकानांनेजपुंनरीकताकाराज
 निरुपद्रवकीयाऽधऽअरअजाकीअतिदिन्नासाकरीस्मांमदामदंनेदकरिस
 वराजावसिकीयेपुंनरीककीसेवामेंतीयेऽअरसवसामंतनिकासत्कारकरि
 असन्नकीयेऽौरौरवक्रवर्तिकीनांईसवनिर्कृष्येष्वांनैंद्रकीयेऽपुंनरीक
 वालकजातेसर्गसमांतताकाराजजमायमंविनिकींद्रताकरिकैद्रकदिनर
 दिऽवक्रिन्वाअरवहननैसीषमांमिअपनेंजत्यलेषिटनगरपथारेऽधऽसो
 वज्जनेदराजापरमविभूतिकरिअमरपुरमारिषावहूपुरतामैश्रीमतीसहित
 प्रदेसकीयाऽनैसैंसुरपुरमैंसचीसहितसुरपतिप्रदेसकरैऽनगरकेनरनारीनेत्र
 निकरिद्रनिकारूपअप्रतपीवैहैऽ॥५०॥वडीरिद्रिकाधारकअतिजदारमंदि
 रमैंप्रदेसकरतानयाऽलो कयाजोतिप्रसंसाकरैहैऽअरदोयद्रंद्रहैअकफा
 इहैअककुवेरहैअकमूर्तिवतकामदेवहैऽपरतहांमनोहरमदत्यविषैसुष
 संतिष्ठताअपनेंपुन्यकरिजुयार्नेषट्ठरितिकेजोगसोमनवंछितजोगवत्ताम
 याऽनैसैंसचीकुंद्ररमावेऽनैसैंश्रीमतीकुंरमावतामयाऽकोमसारिषामदा
 दरजिनधर्मकुंरगारावतादसंदिदिसिमेंकोर्तिसिस्मारतासुषसंरानकरतामया

५२॥ इति श्रीमद्भक्तिरसैताचार्य विरचितविषष्टिलक्षणा महापुराण संग्रह विषे श्री
मतीदज्जदका पात्रदान दर्पिता मन्त्रावसाधैर्दर्पितायाः ॥ ८

॥

॥ ईदमः सिद्धये ॥ अथानंतरथर्मार्थकामकासेवनक

रतारागकेसुषमोगवतामपतिषट्तरितिकेष्टुद्रमोगतिनिकरिकालवितीतका
लाभया ॥ १ ॥ सोमरदरतिकेआरंजविषेनदीनिकेपुलितेमेंअरसरोवरकेजलनिमें
फलिरहेहैकमनजहांश्रीमतीसहितक्रीडाकरतामया ॥ २ ॥ अरमहामनोहरष्टुद्र
वनफलिरहेहैसमखटजातिकेब्रह्मतिनिकीसुगंधकरिमहासुगंधहांश्रीयाम
हिनरमतामया ॥ ३ ॥ सैराजहंसनीसहित ॥ ४ ॥ रमें ॥ सोवजुरदलजाकेकणि
विषेजीनकमलनिकेकर्णपूरहावतामया ॥ ५ ॥ मांनयाकेसुषकीसोजादेविदेकूंअ
पनेङ्गादीयापेहै ॥ ६ ॥ अथवाएनीलकमलश्रीमतीकेद्रगनिकीसोजाथासांवाहैहै
॥ ७ ॥ अरसुगंधमहितकमलनिकीरजताकेपुंजकरिपीतहोयरहेहै ॥ ८ ॥ सनमंनविद्या
केतिनिकुंदेविहैविसेहोयहै ॥ ९ ॥ मांनैएकामकेपिठारेहै ॥ १० ॥ अरसीतरतिविषेवह
जोगाधूपकीसुगंधकरिमहासुगंधजोसोवनेकामहलताविषेप्रियाकेस्तनकीउ
ल्लासकरिसीतकानिवारणकरेहै ॥ ११ ॥ कुंकमकरिलिसहैसर्वअंगजाका ॥ अरस
दाफलिरहाहैसुषकमलजाका ॥ १२ ॥ अरसीकांताताहिअतिरमावतामया ॥ अरक

रतिविषैकामकेमद करिजनमनेकाभिनातिनिर्कुं सुंदर औसे आवनि
नविषैरामासहिरमतामया ॥ असेकजातिकेइदतिनिकीकलाप्रिया
एविषैरवताताहिरमावतामयामां नूकामीजननिकेमननेदिवैनेंरुधिर
नैरंरुनीरहीथारैहैं ॥ १० ॥ अरणीषमरतिविषैपसेवकीइरिकरनहारासरवर
निकंपरसिआईजोपवनताकरिदुरिकीयाहैआनापजानैजसकेसिकीवि॥
धि(विषैरानीकंरमावतामया ॥ ११ ॥ शुंदरवननिमैविहारकरनाणीषमकाआ
तापहरतामया ॥ वंदनसंवरवीअरमोतिनिकेहारपहरें औसीसुंदरताहिज
सगावताणीषमकाषेदनजानतामया ॥ १२ ॥ सिराषकेपुष्पातिनिकरिप्रिया
सिंगरताअतिहृषितहोतामया ॥ मान्दरश्रीमनीमूर्तिवेंतीणीषमसन्तसी
॥ ताहिदेवांगनानिरुंनैंअधिकजानतामया ॥ अरवर्धरतिविषैमेदकीग
अरविजुरीकाविमकनाताकेमयनैंताहिप्रियासपरसकरतीनई ॥ १४ ॥ कै
हैवर्धरतिसावणकोनोकरीतिकरिसंहितहैठक्याअरगानैहैमेदमालाअ
रविषै ॥ अरइंदधनुषवहिरहैहैमोपंथीनिकामनपथसंदहैं ॥ १५ ॥ मान्मेदगहि
जाकारिऔसीकहैहै ॥ रेपंथीहोआकासतौदमकरिआछादिसहै ॥ अरधरनी
वणकीनोकरीआदिअनेकजीवनिकरिसरिहीहै ॥ नुमकैसैंगमनकरो

वर्षाविषैः फलिरहे है कुटनजातिके वृक्ष । तिनिकरि आछा दित है पर्वतनिका तह
टी अर मोरवो तहै सो वज्र जेष्ठ के मन कं हृषिकर ते जये ॥ २७ ॥ कदंबजातिके पुष्प
निकुं पारसिकरि आर्द्र जो पवन ता करि सुगंध हो पारह है ॥ गिरनिके तट तिनिकि
षे मयूर नृत्य करै है सो वज्र जेष्ठ के मन कं हृषिकर ते जये ॥ २८ ॥ विमकै है विजुरा तिनिकि
करि जटोत हो पारह है आकास विषे अर भेद वर वै है ॥ नास मै महारवणी करे
गणिके रत्ननिके ॥ २९ ॥ महानि निके अग्रजाग विषे तिष्ठता नृपति प्रिया
सहित रमता नया ॥ ३० ॥ नदी निके उद्धत जल तिनिके प्रवाह जल ते जांय है कालव नै
नरु कै जे सैमानव नीनाय का कामान दुर्निवार है ॥ सै सैन दीवे गवनी बहै है ॥ तिनिकि
कंदे छिप्र व्योपति प्रसहोता मया ॥ ३१ ॥ यानो तिष्ठ हौं रतिके जोग जा न्यसि हित जो
गवना नृप पूर्व जन्म के तपका फल लोक निकुं साक्षात दिषावता मया ॥ ३२ ॥ अथ
नंतर एक दिन सयन के संहिर विषे महा मनोहर से जपरि गंगा के पुलिन समान
जल को मल दिछो तो ता पति प्रिया सहित श्री तम पौटे ऊठे ॥ ३३ ॥ सो मंदिर ह्वा
गार के धूप करि आति सुगंध अर मणि निके दीर्घ उद्योत करि प्रकास रूप जहां अं
धकार का संचार नो हो ॥ ३४ ॥ अर पद पाये तिर्क्षि देख्यो है रत्ननिके पाय तिका
पिलंगता करि सो मायमान ॥ अर मोतिनिकी कानरी निकरि है है स्वर्ग का विश

तिर्कुं २४॥ अरकुंदके पुष्प तथा इंदी ॥ वर कहिए नील कमल अरु न पलक हि
 एसा न कमल पुं रीक कहि रेखे न कमल अरु मंदार जाति के कल्प वृक्ष निके पु
 तिलि की अति सदन सुगंधता का करि गुंजार करै है न वर जहां अरु नीति निपरि ना
 प्रकार के विजांमति निकरि अति मनोहर है ॥ २५ ॥ जैसे मंदिर में जा दिया के लन के
 सपरस करि सुषरुप सुंदर से न पारि पौट्टा कृताल गिरहे कृते नेत्र जा के जै से सुमेरु प
 विजरी सहित मेघ सो है ॥ जैसे धिया सहित पिलंग पारि सो हता मया कृत ॥ २६ ॥ न हां स्या
 के अशिकारै धूप घट निमें धूप धेन कसि अयो अरु मंदिर के ऊरोषा के दार उद्यारे
 नाही सो अगार का धूस्र मंदिर है निकसि न स की मंदिर ही में के निगई के सस मंन
 री धूमता करि दण्डे क मूर्ति न होय ॥ २७ ॥ सा सस कि ककुल ता कूं प्रास होइ राजारा
 नीरा विविधै मरण कूं प्रास भये ॥ २८ ॥ तिनि दोउ निके सर रजाव के वियोग करि को
 रहित होइ गये जै सें दीप के बुकि वे करि मंदिर विषे अंधकार होय जाय ॥ तै सें जार
 छारहित होइ गाय ॥ २९ ॥ वद न स मगारहित सो वल मासहित जो से न पारि सो
 न पावता मया ॥ जै सें काल पाय मृत तै निपा कल्प वृक्ष सो जान पावै ॥ ३० ॥ द्वेष कृमो ग
 का कारण जो धूप ता ॥ करि दोऊ आण रहित भये ता तै धिक्कार होइ इति जोग नि
 ॥ सो ग्रांण निके दर्ता है ॥ ३१ ॥ द्वे दोउ महा सुखी जोग निकरि लजाया है अपनो अंगार

निनिमोएकत्तणमवमैअंअवस्था कंआसमये तातैधिक्कारहोअसंसारकेस्व
 रूपकं ३२ ॥ जोगनिकेकारणतेनीवनिकीयरहदसाहोपहैतोकहाइनिमोगनिक
 रिणजोगांणदारीभवभवमैदुषकेदेनहारेइनिर्कृतनिवीनरागकेमारगविषेअ
 तिकरो ३३ ॥ पात्रदांतकेप्रजावकहिइतिकेउत्तरकुसुभोगभूमिकावंधनयाऊना
 सोपाणतजिअंवृदीपकेमहाभेसकीउत्तरदिशाकंउत्तरकुसुभोगभूमिसर्गकील
 त्माकंदसैअेसामनोउस हांजायउपजे ३४ ॥ सहांसजातिकेकल्पहत्तनितिके
 नाममद्याग १ ॥ वादित्रांग २ ॥ नृषणंग ३ ॥ दत्ताग ४ ॥ मात्यांग ५ ॥ दीपाग ६ ॥ यो
 निराग ७ ॥ ग्रहांग ८ ॥ जोगतांग ९ ॥ मानांग १० ॥ एदसजातिकेकल्पहत्तसत्य
 र्थहैनामजिनिके ३५ ॥ नानाप्रकाररतनमईअउत्तप्रभाकेउद्योतकरिअकास
 कीयाहैदसंदिमाविषेजिनि ३६ ॥ मद्यांगजातिकेकल्पहत्तअमनसारिषेरसक
 मोदीपनदेहि ३७ ॥ जोकामोदीपनवसुहोयताकंमहाकहिऐयहइदनिकारस
 हैताहिजोगभूमियांसेवैहै ३८ ॥ अरजोमदकाकारणमहासाहिमहापानीआवै
 सोमदामवनिर्कंदर्जनीकहै ३९ ॥ अंतःकरणकोअज्ञानकाकारणहै ४० ॥ अरवा
 दिअजातिकेदत्तहोस मांदस मदंग तास जातरि संषकाहत्त ४१ ॥ बीनवांसु
 नी ४२ ॥ दत्तादिवादिअहै ४३ ॥ अरजामृषणजातिकेकल्पहत्त ४४ ॥ कुंभस ४५ ॥ क

जानराहारावसीकटिमेवनामुकटमुद्रिकाभुजवंधकरेइत्यादिअनेक
 भूषणदेहै॥४॥अरमात्पांगजातिकेब्रत्तनानाप्रकारसवरतिकेपुष्पनिके
 - नैहैअरजोतिरांगजातिकेकल्पहस्ततिनिकीयोतिकरिचंद्रसूर्यनजासैरा
 त्रिदिनकाजेदत्तांही॥४॥अरगंगाजातिकेब्रत्तनेवेमहत्तमंपपासमागृही
 त्रसाली॥नससात्तानकातदेहि॥४॥अरभोजनोगजातिकेकल्पबृहत्अर
 मत्तसमानश्रेष्ठआहारुंआसु॥तिकमधुरकटुकसायलात्तारजोआहार
 मत्तमिकेजीवनिर्कुडर॥तममोउनकंकल्पहस्तनिकेप्रसादकरिमिसैहै॥४॥
 रजाननोगजातिकेकल्पहस्तयात्तकटोराजारीकरवाइत्यादिअनेकजा
 केजाननदेहै॥४॥अरवस्त्रजातिकेकल्पहस्तवीनिपटांवरंगेभीस
 अतिसुंदरजानाप्रकारकेवस्त्रदेहै॥४॥उदिवेकेविह्वायवेकेपदरिवेकेदस्त्र
 मत्तममोदरमिसीअमोलिकदेहै॥४॥कल्पहस्तवनस्पतीकायनांहीअर
 वशनिकेअधिशानांही॥केवलपटव्याकासारनतमवस्तुहै॥४॥जिनिकी
 अरअतनांही॥सुतैसुनावपुण्णाधिकमनिकोफलकेदाताहै॥पदार्थनिका
 नावकारुकाकीयानांही॥४॥अरकारुकाभेदासिदनांही॥मुनिदोनकेफलसै

णविस्तीर्णफलकं फलैर्है॥ जैसैं एइ अकाल पाय फल कै फलै है॥ जैसैं कल्पवृक्ष
 दासन वंछित फल को दै है॥ अरन॥ ५॥ अत्रै रावत॥ ५॥ इति दस स्तव विषे तो वक्र॥ भोग
 भूमि दीय है॥ तव कल्पवृक्ष प्रगट होय है॥ अरकर्म भूमि में जाते रहै॥ अरभोग भूमि
 तीस सासनी है॥ तिन में कल्पतरु मास ते है॥ ५॥ भोग भूमि की टट्टी सरवर तनम
 र्द॥ अरपुष्प निकरि सो नित सो कारुं तन्मी वा संभिकूं तोही न जै है॥ ५॥ जहां प्र
 यी विषे अगारि अंगुल तणं निके समूह सखा की पांषसमं न हरे मदा मिष्ट सो है है
 ५॥ अरजहां के मगत एव है है॥ ते अतिसादि मद्राम नो हर॥ अतिको मल अंम
 तरस सा रिषे है॥ ५॥ अरजहां सरोवरी तिविषे सदा कमल फलिर है है॥ अरवापि
 कारतनम र्दनिर्मल जल संभरी है॥ ५॥ अरवनना ना प्रकार के वृक्ष निकरि सो
 नित तिन में कोयल सम धरा हृक रहै है॥ जहां पै रुधै रा रिम नो हर स्या न क है॥ ५॥
 अरकल्पवृक्ष निकरुं हलाव सी सी नल मंद सुगंध पवन वा नै है॥ सो मकरंद की रा
 जसर्वत्र विस्मय है है॥ ५॥ जहां भूमि पुष्प निकार न करि औसा सो नै है॥ भानं सुव
 र्णवर्ण पीतांबर करि आच्छादित होय रहै है॥ ५॥ अरपवन के योग करि पु
 ष्प निकरि अत्र आकास विषे विस्मयिर रहै है सो औसी सो है है॥ भानं सुगंध का चंदन
 हीताणिराषा है॥ ५॥ जहां आताप को वाधानं हो॥ दर्पानं ही॥ सीत आदिके

उरिति नो ह्रीं अरन हां कारुका प्रेरका ईति माति नो ह्रीं सपदि दिदृष्टजीव नो
 ह्रीं ६० वि कलत्रय के जीव नो ह्रीं अरगति दिन का विजाग नो ह्रीं वां दिती नो
 ह्रीं अंशे ग नो ह्रीं रति पल नै नो ह्रीं सदा एक वृत्तिर है स कलप दार्थ मुष के कार
 ए को जनय कारी वस्तु नो ह्रीं ह्रीं वन सदा फलिर है ॥ ज हां षट् रिति के फल
 लफल सदा पाई ॥ अरक मल जी सदा क मल निकरि मंदि त है ६१ ज हां जुगल का जन्म
 के देन हारे स्यां न क है ॥ रत न नि की रज क रि मंदि त है ६२ ज हां जुगल का जन्म
 क्रये पी छै सा त दिन तौ से ज प रि अं ग रे ह्रीं वृत्ति बो क है ६३ व क्र रि द्रज सा ते में से
 न ते न वै ॥ अरस्त्री पुरष आं ग ए में ग दो स्पा चा लै ६४ अरता स रे सा ते में प्र वृत्ती
 विषे आ षट् ते चा लै ॥ अरम धुरवाणी बो लै ६५ अर चौ थे सा ते में पाय निव लै अ
 पां च मे सा ते में सर्व क सा च जु रा ई आ वै ६६ अर ह्ये सा ते में संपूर्ण निव यो व न
 य नो हि ॥ अर सा त मे सा ते में स म स व स्त्र आ न षण मंदि त नो ग के नो क्रा हो य
 ६७ अर रत व म हा नो र त न नि के म ह स मं न मा ता के गर्भ मे र है दो न के प्रजा व
 क्र रि स्त्री पुरष का जो हा हा ज प नै ६८ आ स मे दं य ति की ज त प ति ता हा स मे मा ता
 पि ता की म त्सु ज हां मा ता पि ता पु त्र को पा लै नो ह्रीं ६९ म र ए का ल स्त्री कूं स्त्री क
 गुर ष नि कूं ज नो ह्रीं आ वै ॥ ज हां के न र अर ति र यं च सु जा व को म ल सो दे व ग ति पा वै

७०॥ अरजसमुच्चनिकाशरानालक्षणकरिमंति तत्रातिमुंदरानीनकोसका
 ७१॥ अरआयुनीनपस्यकाअरनीनदिनगणैपीछेंददशीफलसमांतआहार७२॥
 जहांजरागवियोगभोगअनिष्टसंयोगविंतादीनतानांदी॥७३॥ निद्राआनि
 सआषिनि काअरतिठमकारनांआशरकेमलमूत्रालाहपसेवनांदी॥७४॥ जहां
 रवीपूरषकाविरहनांदी॥ दोऊनिकीत्तारैसमुजनमादनांदीपरदारसेवननां
 दी॥ जहांनिरंतरसुषभोगनिमैविछेदनांदी॥१५॥ विषादमयगनांनिअसचिको
 धऊपणना॥ अनाचारनांदी॥ जहांकोउवलीनांदी॥ अरनिरवल्ननांदी॥ ७६॥ स
 वदीजगतेसूर्यसमांनपसेवरहितमसरहितनिर्मलवसुकेषारकपुन्यकेउद
 यतै॥ सदासुषसंरमै॥ अरदशजातिकेकल्पहृत्ततिनिकरिउपजाभोगविका
 भोगवनां॥ सोचऊवर्तिनिकाभोगसंपदाकूंजलंघैहै॥ भावार्थजैसाषानपांनव
 स्रआनूषणमुगंधरागरास्त्रीकासुषभोगभूमियांनिकूंहै॥ तैसावऊवर्तिनिकूं
 नांदी॥ ७८॥ जहांमनुक्षनिकीदीर्घआयुअरअकालमृत्युनांदी॥ अरआयुपर्य
 तनिरुपद्व७९॥ सवनिकीसमाऊआयुसवनिकेसमांनभोगसमांनसुषकाउद
 यसवदीरोगरहितअदशतभोगभोगवै॥ ८०॥ सवहीमुंदरआकार॥ सवहीवज्रवष
 मनारावसंदननसवहीदीर्घायुक्रांतिकरिदेवजिसारिसे॥ ८१॥ जहांकल्पहृत्त

निकीछाए॥ देयुगलमनोहरमुखकनिकरतेगीतवादित्रकरिरमैहै॥ ८२॥ सवह
 कलाविधैकुसलमनोजदेसुमनोजकंव॥ जहांकोजअदेकसकानांहीईर्षानांही॥
 कोजजाविकनांहीकोजविकलनांही॥ ८३॥ सवहीमुंदरवेष्टाकेधारकमुंदरा
 कारस्वभावहीकरिमिष्टवादीहर्षरूपरहैहै॥ ८४॥ दानकेप्रभावकरिअरदानक
 अनुमोदनातैश्रांणीजावजाववाधारहितसुखमोगवैहै॥ ८५॥ अरजेकुझूझतर
 हितकेवलमोगकेअभिजाषीअपत्रनिर्कमक्तिकरिदानदेहैतेनहोनिर्दिवहोय
 है॥ ८६॥ तहाकेतिर्यंचरुतीनपत्न्यपर्यंतसुषमकालषेपकरैहै॥ जेकुमेघकेधार
 ककुदानकेदानाखेटेउपासनकेकरताषोटैआचारहीअबसीहेकदानकुभ
 तपकेप्रभावतैमोगभूमिकेतिर्यंचहोयहै॥ ८७॥ तिरजंवरुयुगसंजपजै॥ जहांजल
 वरनांही॥ कैयलचर॥ कैनमवरसवसैनागर्भजहीहै॥ मनमूर्च्छननांही॥ भविकलत्र
 यनांही॥ असेनानांही॥ पसुनिर्मेयरसपरविरोधनांही॥ मलमंत्रनांही॥ कारुसंका
 रुकाविरसनांही॥ जहांकेईजीवहैसयात्रसकायमैमनुजअथवापंचेदीपमु
 है॥ ८८॥ यानांतिअसंतसुषकानिवासयुगलषेत्रतहांपावदोनकेप्रभावतैश्रीमती
 वज्रजंघजपे॥ ८९॥ स्त्रीपुरुषनयेअरवेद्यासोंजीव॥ नारद॥ सर॥ मोलबांदरप
 त्रदानकीअनुमोदनाकरितहाहीमनुजसंये॥ ९०॥ अरमतिवरमंत्रीअनंदको

दितवनमित्रसेठ। अकंपनसेनापति। एत्था सों वज्रेंदके कृपापत्रप्राप्तसमैवजु।
 जेदकासंस्कारक रिमहा विरक्त होय। इदं धर्मस्वामी के निकट संश्रय। होय। ए॥
 समकदरसनज्ञानचा रिअनपका आराधन करि प्रहृत्ती थी। व विषै अग्रद सिद्ध संश्र
 ए॥ तपके प्रभाव करि कहल होय। यह तप मन बंछित फल कंफ से है। ए॥ अ॥
 वज्रेंदका जीवजुग। लिय। एक दिन कांता सहित कलप वृक्ष निकी लक्ष्मी लयता
 ति है। ए॥ सा समै सर्व प्रज्ञाना मा देव का विमल आकास कै मारग जाता जे वि
 जातिसमरण है। पस्त्री सहित प्रतिबुद्ध नया। ए॥ अ॥ रता ही समै चारण मुमुंका
 युगल आवना दे। प्पा दी दया लइ निके अग्र मुग्रह कै अर्थ आकास तै जतरे। ए॥
 तिनिकुं देषि। ए॥ दोसन मुषजायन मसकार कर ते नये। प्राणी निकुं पूरव संसकार
 हिन विषे प्रेर है। ए॥ यद कांता सहित चारण मुमुंके सन मुषजाता ज्ये सा सो ह्या जै
 सा दिवसन लित। सहित सज्जकै सन मुष। तै जता सो है। ए॥ तिनिके चरण दु
 गल कुं अर्ध देय। ब्रणाम कर ता मां नं अनांद के अश्रु जल करिति निके चरण
 पषा लता नया। ए॥ स्त्री सहित नमसकार कर ता दे। विद्यती धर्म लान क हिं न
 धित स्या न विषे सुष सं विराजो। १००॥ तव इदं जे चारण मुमुंके प्रहृत्ता नया। मां
 नं अयने दंत निकी। किर। ए॥ का समूह सो र्दज र्दपुह पां जली ता हि वषे र है। १॥ दे नग

आदि० मा० वंनत्रापकौनत्तेत्रविषेउपनेहै॥ अरयह्वांकहंनैआएतिहारेदरसनहैमेरापन
१२४

अतिहर्षितमया॥ अस्मानांनिहैतुमभेरेपरवनवकेपरमहिरहो॥ पातैप्रह्वा-
कीया॥ अ० नवदोऊनिमैवनामुनि॥ अ० उपनेदो० ननिका॥ किरणिरूपजलकरिवा
मरीरकौंपवित्रकरतासंताकरतामया॥ त्रसो॥ हिसयंवुडकाजीवजो॥ निजातैम
वलकेभवमैरप्रतिवुडभया॥ जवत्स्वदहदह॥ तजिसर्गविषेदेवभया॥ प० नवनेरे
वियोगतैमैवैरापहोयप्रथमसर्गविषेस्वयंप्रभक्षिमा॥ मैसेमणि॥ चूत्तनामादेवनय
॥ कछुअधिक॥ एकसागरकाअगुनयानहंनैचयकरि॥ जेवूदीपकेपूर्ववि-
दहविषेपुक्कलावतीदेस॥ पुंनराकणा॥ नगरीराजाप्रियसेन॥ राजानीमुंदरीति-
निकामैयीत्पंकरनामादेष्टपुत्रअरयहमेराप्रीतिदेवनामातपुत्रा॥ नामहातप
है॥ ए० दसदोकस्वयंप्रभजिनकै॥ निकटमुनिमये॥ अ० रतपकेवलतै॥ आवधि
नतथा॥ आकासचारिणी॥ रिद्धिपार्द॥ १०॥ सोअवधिसा॥ नकरितोहिदहंउप
जां॥ निसंदो॥ धिरेकुं॥ आयेहै॥ ११॥ हेआर्य॥ त्पत्रदानकरिसम्यकदर्शनविनांद
हांउपआहै॥ अस्मानांनि॥ सम्यक्दृष्टीदानकेप्रभावकरिसुर्गमुक्तिप्राप्तै॥ १२॥ म
हावत्तकेनवविषेह्मा॥ रेउपदेशतै॥ विरकतहोयसमाधिमरणकरिसर्गगया॥ प
रंतुतेरै॥ सोगानि॥ ताषकेयोगतै॥ सम्यक्की॥ प्राप्ति॥ ननर्ह॥ १३॥ अ० नवत्स्मक्कप्रह्वाक

शिग्रहसम्पत्तु सर्वोत्तम है ॥ १५ ॥ स्वर्गमोक्षकाकारण है तेरे सम्पत्तु के लानका
 यद्दसमय है काल तब धि विनां सम्पत्तु की न तपति नोही दमरुं तो हि सम्पत्तु
 का ग्रहण कराय वे अग्य है ॥ १६ ॥ पुरका जप देश अरकाल तब धि एवाही कारण
 है ॥ अतः करण तो न वजीव का भाव ही है ॥ १७ ॥ सम्पत्तु दर्शन आत्मा का
 स्वरूप ही है ॥ ग्रह प्राणी अनादिकाल का मिथ्या तत्त्व के करि कर्त्तव्य की है ॥ १८ ॥
 जैन मोहका नाम मिथ्या त्व है ॥ प्राकृत दय करि सम्पत्तु कुं न ग्य है ॥ १९ ॥ जैसै पित्त
 के न दय करि ज्यो रका अज्ञान वै देवे अरपि न के ही रैन ऐय धार्य दर्शन ही यतै
 सै मिथ्या त्व के न प ॥ सम तै सम्पत्तु तान हो है ॥ २० ॥ अर जै सै रात्रि के अंधकार कुरु
 विनिस्तर्जन गै ॥ तै सै मिथ्या त्व कुं मे दे विनि सम्पत्तु दर्शन न होय ॥ २१ ॥ न वजी
 व अंधो करण ॥ अपूर्व करण अविद्वि करण करि मिथ्या त्व सम्पत्तु मिथ्या
 त्व सम्पत्तु कति मिथ्या त्व ति नि को द रि सम्पत्तु को ग्य है ॥ न व संसार अल्प
 र है तव सम्पत्तु ग्य है ॥ २२ ॥ देव श्री अर दंत गुर निर्यथा धर्म जीव दया के वजी प्र
 ण ति सिद्धांत ता विवै न धि न व पदार्थ ति नि का सिद्धांत सो सम्पत्तु दर्शन क
 हि ए यद्द सम्पत्तु दर्शन सम्पत्तु तान सम्पत्तु चारित्र का मूल है ॥ २३ ॥ जीव अना
 द ॥ आश्रय द ॥ वध ॥ पुन ॥ पाप ॥ संवर ॥ निर्जरा ॥ मोक्ष ॥ न व पदार्थ ति नि का अस्कां

करि

तिनि

नतीनमूढतारहितसोसम्यक्दर्शनकहिए ताके अथ अंगानिः संकिन्तनिकोचित
निर्विचिकित्साः अमूढदृष्टि उपदृष्टाः स्थिरीकरणवात्सल्यप्रभावना अंग २१
अरसंतताभर्मनुरागानिनववनकी आसिक्पजीवदया आत्मनत्वकी प्रधा
विप्रतीतिः धर्मकाग्रहण एसम्यक्कले लक्षणे है १३ जैसैं किरणिकरिरसनसो
नसो है तैसैं अंगानिकरिसम्यक्कसो भै १४ तजिनमारागविधै संदेहतजि अर
गानिकी वांछा तजि अर अमुनकुं देखिविविचिकित्सा तजि १५ अर मूढ
दजि अर पराये दोषदिकि अर अपनावितजिनमाराग तैव निवेग सिद्धे कुओ
दे तै ताहि छिरकरि १६ अर रतन त्रयके धारक वज्रविधिसंघस अतिनि सं
तिसिद्धकरि अर जिनमासनकी यथाशक्ति प्रभावना कहि १७ देवमूढ लोकमूढ
पारंरमूढ तजिमोहकरि अंधप्रांणी तत्वकुं न देखै १८ धर्मका सर्वसम्यक् द
न है यद्गया नवओर कछु दुर्लभतां दी १९ तादी नै अप्रप्रांजननमसुधा स्या अ
नार्थवद्दीवही पांतिन जाके हृदयविधै सम्यक् दर्शनसिद्धे दिगजै २० मु
रूपमहसकामुरत्यसिवा ए अरदुरागतिवारका कपाट २१ अर धर्मरूपद्वि
की गादी नडस्वर्ग मुक्ति का द्वार सीत्तरूप आभरण २२ मध्यमणि महाक्रांति रूप
२३ गुणनिका अर शृणु है दीप सांनरतन निमै महारतन त्रैलोक्य भैसार मो

पलन्मीकासाररुदयविषैधरि॥३॥यहसहाउर्त्तनसमक्करननिनिअंगीका
 रकत्तासीधहीतेसिवपुरीप्रासभए॥३॥समक्कदर्शनकंपायएकमरुर्त्तरुविश्रांम
 फंननैतौसंसाररूपवेलिकूंछेदै॥३॥नलेदेवनलेमनुतनिकैकेयकनवधरि॥३॥
 इरिजवरहितहोयसमक्कदृष्टीकूंननकवरुनपवै॥३॥वऊनकहिवेकरिक
 दाएकप्रसंसायोगसमक्कदर्शनहीहै॥जाकेपायेअंततअपारसंसारकोअमण
 मिदैहै॥३॥रुहमारवेवननैनेसरीआजाप्रमाणकरिअनमसरणहोयसम
 कदर्शनकूंअंगीकारकरि॥३॥नैसैंअंगीविषैसीसअरमुखविषैनेत्रतैंसैंमुक्तिके
 कारणतिनिविषैयहमुखकारणजोनि॥३॥लोक्मूटपाबंधमूटदेवमूटननि
 करिसमक्कदर्शननिर्मलरुदयधरिकैसाहैसमक्कदरसनअविदेकीजीवनि
 करिअग्रहहै॥३॥संसाररूपवेलिनानाइयरूपविषफलकीफलनहारीता
 दिसमक्कदर्शनरूपसत्त्वकरिछेदिअरतनिकटमयहैतीर्थिकरदेवहोनहार
 है॥३॥हेआर्यत्तनिनववनकेअनुसाहिकल्याणकैअर्थिसमक्ककूंअंगीका
 रकरिआजोतिवज्रजंघकेजीवसंकहिप्रीमतीकेजीवसंकहैहै॥३॥हेमानतरु
 सीधहीसमक्ककाअवलंबेवनकरिसवसागरकोतबिस्त्रापययिविषैकहाषेदधि
 नहोयहै॥३॥यहसमक्कसंसारसमुद्रकीनिहाजहैसमक्कदृष्टीजीवनिकीखा

पर्यायविधैः जतपक्षिनां ह्यभ्यरद्भ्यो नर्कसंस्थेयमातर्ध्वेनर्कलगतथानवनविक-
 देवनिर्मेतथाएकं द्रीं वेद्रीं तेंद्रीं वौद्रीं अभ्यर्मेताप्येवं द्रीं हनि विधैः जतपक्षिनां ह्यभ्य-
 र्धं विक्कारद्वौक्यास्त्रीपर्यायकृं जाविधैः निग्रंथधर्मतां ह्यकारासेकी अभ्यानि
 मां न है कामका अभ्यातापक्षिनिर्के भ्यत्समपक्षका अभ्याशधनकरिस्त्रीपर्याय
 निर्द्दति होऊ जन्मांतरमेससंस्थानक कृं पावौगा भ्यदति निर्के लसभ नक्त
 ति ॥ आवक के जत ॥ यानी के हत ॥ इदं पद ॥ भवकी पद ॥ केवल ज्ञान ॥
 निर्वाण ॥ तुम हो जहा कैयक कल्याण रूप भव धरि भ्याना जिक रि कर्म प्रजा
 परम पद कृं पावौगे ॥ भ्य ए प्रीत्यंकर चारण मुनि के वचन प्रमाण क रि व जुं यं प्र
 मती के जीव दुगत सम पक्ष दर्शन कं प्राप्त भयो ॥ भव ह्य प्रीत म प्रीया सहित सम पक्ष
 र्जन के लज्जक रि अभ्यति रत्नि जया अभ्य प्रव वसुका लज्जा न प्रांणी निरुं अभ्यति
 र्वित करै ॥ भव ह्य अभ्यार्य सम पक्ष दर्शन रूप कं वा नरण कृं पाय मुक्ति की रा ज्य
 पदा के दुग रा ज पद विधै तिष्टा के सा है सम पक्ष रूप कं वा न रत्न निज सत्र मै पोय
 ॥ भ्य अभ्य र व द पति व्रता सम पक्ष के लज्जा न क रि अभ्यति अभ्यानें द रूप भर्त्ति निर्मल पुर
 षार्थ के योग क रि निर्वाण की है अभ्यनि जा पा जा कै ॥ भव दे दोऊ अभ्य प्रव सम पक्ष
 र्जन रूप रसायण कृं पाय क रि कर्म निका ना सक जो निज धर्म ता विधै प्रवीण

नये ॥ ५२ ॥ अरदै वासूं नाहर सरन्यो लवांहर के जी वयुग निशा ॥ जनमुनो कै नि
 कट ॥ इति दोउ निकै संति सप्तक अंगी कार कर ते नये ॥ ५३ ॥ वेद पति आनंद रूप
 मनोरथ की सिद्धि कुं प्राप्ति नये ॥ ५४ ॥ अरदै मुनि द्विधर्मो नुराग तैं इति के सिर परि
 हाथ धर ते नये ॥ अर ए जनमंतर का धर्म स्नेह ता ॥ करि जे एक मुनि के चरण निकी
 जू वि तै रहै ॥ ५५ ॥ मुनि के चरण सपर स ते पाय है आनंद निप्रणाम की या ॥ मुनि
 इति कुं जे भवंधा य धर्म दृष्टि देया मन कुं जइ मी नये ॥ ५६ ॥ चलनी देर यह वचन
 क ह्या हे आर्य के रि ते रा दर्शन होऊ ॥ त धर्म कुं जे ते मति इह वचन कहि चारण भु
 नि आकास कै मार गगन न करि गए ॥ ५७ ॥ चारण युगत कुं गए पीछें यह अति वांछा
 रूप सया ॥ इह का वियोग मन कुं आताप जप जावै है ॥ ५८ ॥ यह चारंवार मुनि के गु
 ण विं त वता अप ते मन कुं पवित्र कर ता वऊ त वेर लग धर्म का विन दन कर ता
 नया ॥ ५९ ॥ मन मै विं त वै है अरोध न है साध नि का समागम सर्व संताप कुं सर्वथा इ
 रिक रे अर आनंद कुं विला है ॥ चारंवार कल्याण कुं करै साध नि के समागम समा न पुन्य प
 हरै योग्यता कुं विला है ॥ चारंवार कल्याण कुं करै साध नि के समागम समा न पुन्य प
 दार्थ नो ही ॥ ६० ॥ वेसाध मुक्ति मार्ग के साधन विवैसावधान द नि की अजो विकि कर
 दि है ॥ लो किक बार ता इति कै नो दी ॥ ६१ ॥ परमार्थ की बुद्धि करि मारग का उपदे

सकरैहैं दहं अयाकरि मोहि जप देअ कीया ॥ दहं अपने दुष विषै ए निरुद्यमी अ
 राये दुष विषै दुषी ॥ सदा अवां ब्रीक परमार्थ विषै जद्यमी ॥ इति काख नावही है
 दधाय दत्त विचारि जो कहां दम निस अरु कहां दह जोग भूमि ॥ हमारै विहार
 यो पय हर भूमि तां ही ॥ सदा पराये अ नुग्रह विषै सावधान तपो धन दहं अया दह
 कृत्तरार्थ कीये ॥ दधाय तायाही तैं कहां है ॥ इति कै केवल यहाय लहै ॥ जो ए
 नाव सुधी होऊ ॥ महा पुरष परमार पथ के अ नु रागी ॥ इति अया करि परायान
 पगार करै ॥ चारण मुनि मेरा जप गार कर ते भये ॥ सव निकायाही भोति करै ॥
 है ॥ दहं मे अद्यापि चारण मुनू कूं सात्ता न अपनें आगैं ॥ देवूं हूं त परुष आ
 निक रिदहू है अग निनि ॥ महात्ती ए रागरजदा ॥ चित्त ॥ दह ॥ ति निके वरण युग
 विषै में प्रणाम करूं ॥ अरवै धर्म नुराग करि मेरा सिर सपर सैं है ॥ दह ॥ अर
 धर्म का अति नाभी जो मैं सो ॥ सोहि सभ करू ॥ पत्र प्रतयाव ते न ए ॥ जाकरि मेरा म
 न ह्यारहित सुधी नया ॥ दह ॥ देव हूं मुनि सांघी ॥ तं कर जो पर नव की घा निमो स्
 या नव विषै पाली ॥ वे सव जाव निके मित्र मोक्ष मार्ग के जप दे सक है ॥ ७० ॥ महाव
 ल के नव विषै रुमे रे गुर रू ते ॥ अर अरव सैं सभ कर दर्शन अंगीकार कराय ॥
 विसेष गुर जये ॥ ७१ ॥ गुरं का संग जो न होय तो गुण निकाला जन होय ॥ अर गुण

वे

निके ज्ञान विनिजनमसफल कैसै होय ॥७२॥ जैसें धातर सायण के योग तै सुवर्ण होय
 तैसैं गुर के संग तै मद्य जीव शुद्ध होय ॥७३॥ जैसें जिह्वा जविनां समुद्र कुंन तिरिस कि
 ए तैसैं गुर के जप देखे विनां संसार सागर कुंन तिरिस कि दो ॥७४॥ जैसें अंधार में दा
 पग विनां पदार्थ न जा सै तैसैं गुर के जप देखे विनां जीवादि पदार्थ न जा सै ॥७५॥ दां
 भव अरगुरु एहि तत्कदा वै है ॥ तिनिसैं गुरु तौ दह जनम परजवम विषै सदा हित
 कारी है ॥ अरदां भव सार पदार्थ के संगे है ॥७६॥ गुर निके जप देखे सक रिसो हिस म
 क्त की प्राप्ति नई ॥ तातैं जनमांतर विषै रूपे गुर पद विषै न कि हो ॥७७॥ औ से वि
 तवत करि या के संग मक्त की जावना दुट नई सो धर्म से न ह करि पति अरधि
 लेगा ॥७८॥ दो ज निके सम मक्त की जावना दुट नई सो धर्म से न ह करि पति अरधि
 या विषै अमं ह श्री तिनई ॥७९॥ तदां दो कना प्रकार के योग योग वसे एतान
 पदका आधुव्यता तिक रिह जे स्वर्ग विषै देखे नये ॥ जैसें को ज एक घर तैं दू जे घर
 जाय ॥८०॥ अर जैसें मेघ पवन के योग तैं विलैं जाय जैसें जोग भूमि यां निके अर
 आधु कै अंत विना सि नां हि ॥८१॥ अर देखे निके वै क्रिय क देखे विषै मल मत्ता दिनां
 ही तैसैं जोग अमि विषै रुनां हो ॥८२॥ निर्मल आर है सो वज्र जंघ का जीव जोग अ
 मि तैं दसा न स्वर्ग विषै सदा प्रकासरूप श्री प्रननामा विमो न तदा श्री धरनामा

देवमया ॥ ८ ॥ अरशीमतीकाजीवजगत्तिनीसमक्तकेमहात्मतैस्त्रीलिङ्गच्छेदिस्व
 यं प्रजविमणविधैस्वयंप्रजनामादेवमया ॥ ८ ॥ अरनाहरसून्मीस्ववांहरकाजी
 नोगाम्भितैर्द्रुतेस्वर्गिआस्त्रोवमीशिक्षेकादीदेवमयोपुन्यतैकदानहोय ॥ ८ ॥
 धर्मविनांकहांस्वर्गप्रसर्गविनांकहांसुवतातैसुषुकेअर्थीधर्मरूपकत्पद्म
 कंसेवो ॥ ८ ॥ नाहरकाजीववित्रांगदनामाविमणविधैवित्रांगदनामादेवमया ॥ ८
 १ ॥ अरवाहकाजीवनंदननामाविमणविधैमणिकुंरत्नीनामादेवमया ॥ ८ ॥
 मानमुकटकेयूरमणिकुंडलादिकरिसोसित ॥ ८ ॥ अरवांनरकाजीवनंद्याव
 विमणविधैमनोहरनामादेवमया ॥ ८ ॥ देवांगनाकेमनकाहरनक्षराअतिवजुरसुंद
 कार ॥ ८ ॥ अरनोलकाजीवप्रजाकरेविमणविधैमनोरथनामादेवमया ॥ ८ ॥
 गरुअमृतकाजीकाजाकेसवमनोरथपूर्ण ॥ ८ ॥ याजोतिणच्छुजीवमोगम्भि
 तैर्द्रुजैदेवलोकेदेवजोहितनकाआयुकायुस्प्रसौदर्यमोगादिवर्तनललितो
 दतजानका ॥ ८ ॥ देवदेवनिर्भैजकुहश्रीधरदेवपुन्यकेजुदयतैस्वर्गविधैसुंदरदेह
 काधारकसवनिकेनेत्रनिर्कुंआनंदकारीपवित्रसरात्मदादेदीप्यमानजाके
 देवांगनामधुरमाविणीतिनिसहितमनवंछितमोगजोगदैसदाजतसवहीक
 प्रापुष्पनीतहोय ॥ ८ ॥ अरमविमणकेविधैमानाप्रकारक्रीडाकरतामयावह

नातिकेकराप्रवत्रप्रतिकोमलतिनिकरिपलोठिएहैपावनाकेअरतिनिका
 मुखसोईअयाचंद्रमांताकीमुखकनिरूपअंमलताकरिवारंवारसीआपकतिनि
 केविअममहितनोहतेईअयेधनुषतिनिकरित्ताएकटाक्षरूपवानेतिनिकाति
 माणाअयासंतातिरंतरसार्कभोगभोगवतानयावदश्रीधरदेवजनांतरमेंश्री
 विनहोणहारहै॥एअरितिश्रीनाथद्विजिनरोनाथार्थविरचितत्रिषष्टिस्तोत्रमह
 पुराणसुहृदिविश्वेश्वरीमनीवज्जुनायकाभोगश्रुतिविमोक्षनमस्तोत्रंमहकात्यायन
 वक्रदिश्रीधरदेवअयेताकावर्तननामनाथमापर्वपूर्णिया॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥
 अणानंतरवदश्रीधरदेवअवधिकरिअपनेंगरश्रीत्यकरतिनिकूंश्रीअननामपर्वत
 परिकेवलजपज्जांति॥१॥अष्टपूजाकासामग्रीलेपपूजिवेगया॥१॥सोपूजप्रणाम
 करिधर्मप्रवणकरिअपनेमनकीवारतापूजितामया॥अहेप्रभोमहावलकेमुखवि
 धेअमेरेसीनमंत्रासिष्यादृष्टीकृतेतेकोनगतिगये॥१॥तवसर्वभावकेवेताकेव
 लीवचनरूपकिरणिकरियाकेमनकासंदेहरूपतिमरहरतेकहतेगरे॥१॥ह
 नयत्तमहावलकेअनमतेस्वर्गागया॥अरहरममुनिहोपतपकूंअवर्त्तेअरवेनी
 नंआतिरुद्रध्यानतेदेहितननेनये॥१॥सोमहामतिनामाअरसंनिन्नमतेनामा
 दयतौनिगोदगये॥अहोकेवलअंधतमहै॥तहोअनेकनमसरणकरैगे॥म

दाधेदक रिअति दुषी है ॥ १८ ॥ अरनी जा सनमति दु जैनर्क गथा आपकर्म के फल
 नो गवने कानर्क दो जे है ॥ १९ ॥ जे पापी मिथ्या लरूप विष करि मूर्खित है ॥ अरमा
 रग के विरोध है ते दीर्घ काल कुयो निमै कष्ट सहै है ॥ २० ॥ धर्म के दोषी नर्क में पर
 है ॥ ना ते सर्व जका भाषा धर्म ना का सह नि विवेकी नि कूँति रंतर कर नो ॥ २१ ॥ ध
 र्म करि यह प्रानी नर्क लो क ना य ॥ अर पाप करि अयोग ति जाय ॥ अर पाप
 पुन्य की मिश्रता करि मनुष्य गति पावै ॥ यह निन आ जार नि श्रय करि ॥ २२ ॥
 वरु ते रा सनमति नाम मंत्री मिथ्या ज्ञान की ॥ छिट ना करि दु जैनर्क अति
 दारुण दुष नो गवै है ॥ २३ ॥ अ नर्थ का कर्तो ॥ जानै दंडी न जीते ॥ अर धर्म से ॥ हे ध
 रा धता ॥ अ धर्म विषै ऊती प्रीति जाकी ॥ ना ते नर्क में पस्या ॥ २४ ॥ धर्म ते सुष ॥ अ ध
 र्म ते दुष ॥ अरे सा जा नि विवेकी धर्म विषे न त पर होय ॥ तो दुर्गति के कष्ट न सहै
 ॥ २५ ॥ धर्म जीव दया ॥ सत्य ॥ क्षमा ॥ निजो नता ॥ ज्ञाना का त्याग ॥ ज्ञान वै राग ॥ अ
 र दनि ते नु लटा सो अ धर्म ॥ २६ ॥ जो विषय की अा सक ता सो अा धिक ता पकू
 उपजावै ॥ जै से अा गति अा ता पकू न पजावै ॥ २७ ॥ विषय का लपाय कर ता त पर
 ता य मां न होय पाप विषै प्रवर्तै ॥ धर्म विषै क्षय करै ॥ अ धर्म का सेवन करै ॥ सो
 द अा धो लो क विषै ग मन करै ॥ २८ ॥ जो पाप क्रिया करै ॥ सो का लपाय ता का फ

लनर्कविषेजोगवै॥ जैसैं हंडके स्वानका विषवर्षारति विषै प्रवल होय ॥ २९ ॥ अर
 जैसैं अण्डजो जनकरि मूरिषज्वरकं तीव्रकरै॥ जैसैं अजानी बोटी वेष्टा करि
 णणकूं दटक है ॥ ३० ॥ पापकर्मका जदशकूटक फलकूं देहै॥ जणमात्ररु विषयके
 सुषमां दी॥ तिनिके फलनर्कविषे दीर्घका लजोगवै ॥ ३१ ॥ नर्कनिके डधवचन
 करिवण्टि नजाय॥ को नयाणनि सैनर्कविषै जाय॥ सो कृणे कमनधिरकरिसु
 नऊ ॥ ३३ ॥ जेमिण्यादि हाहिंसा विषै नदामी॥ अर मयादाद विषै तनपर॥ योरी
 के करन हारे॥ परस्त्री संपद॥ वक्र आरंजी॥ वक्र परिग्रही मटो नमत्त ॥ ३४ ॥ कू
 रचित॥ रुद्र आना॥ निर्दर ॥ ३५ ॥ धर्म दोही॥ अधर्म के पोषक॥ साधने के निर्दक
 मद्मद्वरके धारक॥ कारुकुंदे धिनसकै ॥ ३६ ॥ निःकारण क्रोधकरै॥ निर्गुण
 मुंति निरुंके देषी॥ मद्यमासमधुके अहारी ॥ ३७ ॥ सिकारी सुदेरा हिंसक
 जीव॥ स्वानसिकरा॥ बीतादिक तिनिके फलक॥ वनग्रामनगरादिके दाह
 क॥ ३८ ॥ ते पापी पापके नारकरि नरक में परै॥ पापके कर्त्ता॥ अर कराय वेचारे॥
 अर पापकार्यके प्रसंसक॥ दुर्गतिके अधिकारी है॥ दुष्टमनुष्या दुष्टतिरजेवन
 र॥ किजाय॥ अर नरकका आया॥ मनुचतयापें चेंदी पसु होय ॥ ३९ ॥ अर जल
 वर॥ पलवर॥ नमवर॥ तिनमें जे दुष्टजीव॥ मछ॥ सिंदू॥ सर्प॥ दिक॥ तथा पापीपं

अरु राचासीमनुषः एनकमैपरे ॥ २९ ॥ चौईतीतकतौ नर्के न जाय ॥ अरु अ
 सेनापंचेईकोइकपरहेनकिजाय ॥ अरु सरीसर्पहुं जैलग ॥ अरु पंथी जैलग
 सप्यचौथेतक ॥ ३० ॥ संपदपांचवैतक ॥ स्त्रीछवैतक ॥ अरु मनुष्य तथा मनुष्य
 तवैनकतकजाहि ॥ ३१ ॥ नरकनिकीनंमिकीप्रनाकेनाम ॥ रत्नप्रभा ॥ सर्परा
 वासुक ॥ पंकप्रभा ॥ धूपप्रभा ॥ तमः प्रभा ॥ मलानमप्रभा ॥ ३२ ॥ अरु तिननर्कनि
 केनाम ॥ दम्मा ॥ वसा ॥ मेघा ॥ अंजना ॥ अरिष्टा ॥ मद्यवी ॥ माषवी ॥ ३३ ॥ तहांअति
 दीनसस्त्रानकनाविषै ॥ मांषिनिके ॥ छातेकीनाई ॥ अथोमुष ॥ उपजैपापनिहू
 उचाईकहां ॥ ३४ ॥ एकमरुतमैंतिनिकागात्रा ॥ डगंधसगांवणां ॥ देषानजाय
 अैसामहाविनस्पवनिजाय ॥ ३५ ॥ सोसरपूर्णहोयतवदित्वा निमें ॥ जैसैंदु
 तकीसाषानितैट्टिपत्रनेमिपरिआयपहै ॥ तैसैंनेमिमेंआयपहै ॥ ३६ ॥ प्रद्वी
 मलप्रद्वलितदुःसहता ॥ विषैपरिपरिउछलै ॥ वहजैमितीरुणसस्त्रसमांन
 ताविषैउछरिपरैपुकारै ॥ छिननिनहोयजायहै ॥ सर्वअंगकीसंधितिनि
 की ॥ ३७ ॥ मूषिकीऊषमाकरिआऊलनये ॥ वारवारउछलै ॥ जैसैंतातेनाइहि
 वैसितउछरै ॥ ३८ ॥ वक्ररिमहाक्रूरनारकीतीत्ता ॥ अयुधनिकरिअंगछेइ
 अरुकोधकेवचनकरिगरावै ॥ ३९ ॥ नारकीतिकेवै ॥ क्रियासराएतिलतिल

का शिरो विदारिते ततः कालमिति जायते सैदं डकरि जलकं दूटिये ॥ अरजला
 के कणज छलिति जिज्ञां हि ते सै नारकी निके अंग छिदे निदे मिति जिज्ञां हि ॥ ४
 अरते नारकी परसपर अपनां वैरानुसंवंध जलाय करि आया समैदं डदे है ॥ ४ ॥ अ
 रती जनरक लग्न असुरकुमार देव जाय करि नारकी निकुं वैरवितराय लरां वै है ॥
 कल है को प्रेरणा कर है ॥ ४ ॥ अरनर्क में विकल त्रय तया पंचेदी मनुष्य नि
 चतौ नां ह ॥ सवनारकी दा है ॥ अरणावरजी वार के दीनो सर्वत्र तीन लोक में है ॥
 नरक विधे नारकी निकी वि क्रिया मर्दन यं कर प्रहृषणी नि निकी वरु मर्द वंदा
 ते वृंथे है ॥ अर अपति सूल सां मसाना दी दणनरव निकरि विदा है ॥ ४ ॥ अ
 के दक निकुं तां वा गालि पां वै है ॥ तत्क रित नन सरो य है ॥ अर विलाय कर है ॥
 तिनिकुं क है है ॥ एमदा पां न के फल है ॥ ४ ॥ अर के एक निकुं घन घन करि दा
 णी में पे ले है ॥ अर के एक निकुं कर दा में ओटा वै है ॥ ४ ॥ अर के दक निकुं
 उनदी का मांस का टिन न के मुख में दे है ॥ अर क है है ॥ तु मयरा ए मांस जष ते सो
 आप नां मांस को नन बो ॥ ४ ॥ अर वन व विधे नि नि मांस बाये है ॥ तिनियायी
 कुं मा रि मा रि पछा रि पछा रि ॥ मिं जा से नि ते मुख विदारि विदारि गले पा देय
 दिय प्रज्वलित लोह के गो ॥ ति मुख में दे है ॥ अर क है है ॥ ए मांस जषा ए के फल है

४७ अरकैयक निरुंमहातपतायमानलोहकापूतनी निरुंपरसकरां वै है ॥ ४८ ॥ अर
 है है ॥ यह तिहारी प्री ॥ घातुमर्कसंकेतके स्या ननुत्तावै है ॥ यह है नवतुमके तर्क
 निकेवनविषेसंकेतकरने सो अवमहाकर्कसकरौ तमारिषेयत्रजिनिके औसे
 कटिकबलतिनिके असिप्रववनतहोतुमर्कबुत्तावै है ॥ ४९ ॥ वहतौ संजोगकी इ
 छाकरिवुत्तावती ॥ यहमारिवेकी इछाकरिवुत्तावै है ॥ जेपापपरदारा आसकरा
 ॥ तिनिकुंवलात्कारै प्रज्जलितलोहकी फूतलानिस्सपरसकरावै है ॥ ५० ॥ सो
 वेसपरससैंही मूर्छा फुं प्रासहोय है ॥ तवलोहके वमूटा निरैमर्मस्यलविषेबूधै है
 ॥ ५१ ॥ ताफूतनीके अग्लिगनके वेदतैलणमात्ररुनोहापाया है विप्रामनिनि ॥ अ
 गनिके कणानिकरिजरै है अंगनिनका ॥ औसेवे नारकी दृष्टा विषेपरै है ॥ ५२ ॥ अ
 रकै इकनिकुं धवणि सुं धमिकरितपायजे वज्रमर्द ॥ आत्मन्ती बलति ॥ नपरिव
 दां वै है ॥ जिनिकै ॥ अथ ऊर्ध्व ॥ नीलणकंदक निनिकरि विदारे नोय है ॥ इहसव
 नलण अयो जगामनका फल है ॥ ५३ ॥ ते नारकी तिनहुत्तनिके आरोपणक
 ॥ वेकरिषसीरिसंते दारै है ॥ रक्तनिनके ॥ पापकार अनेकक हनोगवै है ॥ ५४ ॥ अ
 रकैयक निरुं वैतरणी नदी में जुं दां वै है ॥ जैसा मीलावाका ते लहोय ॥ तैसा है ज
 लजाकामहात्ता ॥ अति दुर्गंध जाकरि विणिमात्रमै सर्व अंग फाटि जाय है ॥ यहस

वज्रगानितजलकीक्रीडाकाफलैहै॥५५॥ अरजेद्रांफलनिकीसेजपरिपौ
देहै॥ तिनिकुंअतिप्रकृतितनलोहकेकांठेनिकीसेजपरिसुवांलैहै॥ नाकसिम
सहोयजायहैअंगनिनिका॥ अरतिनिर्कुंकहैहै॥ सुमसुषसेजपरिशिद्रासेते
सोअवयासेजपरिदीर्घनिद्रासेहु॥५६॥ अरकेइकजलनाकेपीनेअसिपत्र
वनमेंजायहै॥ सोतहांमहातीव्रपवनकरिअंगनिकेकणवरसैहै॥५७॥ अरप
त्रदृष्टिदृष्टिपहैहै॥ सोपत्रममसआयुधनिसाधितिनिकरितिनिकेअंगछिन्न
निन्नहोयजांयहै॥ अरवेपुकारकरैहै॥५८॥ अरनिनिपायिनिमांसकेसत्ता
करिजबैहै॥ तिनिकाअंगकाटिकाटिवल्लरीकरिसल्लेकरैहै॥ अरकेइकनिकुं
आधोमुख॥ जंचेपावकरिदृजांवेहै॥ अरकरैहै॥ एअनायकेफलहै॥५९॥ अर
केइकनिकेमर्मसंघितीक्ष्णकरोतनिसंदेहैहैकरैहै॥ एमरमछेदकेवच
नबोलतेतिनिकेफलहै॥ अरकेयकनिकेनवनिमेंतातीलोहकीसुईगाईहै
तिनिकी॥ अतिवेदनाहोयहै॥६०॥ अरकेयकनिकुंसलीवटांवेहै॥६१॥ अर
रघसांवेहै॥ अरकेइकत्रणकरिदृष्टिनितिनिकुंमहाक्षारजलकरिछांवेहै॥
सोमूर्छापाययहै॥६२॥ अरकेइकनिकुंजंचेपहारतैनाहैहै॥ अरसैंकरांनारकी
निर्दईवज्रमुष्टीनिकरिमाहैहै॥६३॥ अरमुद्रागानिकरिमाहैहै॥ मारेमारकेआ

धिनि कलि नि कलि पर है ॥ ६४ ॥ सवन र कनि में नार की पर स पर ल है है पी है पिटा वे
 है मा र है मा र बा द है ॥ अर अ मुर ऊ मा र ती जे न र्क त ग नार की नि कूं मी टे नि की नां
 र्क ल्यं वे है सो मां छे फा टि फा टि जा य है ॥ ६५ ॥ अर के य क नि कूं ता ते लो ह के सिं घा सा
 ण प रि वे ठां वे है अर क है है तु म पू र व न व वि धे उ द त हो ते ॥ ग र्क र ते रा न के आ स न
 वे वि न्या व न की या ना के ये ह फ ल है ॥ अर के र क नि कूं म हा ती ल ण लो ह के को टे नि
 के सां घ रे नि प रि स य त क रां वे है ॥ ६६ ॥ स ही न प र है अे सी न यां न क न र्क की वे द ना ता
 हि पा य क रि ति नि कै अे सी खिं ता हो य है ॥ ६७ ॥ अ हो य र न मि वि ष म अ ग नि ज्वा ला
 क रि ष ज्वा लि त है अर प व न अ ग नि के क ण कूं व र सा व ती जे वा है ॥ जो स प र सी न
 जा य ॥ ६८ ॥ अ र द सं दि मि दि दा ह की सं क उ प जा वे है ॥ अ र ता ती रे त व र से है ॥ ६९ ॥
 अ र प र वि ष म व न वि ष म वे ति क रि न स्ता न हां ष र ग की धा र स मा न प अ नि नि कै
 अे से व ल म हा न या न क ॥ ७० ॥ अ र ए ता ती ली ह की फू त री म्वा नि सा रि का अ य ने
 अ ग की अ ग नि क रि न स्म क र है ॥ ७१ ॥ अ र ए अ मुर ऊ मा र नि र्द य धि त र म कूं व ल
 ल्का रै नि रं वे है ॥ र म जे पू र व न वि षं ऊ क र्म की ये है ते या दि क रा वे है ॥ ७२ ॥ अ र म
 या म र्द ष र अ र जं ट नि के स मू र जं वा नां क की ये म हा वि क रा ल म्ब य है अ ग नि नि
 का स ते दो रे कि र है ॥ मां नं ति ग ति जं हि गो ॥ ७३ ॥ न या न क अ दू क र ते वि व र है ॥

अर एनयं कर आकार नागीषडा काठे नारकी ह मकुं मरां वै है ॥ अर एनयं कर है ॥
 आका मयें पत न नि नि का ॥ ७५ ॥ अये से ग धरे ह मकुं डरां वै है ॥ अर माया मई खान मय
 क श ह कर ते वि दा है है ॥ ७५ ॥ निश्चय कर रि द नि अ नि क नि के यो ग है ह मारे अ शु
 च क र्म ही पी डा न प जां वै है ॥ ७६ ॥ एक न र वे धि ए तो नार की दो रे अं वां वै है ॥ ति नि के
 पा य नि के नयं कर श ह ॥ अर मा रो म रो अये से क वो र श ह ॥ अर ये क वो र नार की
 न के वि ला प के स ह जि नि कुं सु ने अ धि क र्म ना प न प जे ॥ ७७ ॥ नै सें ग र्म की पी डा क
 रि ग र्म व ती पु का रे ॥ अर एक न र मा या मई का ग नि के क वो र श ह ॥ अर वि क्रि या म
 ई स पा त नी नि के श ह म हा अ मं ग ल रूप सु नि ये है ॥ नि नि क रि ध र ती आ का स म
 हा य मा न हो य र ह्य है ॥ ७८ ॥ अर वि क रा त प व न क रि अ सि प त व न में प त्र द रि
 द रि प र है है ॥ ति नि का मयं कर श ह हो य र ह्य है ॥ ७९ ॥ अर वे म हा वि प रा ति क र
 टी ले सा ल्म ली ब्र ह्म जि नि के वि ष म को टे वि ता रे तें मं न र में चु ने ना य है ॥ ८०
 अर व ह वै त र एी न दी मि ल वे के ते त स म मा न वि ड रू प द व की न रा ॥ म हा सा र ड
 र्म भ जा वि धे प्र वे स तो इ रि दी र हो ॥ आ का स म रा हा नयं कर ॥ ८१ ॥ अर ए न र्क के नि
 वा स म हा उ ल ना क रि प्र ह्म ति न है ॥ जै सें मूं सि भें धा त ग ले तै सें ति नि सें चार की
 नि का श री र ज रे है ॥ ८२ ॥ इ ह म हा दुः स ह वे द ना ती ब्र ह्म र अर वि नां म तु प्रा रा न

छुटै पीरा भोग दो करै ॥ अर नारकी दुर्निवार ॥ ७३ ॥ अथ वै कहां जां ऊ कहां रहूं ॥
 कहां वै वै ॥ कहां सैन कहां ॥ जहां जां ऊ तहां आधिक अपार नर्क कांडः ख ॥ ७४ ॥ सग
 र नि की दीर्घ आयु के सौ तिरों गा ॥ ७५ ॥ यह विचार कर हैं जो ॥ वन के अंग रह कर ॥
 विषै निरंतर आता प हो यहै ॥ ता कूं दे मरण समान जानै है ॥ परंतु आयु वितीत नये
 विनु मरण नां ही ॥ ७६ ॥ वहुत कहि वै कहि कहा ॥ या जगत विषै ते ते दारुण डः ख
 है सो सद नरक में पाप कर्म के जटायक रिने ते कीये हैं ॥ ७७ ॥ एक अंग धि के पत्तक मा
 त्रुत हां सुष जां ही ॥ नारकी नि कूं निरंतर डः ख ही है ॥ ७८ ॥ नाना प्रकार के डब ते ई
 है प्रवण जहां ॥ अये मानर करूप समुद्र ता विषै दूनि रहै जे नारकी ॥ नि नि कूं सुष की
 प्राप्ति तो इरि दी रहै ॥ सुष का नाम अ वण रुडुर्त्त भ ॥ ७९ ॥ अर नर्क नि विषै दो धेन
 र्क त ग तो जल हा है ॥ अर पां च वै नर्क जप ते विसा नि में जल अर नी च ते विसा
 नि में सीत ॥ अर छे ते सीत है ॥ सात वै म हा सीत है ॥ नरक के सीत की अर जल की ज
 प मा दे वै कूं ओ र व सु तो ही ॥ ८० ॥ नर्क नि में प रहै नर्क विज्ञानी स ता ष ॥ ८१ ॥
 में पची स ता ष ॥ सी जै में पं ड्रा ता ष ॥ दो धे द स ता ष ॥ पां च वै ती न ता ष ॥ छुटै पां च दा
 टि एक ला ष ॥ सात वै पां च ए सात नर्क नि में चौ रा सी ला ष विज्ञा है ॥ तिन में स बा द
 या सी ला ष तो जल अर पो एं दो य ला ष सीत ॥ सो इति विसा नि में नारकी प वै है ग है

है॥ ए० नर्क विषे विज्ञा प्रकृति न है॥ नि नि में तो नारकी ऊ है॥ जैसे वा सण में न
 ल आ व है॥ अरसी त है॥ तिन में ग त है॥ सि ड है॥ ए० नर्क नि में आ यु प ह ले न किं स
 ग ए० क रू ने सा ग र ती त नी॥ ने सा ग र सा त चौ षे सा ग र द स॥ पांच वें सा ग र स त रा॥
 कृ वै सा ग र वाई स॥ सा त वें सा ग र ते ती स॥ ए० अर प ह ले न र्क न कृ स आ यु सो द
 ने न किं ज द म॥ या ही मो ति अ नु क्र मे स र्व त्र जा न नी॥ ए० अर प ह ले न किं अ रा
 र की उ चाई स नु ष सा त द्वा य ती न॥ अं गु ल छ ह॥ रू ने न किं ध नु ष सा टा वा स वि
 या॥ अं गु ल वा रा॥ ती ने न किं ध नु ष स वा द क ती स॥ चौ षे न किं ध नु ष अ टाई से सा त वें न किं ध नु ष पा
 पांच वें न किं ध नु ष ए० क सो प ती स॥ छ ह॥ न किं ध नु ष अ टाई से सा त वें न किं ध नु ष पा
 च सै॥ ए० अर नार की स क ल वि क लो ग है॥ अर स व ही नार की कुं ढ क सं स्ता
 न॥ अर न पुं स क वे द॥ अर दु र्ग धि अ रा र ड र्द र ए० दुः स र्ग दु र्ग धि० दुः स्वर॥ ए०
 स र्व ही रु ल पा प म र्द प र मा ए० नि क शि र वे है॥ स व ही नार की म हा सा म वि रू प॥
 का रे को य ला स मां न द्र व्य ले सा तो स व कै ह स हा है॥ ए० अर न व ले सा दो॥
 गु न र्क नि में तो का पो त ही है॥ अर ती ने न किं का पो त अर ती ल दो ऊ है॥ अर खे
 खे न किं नी ल ही है॥ अर पांच वें नी ल अर कृ स दो य ले त्र पा है॥ ए० अर कृ वै क
 स ले सा दू है॥ सा त वें म हा कृ स ले सा है॥ ए० ने सा क ड ती रं वी॥ अर को र

जीर आदि कटु द्रव्य के संयोग विधे आनि एक दुरस होय है तातें अथिक नारकी नि
 के देहि में कटु रस है ॥ १० ॥ अरस वा सांन मां जा रस र नंद दया दिसि डी सन कत्रा
 एकत्र करिये तिति की जो रुंधि ना होय तातें असंख्य गुणी है दुर्गंध ना जा मै
 १० ॥ अरसै साकरोत गोषर आदि कठोर द्रव्य निमै कर्मस ता होय ता संअसं
 गुणी कर्मस ता नि नि के शरीर मै है ॥ अर द नि के पाप के न दय तै एक चिकि
 या दोय सकै वरु संको विद्रुजी करै अर देव वा है सो ईक है तिति नारकी निकार
 रस हावी न स विरूप विकार रूप है ॥ अर जि नि के विनेगा अवधि पर्याप्त
 होतें ही जय नै है ता क रि पर जव के व रि ज जा नै है अर पूर्व वै रका समर ण होय है
 ॥ जो प्रवर्जन मपा प विषे पंक्ति न कते अर कुं व व न तोल ते डरा चारी कते ता का
 य ऊफ ल है ॥ ५ ॥ या जो ति पाप के न दय करि द्रु जै म कि स त म ति मंजी का जीव दुष
 भोग वै है या जो ति श्री धर देव कुं द्रा संकर के व नी क ही ॥ ६ ॥ अर क ही ने प्रा
 र्क के तीव्र दुष तै नै है ॥ ति नि कुं प ह नि न धर्म से व ना ॥ ७ ॥ य ह धर्म दुःख नि तै र
 क है है अर सुष कुं वि ला रै है ॥ अर कर्म के लय तै न तं न जो अल य पद सि
 पद ता हि दे है ॥ ८ ॥ या धर्म ही तै रं द न रं द अ सु रं द फ णे प्र वि चं द ष गे द
 होय है अर धर्म ही के प्रसाद तै गा ण धर पद सी धं कि र पद के व ल पद पा वै है ॥ ९ ॥

दधर्महीवंधूहै॥ मित्रहै॥ गुरहै॥ धर्मही जीवनि कंखामो लूके सुषदेन हा॥ गुरहै
 तातैं केवली कहै है॥ हे श्रीधर देव तधर्म विवेचि तधरि॥ १०॥ एधी तंकर प्रभु के दो
 सन सुनि श्रीधर देव धर्मो नुरागी नया॥ ११॥ अरु केवली की त्रा जा करि दुजे नर कि
 जहां सत प्रति मेत्री काजी वक्रता तहां गया॥ अरु बाहि प्रति बोधता नया॥ हे नद्र
 मोहि जं नै है॥ अव मे रजा मरु वल कृता॥ तव त मे र मंत्री सत मति कृता॥ १२॥ ते है
 भिष्या त अति प्रवल कृता ता का प हर फ ल है॥ १३॥ या जो नि नार की को संवो धि स
 प्रक दर्शन अंगी क म क रा या॥ भिष्या ल रूप क लुष ता के अना व तैं पर म शु
 द न या॥ १४॥ वक्र रि अयु पूर्ण क रि व ह्ना र की दुजे न क तैं नि क सि उ क रा र्द्धा
 प विषे प्रव वि दे ह॥ १५॥ मंग ला व ती दे सर न न संव य गुर॥ त हां म हा ध र ना मा च
 क्र व ति ता कै रां नी भुं द री॥ ता कै जय से न ना मा पुत्र न या॥ १६॥ सो विवा ह कर ता
 कृ ता॥ ता स मे श्री धर देव तैं संवो ध्या॥ हे जय से न त वे न र्क के दुष न र सि ग या॥ त व
 व ह विर क त हो य न म ध र स्वा मी कै स मी प सं य मी न या॥ १७॥ श्री धर देव व ना नु प
 गार की या॥ या हि न र क की दो र वे द ना न ता य य ती की या॥ सो विष य के वि क
 र तैं विर क त हो य म हा त प क रि॥ १८॥ स मा धि तैं प्रा ण त जि ब ह्नें दु न या॥ गो त म स्
 मी र ज अ लो क सं क है है॥ क हां वे न र्क के ती ब्र दुष॥ अर क हां प च म दे व लो क

कांद्रजसहोतैवयमनुत्तरोयमुक्तिहीप्राप्तहोयगा॥ कर्मनिकाविविधगतिहै
 १८॥ अथधर्मतैनीचगतिहै॥ अथधर्मतैनुच्चगतिहै॥ सातैउच्चपदकूंवाहैसोधर्म
 विधैतत्परहोऊ॥ २०॥ पांचवेदेवलोकोतैवहवहोइंद्र॥ इन्द्रदेवलोकोअथकरि
 धरदेवकीपूजाकरतासया॥ अथअपनाकोत्पाणमित्रगिन्यां॥ २१॥ अथा
 तरवरुआधरदेवइसेस्वर्गितैचयकरिजंवदीपपूर्वविदेहमहावह्वेस
 धै॥ २२॥ सुमीमानगरागामुदहिरानीशुंदरनेदातिनिकैमुविधिनामाशुत्र
 या॥ २३॥ सोवात्पावस्त्राहातैसर्वकलाकापाशगामी॥ जैसैवंद्रमाजगतकेने
 निकुंउछवकरै॥ तैसैसंवनिवेनेत्रनिकूंआनेदकारी॥ २४॥ सोवालकही
 धर्मकुंजांणताभया॥ प्रतिबुद्धहैबुद्धिजाकी॥ जेज्ञानवंतहै॥ तिनिकावित्तआ
 त्मकल्पाणहूँ॥ विधै॥ २५॥ वात्पावस्त्राहातैजाकोरूपअतिमनोहर
 अथयोगनअवस्त्राविधैअत्यंतशुंदरताजासतीनई॥ २६॥ मुकटकहिसो
 तउच्चमस्तगा॥ तैसाकुलावलनिकैमध्यमुमेरसोहै॥ तैसागजानकैमध्यसो
 ताभया॥ २७॥ अथकुंठननिकरिमंथितमुवसुंदरनोहै॥ अथरत्नोवनतिनिका
 रियुक्त॥ तैसैआकासवाद्मसर्जिताग॥ अथइंद्रधनुषतिनिसहितसोहै॥ तैसा
 मोहताभया॥ गावापीमुषत्राकासदोऊकुंठन॥ वादसर्ज॥ नेत्रतारा॥ नौ

ददं धनुषः२८॥ मुखमहासुगंधस्वामकुंधरे॥ अरसुंदरअधरसोहतेजरे॥ मां नंद
 हमुखमहोत्पलकमतदाहै॥ विमसिरहेहैअधररूपदत्तजाकेमहासुगंधः२
 ९॥ अरनासिकादोकरंधनिकरिमां नंदमुखरूपकमतकीसुगंधसेवेकुंसन
 मुखनईहैअतिसुंदरहैस्वरूपजाका३०॥ अरकंवअतिसुकंवमहामनोहर
 मां नंदमुखरूपकमतकानालहीहै॥ अरमोतिनिकाहारकंवसुंलगिरहाहै
 सोमनालसमांनसोहैहै३१॥ अरयाकाजरस्थलमहारतननिकीक्रांतिक
 रिमनोहर॥ मां नंदरतनदीपदीहै॥ लक्ष्मीकानिवासः३२॥ अरयाकेजुनसिध
 रअतिसमोहर॥ जैसिगजराजकेकुंनस्वलतैसोहै॥ गजराजकीवालरसाल
 अरयारुकीवालरसाल॥ अरगजराजमुखंसकहिएनसीपीविकुंधरेअरय
 हवनेवंसकुंधरे॥ गजराजनन्तनअरयहरुजन्तन३३॥ अरयाकीदोऊजु
 जदायीकीसुंरिसमानदीरय॥ दधीकारक्षाकेअर्थिमो नंदनकीआगर
 लहीवनीहै३४॥ अरभुंदरकरतलजतमलजलाकुंधरेननस्वलसममांन
 सोहतेजरे॥ ननस्वलविधैताराहै॥ निविधैनमहैअरनैस्वलविधैचांदस
 र्दहेंदविमैंचांदसूर्यकेस्वलासो जैहै३५॥ अरयाकीकटिमधलोकसभ
 मांनसोहतीनई॥ जैसैंमधलोकरुसहै॥ अरनीचेंउपरिविस्तारहै॥ तैसैं

कदिषीन है अरु उपरि नीचै गरा रका विस्तार है ३६ अरु नि तें व नि प रि क दि
 त सो हुता मया जै सैं द धनुष सहित मेघ निक रि सु मेर का नि तें व सो है ३७ अ
 जा के दो ऊज रुक न क के कमल की के सरिस मान पीत मों ज गत रूप ध
 णा जे ने कुं महा पं न ही है ३८ अरु जो अति सुंदर अति को मल अर
 ति छि ट अति मनोहर ति नि कुं क हा ज प मा दी ति ३९ अरु अरु वर न क म ल अ
 ति को मल नि ति कुं ल क्षी से वै मों न क म ल के कर प ल व के स प र स तैं अति
 अरु ता धर है ४० या जों ति प्रा र न या है न गत के मन का हर न रा सुंदर रूप
 जा कै सो जी व नि के म न रुं हर ता न या जा को रूप संपदा अलंकार सहि मों न र म
 क विकी का च्य हा है य ह सु वि धि उ मार द यी का पाल क का रु का क छु र
 नों ही ४१ परंतु रूप क रि लो क का मन हर ता न या ४२ अ द पि दौ व न का अ
 रं अरु जी व नि के म द न का ज न मा द न प जा वै है परंतु व ह धा र द्री विका व सि
 कर न रा य दौ व न अ व ल्गा वि धै का म को ध लो न मों ह म द ह र्ष को जी त ता म
 यौ व न अ व ल्गा वि धै का म दि क का अ धि क प्र चार न न या ता तें त र रा
 ही दृ स मा न है ४३ सो सु वि धि उ मा र मा ता पि ता के ह व सैं वि व र क र ता अ
 की मा अर व न का दी या यु ग रा ज प द ग हा ४४ अ न य द्योष व रु व ति मों

प्रांताकीपुत्रीमनोरमापरती ॥ ४४ ॥ सोमहृषतिवृतासीत्तवंती स्त्री ॥ तामहितमुधुधिरमतान
 या ॥ जोस्त्रीसुसीत्तदेव अपरपतिके आत्ताकरिनीहोय सोपतिके मनकृषसंनकरै
 ॥ ४५ ॥ तिनिका अतंतशीतिसूंकात्तवितीतहोय ॥ कैदकदिनमेंतिनिकैस्वयं
 प्रदेव श्रीमतीकाजीवसोद्गजेस्वर्गतेचयकरिके शवनामा पुत्रनया ॥ ४५ ॥ देखो
 संसारकाचरित्रजो वृत्तजंघकेनवमेंश्रीमतीस्त्रीकृती सोयाजवमैकेसवना ॥
 मापुत्रनया ॥ ४६ ॥ तापुत्रविषैपिताकी अशिकघीतिहोती नई ॥ पुत्रमात्रहीघीति
 होय सोयह नौ पूर्वप्रियाकजीव ॥ ४७ ॥ अरनाहरसरनो लवो नरकाजीव
 जेदेव लोकतैचयकरिराजकुमार ॥ औ रराजनकेपुत्रनये ॥ समानजुन्यतैसा
 द ॥ यक्रुदिके मोक्ता ॥ ४८ ॥ राजाविनीषणराणी प्रियदत्तातिनिकैनाहरका
 जीववित्रांगददेवकृता सोवरदत्तनामा पुत्रनया ॥ ४९ ॥ अरराजानेदिषेणि
 रंती अन्नंतमतीतिविकैसकरकाजीवमणि कुंडलीनामा देवकृता सोवर
 सेननामा पुत्रनया ॥ ५० ॥ अरराजारेतिषेणरंती वंछमतीतिनिकैमर्कट
 काजीवमनोरु रनामा देवकृता सोवित्रांगदत्तामा पुत्रनया ॥ ५१ ॥ अरराजा
 अन्नंनरांनी वित्रमातिनीतिनिकै न्योलकाजीवमनोरणनाम देवकृता
 सो प्रसातवदननामा पुत्रनया ॥ ५२ ॥ सर्वसमानरूप समंनसंयदाकैधा

रुक्वि रकात्तराजमोवतेभये॥५॥ एकदिनअत्रयद्योषवक्रवर्तिविमल
 वाहननामोतीर्थंकरकादर्शनकरितहं धर्मप्रवणकरिवैराग्यनया॥५॥
 पावहजारउअरअवाहहजारजामुनिनये॥ तिनैरायास्यौ॥ वरद
 ॥१॥ वरसेन॥२॥ विजोगद॥ असांतवदन॥४॥ मुनिभये॥५॥ तेसकलमुनिध
 वुरागअरसंसारतै॥ वैराग्यरूपनावनिकुंभारतेसंतेसुगमोत्तकाकारण
 नीवतपताहिकरतेभये॥५॥ अरराजामुविधिउत्रकेसेहनेमुनिनहेद
 सका॥ सोगपारमीप्रतिमाकेवतकाधारीपरमभावकनया॥५॥ गारहप्रति
 माकेनाम॥ दरसन॥ वतसामायक॥ प्रोषधोपवास॥ सचित्तत्याग॥ रात्रिभोज
 परित्हार॥ दिनव्रह्मचर्य॥५॥ अरसर्वथाव्रह्मचर्य॥ अपारंनत्यागपरिग्रह
 त्याग॥ अरलोकिक्ककार्यकेउपदेशकात्याग॥ अरमुनिवतउउअहार
 ५॥ एणारहेनेदआवागकेतिनिमैंगारमीप्रतिमाकेवतधारे॥६॥ अरहमी
 वतप्रतिमाकाधारकभावकताकेवारहव्रत॥ पांचअणुव्रत॥ तीनगुणव्र
 त॥ द्यारिसिष्ठाव्रत॥ तिनिकेनेद॥६॥ पदलाअणुव्रतअहिंसा॥ वेदीआदि
 त्रसजीवनिकीहिंसाकात्याग॥ दूजाअणुव्रतसमूलपदवादादकात्याग॥ ती
 जाअणुव्रतपरधनकात्याग॥ दौषाअणुव्रतपरस्त्रीसेवनकात्याग॥ अर

पाववाअणुवतपरिग्रहेकाअमाए॥६॥एपांवअणुवतसम्यक्कासुद्धि
 करिणुक्कमहाउत्तुष्टफलकेदेतद्वारेहै॥६३॥अरणुवतनीनपदत्तादि
 गवतजोदसंदिमाकाप्रमाण॥अरणुजादेरावतदेसप्रमाण॥अरतीजाअ
 नर्थदंडविरति॥नोअनर्थपापनिकात्तागएतीनगुणवत॥६४॥अरणो
 पमोगपरिमाणवतरुंकुणवतकहैहै॥अरण्यारिषिष्ठावत॥तिनिभेप
 दत्तासामादकसवनीवतिसंसमता॥दूजाप्रोषधोपवास॥अष्टमीवतुर्द
 माकेपोसासंयुक्तउपवास॥तीजाअतिथिसंविताग॥दोषानोपोपमोगपर
 रिमाणएवार॥इवत॥अरण्यंतकाससमाधिमरण॥६५॥एआवगकेवत
 स्मार्तरूपमंदिरकेसिवाएहै॥अरण्यगतिकेनिवारक॥६६॥सोराजामुविशि
 सप्रकदर्शनकरिपवित्र॥रातरिषिष्ठावगकेउत्कृष्टगारमीप्रतिमाकेवु
 तपालिमोक्षकामार्गजोनिनधर्मताहिआराधा॥६७॥अरण्यंतकालमुर
 तिअतआदरे॥रतनवदकाआराधनकरिसमाधितैप्राणतजिसोलभैख
 र्माअच्युतेउभया॥वार्दसमागरेकेआयुकाधारक॥६८॥अरणसुविधिक
 भुवकेसवसोनिनदिषाधरिअच्युतस्वर्गविषेप्रतेउभया॥६९॥अरणवेव
 रदत्तादिकव्यास्त्योसंवेगतिर्वदकाअंगीकारकरिमहातपधरिसोतवै

स्वर्गिणामानिकदेवनये॥७०॥ संवेगकहि एजिन धर्म कीरु किं अरनिर्वेद कहि
 एस सार शरीर भोग विषे विरक्तता ते छरुं जीव स्वर्ग विषे अणि मादि रि-
 द्दिके धारक चिरका लसुष संरम ते नये॥७१॥ निनका शरीर न योग जग रहिस
 विष अत्रादि वाधार हित अति मोहता नया॥७२॥ सुविधिका जीव अच्युतेंद्र
 अति निर्मल कल्प जल निके झुफ निका सिर परिसेहरा धरे तपका फल मोनं
 प्राद दिषा वै है॥७३॥ जाका सरीर सहज सुंदर आनूषण निक रि मोहता नया
 नंद्या रूप वे लिके प्रसप्त फल अंग अंग मै धरे है॥७४॥ सो अच्युतेंद्र सम
 वतुर सखानका धारक दिव्य लक्षण जे सें जाना प्रकार प्रसक्त निक रि कल
 झ सो है ते सा सोहता नया॥७५॥ जाका सि र सुंदर के स निक रि युक्त मुकल अ
 सेहरा धरे जे सा सुभरका सिष र न मानव दस हित नदी कुंधरे सो है ते सा सो है
 ॥ अरता का मुख प्रफुल्लित कमल समान नेत्र रूप भंवर निक रि सो जित
 मुलक निरूप जलक रि द्या स देव निकाम नंद है॥७७॥ अर महारवणी कवि
 स्त्री लव लस्य ल विषे सो अच्युतेंद्र निर्मल मोति निका हार धारता नया सो
 सा सो है॥ मां नूं सुभर कै तद सरद के बादरां निका समूह ही है॥७८॥ अरता के
 निन वेदे दीपमान वस्त्र करि वे हित मोनं तरंग करि युक्त अति नही है॥७९॥

अरताकी दोऊ जंघ देवांगतां निके मन की हर नहरी सुवर्ण की के निके था
 नसमान सो जाकुं धरती नई ॥ ७० ॥ अरता के दोऊ चरण क मल समान नव नि की
 किरण रूप निर्मल जन करि सो नित मछ आदि सुमल दण क रियुक्त ति नि
 विषे अदनु तल तमी निवास करती नई ॥ ७१ ॥ या नां ति अति श्रेष्ठ महा मनो ह
 र वै कि य क शरीर कुं धार ता वर अच्यु ते द स्वर्ग के अदनु त सुष भोग वता म
 या ॥ ७२ ॥ म अ लो क ते नं था ह्य हर ज सो ल वां स्वर्ग है त हा का य ह अ धि य ति से पु
 न्य ते क हा न हो य ॥ ७३ ॥ व हां ते ए क र ज प्र रें सि द्वि वे त्र है ता की म हि मा क हि वे
 भे न आ वे अ च्यु ते द कै ए क सो गु ण स ति वि मा ण ॥ ७४ ॥ ति नि मं ध्रे ए क सौ ते द
 स तौ प्र की र्ण क ए क दं ड क ओ र श्रे णी व द ॥ ७५ ॥ अ र ता के ते ती स तौ आ य
 स्त्रिं श त दे व ते पु त्र स मा न ति नि सूं अ ति से ह ॥ ७६ ॥ अ र द स ह जार सा मा य क
 दे व ते भो ग नि क रि आ प सा रि वे आ प में आ जा ऐ स्व र्ग अ धि क ॥ ७७ ॥ अ र चा ल
 स द जार अं ग र द ते ष वा स तु ल्य ॥ ७८ ॥ सो ए दं ड कै सो भा ही कै नि मं ते क
 हे ओ र व हां क छु प्र यो जन नां ही ॥ अ र स मा ती न त हां के र ह न हारे प रि ष
 त क हि ये जे सें द हां रा जा नि कै नि क डि व ती स भा के लो क ति न में मा हि ला
 स भा के ए क सौ प द्मी स अ र म अ की स भा के दो ष सै प द्मा स अ र वा रि ती स

ना के पांच सै ७९ अरु आरि लो क पा न सो अचु त सु र्ग की हृद त कर ला ।
 करण हारे तिन कै दे दी प्रत्ये क प्रत्ये क वती सव ती स पाई ९० अरु
 तें ड कै आच पट रानी सो या के मन रूप लो ह के आ क र्षण कर ने कुं मां नू
 व क पाषाण की फुल नी ही है ९१ अरु ओर त रे स वि या के व ह्वि ज ॥ अरु ९२
 क एक पट रं नी सं वं ध अ टाई सै अ टाई सै रं ती ॥ ९३ ॥ ते स र्व दी य ह ज रू
 ह ज रि न र्द ॥ ज हं म न ह का मो ग है ९४ ॥ प्रति नि के मु ष व क म ल का अ व लो
 न ॥ अरु पर स प र अ म धि क प्री ति ९५ ॥ एक एक दे वी एक ल ष चौ र्द स ह
 रूप वि क्रि या क रि व न वै ९६ ॥ अरु सा त प्र का र से ना ति नि भै ला यी वा
 स ह ज रू ॥ दो रे वा ली स ह ज रू ॥ र प ह सी ह ज रू ॥ प या दे क ल ष सा चि ह
 वै स ती न ल ष वी स ह ज रू ॥ गं ध र्व छे ल ष वा ली स ह ज रू ॥ न त्प का हि
 वा र ल ष अ सी ह ज रू ॥ ९७ ॥ अरु जे आ व प ट रानी क ही ति नि के प्र त्ये
 क दे वां ग ना नि की ती न ती न स मा ॥ मा हि ली स न की प ची स ॥ प्र थ की प वा
 स ॥ वा रि ली सौ ९८ ॥ या ही नं ति आ च नि कै जा नौ ॥ य ह स व अ चु तें ड की ॥
 वि भू ति क ही सो वि भू ति मो ग व ता आ दु व्य नी त क र ता न या ॥ इ ड प द के
 ष व र्त्त न सें न अ वा वै ९९ ॥ आ हा र म न सं वं धी वा र्द स ह ज रू ॥ व र स जा य त व

ए॥ अरुणारुमहानेगयं स्वासलेयावार्द्धसमागरका अगु। तीनहाथका सरीरमह
 मनोहरा ३०० धर्मके प्रभावकरि अच्युतेंद्रसंपदाकी परंपरायमोगवतानया ताते
 सुषके अर्थी है ते जिन बाधित धर्म विवै श्रवण करे ॥ अता सुतेंद्र कुंवे देवा गता अनं
 दके समूह कुं प्रास करती नर्द्ध मुंदर है नेष जे निके ॥ अर मुंदर अनाखण निकी ध
 रन दारी। महा गुण धरु पने की माला पहरे मुंदर है के सजिन के ॥ नीला सहित म
 धुरा गत करती मान सहित तां न ल्यावती सुर पतिका मन मोहती नर्द्ध अनेक मल
 वदनी सुंदर पाय निके विदार करि अर नौ है निके विकार करि नेत्र निके विलास करि
 अंग का मोडनां अर हास्य हावभाव विलास विप्रम करि अच्युतेंद्र कामन हर
 ती नर्द्ध अय दंड नि निके कपोल रूप काव विवै अपनां मुख देषता ति निके मु
 ख रूप का मल का नवरनया ॥ अति कै नेत्र काम के वाण समान नौ है रूप धनुष
 करि वलाये ति निक रिवा ॥ आगथा है रुदय ता कुं ति निके कर म परम करि मुख
 रूप करतार म तानया ॥ धृती निके मुख ते र्द्ध ने ये चंद्र ति निक रिप्रकासरूप जो
 देव लोक जाकी विलसति का प्रमाण ता ही ॥ ता विषे देव निक रिवे छित दिव्य मे
 ग जो गवतानया ॥ अर गजकारुप की एं देव ति निपरि वट्टा सिद्ध है त्र निकी जूर
 जात धनि न पूजा विसार ता विसी एं त्रों निक रि दे दीप्य मान महालक्ष्मी वा न अ

तुल्याविभूतिकोधारकश्च्युतेन्द्रविरकात्तन्द्रपदकेनो गनो गवता जगाम्नो हरहै
सर्वभ्रं गजाका ॥ २० ॥ इति श्री भगवत्पूजितसेनाचार्यप्रणीत विषष्टुल्लसत्प्रभहापुरा
णसंग्रहविधेयश्च्युतेन्द्रकाण्डवर्धविर्वाता नाम दसमा पर्वः ॥ १५० ॥

यानंतरणारमीभ्याय विधेयगवानकं नमस्कारकरैहै सो जिनसरजिजयजी
वरूपकमलनिका प्रफुलित करणहारानुमकूप विवकरो कै साहै जिनसर्ज्पसो
का प्रासिके जगत्सम्पददर्शन ज्ञान चारित्र तेईहै किरणजके ॥ २ ॥ अथ
नंतरश्च्युतेन्द्रकाश्चायुज्यलपरसावहां तेवयकरिमनुज देहि पायवे कूसन
मुखनया चारीरक छुयक को तिरहित नया अरमादारजा तिकी माला सोऊ
छुमल निनई ॥ ३ ॥ स्वर्ग तेवयवे के विनर जे से ओर देव के होय है ते से इंद्र कै न
होय ॥ कछुयक ले समान नये ॥ ४ ॥ तव इंद्र आपका स्वर्ग तेप न निश्चय जा न
तथापि वेद विन्त नया वरे पुरष निका ओ साही धेर्ज होय ॥ ५ ॥ छूमहा ने पर्यंति
नगावानका पूजा ही करवो कीया कत्पाण कै अर्था ही पंक्ति जतक है ॥ ५ ॥ अं
त समै अथ पनां मन जगवां न के चरण निमै लगाय करिका यतनी ॥ ६ ॥ देष क्रमव
व निमै इंद्र वडेति निरुसै अश्च्युतेन्द्र से सुषम र्दम हारि दिवां नमदा धेर्ज वां न
ति निरुका पतन होय धिकार या संसार के चरित्र कूं ॥ ७ ॥ सो अश्च्युतेन्द्र वयकरि

त्रिनेत्रमर्के प्रसादकरि जंबूदीपपूरवविदेहशुक्लवतीदेस ॥ ८ ॥ मरीकणीपुरीज
 हाराजवरुमेनतीर्थकरतिनिकैरांतीश्रीकोताताकैवर्जनानिनामाश्रनया
 श्ररतिनिहाकैवेष्वास्योनाहरसूरन्योत्तवांदकेजीबपुत्रनयेवर्जना
 निकेलघुजातातिनिकेनामविजयवैजयंतजयंतश्रपराजित ॥ १० ॥ अ
 रवेमतिवारमंजीश्रानंदश्रीहितधनमिश्रराजश्रीहीश्रकंपनसेनापतिश्र
 धोगीवविधैश्रदमिंदनऐकतेसोचयकरिवरुनानिहीकेनार्दनेये ॥ ११ ॥ मा
 तिवरमंजीकाजीवमुवाकश्रानंदश्रीहितकाजीवमहावाकश्रपलसेना
 पतिकाजीव ॥ १२ ॥ पीवधनमित्रसेठकाजीवमहापीवपूर्वसंस्कारकहिजीव
 निकएकत्रमिलापहोयहै ॥ १३ ॥ श्ररताहीनगरीविधैकुवेरदनेसेठश्रनं
 तमनीसेठानीताकैश्रीमतीकाजीवमुविधिकासेसकनामापुत्रहोयसोल
 हैस्वर्गप्रतिंदनयाकृतासोचयकरिधनदेवतामाश्रनया ॥ १४ ॥ एदसंजीव
 एकत्रनयेवर्जनानिर्णयोदननयातवर्जरी ॥ १५ ॥ गतेसूर्यमानता
 येसुवर्णसाद्रस्यसोदतानया ॥ १६ ॥ महास्यामलंदपमानवक्रस्त्रिधस्त्र
 द्दमभंगुगंधकेसतिनिकरियाकासिरसोदतानया ॥ १७ ॥ गिरिकासिपर

कारीषटाक रिमंति है ॥ १६ ॥ अरव ऊ ना नि सरोवर त्मसा न सो भूवरूपक म
 रि सो दत्ता त्रया ॥ के सा है मुरवक मल ऊं रु त्र भू प सूर्य का कि रणि के स पर सक
 रि प्र फु लित है अति सो जाय मान है ॥ १७ ॥ अरता की जों हरूप वे लित ला
 य गिर के तट विषे सो दत्ता नर्द नेत्र नि का क्रांति सो र्द न र्द पु स्फ नि का मं न र
 की सुगंध ता ले वे कूं मा नं स्पा म की जे व र रूप दी न र्द है ॥ १८ ॥ अर का मि नी नि
 के नेत्र सो र्द न र्द जे व र नि का पंक ति ना कूं अ प ने मुरवक मल का जे र वे वै है
 मुखक मल म हा सुगंध मु ल क नि रूप है के स रि जा विषे जगत के नेत्र रूप जग
 क्रांति रूप म करं द के पी वे कूं आ य अ या य प र है सो त सि नां हा हो य है ॥ १९ ॥ अ
 का मुरवक मल सदा प्र फु लित ही र है ॥ २० ॥ अर नेत्र नि के मध्य ना सि का
 सो ना कूं ध र है ॥ मां नं दौ जे नेत्र नि के मध्य ना म क र्म रूप विधा ता नै सी व है
 ही र वा है ॥ जो म ति क दा वि नेत्र च प ल है ॥ सो पर स पर पे त्र ज लं य न क र है ॥ २१ ॥
 अर कं व मो ति नि के हार क रि सो ना कूं ध र ता म दा मां नं द र मो ति नि का
 हा र म नाल के व द्यै ले स मा न ल त्म का के त्री डा क रि वे का स र वा री है ॥ २२ ॥
 अर व त्त स ल प द्वा रा ग म णि का कि र णा नि क रि मं ति सो ना कूं ध र ता न

या ॥ जैसा सुमेरुका तट ऊग ते सर्य की किरण निकरि सो है ॥ २१ ॥ अरव सुलके
 समीप दो ननु जमि घर सो ना कुं धार ते नरा ॥ मं नूं लक्ष्मी की क्रीडा कै अछि ए
 उतंग क्रीडा गिर ही है ॥ २३ ॥ वल्ल सुल रूप मंदिर कै निकट दो ऊ नुजा मं नूं से
 एण के पं न ही है ॥ २४ ॥ अरव जन्म ई है गरीर का वं धन जाका सरीर कै मथना ॥
 निसोदती न ई अति गंभीर ॥ दक्षणा वर्तमानं च कवर्ति पद का विरही है ॥
 २५ ॥ अरक हिस्सि सरोवर समान परम सो ना कुं धार ना नया ॥ ना कै सुंदर
 वल्ल रूप पुलि नरति रूप हे सनी करि से वित ॥ २६ ॥ अर दो ऊ निते व अति
 सो ना कुं धार ते नये ॥ मं नूं विवर ता जो काम रूप गं धर सीता कै रोकि वे की ॥
 दोऊ अगा ल ही है ॥ २७ ॥ अर नंद योगा ॥ अर ट कं एण सो ना कुं धरे ॥ मं नूं
 एवी कुं न पदे स दे है ॥ जो सवरा जा प्रजा इनि चरण की सेवा करै ॥ २८ ॥ या
 संसव संधि करै ॥ यद कारु सं संधि न करै ॥ अर या के चरण कमल समान प
 दराग मणि नि की कों ति कुं धरे ॥ अगरी रूप पत्र निकरि सो नित नि नि कुं
 लक्ष्मी विरका ल से वै ॥ नख नि की ज्योति सो द ही है के मरि जिनि में ॥ २९ ॥ या म
 ति अंग अंग की सो ना अति सुंदर ना कुं धर ती न ई ॥ अे सा महा रूप वा न जो देव
 ग ना निके नेत्र निरुं कुं अ नुरा गरूप कर ता नया ॥ ३० ॥ ना के रूप कुं दे धि सव

दीमोहितसोहि० नवयोवनसवहीकोद्योवनविषैमदनज्वरकाप्रकोपहोयहै॥ पर
 याकैमदनज्वरकाप्रकोपननया॥ ३१॥ नत्नीजांतिअग्यासकीयाहैश्रुतिज्ञान
 काजादो॥ पटतामया॥ धर्मअर्थकामकीमाधनहरीराजविद्यान्यायरूप॥ स
 द्भीकेजगर्जनकीविधिविषैप्रवीन॥ विसीएहैजदयजाका॥ जासमानराजमं
 मेंओरनिष्ठनतांही॥ औसवहुनाभिकुमार॥ ३२॥ ताविषैतत्त्वीअरसरस्वतीएहो
 अतिवहजनाकुंवरतीमर्दअरवंद्रमांसमाननिर्मलजोकीर्तिसोदसंदिमा
 वैविसरीमांरंकीर्तिदनिदोक्रनिकीर्दवैकरिदिसांनंरविषैगमनकरतीमर्द॥
 तातोमुषमैंवसी॥ अरजत्तवीवरुस्यत्तमैंवसी॥ कीर्तनैंवौरनपार्द॥ नवदसंदि
 सिविषैविसरी॥ ३३॥ जावार्थ॥ देडेपुखनिक्क॥ अपवीकीर्तिवियनोही॥ नावैदेस
 विषैविसरी॥ सोलोगसुनिषुसीजये॥ ३४॥ ताकेगुणनकीसंख्यानाही॥ आका
 विषैतारेहै॥ तिनिरुंतेगुणअधिकहै॥ ३५॥ रूपमनोहरअरअैसीहीविद्या॥ औस
 दीजोवनसोअपनेगुणनिकरिलोकनिक्कंमोहितकरताम्या॥ गुणनिकरिजो
 वसीननहोइ॥ सवहीवसिहोयअदयाकेगुणवरण॥ नकरिसवहीकुमारनि
 णनिकावर्णनजानना॥ जैसैंवेदमांकासाप्रकासतौओरअहनबिजादिभै
 तांदी॥ परंतुतेजअपमाफिकद कासमानहै॥ ३६॥ वरुनानिक्कंराजयोगजानि

वक्रसेनिपिनातीर्थं किरसमसत्रापकी राजनस्मीयाकंदर्द्र ३४ अपनैतिकट
याका राज्यानिषेककराया ॥ अरसकलमुकटवंधराजा अरप्रधानपुत्रपतिनिप
द्वंद्वकीया ३५ अरसिंहासनाविषेधराया ॥ गंगाकेतरंगसमानपुत्रवम
रसुंदरस्वीटारतीजर्द्र ३६ मेरेमतमैं ॥ असीजासैहै ॥ मांनं ॥ ववरटहैहै ॥ सोलोकापवा
दरूपीरजकेनिवाविदकूंउद्यमीभएहै ॥ ३७ अरमांनंपदद्वंद्वकेमिसकरिराजल
त्मीकूंवांभीहै ॥ आपवकैवसिकराहै ॥ सोलस्मीयाकेवल्लण्यलविषेअतिदृढस्नेह
करितीजर्द्र ३८ पिनावक्रसेनअपनांमुकटसवराजनि कैसमीपयाकेसिरपरि
धस्यासोमांनंअपनांदोऊनतारियाकैमापैधस्या ३९ अरयाकवदल्ललनमे
तिनिकैलारकरिसो नितकीया ॥ अरदोऊनजवाजद्वंधनिकरिसो नितकीये ॥ अ
रकटिमेपत्ताकरिकटिसो नितकरी ॥ ४० अराजावजसेनिमहाप्रवीणवज्जनाभिपु
त्रकेतांर्द्राजपदसौंया ॥ अरसवसामं ननिकैसमीपयाकूंभीर्यवैभय आजाक
री ॥ तमहाराजपदकाअयेस्वरचक्रवर्तिहोऊ ४१ जवसुत्रकूंराजदीयाताहीस
मैतौकांति कदेवआयवज्जसेनिकीस्तुतिकरतेनये ॥ वक्रसेनितीर्थं किरवैराप
विषेबुद्धिकरी ४२ वेतौकांतिकदेवसवदेवनिमेंउजमविषिपूर्वकपूजाकरि
आपनैस्थानकिगये ॥ अरर्द्रादिकदेवतपकल्याणकासमयसाधिवैकूंआए

सोभास्वाननिदिक्ताकंधरिमुक्त्तिस्त्वस्मीकूंलर्बितकरी॥४॥ आसवनविषैह॥

१३३

रराजाभावातसहित्वाश्चित्रधरतेमए॥४॥ वक्रुनामितौराज्यकुंनिहकं
ककरिपालतामया॥ अरसावांनयोगीस्वरनिकेइइअतीचाररहिततपधा
तेमए॥४॥ वक्रुनामितौराजलस्मीकेसंयोगनैप्रसंन्तमए॥४॥ वक्रुनामिकेअ
वज्रसेनयाकेगुरुसोतपोलस्मीकेसंयोगनैप्रसंन्तमए॥४॥ वक्रुनामिकेअ
साकाराखेटेमाईतिनिकरिवाकैअनंदवदु॥ अरकल्याणकेकारणानु
मत्तमादिदसल्लणतिनिकरिवक्रुसेनयोगेइकैअनंदवदु॥ तातया॥
वक्रुनामिराजातौप्रधानपुरषनिकेयोगकरिराजानिकेसमूहकूंअजाका
रीकरे॥ अरमुनिंदतपकेयोगकरिगुणनिकेसमूहअदरे॥४॥ पुत्रतौराज्यप
दविषैतिष्टु॥ अरपितामुनिपदविषैतिष्टु॥ परमार्थविषैधरीहैप्रतिज्ञाति
ति॥ पुत्रतौप्रजाकूंपालतामया॥ पितामृदकायकेजीवनिकारिष्ठाकरताम
या॥४॥ वक्रुनामिकेअयुधसालाविषैहैदिष्मसानवकरतनप्रगटहोताम
या॥ अरवक्रुसेनयोगीश्वरकैमजरूपमंदिरमै॥ आनरूपवक्रुजद्योतमानमया
५४॥ पुत्रतौवक्रुकेप्रजावतैसमस्तषट्पंडप्रव्यवीकूंजाती॥ अरपितामरामुनि
आनकेप्रजावक्रुरिकर्मनिर्कृतीतितीनलोकाकूंजसंघै॥ औसीमहिमापाव

मुनिहोय मनववनकायकरिजीवहिंसाअसत्पवववनपरधनहरणस्त्रीसे
 नभसकलपरिग्रहतिनिकात्यागकरिसाजया ॥ ६५ ॥ यावत्तजीवपंचमस्तज्ञतआ
 दरेसोमस्तमागपंचमस्तज्ञतकाआचरणहारपंचमस्तज्ञतकीपवीसजावजाआ
 रताभ्याआप्रपंचममेतितीनगुपतिएवववनमाताकहिणतिनिर्कुंभारता
 नया ॥ ६५ ॥ कोडकदिनजस्तुष्टतपकेभारकनिहपापमस्तमुनिनिमित्तसहितवि
 हारकीया ॥ वक्रिवहसम्पादहीमस्तधीरगुरकीआज्ञालेएकाविहारी ॥ ६६ ॥
 जिनकल्याहोयपरवरवतकेगजकीनाईष्टष्टीविषेसनेसनेविहारकरताभ
 फलसहितवनतिनिमेंनिवासकरतासुखविद्रूपकाध्यानधरतापरमसमा
 धिविषेआसूद ॥ ६७ ॥ तीर्थंकरपदकूंकारणबोडसजावनासोभावतामया ॥ ६८ ॥
 ॥ दिमदआठ ॥ संकादिमलआठ ॥ अनायातनछह ॥ मूढतातीन ॥ एवीस
 दोषतिनिसूरहितसम्पत्तकीसुखतासोदरसनविष्णुदि ॥ अरसम्पादरसनस
 मगज्ञानसम्पाचाविजतयातिनिर्केभारकतिनिकाविनयसोविनयसंपक
 ता ॥ अरसीत्नजनविषेअतन्वारनज्ञगावतां ॥ सोनिरतीचारसीत्नज्ञत ॥ अ
 रनिरंतरज्ञानकाउपयोगसेअसीषणज्ञानोपयोग ॥ ६ ॥ अरजिनधर्मसं
 अनुरागसोसंवेग ॥ ६९ ॥ अरसक्तिप्रमाणत्याग ॥ सोसक्तिस्त्याग ॥ ७० ॥ अर

तपे ध्यान सुषिर न त्रयै ता को कर्म वं धक द जा वै ता सौ शिव ति प श्री ति व त वै जो स प्र फ र त न य
 ध्या वै ता को च डुं ग ति के ड र ना ही सो न परै जो सा ग मों ही ज न ज ए म न दो ष मि टा वै जो स प्र फ र
 त न य ध्या वै सो र द त ज त ए कों सा धौ सो सो ल ह का र न त्र य धौ सो पा मा त म प र न य ज वै सो स
 प्र क र त न य ध्या वै ३ सो र सं क च क प र ते रौ ती न लोक के सु ख चित से रौ सो ए गा ढि क ज न व ह
 वै जो स प्र फ र त न य ध्या वै ४ सो ही लो का लोक नि ह्यो पर मा नं द त ज वि स्ता रै आप ति रै त्रो र ज वि
 र य वै जो स प्र फ र त न य ध्या वै ५ सो हा प न स रू प प्र का स नि ज व च न क हो न ही जा प ती न जे द न
 हा र स न द्या न त को सु ख रा प ॥ ६ ॥ नै र्द्वी अष्टां ग स म्पा द रौ न त्र य वि धा चार स म्पा द्वा न त्र यो द न
 प्र का र स प्र फ र त र त न य प र म ध मे त्र न र्ध क ल प्राप्ता य त्वां त्र र्धे न र्चे या मि ॥ नै र्द्वी ॥ ७ ॥ नै र्द्वी
 ३ प्र ज्ञा ता मा ध्या न त र य द्वा द्वी कृत सं पूर्ण ॥ अ ध अष्टा नि न प र्जा द्या न त र य द्वा द्वी कृत ज्ञा त ॥ ली र य ते ॥ अ
 ढि ल ॥ सर्व प र्वे मे व डा त्र वा र्द म वे हो नं दी श्व र सु र जा य ले य व रु द्र क्ये हो र मे श कि सो ना हिं प्र हं क र
 स्था प नां ॥ मू र्त्तौ जि न गृ ह प्र ति म हो ॥ ह त आ प ना ॥ नै र्द्वी नं दी श्व र दी पे द्वा पं चा स डि ना ल य ति ष ते जि न
 न त्र न व त ए व त र सं वो ष ट अ क्ता न न ॥ नै र्द्वी नं दी श्व र दी पे द्वा पं चा स डि ना ल य ति ष ते जि न
 ति ष ति ष तः ३ स्था प नां ॥ नै र्द्वी नं दी श्व र दी पे द्वा पं चा स डि ना ल य ति ष ते जि न त्र न व त र म म स न्नि हि ते न

[illegible]

नरत्तसीर्के आरसेपटवेपना॥ नृद्धी॥ अष्टांगसमाद्रानअनद्यैफलप्राप्तायत्तांअर्धेनार्चयामि॥ अ
 र्धं॥ इतिस्मृद्धानपूजासंपूर्णं॥ २॥ अथसमस्तचित्तद्रव्यतिलयतो॥ देवा॥ विषयेणत्रौषधमहा॥ नव
 कषायजलधारक्षीर्धकल्जाकौंधरौ॥ समस्तुचिरितसार॥ परिपुष्पांजलितयेत॥ ज्वरक॥ सोरठा॥
 नीरसुगंधश्चपाण्त्रिषाहरेमलस्यकरो॥ समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेविधिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदशप्र
 कारसमस्तुचिरित्रिजन्मजगत्पुणेगविनाशनायत्वांजलेनार्चयामि॥ जलांशजलकेसरधनसार॥
 तापहरेसीतलकरो॥ समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेविधिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदशप्रकारसमस्तुचिरित्रि
 संसारतापणेगविनाशनायत्वांजलेनार्चयामि॥ चंदना॥ रत्न॥ अततअनपनिहारात्तालनासैसुखकरो
 समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेविधिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदशप्रकारसमस्तुचिरित्रिअक्षयपद्माक्षयत्वां
 ज्यस्तनेनार्चयामि॥ अक्षतं॥ श्लेषरूपसुवासनुदा॥ खेदहरेमनसुखकरो॥ समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेवि
 धिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदशप्रकारसमस्तुचिरित्रिजगमवाणविक्षुब्धसनाय॥ त्वापुष्पनार्चयामि॥ पुष्पां
 नेवज्जविधिप्रकारस्तुधाहरेषिरताकरो॥ समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेविधिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदश
 प्रकारसमस्तुचिरित्रिस्तुधावेदनीरोगविनाशनायत्वांजलेवेदेनार्चयामि॥ नैवेद्या॥ स्थापजोतितमहा
 धाटपटपरक्वसेमहा॥ समस्तुचिरित्रिधा॥ तैरेविधिपूजोसत्ता॥ नृद्धी॥ त्रयोदशप्रकारसमस्तुचिरित्रि

द्याविदहरेमनसुचिकौ॥सम्पद्ज्ञानविचारभावनेदपूजंस्तदा॥ॐ ह्रीं अष्टांगसम्पद्ज्ञानकम
 णविध्वंसनायत्वांपुष्टेनर्चयामि॥पुष्टं॥धनेवजिविधपरकाण॥तुधाहरेधिरताकौ॥सम्पद्ज्ञा
 नविचारभावनेदपूजंस्तदा॥ॐ ह्रीं अष्टांगसम्पद्ज्ञानतुधावेदनीयेगंविनाशनायत्वांनैवेद्येनर्चया
 नैवेद्यं॥पुष्टीपजोतिरमहायधत्पराकसेमहा॥सम्पद्ज्ञानविचारभावनेदपूजंस्तदा॥ॐ ह्रीं अष्ट
 ासम्पद्ज्ञानमोहाधकारविनाशनायत्वांदीपेनर्चयामि॥दीपं॥दिधृषद्भानसुखकारिणविधनजड
 ॥सम्पद्ज्ञानविचारभावनेदपूजंस्तदा॥ॐ ह्रीं अष्टांगसम्पद्ज्ञानअष्टकमेदहनायत्वांधूमेनर्चया
 मे॥धूमे॥७॥श्रीफलआदिविधायनिश्चेसुसिफलकौ॥सम्पद्ज्ञानविचारभावनेदपूजंस्तदा॥
 ॐ ह्रीं अष्टांगसम्पद्ज्ञानमोक्षफलप्रापत्वांप्रकलेनर्चयामि॥फलं॥८॥जलांधातुतवाहदीप
 फलफलचर॥सम्पद्ज्ञानविचारभावनेदपूजंस्तदा॥ॐ ह्रीं अष्टांगसम्पद्ज्ञानअर्धेफलप्राप
 त्वांअर्धेनर्चयामि॥अर्धं॥९॥दोहा॥अपअपजानैनियतंशपदनमोहारसेसेंविज्रमोहविनाश
 अंगानकणजयमाला॥तकरीछेद॥सम्पद्ज्ञानरत्नमननाया॥आमतीजानैनवताया॥अ
 ऋषेपरिचिनौ॥अक्षरअर्धेउभैसांजानौ॥जानौसुखत्वापदोजिनागमनामगुरुछिपाद्रयेतपरीत
 द्विचक्रुमानदेके॥चिन्तेगुनमितलाद्रये॥९॥भावनेदककर्मचैदक॥ज्ञानदयेनदेरना॥स्रज्ञानहो॥

सदा॥ नैर्द्धी अष्टांगसम्पदज्ञेन मोक्षफलप्राप्तायत्वां फलेनार्चेयामि॥ फलं॥ ८॥ जलां धातुतवा
हीपधूपफलप्राप्तायत्वां अर्धेनार्चेयामि॥ अर्धं॥ ९॥ देहाप्रापत्रापि निश्चेत्तरै॥ तत्तमीति यो ह्यप्यहिन
दोषपञ्चीसहे॥ सहित अष्टांगस्य॥ १०॥ करीवन्द॥ सम्पदज्ञेन रत्नाहीजे॥ जिनवचनमसंदेहमकी
दृहजोविज्ञोचहिदुःखदानी॥ परजो नो गच्छेत्प्रतिपानी॥ प्राणीमिलाननकरि॥ अश्रुजलविधमगुरुमनु
परिदये॥ परदोषटकिये॥ धर्मिणिगतेकुसुधिरकिरिरिदये॥ बहोसंधकोवा छद्मकीजे॥ धर्मकी प्रजामना
गुनश्चावसोगुनश्चावलदिये॥ दृष्टां फेरनश्चावना॥ नैर्द्धी॥ अष्टांगसम्पदज्ञेन जगत्फलप्राप्तायत्वां
र्धेनार्चेयामि॥ अर्धं॥ इति सम्पदज्ञेन पूजासंधर्षो॥ अथ सम्पद्ज्ञानपूजास्तोत्रो॥ देहा॥ पंचनेदजाके
ध्यात॥ गेयप्रकासनज्ञानमोहतपत्तरत्वं द्रमा॥ सोऽसम्पद्ज्ञाना॥ पीरुपुष्पाजालिंदियेता॥ सोरवा॥ नी
रसुगंधश्चपा॥ त्रिधाहरैमलच्छेकरै॥ सम्पद्ज्ञानविचारश्चावनेदपूजोसत्॥ नैर्द्धी॥ अष्टांगसम्पद्ज्ञा
नजनञ्जणप्रसुरेणाविनाशनायत्वां जलेनार्चेयामि॥ जलं॥ ११॥ जलकेसरधनसार॥ तापहरैशीतल
करै॥ सम्पद्ज्ञानविचारश्चावनेदपूजं सदा॥ नैर्द्धी अष्टांगसम्पद्ज्ञानसंसारतापरेणाविनाशनायत्वां
चंदनेनार्चेयामि॥ चंदनं॥ १२॥ अक्षत अक्षरपनिहार॥ तालदनासैसुखकरै॥ सम्पद्ज्ञानविचारश्चावनेद
पूजं सदा॥ नैर्द्धी अष्टांगसम्पद्ज्ञानश्चक्षयपदप्राप्तायत्वां अक्षतेनार्चेयामि॥ अक्षतं॥ १३॥ मद्रूपसुवास

सोऽत्र॥ सम्पदश्चेन्न ज्ञानं तसि वमगती नो भर्द पारजता न जान॥ ध्या नत पूजो हतसहित॥ १॥ इति स मुच
 य पूजा॥ संपूर्ण॥ अथ च्छेन पूजा ति स्थिति॥ सोऽत्र॥ सिद्ध अष्टगु न मे प्रथम॥ मुक्तमहत्सो यान् जा विन ज्ञान
 चरित्र अफल॥ सम्पदश्चेन्न धाना॥ परिमुष्मां जातिं क्षपेत्॥ सोऽत्र॥ नीरसुगंध अया रत्रिषा हरैः पक्ष
 करौ॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्टांग सम्पदश्चेन्न जन्म जरामृत्यु रेणा विना नाना
 यत्वां जले नार्चयामि॥ जलं॥ १॥ जल के स एध न सार॥ नापहरैसी तत्सकौ॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग
 पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्टांग सम्पदश्चेन्न संसार ताप रेणा विना नाना यत्वं चंदने नार्चयामि॥ चंदनं॥ २॥ अ
 द्यत अत्यनिहारा द्यत दना शैसुर करौ॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्टांग सम्पद
 श्चेन्न अत्यपद प्राप्ता यत्वं अक्षते नार्चयामि॥ अक्षतं॥ ३॥ अपद्रुपसुवास जलार॥ देवदहैः मनसुचि करौ॥ सम्प
 दश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्टांग सम्पदश्चेन्न कामवाण विध्वंश नाना यत्त्वं पुष्पे नार्चयामि॥
 पुष्पं॥ ४॥ नेत्रजिवि विधकार॥ तुधा हरैर्ये रता करौ॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्ट
 णा सम्पदश्चेन्न तु धावेत्तरी रेणा विना नाना यत्त्वं नैवेद्ये नार्चयामि॥ नैवेद्यं॥ ५॥ दीप ज्योति तम हार एत पट प
 का सेम हा॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं सदा॥ नैर्द्वी॥ अष्टांग सम्पदश्चेन्न मोहांधकार विना नाना
 यत्त्वां दीपे नार्चयामि॥ दीपं॥ ६॥ धूप दान सुख कारुण्येणा विधन जडता हरौ॥ सम्पदश्चेन्न सार॥ आठ अंग पूजं

मेव त्वय परद्राप्ताय त्वांश्च त्वतेन नर्चयामि ॥ अक्षति त्रिमहि कै फूलत्रयाय ॥ अक्षिति गुंजै ज्योति कपै
 जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 रमधमेकमवाणविध्वंसनाय त्वां पुष्पे नर्चयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 धत्ता ॥ जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 त्रयपरमधमे त्रुधावेदनी एण विनाशनाय त्वां ते वेदेन नर्चयामि ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 त्रिप्रकासे ज्ञातमै ॥ जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 कचारित्र तत्रयपरमधमे मोहांधकण ए विनाशनाय त्वां दीपेन नर्चयामि ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 विचारत्वे तत्रयपरमधमे ॥ जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 परज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रयपरमधमे अशुक्रमे दहनपत्वां धूपेन नर्चयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 नाशधिकार ॥ त्रौणक्षुवरे जाय फला ॥ जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रयपरमधमे गोक्ष फलप्राप्ताय ॥ त्वां फलेन नर्चयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 चद्रव निरधार उत्तमसौ उत्तम लीमो ॥ जन्मरेण निरवारसम्पत्करत्तत्रय नजो ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय
 दहो नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रयपरमधमे अर्धे फलप्राप्ताय त्वां तर्धेन नर्चयामि ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं सम्पत्करत्तत्रय नसम्पत्ज्ञानसम्पत्कृचारित्र तत्रय

राजकमवापितोय ध्यानास्त्रितस्त्रैवफणावितानेभ्यस्त्रोपसर्गविनिवर्तयत्तं नममिषाभ्यप्रहतादे
 रश्चनवायेवेजंतुसप्रहमेनमकर्ममासाहिधर्मयोतातामज्जंतमुदीत्ययोयतसायिभीवर्द्ध
 प्रष्टममिजावातरधर्मोभर्मदशधाकरोतिपुरुषः स्त्रीवाकृतोपस्फुत्तं सर्वशब्दनिसेजचंनिकर
 एवापापशुद्धानिशंजवानांजमालयाविमलयापुष्पांजलिद्वयमेनितं सश्रियमातनो
 लंसर्गस्थितेभ्रष्टं तृष्टं दधज्जादिसहावीएयतचतुर्विंशतिजिते द्रव्यजनदीकलप्राप्तायत्वं
 त्र्यर्धेनार्चयामि॥ त्र्यर्धो॥ इतीस्वर्गस्तोत्रसंपूर्णं॥ त्र्यधरत्नत्रयधृजानां॥ द्यानतरादजीकृतलिरव
 तो॥ त्र्यहिलच्छेन्नक्रुंतिफनविषहरजमनदुस्वपानकजलभाणसिवसुखसुखसरोवरीसम्पक
 नयेनिहाएरजष्टकनालसोरादीएरधिजनहारज्जलश्रुतिसोहनं जन्मएगानिरावा
 समक्रतत्रयजजो॥ त्रिंक्षीसम्पकदर्शनसम्पकज्ञानसम्पकचरित्ररत्नत्रयपरमधर्मजनज
 रासुतुएगविनाशनायत्वंजलेनार्चयामि॥ जलं॥ शर्वेदनकेसरधारपलमलसुरांगे जन्म
 एगानिरावासम्पकरत्नत्रयजजो॥ त्रिंक्षीसम्पगदर्शनसम्पगज्ञानसम्पकचरित्ररत्नत्रयपरमध
 र्मसंसाएताधरोगविनाशनायत्वंचर्तनेनार्चयामि॥ चंदनं॥ रातंडुलश्रमलवितागवासमतीसुखदस
 के जन्मएगानिरावासम्पकरत्नत्रयजजो॥ त्रिंक्षीसम्पगदर्शनसम्पगज्ञानसम्पकचरित्ररत्नत्रयपरम

गानायेचितं किमात्वं ॥ इत्थं यथोत्तरं कंच येन प्रसक्तं न मासाद्य च तत्र श्रेष्ठानां वा सुमुज्यं प्रणमामि
 वेणात् ॥ २२ ॥ ज्ञानी विवेकी परमस्वरूपी ॥ ध्यानी च त्रीप्रणहितो परेश्वरीमित्यात्वाती शिवसोऽप्यनेन
 कत्रव्यस्तं विमलं नमामि ॥ २३ ॥ अतं न वा ह्यप्रनेक भाषणं परिग्रहं सर्वमप्यनकारं ॥ योगो मुह्यस्य हि
 तं जनानां ॥ ब्रवेज्जितं तं प्रणमाम्यनंतं ॥ २४ ॥ सार्द्धं पदार्थेन वसततत्वे ॥ मंचास्त्रिकायाश्च न कात्तकाया
 प्रदृश्य निनीतिरित्यो कमुक्तिर्येनोदितं तं प्रणमामि धर्म ॥ २५ ॥ पश्चन्तवर्तो न विपंच्यो न स्त्री नंदन
 श्वात्तमोणुणानां ॥ निधिप्रवृत्तः षोडशमो जिने ॥ इत्थं गतिनाथं प्रणमामि नेहात् ॥ २६ ॥ प्रसंसितो येन
 विजार्ते हर्ष विराधितो यो न क्रयेति रोषं ॥ शीलव्रता दृष्टपदं गतो यतं कुंशुना थं प्रणमामि हर्षोत्त
 २७ ॥ न संस्तुतो न प्रणतस जायां यः ॥ सेवितो तर्गाण्यूरण्यपदाच्युतौ ॥ केवलं निजिर्ज्ञा यदेव धिरे
 वं प्रणमाम्यनंतं ॥ २८ ॥ इत्थं यं पूर्वैर्नकारो यो व्रते पवित्रे कृतवान् रोषं ॥ कपो न वत्सामनसा विभु
 तं महेनाथं प्रणमामि नक्त्या ॥ २९ ॥ शुभं नमः न सिद्धिपदं यवाक्या ॥ मित्यग्रही चः स यमेव लोचं ॥ लो
 कोतिके न्यस्तवनं न सा स ॥ वेदे जिने शं मुनि सुव्रतं तं ॥ न विद्यावते तीर्थे कण्ठतस्मात् ॥ दाहात् न
 दृष्टो विरोधात् ॥ गृहे जनस्य जनिरात्तद्विष्टिः ॥ स्तोमि प्रमाणा न्यपत्तेनां प्रंतं ॥ ३० ॥ जीमतीशः प्रवि
 श्य प्रोत्ते स्थितिश्चकार पुनराप्राप सर्वं ॥ बुजीवे मुदयोऽद्या न स्तं नेमि नाथं प्रणमामि नक्त्या ॥ ३१ ॥ सर्पो धि

अथ यन्त्रोच्चिखत्येतोयेन स्वयं बोधमयेन लोकाभ्यां सा केचन वितर्कये प्रबोधिता केच
 न मोक्षमार्गोत्तमादिनां प्रमाणमिति तं धर्मं दृष्टिभिः स्वीयस्मृदतो यैः संस्तु पितो मरुगिणे जिने इ
 यः नाम जेता जनसौख्यकारी तं श्रुद्धावा दजितं जमा मिदं ध्यानं प्रबोधनेन नयेन निरुत्पन्नं प्र
 कृतीः समस्ताः पुतिस्वरूपा पदवी प्रपेदे तं संजकं नो मिमलानुरागात् अथ प्रयदीया जननी त्स्माप
 णादिव द्यंति मिदं दर्शयतात इत्याह गुरुः परे यं नो मिप्रमोहाद निनंदनं तं धर्मादि च दंज
 यतामह तं न य प्रमा ऐर्बे च नैजास्तु जैनं मर्ति विस्तरति ते च येन ते देवदेव सुभतिं जमा मिधर्म
 वतारं सति यत्र धिस्मे ववर्षे रत्ना निहरे न्निदे ज्ञाता धर्माधिपः मणवमा स पूर्व प्रवृत्तं ते प्रणमा
 मि नित्यं दे नरे इत्येव रत्ना किनाये नो एीजवंती जाग्रह स्वचिरे प्रस्मात्मनो धः प्रथितः सनाया
 म हं सुपार्श्वं ननु तं नमामि धर्मसि स्मृतिरूपोति शय प्रपन्नो गुण प्रवीणे ह तदोष संगः यो लोक मोह
 धतमः प्रदीपश्च द्रष्टुं ते प्रणमामि जावाता गुप्तित्रयं च महाव्रतानि प्रंचोपदिष्टाः समितिश्चै
 न वना एयो द्वा दशा धातयांसि तेषु षट् तं प्रणमामि देवेषु ब्रह्मव्रतांतो जिज्ञाया केनोत्तमत्तमा
 दिदे श्वापि धर्मैरेन प्रपुतो ब्रतं धनुष्मा तं श्रीतलं तीर्थं करनमामि शृंगा एजना नंदकरे द्वा
 ते विध्वस्तकोपे प्रशमैकचिते यो द्वा दशां श्रुतमादिदे श्वास्त्रे यं समनो मिजिनं तं मीनं श्चमुत्तं

1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525

[illegible]

हासुचिसीलजपतपशानथानप्रजावते॥ नितगांजमुनासमुद्रनक्षये॥ अशुचिरेषसुजावते॥ फ
 श्चिप्रत्तमद्वजसोनीतरकोनविधिपटशुचिकर्तै॥ वदुदेर्यैत्तीसुगुनथेत्तीसौचगुनसाधुत्वहे॥
 ॥ तु द्वीजतमसौचपराधर्मोगायनमः॥ अथयेकत्तप्राप्तायत्वांश्वर्धनार्चयामि॥ अर्ध॥ सोराज॥ क
 पवहहो॥ प्रतिपात्तपंचेंदियमनवसितये॥ संजमरतनसमाति॥ विषैचोरवदुफिरतहै॥ छंद॥ जतमसं
 जमगदुमनमेरे॥ जवतवकेअधजाजेतेरे॥ स्पर्शनर्केपशुगतिमेनाही॥ आत्तसरनकरनमुखवा
 रे॥ वांरेप्रथीजलअगनिमास्तवांरे॥ वत्रसकरनाधरे॥ सपरासनारसना॥ अणनैनाकानमनसक
 सिकरौ॥ जिसविनानही॥ जिनएजसीजैतरुत्योजाकीन्मै॥ इकथरीमतिसिस्फैकरौ॥ नितअन
 जममुखवीचमै॥ ॐ ह्रीं॥ जतमसंजमपराधर्मोगायनमः॥ अर्धेफलप्राप्तायत्वांश्वर्धनार्चयामि॥
 ॥ अर्ध॥ सोराज॥ तपचाहेसुराण॥ कर्मिस्वरकौंद्रजहै॥ आदशाविधिसुखत्याय॥ म्रियोनकरै॥ निजसक
 तिसम॥ छंद॥ जतमतपसवमांहिवयानां॥ कर्मसैलकों ब्रजसमाना॥ वस्योअनादिनिगोद्वैकाए॥ अरे
 कत्तत्रयपसुतनथाए॥ ध्याएमनुषतनमहादुहज॥ सुकलआबनिएगाता॥ श्रीजैनवानीतस्वदानी
 जाइविषेपयोगता॥ अतिमहादुहजतया॥ विषेकवायजेतपश्चाटै॥ नरजौअनोपमकनकधीएपीरे
 मनमईकत्तसाधरे॥ ॐ ह्रीं॥ जतमतपपराधर्मोगायनमः॥ अर्धेफलप्राप्तायत्वांश्वर्धनार्चयामि॥ अ

॥ ॐ ह्रीं ॥ उत्तमपादत्रयपरमार्थगणनमर्थप्रदर्शनार्थकत्वात् ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ सोरव
 कपटनकीर्ति कोय ॥ मोरनके पुरावसे ॥ सरलसुजायी ॥ होय ॥ लोकै धरव चरुसंपदा ॥ ॐ ह्रीं ॥ उत्तमश्च
 जेवरितवदानी ॥ स्वं कट्ठावद्रुतद्रुत्तनी ॥ मनोरेष्यसे न न चरिष्ये ॥ वचनलेखसे न न से कीर्ये
 करिष्ये सरलति रुंजो ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ अपनंदे रिते निमल आसी ॥ पुरव करै जै सा लखे ते सा कपट प्रीति जंगारसी
 नही लखे लक्ष्मी अधिक छल करि ॥ कर्म वंधा विरोधता ॥ नै त्याग दधि विना वपी चै ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ आपदा नही देखे
 ता ॥ ॐ ह्रीं ॥ उत्तमश्च जे वपरमार्थगणनमर्थप्रदर्शनार्थकत्वात् ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ सोरव
 कति न न च न मति बो लि ॥ परनिंद्य अरु त जे ॥ सां च वा हरयो लि ॥ सतवादी जगमं सुखी ॥ छद
 उत्तम सत वरत पात जे ॥ परनिश्चास धान नही की जे ॥ जे सां चे ऊं रे मानुष देखे ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ आपदा न पूत स्वपास
 न पयो ॥ पोरों तिहाय पुरुष सां चे को दरव सव दी जिये ॥ मुजिरज आवक की प्रीति हा सां च पुन लखि
 जिये ॥ जंजे सिद्धासन वै विवसु रप धर्म कन्येति नय ॥ वचन रच से ती न र कपटुं च्या सुगमं ना राण्य ॥
 ॥ ॐ ह्रीं ॥ उत्तम सत्परा मधर्मो गायनमर्थप्रदर्शनार्थकत्वात् ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ सोरव
 धरि हरि है संतोष करै तपस्या देखे ॥ सो च सत्ता नि दोष ॥ धर्म न जा संसार में ॥ छंद जतम सौ च सके ज
 ग जानां ॥ तो न पाप न वचाप वदानां ॥ आसा पा सि म हा ड ख दानी ॥ सुरन पमै सतोषी प्रानी ॥ प्रानी स

हको पूजा

२६

आथेदरचसंवाण्यनतश्चधिकनछाहसो नवन्नातापनिवारदशलक्षप्रज्ञं सदा जतम
त्तमादिदशलक्षणीकपरमधर्मगायनमजतमक्षमाश्च जतममादेवाश्च जतमश्च नैवाध्वं जतमस
त्पश्च जतमस्योचमजतमसंयमर्हजतमतपश्च जतमतगाणजतमश्च किंचन एजतमवह
चयेश्चोचवैफल्यप्रापयत्तंश्चैतार्चयामि॥ अर्धं॥ ए॥ अथप्रथमश्चोसोरापिडे दुष्टश्च
नेकात्रांश्चिमारचद्रुनिधिकर्तुं धारिष्येक्षमाविवेकाकोपनकीजेप्रीतमाश्च जतमक्षमाहोरे
नार्हद्वजवजसपरजनसुखदर्शगातीसुनमनरेक्षजानो एनकोत्रो एनकहेअयानो कहि
येश्चायानोवस्तुछोनेत्रांधिमारचद्रुविधिकेष्टारैतिकर्तुं तनविहारैर्चैजोनतहांधारेतैकम
पूर्वोकेयेरतोते सहयोगनहीजीयए॥ अतिक्वेधश्चाणिबुजयप्रानीक्षमजलसेसीयए॥ अर्धं॥
जतमक्षमापप्रमधर्मोगायनमश्च नयेफलप्रापयत्तंश्चैतार्चयामि॥ अर्धं॥ शसोरजाप्राप्तम
हाविषरूपकरैनीचगतिजातमेकोमलसुधाश्चन्यपुष्टयपंचेप्रानीसदा हंजतमममादेव
पुनमनमानाप्रानकरनक्तकेनीवेकानावस्योनिगोदमाहितैश्चादमरीसकननाविक्रमा
रुक्कनविक्रयाकमेवसते॥ देवएकेद्रीजया जतमप्रवाचंजलक्ष्वाश्च प्रकीर्तोंमेंगया जीतवृजो
वनधनगुमानकरकहाकरैजलबुद्धदा करिबिनयवहु पुनवडेजनकीज्ञानकपानैजदा

तमा॥१॥ जतममादेव॥२॥ जतमस्यार्चयेव॥३॥ जतमसस्य॥४॥ जतमशौच॥५॥ जतमसंयम॥६॥ जतमतप॥७॥
 तमस्या॥८॥ जतमश्रुकिंचन॥९॥ जतमब्रह्मचर्ये॥१०॥ जुधवेदगीरेण॥ निनात्र नायत्वां नैवेहे नच
 मे॥ नैवेध॥ धर्मातिकपूरसुधारदीपकजोतिसुहावनी॥ नवश्रुतापनिवारदशालक्षणापूजं सदा॥
 ॥१॥ जतमसस्यमादिदशालक्षणाकपरमधर्मो गायनमः॥ जतमस्य॥१॥ जतममादेव॥२॥ जतमस्य॥३॥
 ॥४॥ जतमसस्य॥५॥ जतमशौच॥६॥ जतमसंयम॥७॥ जतमतप॥८॥ जतमस्या॥९॥ जतमश्रुकिंचन॥१०॥
 जतमब्रह्मचर्ये॥११॥ मोदांधकरविनाशनायत्वादीपेनार्चयामि॥ दीधं॥१२॥ श्रुतधूपविस्तापमै
 सर्वसुगंधता॥ नवश्रुतापनिवारदशालक्षणापूजं सदा॥१३॥ जतमस्यमादिदशालक्षणाक
 मधर्मो गायनमः॥ जतमस्य॥१४॥ जतममादेव॥१५॥ जतमममस्वश्रुतेव॥१६॥ जतमसस्य॥१७॥ जतमशौच
 ॥१८॥ जतमसंयम॥१९॥ जतमतप॥२०॥ जतमस्या॥२१॥ जतमश्रुकिंचन॥२२॥ जतमब्रह्मचर्ये॥२३॥ श्रुतधूप
 दहनयत्वांधपेनार्चयामि॥ दीधं॥२४॥ फलकीजतिश्रुतपाद॥ द्वात्रैमनमोहने॥ नवश्रुतापनिवा
 रदशालक्षणापूजं सदा॥२५॥ जतमस्यमादिदशालक्षणाकपरमधर्मो गायनमः॥ जतमस्य॥२६॥
 जतममादेव॥२७॥ जतमश्रुतेव॥२८॥ जतमसस्य॥२९॥ जतमशौच॥३०॥ जतमसंयम॥३१॥ जतमतप॥३२॥
 तया॥३३॥ जतमश्रुकिंचन॥३४॥ जतमब्रह्मचर्ये॥३५॥ मोक्षफलप्राप्तायत्वाफलेनार्चयामि॥ फलं॥३६॥

शनयत्वं जले न च यामि ॥ ३८ ॥ चंदन केसरि डिगि री होय सुवासद शो दिश ॥ जव आता पनि वय रस ल
 दण पुं जं सदा ॥ ३९ ॥ जतम लमा हि दश ल दणी क प र म धर्मो गाय न म ॥ जतम लमा ॥ जतम मा दे व
 र मित म आ र्ज व ॥ जतम स स ॥ ४० ॥ जतम शौ च ॥ ४१ ॥ जतम संय म ॥ ४२ ॥ जतम त प ॥ ४३ ॥ जतम त्पा ग ॥ ४४ ॥ जतम
 आ किं च न ॥ ४५ ॥ जतम द्र ह च ये ॥ ४६ ॥ संसा ए ता प रे ग नि ना श ना य त्वां चंद ने न च ये यामि ॥ चंद ने ॥ ४७ ॥ ज
 म ल आ लां डित सा ए तें ड ल चं द स मा न मु त ॥ ज व आ ता प नि ना ए र स ल द ण पुं जं स दा ॥ ४८ ॥ ज
 म ल मा हि द श ल द णी क प र म ध र्मो गाय न म ॥ जतम ल मा ॥ ४९ ॥ जतम मा दे व ॥ ५० ॥ जतम आ र्ज व ॥ ५१ ॥ जतम
 स त्पा ॥ ५२ ॥ जतम शौ च ॥ ५३ ॥ जतम संय म ॥ ५४ ॥ जतम त प ॥ ५५ ॥ जतम त्पा ग ॥ ५६ ॥ जतम आ किं च न ॥ ५७ ॥ जतम द्र
 ह च ये ॥ ५८ ॥ ज व आ ता प नि ना ए र स ल द ण पुं जं स दा ॥ ५९ ॥ जतम ल मा हि द श ल द णी क प र म
 ध र्मो गाय न म ॥ जतम स स ॥ ६० ॥ जतम मा दे व ॥ ६१ ॥ जतम आ र्ज व ॥ ६२ ॥ जतम स स ॥ ६३ ॥ जतम शौ च ॥ ६४ ॥ ज
 म संय म ॥ ६५ ॥ जतम त प ॥ ६६ ॥ जतम त्पा ग ॥ ६७ ॥ जतम आ किं च न ॥ ६८ ॥ जतम द्र ह च ये ॥ ६९ ॥ जतम व ण नि
 ॥ ७० ॥ जतम य त्वां पु षे न च ये यामि ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

हसुखकरी॥ मनवचतनवंदनाहमा॥ ६॥ साटेमन्पनसहसजते॥ वनसौमनसचारुवक्रांग॥ वै
लयसोलेसुखकरी॥ मनवचतनवंदनाहमा॥ ७॥ जंचेवार्दिससहसवता॥ पांडुकचास्वन
जा॥ एवैत्यालयसोत्तहसुखकरी॥ मनवचतनवंदनाहमा॥ ८॥ सुराचारुनवंदनाहमा॥ सो
सोनाहमकिहसुखगावें॥ चैत्यालयअस्सीसुखकरी॥ मनवचतनवंदनाहमा॥ ९॥ देहापंचमेस
कीअराती॥ प्रदेसुनैजोकोइ॥ दानतफल्जानेंप्रनु॥ तुरतमहासुखहोय॥ १०॥ ॐ ह्रीं॥ पंचमेस
संवधीजिनालयतिष्ठतेजिन॥ आदिमुदज्ञेनोमेस॥ विजयोअवलस्तथा॥ चतुर्थोमंद्योनामः
विद्युन्मात्मीसुपंचमः॥ अर्धफल्पापत्वांअर्धमेदार्धेनार्चयामि॥ ॐ ह्रीं॥ इतिपंचमेसहस्रनामं
॥ ॥ अथदसलक्ष॥ पुजानायाद्यानतरावजी॥ कृतस्तिर्यते॥ अहिंसा॥ जतमत्तासुपादेवआजव
नावहो॥ सतसौचसंजमत्तरुपागजपावहो॥ आ॥ किंचनद्रुमचर्येधर्मदससारहो॥ चक्रातिङ्गवते
काटिमुकतिकरातारहो॥ शत्रुहकसोरा॥ हिमावल्कीया॥ मुनिवितसमसीतलसुरतिनकया
तापनिवारदसलक्ष॥ पुजंस्सदा॥ ॐ ह्रीं॥ जतमत्तामादिदशचक्षुणी॥ कपरधर्मोगायनमः॥ ज
तमत्तामा॥ जतममाह्वेच॥ जतमअर्धच॥ जतमसत्ता॥ जतमशौच॥ पुजतमसमयमाह्वे॥
जतमत्तामा॥ जतमत्तामा॥ जतमत्ताकिंचन॥ पुजतमवक्षस्वचर्ये॥ जेजन्मजरासृतेणविना

सुदर्शने मे स्मि विजयो ज्ञवत्स तथा चतुर्थो मंदरो नाम विद्युन्माली सुपंचमः मोक्षफलदा प्रपत्नं
 फलेनार्चयामि ॥ फलं ॥ ८ ॥ आ वत्स मयश्च भवनाय ध्यानतपूजो श्रीजिन एष महामुखवहो दे
 येनाथ परममुखवहो ॥ पंचो मे रुद्रश्च स्मीजिन धाम ॥ सर्वप्रतिप्राप्ती संकल्पशरणमहामुखवहो दे
 वाथ परममुखवहो ॥ त्रुं दर्शयं च मे रुद्र संबंधीजिनालयतिष्ठतेजिनाश्चादि सुदर्शने मे स्मि विजयो ज्ञ
 वत्स तथा चतुर्थो मंदरो नाम विद्युन्माली सुपंचमः अनर्थफलप्राप्ताय त्वां श्रद्धेनार्चयामि ॥ श्रद्धे
 ॥ ९ ॥ श्रद्धेनार्चयामासां त्वां ॥ प्रथम सुदर्शने स्मामि विजयश्च त्वमं दरा क ह ॥ विद्युन्माली न
 मपंच मे रुद्र जग मे प्रणत ॥ चौपदो हं द प्रथम सुदर्शने मे रुद्रि ए जे ॥ न द सा त व न रुद्र प्रह्लाद ॥ चैत
 लय व्या रो मुख कारे ॥ मनव च तन वंदना ह मा रो ॥ नृप रि पंच स त क परि सो दौ नंद न व न दे र
 त म न मो हौ चै त्पाल य व्या सो मुख कारे ॥ मनव च तन वंदना ह मा रो ॥ रसा दे वा सो वि स ह स ज च
 रो व न सो म न स सो न श्रद्धा कारो ॥ चै त्पाल य व्या सो मुख कारे ॥ मनव च तन वंदना ह मा रो ॥ अं
 वा जो ज न स ह स छ टी सं मो डु क व न सो हे गि रि सो सं चै त्पाल य व्या सो मुख कारे ॥ मनव च तन व
 दना ह मा रो ॥ १० ॥ व्या सो मे रुद्र स मान व रा नौ ॥ नृप रुद्र सा ल च डूं ज नै चै त्पाल य सो ले सु मुख कारे
 मनव च तन वंदना ह मा रो ॥ नृचे पंच रा त क प र ना रो व्या सो नंद न व न श्रद्धा नि ला रो ॥ चै त्पाल य सो

नाथपरमसुखहो॥ पाचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमोजीसंकरूपरणम॥ महासुखहो॥ देवेना
 परमसुखहो॥ ॐ ह्रीं॥ पंचमेरुसंबंधीजिनालयतिष्ठतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु॥ विजयोअवतस
 ॥ चतुर्थोपंदरोनाम॥ विद्युत्मात्मीसुपंचम॥ दुधवेदनीरणविनामनायत्वंनेवेदनेर्चयामि॥ ५॥
 ॥ नेवेदं॥ तामहाजछतजोतिजगाय॥ हीपकपूजौश्रीजिनएय॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुख
 हो॥ पाचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमजीस्करूपरणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुखहो
 ॥ ॐ ह्रीं॥ पंचमेरुसंबंधीजिनालयतिष्ठतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु॥ विजयोअवतसया॥ चतुर्थो
 पंदरोनाम॥ विद्युत्मात्मीसुपंचम॥ मोहांधकारविनामनायत्वंदीपिनर्चयामि॥ ६॥ ॥ देवेनाथ
 आप्रथमतआधिकाय॥ धूपसौपूजौश्रीजिनएय॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुखहो॥ पांचौमेरु
 अस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमजीस्करूपरणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुखहो॥ ॐ ह्रीं॥ पंच
 मेरुसंबंधीजिनालयतिष्ठतेजिन॥ आदिसुदर्शनमेरु॥ विजयोअवतया॥ चतुर्थोपंदरोनाम॥ विद्यु
 त्मात्मीसुपंचमः॥ अष्टकर्मेदहनायत्वंध्येनर्चयामि॥ ७॥ ॥ असससुखरत्नसुगंधसुजाय॥ फलसौ
 पूजौश्रीजिनएय॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुखहो॥ पाचौमेरुअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमजीसं
 करूपरणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथपरमसुखहो॥ ॐ ह्रीं॥ पंचमेरुसंबंधीजिनालयतिष्ठतेजिनअ

तुर्योमंदरोनाम विद्युन्मात्मीसुपंचमः॥ जन्मजातमृतेण विनाशनायत्वं जले नर्त्तयामि॥ जलं॥ श्व-
 लके सरकरपरप्रमिताय॥ चंदनपूजो श्रीजिन एय महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ पन्नो मेरु-
 त्पसीजिन धाम स्वप्रतिमजीसो कसं पराणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ ईर्द्धी पंचमेरु-
 संबंधीजिनालपतिष्ठते जिन आदि सुदर्शने मेरु विजयो अचल तथा॥ चतुर्थोमंदरोनाम विद्युन्मा-
 त्मीसुपंचमः॥ संसा एतापरो विनाशनायत्वं चंदने नर्त्तयामि॥ चंदनं॥ यः प्रमल अखंड सुगंध सुहा-
 यः प्रवृत्ततपूजो श्रीजिन एय महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ पन्नो मेरु अस्मीजिन धाम स्व-
 प्रतिमाजीसो को ए पराणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ ईर्द्धी पंचमेरु संबंधीजिनाल-
 पतिष्ठते जिन आदि सुदर्शने मेरु विजयो अचल तथा॥ चतुर्थोमंदरोनाम विद्युन्मात्मीसुपं-
 चमः॥ प्रवृत्ततपूजो महापत्न्यां अक्षते नर्त्तयामि॥ अक्षतं॥ प्रिक्वने अने कहे महकाय फल नपूजो श्री-
 जिन एय महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ पन्नो मेरु अस्मीजिन धाम स्वप्रतिमजीसो को ए-
 रणम॥ महासुखहो॥ देवेनाथ परमसुखहो॥ ईर्द्धी पंचमेरु संबंधीजिनालपतिष्ठते जिन आदि-
 सुदर्शने मेरु विजयो अचल तथा॥ चतुर्थोमंदरोनाम विद्युन्मात्मीसुपंचमः॥ कामवाण विध्वंसनाय-
 त्नां पुष्पे नर्त्तयामि॥ पुष्पं॥ शः मन चंचित वक्रतुरत्ततपाय॥ वरुसो पूजो श्रीजिन एय महासुखहो॥ दे-

[illegible]

वेयाहतकारणं प्रवृत्तं नति ॥ १२ ॥ अचिज्जति ॥ १३ ॥ वक्रश्रुतजति ॥ १४ ॥ प्रवचनजति ॥ १५ ॥ अवा
 त्यकापरिहणं ॥ १६ ॥ अपागो प्रजावना ॥ १७ ॥ प्रवचनवात्सल्य ॥ १८ ॥ त्वादिसोलहगुणकीपूजाश्रद्धाकृत
 प्राप्ताय त्वांश्रद्धेनार्चयामि ॥ अर्द्धांशश्च उभयमालं ॥ दोहा ॥ पोरसकारनगुनकरैः हरेचतुरागतिवास ॥
 पापपुण्यसक्तासिर्को ॥ ज्ञानजावनपरकासाश्चौपदे ॥ दशैविश्रुद्धिधरैर्जोकोर्द ॥ ताको ज्ञावागमनना
 होर्द्विविनयमहाधारे ॥ जोप्रानी ॥ शिववनिताकोसखीवत्तानी ॥ १९ ॥ तसदादिदजोनरायातै ॥ सोश्रौ
 रनकीश्रापदतातै ॥ ज्ञानश्रव्यासकरैर्मनमोही ॥ ताकैमोहमहातमनाही ॥ २० ॥ जोसंवेगजाविविस्तारै ॥ सु
 एामुकतिपदश्रापनिहारै ॥ त्वाजदेममनहर्षविवेकेष ॥ २१ ॥ जोजसपरजोसुखदेव ॥ २२ ॥ जोतपत्तयेदि
 पेअनिताया ॥ चूरेकर्मसिरागुरजाया ॥ साधसमाधसदाभनत्मावै ॥ तिहुंजगजोपजोगिशिवजावै
 ॥ निसदिजवेयाहत्यकर्दया ॥ सोनिश्वेनवनीरतैरेया ॥ जोअरुतनकतिमनश्चनै ॥ सोजनिवैकमा
 यनजाने ॥ २३ ॥ जोअचरिज्जति करैद्वै ॥ सोनिर्मलश्रवचारधरैद्वै ॥ वक्रश्रुतवंतजगतजोकर ॥ २४ ॥ सोनरा
 संपूर्णश्रुतधरै ॥ २५ ॥ प्रवचनजतकरैजो ज्ञाता ॥ तहैज्ञानपरमानंददाता ॥ षटश्रावसिकावलजोस
 धे सोर्दराजवयश्रायाधौ ॥ २६ ॥ अर्धमेप्रजावकरैजो ज्ञानी ॥ तिनत्रिपार्गादीतिपिछानी ॥ बल्ललश्रंगासदाजो
 ध्यावै ॥ सोतीर्थेकरपदवीपावै ॥ २७ ॥ होहाएदीसोलाहजावना ॥ सहनधरै ॥ अतजोपरिवद्रंगोद्वपद

शुद्धिश्चिनयसंपन्नता ॥ १२ ॥ लवते खनती चारु ॥ १३ ॥ अनी चण्डानोपयोग ॥ १४ ॥ संवेग ॥ १५ ॥ शक्ति
 ॥ १६ ॥ शक्तिस्तप ॥ १७ ॥ साधुसमाधि ॥ १८ ॥ वेयावतकरण ॥ १९ ॥ शिरदंतनक्ति ॥ २० ॥ अचाये नक्ति ॥ २१ ॥
 श्रुतनक्ति ॥ २२ ॥ प्रवचननक्ति ॥ २३ ॥ आनशे कपरिहाणि ॥ २४ ॥ मार्गप्रभावना ॥ २५ ॥ प्रवचननात्स
 ॥ २६ ॥ त्वादिसेलहणकीपूजा ॥ २७ ॥ अष्टकमेदहनायत्तां धूपनार्चयामि ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ श्रीफलश्रादिदे
 फलसाय ॥ ३० ॥ जिनवंशितलता ॥ ३१ ॥ परमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो दर्शे विशुद्धिजायना
 लहतीर्थकरपददयापरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ दर्शे विशुद्धि ॥ ३४ ॥ विनयसंपन्नता
 ॥ ३५ ॥ लवते खनती चारु ॥ ३६ ॥ अनी चण्डानोपयोग ॥ ३७ ॥ संवेग ॥ ३८ ॥ शक्तिस्तप ॥ ३९ ॥ साधुसमाधि
 ॥ ४० ॥ वेयावतकरण ॥ ४१ ॥ शिरदंतनक्ति ॥ ४२ ॥ अचाये नक्ति ॥ ४३ ॥ श्रुतनक्ति ॥ ४४ ॥ प्रवचननक्ति ॥ ४५ ॥
 ननाक्ति ॥ ४६ ॥ अवावकपाप ॥ ४७ ॥ रिहाणि ॥ ४८ ॥ मार्गप्रभावना ॥ ४९ ॥ प्रवचननात्स ॥ ५० ॥ त्वादिसे
 णकीपूजा ॥ ५१ ॥ कलत्रास्त्रायात्तां फलेनार्चयामि ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ जलफलश्रावोंदवक्तव्य ॥ ५४ ॥ नतव
 रतकोमनतायापरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो दर्शे विशुद्धिजायनाय सोलहतीर्थकरपद
 दयापरमगुरुहो जैजैनाथपरमगुरुहो ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ दर्शे विशुद्धि ॥ ५७ ॥ विनयसंपन्नता ॥ ५८ ॥ लवते ख
 नती चारु ॥ ५९ ॥ अवावकपाप ॥ ६० ॥ रिहाणि ॥ ६१ ॥ मार्गप्रभावना ॥ ६२ ॥ प्रवचननात्स ॥ ६३ ॥ त्वादिसे

ध्वंसनायत्वापुष्पेनार्चयामि॥ पुष्पं॥ ध्वंसनेवजवद्विधियकवानपूजं श्रीजिनवरणनखानि॥ पर
 मगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ नृक्षी दर्शनविशुद्धिविनयसंपन्नता॥ यक्षी लवनेखनतीचारुं
 अनीलराज्ञानोपयोग॥ संचेगभय॥ अतिक्रान्तस्यागा॥ हो॥ शक्तिरतस्याप॥ यस्माधुसमाधि॥ यैवावृत्तकरण
 ॥ ए॥ अहंतनक्ति॥ श्रीआचारिज्जनाति॥ १२॥ वदुश्रुतनाति॥ १२॥ अवननाति॥ १२॥ अवावृत्तकपरिह
 णि॥ १२॥ आगेप्रजावना॥ १२॥ सन्नवात्सल्य॥ १२॥ चादिसोलहगुणकीपूजा॥ लुधावेदनीरेणविनाशनाथ
 त्वानेवेहेनार्चयामि॥ नेवेदं॥ दीपकजोतिरतिमरुच्यकणपूजो॥ श्रीजिनकेवलधापरमगुरुहो॥ जै
 नाथपरमगुरुहो॥ दर्शोविशुद्धिजावनात्ताप॥ सोलहतीर्थकरपदद्वय॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥
 ॥ नृक्षी दर्शनविशुद्धिविनयसंपन्नता॥ १२॥ लहृतेअनतीचारु॥ अनीलराज्ञानोपयोग॥ यस्मा
 वेगा॥ भूशक्तितत्त्वागा॥ हो॥ शक्तिरतस्तप॥ यस्माधुसमाधि॥ यैवावृत्तकरण॥ १२॥ अहंतनक्ति॥ १२॥ आ
 चारिज्जनाति॥ १२॥ वदुश्रुतनाति॥ १२॥ अवननाति॥ १२॥ अवावृत्तकपरिह॥ १२॥ आगेप्रजावना॥ १२॥
 ॥ अवननात्सल्य॥ १२॥ चादिसोलहकारणगुणकीपूजा॥ मोहांधकारविनाशनाथत्वादीपेनार्चयामि
 ॥ हो॥ हो॥ अगारकपूरगंधश्रुतरेय॥ श्रीजिनवत्त्राणोमदकेय॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥
 दर्शनविशुद्धिजावनात्ताप॥ सोलहतीर्थकरपदद्वय॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ नृक्षी दर्शन

माधिरुनिपाहतकरणणिप्रहृतनक्तिरुश्रुचाचयेनक्तिरुश्रुवदुश्रुतनक्तिरुश्रुप्रवचननक्ति
 त्वप्रकापरिहणिरुधमार्गप्रभावनारुधप्रवचनवात्सल्यरुधैत्वादिसेलद्वगुणकीपूजासं
 तापरेणविनाशनायत्वंचंदनेनर्चयामि॥ चंदनं॥ २॥ तंदुतधवत्सुगंधश्रुतपूजजिनवर
 तैरुजातप॥ परमगुरुहै॥ जैजैनाथपरमगुरुहै॥ नैर्द्वैद्वैतविश्विद्विन्नयसंपन्नता॥ प्रीति
 वतेष्वनतीचारुश्रुतिरुश्रुज्ञानोपयोगः॥ धर्मसंवेगः॥ शक्तितस्तपः॥ साधुसमाधिः॥ वैपाहतकर
 धिरुनैपाहतकरणणिप्रहृतनक्तिरुश्रुचाचयेनक्तिरुश्रुवदुश्रुतनक्तिरुश्रुप्रवचननक्ति
 रुश्रुप्रवचनकापरिहणिरुधमार्गप्रभावनारुधप्रवचनवात्सल्यत्वादिसेलद्वगुणकीपूजाश्रुत
 परमात्मायत्वंश्रुतेनर्चयामि॥ श्रुतं॥ ३॥ फलसुगंधधुपुंजारपूजोजिनवरजगत्प्रधार
 परमगुरुहै॥ जैजैनाथपरमगुरुहै॥ दर्शविश्विद्विन्नयनात्मय॥ सोलहतीर्थकरपदद्वयपरमगुरुहै
 थपरमगुरुहै॥ नैर्द्वैद्वैतविश्विद्विन्नयसंपन्नता॥ प्रीतिवतेष्वनतीचारुश्रुति
 रुश्रुज्ञानोपयोगः॥ धर्मसंवेगः॥ शक्तितस्तपः॥ साधुसमाधिः॥ वैपाहतकर
 ॥ १॥ श्रुतं॥ तनक्ति॥ २॥ श्रुचाचिरुजिनक्तिरुश्रुवदुश्रुतनक्तिरुश्रुप्रवचननक्तिरुश्रु
 णिरुधमार्गप्रभावनारुधप्रवचनवात्सल्यरुधैत्वादिसेलद्वगुणकीपूजाकाप्रमाणेणविन

बालव्यिजागायथाक्रमं तेमयमर्थितान्नक्या॥ सर्वथांतुमथास्थितिः॥ इति हरेपूजा॥ सिद्धपूजा
 र्थे॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ अथ हरेपूजा नामाद्यानतरायस्तुतिलिख्यतां॥ अहिले॥ सोस्तु हकार
 एभायसुतीर्थेकरजये हरेभेदं ह्यथा एमेरपैलाये॥ पूजाकरिनिजअन्यतरव्योवदुच्चावसो॥ हमरु
 षोडसजानिजमैजावसो॥ एअथाष्टकाचौपदेशाचत्वीबंध॥ कंचनगरीनिर्मलनीरपूजांज्जिन
 वरगुणंजीर॥ परमगुरुहैजैजैनाथपरमगुरुहै॥ दर्शनविश्रुतिजननाप॥ सोस्तु हरीर्थेकर
 पदस्यापरमगुरुहै॥ जैजैनाथपरमगुरुहै॥ ॐ ह्रीं दर्शनविश्रुतिविनयसंपन्नता॥ प्रसीत्स्व
 तेधनतीचारा॥ अजित्वाण्डानोपयोगः॥ संयोगः॥ सति तपस्यागर्धो॥ शक्तिस्तपः॥ अम
 धुसमाधि॥ वैपाहृत्यकराण॥ अग्रहंतनक्ति॥ श्रेयार्चयेजतिः॥ १२॥ वदुश्चुतनक्ति॥ १२॥ अवनन
 कि॥ १३॥ अनावससकापरिहृणि॥ १४॥ मागप्रजावना॥ १५॥ अवननवास्तस्य॥ १६॥ त्वादिसोस्तुगुणक
 पूजाजन्मजगत्प्रसुरोनाविनासनाथत्वंजतेनार्चयामि॥ जलं चंदनप्रसोकपूरमिलाय पूजोर्थ
 जिनचरकेयाथ॥ परमगुरुहै॥ जैजैनाथपरमगुरुहै॥ दर्शनविश्रुतिजननाप॥ सोस्तु हरीर्थेकर
 ददायपरमगुरुहै॥ जैजैनाथपरमगुरुहै॥ ॐ ह्रीं दर्शनविश्रुतिविनयसंपन्नता॥ प्रसीत्स्व
 तेधनतीचारा॥ अजित्वाण्डानोपयोगः॥ संयोगः॥ सति तपस्यागर्धो॥ शक्तिस्तपः॥ अम

ए० संजमसमादिप्रणंजिणुणसंप्रतिहोउमज्जं॥१८॥ इतिश्रुतिपात्रसंपूर्णं॥ अत्रापिचमस्कार
 क० र० धि॥ ह्युत्तिगारवत्ता॥ प्रडीधनिश्चाजकोयेदी॥ सरेस्रवकाजमोमनका॥ पियेअधरि
 न० लर्यामुखश्चादिजिनवरका॥ र० विपतनासीसकलमे॥ जरेजंङारसंप्रतिकसुधाकेमेघह्रव
 । लर्यामुखश्चादिजिनवरका॥ र० जर्परतीतमहमो॥ सहीहोदेवदेवनिका॥ ह्रुटीप्रिष्यात
 र्यामुखश्चादिजिनवरका॥ र० विरहश्चेसोसुन्मोमैतो॥ जातकेपारकारनेका॥ नवतश्चानंद
 यो॥ लर्यामुखश्चादिजिनवरका॥ ध० इतिसंपूर्णं॥ तुमतरणत्ताएजवनिवाए॥ नविक
 दनो॥ श्रीनाजिनंदनजगतनंदनश्चादिजायजिनेश्वरे॥ र० तुमश्चादिजायश्चनादिसेऊसेवक
 जाकलं॥ कैलासगिरपरे॥ ऐमजजिनवरच० एकमलसेवाकलं॥ र० तुमकर्मघातामोक्षदातादीन
 णेदयाको॥ सिद्धार्थनंदनजगतनंदन॥ महवीरजिनेश्वरे॥ र० समेदशठगिरिनास्थिपापवा
 रकैलासमे॥ पूजोस्रचोवी॥ सजिनवर॥ निर्वेणश्चमिनिवाशमे॥ ध० चत्रतीनसोदे॥
 तीश्चवधा॥ रये॥ कारजेरिसेवकवीनवे॥ ह्योश्चावागव० ए० निवारियो॥ इतिस्तुतिसंपूर्णं॥ अ० नो॥ द
 ॥ ज्ञानतोज्ञानतोवापि॥ धा॥ स्त्रो॥ कं० न० कृतं० मया॥ तत्सर्वपूर्णमेवात्मा॥ त्वत्प्रसादात्तजिनेश्वरः॥
 ननञ्चानामिन्नैवजानामि॥ पूजनं॥ विसर्जनं० नजानामि॥ त्मसत्परमेश्वरः॥ र० अ० कुरुताये

तु शांतिं प्रहमपश्यते परमां च ॥ अथ भवितुमुक्तकुंडलं हारत्वे ॥ प्रक्रान्तिः सुरैः स्तुतया
 ह्यन्नाभितो जिह्वाः प्रवरत्वं शजात् प्रदीपाः स्तीर्थकाः सततं शांतिं कएत्वं तु ॥ प्रसृज्यमानां धीनि
 प्रालकनां ॥ यती इत्थापतयो धनानां ॥ देवाः स एषु स्मृत्स्मरन्नाः क्रोतुं शांतिं गान् जिने उर्ध्व
 अशोकदत्तसुरपुष्पद्विः दिव्यध्वनिश्चापमासने च ॥ नामंडलदुंदुभिरातपत्रं सत्प्रतिहार्यो हि
 जिनेष्वाणां ॥ ७ ॥ देवं सर्वप्रजानां प्रजवतु वलनार्थमिह कोत्तमिपालः ॥ कालेकात्ते च स्पष्टं क्व
 तुमधवा व्याधयो यां तु नानां ॥ छुर्नैदं चोत्तमारीत्त एभिर्जगतां प्राप्सन् जीवतो को जै नंदधर्मक
 प्रजवतु सततं सर्वेषो व्यवप्रदयि ॥ ८ ॥ प्रध्वस्तयातिकर्मण्येकवलज्ञानास्कराः ॥ कुर्वतु जगतः
 प्रणतिं हृदयानां ॥ जिनेष्वाणां ॥ अथेष्टप्रार्थना प्रथमं करणं च ॥ ९ ॥ इत्येतन्मः ॥ शास्त्राद्या सो जिने पा
 ति नृतिः संप्रति ॥ सर्वेदार्यः ॥ सद्गुणानां गुणगणकया हो प्रवादे च मौनं ॥ सर्वस्यापि प्रियदित्तवो जाव
 नात्मात्मतत्वे ॥ संपद्यंतां मम जवतवेषावदेते पर्वो ॥ १० ॥ नवपत्ने मम हृदये मम हृदये नवपदं मनी
 र्त्वं तिष्ठतु जिने ॥ द्यावततावत निर्वाणसंप्राप्ति ॥ ११ ॥ अस्करपयस्य हीणं मता हीणं च जं मरणं यं
 तं एव मज्जा एतेन यमः ॥ क्व विदुः एक यं हि तु ॥ १२ ॥ दुःखं न कर्मसक न समा हि मरणं च बोहिता
 होय मम हृदय जातवंधव तज्जिण वत्त एसा एण ॥ १३ ॥ दुःखं न कर्मसक न ना हि त्ना हो सुमार्ग

रतवसिरीएसमासिंया। साहवोतेमोहंमोहकयहमगाया। प्रएणयोतेएजोपंचगुरुस्वदएणस्यसंसा
धएवेद्विसोच्छिंदयत्तरदसोसिदिसोत्तदस्यमाणे। कुएदकमिंभएंपुंजयजालएदीधना।
रहासिद्धादिएया। नचक्कायासाहुपंचपरमेदी। एयाएणमोकारजवेनेवेमपसुहंदितु॥ ३०
सिद्धयत्वायेजयाध्यापसर्वसधुंजिनवाणीषोडशकारएदसल्लणीकरत्तत्रयपरमधर्मगाय
ःअर्धमहअर्धनार्चयामि॥ अर्ध॥ दत्तामित्रेतेपंचमहागुरुनतिकानसगोकजतसालोचनेअ
महापानिहेरसंजुताणं। नरहताणं। नपठगुणसंपणणं। जहलोएप्रत्ययमिभयपट्टियाणं। सिद्धए
दपक्कएमानसंजुताणं। न्नादभियाणं। न्नायाएदिसुदणणेवेदअयाणं। जवक्कायाणं। तिरयएण
पालएयाणं। सत्तसा। रुएणिच्चकालंअर्धेमि। पूजेमिंवदाभि। एमंसाभिदुरकएकजकमएकन
हत्ताहोसुगदामणंसमाहिमरणं। जिनगुणसंपतिहोउमज्जं॥ अथत्तांतिपाठलिल्लते॥ अणंति
नंशसिनिमैलवक्क॥ दीलगुणव्रतसंपमपाअप्रस्यतात्तैललत्ताएणात्तांनोमिजिनोतममं
जनेत्तं। शंपंचममी। श्वेतवक्कधाएणं। मुजितमिंदनोरेदगाएश्वत्तांतिकएणत्तांतिमज्जिमुषोड
तीर्थेकरंअणमाभि। इदिवत्तरुःसुरपुष्पसुद्वसि। उंदुजिएसन्नयोजनधोषोअतमक्काएचापपुष्पे
वेनातिजमंडलतेजप्रतिजगदत्तैतत्तांतिजिनेदंत्तांतिकरंशिरस्सअणमाभि। सत्त॥ ३१॥ पत्तुपव

रिजापरत्तत्रयपरमधर्मो गायश्चनर्धेफलदाप्तायत्वांश्चर्धेनर्चयामि॥ अर्ध॥ जट्कचंदनतंडुलपु
 ष्पकैचरुसुदीपसुधूपफलाधैके॥ धवलमंगलज्ञानवाकुलै॥ जिनगृहेजिनवर्तमदंयजे॥ त्रैलोक्यं
 चमहाव्रतनैश्चादितेकरत्तावाननाधितसर्वव्रतंतकीपूजात्वांश्चर्धेनर्चयामि॥ अर्ध॥ जट्कचं
 दनतंडुलपुष्पकैचरुसुदीपसुधूपफलाधैके॥ धवलमंगलज्ञानवाकुलैः जिनगृहेजिनस्तेत्रप
 दंयजे॥ त्रैलोक्यं समेदशिवरत्नी गिरत्नारत्नी॥ चंपापुरत्नी॥ केलासजी मांगीत्तरी॥ जी॥ मोनांगरत्नीने
 श्चादितेयश्चटाई दीपकैविधैत्रिकालसंचंधी सर्वसिद्धत्वेनास्त्रसिद्धमहाजामिद्धपदनें प्राप्तुद्रवा
 त्याकोपूजाश्चनर्धेफलदाप्तायत्वांश्चर्धेनर्चयामि॥ अर्ध॥ अथपंचपरमेष्ठिजीकीजयमा
 त्नालित्व्यदि॥ प्रणम्य पण्डितसुरधरिपुत्रततया॥ पंचकद्व्याणसुखावलीपतया॥ दंसणं एकाएं
 ब्रह्मणं वत्तं तेजिणादितुश्चहं वरं मंगलं॥ अर्ध॥ जेहिजाणगिवाणेहिश्चदृश्यं जन्मजरमरणपर
 पंददृपं जेहिपतं जेवंसासयंवाणयं तेमहेदितुसिद्धवरं एणयं॥ अथपंचहानारपंचागिसंसाह्यावा
 रसंगारिसुयजत्तहिश्चकणाह्या॥ मोरकलचीमहंतीमहंतेसया॥ सरिणेहिं तुमोर्कागयासांया॥ अथो
 रसंसारजीमाडवीकाणै॥ तिरकविमरास्तएहपावपंचाणै॥ एठमगाएजीवाएयददेसंया॥ वेदि
 मोतेजवज्जायश्चहमेसया॥ अजातवपराणकरणेहिं जींणया॥ अमनंरजाण॥ सुक्केकजाणं गया॥ ए

मोमयायोगालिप्समकारिरह्योतिरव्योमतदाकृतकरी॥लोकादीरनदीप्रतिनीरणयेत्तरीर
येत्यनिकादी॥त्रिभुवनयोक्त्रसेशिवलोकातिनेंपाभोक्त्रिकालरमादी॥इतिस्तति॥उदकचंदनं
तपुष्पकैचरुसुदीपसुधूपफलादीकैधवलमंताज्ञानवाकुले॥जिनपदेजिनहेतुमहंयज
॥उद्दीर्घेनविश्रुद्धादिषोडशकारणेभ्योनमः॥इत्येनविश्रुद्धिश्चिन्नयसंपन्नता॥प्रज्ञीलत्रनेष्ट
रताप्रश्नमिदंज्ञानोपयोगाधिसंवेगाधज्ञातितस्यागादीशक्तितस्तपधामाधुसमाधि
प्रविद्यादत्तकल्याण॥प्रश्नहेतुनाकि॥इत्येवाचयेनाकि॥इत्येवकुरुश्रुतनाति॥इत्येववचननाकि॥इत्येव
वश्यकापरिहारी॥इत्येवसमागोप्रजावना॥इत्येववचनवात्सल्यत्वा॥इत्येवषोडशकारणेभ्योनमः॥इत्येव
न्यायत्वांश्चैवैवार्चयामि॥आर्घ्यं॥उदकचंदनतंडुलपुष्पकैचरुसुदीपसुधूपफलादीकैधवल
मंतागोनरवाकुले॥जिनपदेजिनधर्ममहंयजोम॥उद्दीर्घेनविश्रुद्धिसमुत्समुद्रवदशलक्षणिकयमेध
यनमं॥नतमत्तमा॥इमादवाप्रश्नार्जवप्रसत्प॥धारीच॥प्रसंयम॥दत्तप॥इत्याणाप्रश्नाकिंचन
॥प्रवृत्तचयार्थेत्तल्लक्षणिकधर्मोगायश्चनयेफलप्राप्तायत्वांश्चैवैवार्चयामि॥इत्येव॥उदकचंदन
तंडुलपुष्पकैचरुसुदीपसुधूपफलादीकैधवलमंतागोनरवाकुले॥जिनपदेजिनरत्नमहंयज
॥उद्दीर्घेनविश्रुद्धासम्पदइत्येनायनमं॥इत्येवनिधानापरस्परभूतानायायनमं॥नयोदशप्रकारसम्पत्त्वा

षेष्टवसुदेव्यविश्वमरेश्विमोहप्रसिद्धविश्वसुसिद्धसमूहएजामरणजितवीतविहारविम
 तितनिमेलनिर्हकारश्चैत्यचरितविदर्पविमोहप्रशीदविश्वसुसिद्धसमूहनेविवर्णविगंधविम
 नविलोचविमायविकायविशब्दविगोचप्रताकुलकेवलसर्वविमोहप्रशीदविश्वसुसिद्धसमूह
 ११॥ धृता छंदश्चसमयसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं परपरणीतिमुक्तं पद्मनंदीद्वयं च निखिलगु
 णनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं स्मरति नमति योगास्तोति सेनेति मुक्तं १२॥ नैर्द्धी एषो सिद्धाणं सि
 द्धचक्राधिपतये नमो नमः समतुल्यं चंद्रसंघं वीरियसुहसं तदेव प्रवगादणं त्रगुरुस्तद्युमन्महा
 अकणुलं तिसिद्धाणं सिद्धपरमेशी श्रद्धोपलब्धत्वां श्रद्धेनार्चयामि ॥ श्रद्धे श्रद्धस्तुतिं छंदः ॥
 श्रद्धिलश्रविनाश्री श्रविकारपरमरसधाम हो समाधान सर्वद्रव्यसहजश्रितिमहो भुक् भुक् श्रवि
 रुद्रश्च नादिश्च नंतं हो जगत्तसिरोमणि सिद्धसदाजयकतहो ध्यानश्रानिकरिर्मकलंकसर्वे सह
 नित्यनिरंजनज्ञानस्वरूपो हो राहो आपकगोपाकारसुप्रममननिवारिको तुमपरमात्मसिद्धप्रोप्तिर
 नायको १२ सवैया ॥ ध्यानकृतासनमंश्रि ॥ १२ धनजोकिदीयेरिपुएगनिवारो ॥ गोकहस्योवहुरुलोक
 नको वरकेवलज्ञानमयूखजया ॥ लोकश्रव्यो कवितोकनयजिनजन्मजरामृतपंकमषा ॥ सिद्ध
 नशोकवसैशिवलोकतिनेपाजोकत्रिकालहमा ॥ १२ तीर्थेनाथप्रणमकरैतिनकेगुणवर्णनमं बुधि

एतदेवमोसिद्धाणं सिद्धयमेष्टि नो नमः संपन्नं प्राणं हंसं वीर्यं सुखं मंतरे च अवाहणं च
एतथ मवावाहं अष्टगुणं हंति सिद्धाणं सिद्धयमेष्टि अत्र नैकं तप प्राप त्वं अर्थेन च यमि अर्थादि
॥ अष्टजन्मस्तु ॥ ॥ तैत्तिके अरवंदनी यवराणाः प्रायुश्चिपंशा अती याना र्थ्य निरुद्धं चं प्रमनसः सत
र्थिकएः सतसप्रक्त विबोधवीर्ये वित्रात्वावाधिता हेतुं ऐष्टे कं स्तानि हतो ष्वीमि सततां सिद्धं
शुद्धे द्यानाश्वीणा ज्ञात नशांता निरंश निरामय निर्येय निरैत्त हंसं सुधाप्रविबोधनि धान विप्र
प्रतिष्ठा विभु सुसिद्धसमूहं रूविद्वित संश्रितता व निरंशं समामृतपूरित देवि त्रिंशं अवं धकया
हीन विप्रो ह प्रसीद विभु सुसिद्धसमूहं अनिवारित दुःकृत कर्म विपाश सदा मल केवल केचि
रा जने दधि पाणशं ता विप्रो ह प्रसीद विभु सुसिद्धसमूहं अनंत सुखा मृत सागर धीय कस्त
कस्तो जगि र्जगि रसमी प्र विरवं चित्तमम विराम विप्रो ह प्रसीद विभु सुसिद्धसमूहं भुविका र विवर्जित त
र्जित गो क विबोध सुनेत्र वि लोक त्रि लोक वि बरा यै र्य ग विप्रो ह प्रसीद विभु सुसिद्धसमूहं
हिरंजो मल वेद विभु कि विगात्र निरंत र नित्य सुखा मृत पात्र सुदर्शन ए जित नाथ विप्रो ह प्रसीद
शुद्ध शुसिद्ध समूहं हिरंजो मल वेद विभु कि विगात्र निरंतर नित्य सुखा मृत पात्र सुदर्शन ए
जित नाथ विप्रो ह प्रसीद विभु सुसिद्धसमूहं नरा मर्यादित निरमेत जाव अनेत मुनी श्वर पूज्य

ए॥ हं स ए॥ वी॥ ये॥ सुहमंतः॥ हि॥ व॥ अ॥ वा॥ ह॥ ए॥ अ॥ गु॥ रु॥ ल॥ धु॥ म॥ च्वा॥ वा॥ हं॥ अ॥ ष॥ गु॥ ण॥ ह्ये॥ ति॥ सि॥ क्ष॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न॥
 लु॥ धा॥ वे॥ द॥ नी॥ रे॥ णा॥ वि॥ ना॥ श॥ ना॥ य॥ त्वां॥ नै॥ वे॥ द्ये॥ न॥ र्च॥ या॥ मि॥ नै॥ वे॥ द्यं॥ ॥ प्र॥ सह॥ ज॥ र॥ त॥ रु॥ चि॥ प्र॥ ति॥ दी॥ प॥ कै॥ रु॥ चि॥ वि॥ अ॥ र॥ ति॥ त॥
 प्रः॥ प्र॥ वि॥ ना॥ श॥ नैः॥ नि॥ स्त्रि॥ व॥ धि॥ सु॥ वि॥ का॥ श॥ प्र॥ का॥ श॥ नैः॥ सह॥ ज॥ सि॥ क्ष॥ म॥ हं॥ परि॥ पू॥ ज॥ यो॥ दि॥ ॥ ॥ ॥ ए॥ मो॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥
 मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ स॥ म॥ तः॥ ए॥ ए॥ द॥ स॥ ए॥ वी॥ ये॥ सु॥ ह॥ म॥ न्तः॥ हि॥ व॥ अ॥ वा॥ ह॥ ए॥ अ॥ गु॥ रु॥ ल॥ धु॥ म॥ च्वा॥ वा॥ हं॥ अ॥ ष॥ गु॥ ण॥ ह्ये॥
 ति॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न॥ मो॥ हं॥ ध॥ का॥ र॥ वि॥ ना॥ श॥ ना॥ य॥ त्वां॥ दी॥ पे॥ न॥ र्च॥ या॥ मि॥ ॥ दी॥ यो॥ दि॥ नि॥ ज॥ गु॥ ण॥ त्वा॥ य॥ रु॥
 प॥ स॥ ध॥ पु॥ नैः॥ स॥ गु॥ ण॥ धा॥ ति॥ म॥ त्वा॥ प्र॥ वि॥ ना॥ श॥ नैः॥ वि॥ श॥ द॥ वो॥ ध॥ सु॥ दी॥ धे॥ सु॥ रा॥ त्म॥ कं॥ सह॥ ज॥ सि॥ क्ष॥ म॥ हं॥ परि॥ पू॥ ज॥ यो॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ए॥ मो॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ स॥ म॥ तः॥ ॥ ए॥ ए॥ द॥ स॥ ए॥ वी॥ ये॥ सु॥ ह॥ म॥ न्तः॥ हि॥ व॥ अ॥ वा॥ ह॥ ए॥ अ॥ गु॥ रु॥ ल॥
 धु॥ म॥ च्वा॥ वा॥ हं॥ अ॥ ष॥ गु॥ ण॥ ह्ये॥ ति॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ अ॥ ष॥ क॥ र्मे॥ द॥ रु॥ ना॥ य॥ त्वां॥ धू॥ पे॥ न॥ र्च॥ या॥ मि॥ ॥ ॥
 ॥ अ॥ प्र॥ र॥ म॥ ना॥ व॥ फ॥ ला॥ व॥ लि॥ सं॥ प॥ द॥ सह॥ ज॥ ना॥ व॥ कु॥ ना॥ व॥ वि॥ शो॥ ध॥ पा॥ नि॥ ज॥ गु॥ ण॥ त्स्फु॥ र॥ ण॥ त्म॥ नि॥ रं॥ ज॥ नं॥ सह॥ ज॥
 सि॥ क्ष॥ म॥ हं॥ परि॥ पू॥ ज॥ यो॥ ॥ ॥ ॥ ए॥ मो॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ स॥ म॥ तः॥ ॥ ए॥ ए॥ द॥ स॥ ए॥ वी॥ ये॥ सु॥ ह॥ म॥ न्तः॥ हि॥ व॥
 अ॥ वा॥ ह॥ ए॥ अ॥ गु॥ रु॥ ल॥ धु॥ म॥ च्वा॥ वा॥ हं॥ अ॥ ष॥ गु॥ ण॥ ह्ये॥ ति॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ मो॥ त्वा॥ फ॥ त॥ प्र॥ ना॥ य॥ त्वा॥ फ॥
 ले॥ न॥ र्च॥ या॥ मि॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ए॥ मो॥ सि॥ क्षा॥ ए॥ सि॥ क्ष॥ पर॥ मे॥ हि॥ न्यो॥ न॥ मः॥ अ॥ ष॥ क॥ र्मे॥ द॥ रु॥ ना॥ य॥ त्वां॥ धू॥ पे॥ न॥ र्च॥ या॥ मि॥ ॥ ॥
 दी॥ प॥ धू॥ पेः॥ फ॥ त्तेः॥ य॥ च्चि॥ ता॥ म॥ णि॥ श्रु॥ क॥ ना॥ व॥ पर॥ मं॥ श्ना॥ ना॥ त्म॥ कै॥ र॥ च॥ ये॥ सि॥ क्षा॥ न॥ खा॥ ड॥ म॥ गा॥ ध॥ वो॥ ध॥ म॥ च॥ ल॥ सं॥ च॥ र्च॥ या॥ मो॥ व॥

परमैहि न्योनमः समतः ॥ एणं रंसणं वीरं सुरमंत हे कक्काहणं ॥ अणुत्तद्युमच्चावाहं ॥ अष्टगुणं होति सि
एंसिक्कपरमेहीत्ताज न्मज्जापट्ठुरेण विनाशनाय ॥ त्त्वं जले नार्चयामि ॥ जलं ॥ सहकर्मकत्तं विनाम
एतलनावसुआसितचंदनैः ॥ अनुपमानगुणवातिनायकं ॥ सहजसिक्कमहंपरिपूजये ॥ १ ॥ बुद्धी एमो
एंसिक्कपरमैहि न्योनमः समतः ॥ एणं रंसणं वीरं सुरमंत हे कक्काहणं ॥ अणुत्तद्युमच्चावाहं
ष्टगुणं होति सिक्का एंसिक्कपरमेही संसाएतापरैण विनाशनायत्तां चंदने नार्चयामि ॥ चंदनं ॥ रंसह
वसुनिमे लतं दुत्ते ॥ सकलदेवविनालवित्रो धनैः ॥ अनुपरोधसुबोधनिधानकं ॥ सहजसिक्कमहं
रिपूजये ॥ २ ॥ एमो सिक्का एंसिक्कपरमैहि न्योनमः समतः ॥ एणं रंसणं वीरं सुरमंत हे कक्काहणं
वगाहणं ॥ अणुत्तद्युमच्चावाहं ॥ अष्टगुणं होति सिक्का एंसिक्कपरमेही ॥ अत्तपपट्ठादायत्तां अत्तनेना
यामि ॥ ३ ॥ समयसारसुपुष्पसमालया ॥ सहजकर्मकरेण विशेषया ॥ परमयोगवत्ते नवरीक
सहजसिक्कमहंपरिपूजये ॥ ४ ॥ एमो सिक्का एंसिक्कपरमैहि न्योनमः समतः ॥ एणं रंसणं वीरं
रुमंतः हे कक्काहणं ॥ अणुत्तद्युमच्चावाहं ॥ अष्टगुणं होति सिक्का एंसिक्कपरमेही कामवाणिवेधं
यत्तां पुष्पे नार्चयामि ॥ ५ ॥ अत्तनबोधसुदित्यने वेद्यकैः ॥ विहिजात्रे जएणं तर्कैः ॥ निरवधि
प्रचुरात्तगुणालयं सहजसिक्कमहंपरिपूजये ॥ ६ ॥ एमो सिक्का एंसिक्कपरमैहि न्योनमः समतः ॥

दिवाकराः सुतताः सिद्धिप्रयत्ने तु नः । इच्छामि तेने चेदप्यनक्ति काजस्योक्तजतस्मात्तो चेज
 अहलोयतेरियतो यजहत्तोयमि किदिमा किदिमणे जाणि वि एचे रयाणि ताणि सचाणि ।
 तिसुवि तोय जव एवा सिप्रवाण्यं तरजोय सिप्रक मवा सिप्रति च जवि हा देवा स परि वार दिव्वे
 णांधेण सुप्पेण दिव्वेण धूपेण दिव्वेण चूणेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण एकाणेण णि च्चकात्तं च
 च्चत्ति पुज्जेति वंदंति एमं संति अहमनि इह संतो तस्य संता इणि च्चकात्तं च्चत्ति पुज्जेति प्रवत्ति मिए
 मंसा मिदु रक्कज क मरज वो हि ता हो सुगम एमं समा हि मणं जि एणु ए संपत्ति हो ज मर्क
 प्रप्य पुज्जेति क मध्याह्नि क अथ एह्नि क देव वंदनां पां पूर्वोच्चार्यो नुक्रमेण सकल कर्म लयार्थ
 जावपूजा वंदन्यस्य समेतं श्रीचैत्यनक्ति कायोत्सर्ग करोष्वहं । एमो अरहंता एणमो सिद्धा एणमो अ
 इरियाणं एमो नवज्जमया एणमो तो एस च सा रुणं तावकायं पावक मं दुश्चरियं वो सयमिं जय अ
 हे न्जाय एणं इति तत्त वंदनां संभूताः । न्धमिद्ध पूजा द्वा र्थतो न्दो धोरुतं स विंदु स परं क्रता स्य
 वे छितं चर्गि पूरित दिगा तां नुज्जत्तं तत्सं धित ता न्ति तं अंतः पत्रत दे सना हत युतं । कीकार स वे दि
 तं दिवें ध्यायति यः स मुक्ति मुजगो वै रीजकं चीर द्वा र्थ । परि पुष्पां जालिं च्चयेत् । निजमतो मणि ज्ञा जत
 जारया समरसे क सुधार स धारया सकल मो धक लार मणीय कं सह जा सिद्ध मरु प रि पुज्ये । ३३ की एमो रि

मित्रार्थी॥ अथ अहं जिमि चैत्त्या लयजयमात्मा॥ कत्या हा त्रिमचारु चैत्तानि लयानि तयो त्रितो
 तानां त्रिदे जावन वंता रघुति वरा कत्या मरा सर्वान्नास कं धात्त तपुष्पदम्प चरु के दीपे श्वभूपे फले
 है श्वपजे प्रणम्य गिरसा रु कर्मणं गंताये राणाया नम को हिसया पणवीसा॥ तरे प्रण
 सहस्रसावीसा नवसै ते अहियात्सा जिनपडिमा कृत्रिमा वंदे॥ त्रिह्नी॥ कृत्रिमा कृत्रिम चैत्त
 पसं धिजि न विवे ज्यो अर्थे नार्थे मामि॥ अर्थी॥ वर्षे पुर्वो तार एव ते यु॥ नदी स्वरे या नि चमंदे
 प्राचंति चैत्त्या यति नाति लोके॥ सर्वो णिवे धे जिन पुं गवातां॥ श्वरी नेत लगतं तां कृत्रिमा
 त्रिमा नां॥ वन न वना ता नां॥ दिव्ये नै मा नि कानां॥ इत्थम नु ज कृता नां॥ देवरा जा र्विता नां॥ जिन वर नि
 या नां॥ जाव तो हं स्परा मि॥ राजं वृधात की पुष्करार्ध वसुधा॥ जे त्रये ये न वा॥ अंजं नो ज शिखं डि कं व
 कनक द्वा ह ड दाना जिना॥ सप्प द्दान न च रिज लक्षणा धरा दया पृ कर्म धना॥ अज्ञाना गत वर्तम
 न समये ते ज्यो जिने ज्यो न म॥ अ॥ श्रीम न्मये कुला डोरा जत गिरि चो श्णा त्मत्तो जं वृहत्से॥ वक्षोर चैत्त
 ह वै एते क रारु च के कुंड ले मानुषां के रं खा को रेज ना डो द दिपु सव शिखरे वं तरे सर्ग लोके ज्यो ति लोके
 जिवं दे जुष न म हि त ले या नि चैत्त्या लया न॥ अ॥ श्लोकं दे दुरु पा र ह्य रथ वत्तौ द्वा विं दनी लक्ष नौ॥ श्लो वं
 धूक सम प्रजो जिन ह यौ है च प्रियं गुप्त नौ॥ श्लो॥ यो ह राज न्मप तुर हिता॥ संत प्रे म प्रजा से संज्ञान

मलञ्चनप्रश्नं तरी कजिहपरिहै जागिसारहो ॥ अतिसय श्री जिन नय जिन नय अतिसय वनदीसै ॥ सु
 रासुरमन मोहिये ॥ दातंति चोस चिमसुरयति छत्र नी नजु सोहिये ॥ जहां अमर अमर छरणी तागो ॥ हा
 वना वजु संतिया ॥ एणकु ऐकि मकरि चिम कनं चै चरण एणकु एण कं पिया ॥ एकजु नावै नावना ज
 गिसारहो ॥ पूजा करै डक चाव ॥ एक करै गुण वरण नां जगिसारहो ॥ पाठ पढै मन लाय ॥ मन लाय एकजु
 पै जु पाली एक करै एर नावनां ॥ एक तत्व सार विचार जासे ॥ सु ऐ अनेक महा जनां ॥ जहा मोक्ष माया स
 दा चा ले काल चो थो ही रहो ॥ सु विदेह देव सु देवता की औ राम दिमां को कहै ॥ दी कुं थ नाथ जिन कै समै
 जागिसारहो ॥ ज्यो वन रिया जिन एथ ॥ मुनि सुव्रत चारै लखे ॥ जगिसारहो ॥ जिन दिहा सुप्रसाद सुप्रसा
 द जिन जी के कोटि प्रव आधुमान प्रसा नियो ॥ जगाम चोवी सी विषैं कुल कर पुत्रे जो जिन जानिये ॥ स
 नवां जिन जी के समे गामो मेन्ह दे सुदिगं वर ॥ जावनां जावै जावसे तीरिय मुक्त स्वयं वर ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ श्री
 विदेह देव विरहमार तीर्थ करे ज्यो नमः ॥ श्री मंथर जी ॥ १५ ॥ मंथर जी ॥ १५ ॥ वाहु जी ॥ १६ ॥ सं
 जात क जी ॥ १७ ॥ स्वयं प्रजु जी ॥ १८ ॥ रुष जानन जी ॥ १९ ॥ अनंत वीर्य जी ॥ २० ॥ सरप न जी ॥ २१ ॥ विगाल क नीति जी
 १२ ॥ वज्र धर जी ॥ १३ ॥ चंद्रानन जी ॥ १४ ॥ त्रिदवाहु जी ॥ १५ ॥ सुपांम जी ॥ १६ ॥ देव र जी ॥ १७ ॥ नेम प्रन जी ॥ १८ ॥
 वीर सेन जी ॥ १९ ॥ महा न ड जी ॥ २० ॥ दिप्र प र जी ॥ २१ ॥ अजित वीर्य जी ॥ २२ ॥ वीराति तीर्थ करे ज्यो अर्थ न व

पंदि रजिन वंदस्मां जगि सार हो ॥ मुंडरी कणी जिन एय ॥ जं वृक्षी पवि दहं मै जगि सार हो ॥ मेरु पूरव
 शिजाव ॥ वरुजा वयुगामं धर जिने श्वर नमै सुख रना गे ॥ तसु वाहु नमो जु सुवाहु स्वाभी ने क गुण
 गारे ॥ पंच सै धनुष प्रमाण सो है कोटि रवि शसि लाज ये ॥ श्वर कहें न विषण सुणे ॥ जे जिन यात की
 एज ये ॥ संजात कजिन सेय स्यां जगि सार हो ॥ सोंति स्यं प्रजु देव ॥ रुध्र जानन प्रणमूं सदा जगि सा
 ॥ अन्नंत वीर्ये करि सेव ॥ करि सेव सरे पडु जिनें ज ॥ श्री विद्या तत्प्रजावनो ॥ वरव जु धर जिन यति नम
 तिचंद्र प्रज चंद्रायण ॥ चौ ती सत्र्यति समय एण गिरि ॥ समव सण सजा धण ॥ नागें चंद्रं चने द्रवं
 दंत निखिल ज जी वदया पण ॥ प्रमुख एई जिन सेय स्यां जगि सार हो ॥ लागो जिन जी कै पाव ॥ चंद्र
 मजिन चंद्र ज जोगि सार हो ॥ जिन सेयं पाति गजाय ॥ सव जाय पाति गजिन जुये गम जा न्नाय
 ॥ श्रुणे नो मि प्रजु जिन वीर से न जु महां न द्रय ती श्वरे ॥ देव प्रभु श्वर अजित वीर ॥ जी विहर मान म हाव व
 न द्धान केवल दीप दंपक वि श्वर तत्व चरण ॥ समव सण जिन को रज्यो जगि सार हो ॥ मान स्यं नम
 रंग चहु ॥ दिसि सरस सेषी जगि सार हो ॥ एव ई सजल तरंग सजल तरंग एव ई पुरुष बाही कोटती न वि
 ण जिये ॥ वन चार वेदी चारि सो है नाट्य सा लागा जिए ॥ श्वर नस्त प्रहर्मो बलि मनो हर चै म दत्त सुहावन
 प्रकप्र स्फाटिक मणि मर्द ॥ जहां सजा दह म्म जावनो ॥ ध ॥ जिहिं विचि सिंहा सण वणों जगि सार हो ॥ जभी रिक

एतज्जातयत्ताणुमहात्मणसि यस्य सुखणिहाणुयय च्चतन्तीति भरेण विधाणि प्रयापणमभिजिह्वि
 हवाणि प्रपयाणि सुवारहको हिमणु सुत्तरकतिगसि यजुति भरेण सहस्रञ्जवावणपंचविधाणि
 यापणमभिजिह्विहवाणि प्रकावणको हि नत्तकञ्जेवेव सहस्रचुत्तासीदिसया च्चकेव प्रद
 कवीसहगंधपयाणि प्रयापणमभिजिह्विहवाणि प्रधाता प्रयजिनववाणि विष्णुर्मर्देजो न
 यणणि यमणि धर्मो सुरणिरिंद्रं पृथ्वी केवलणणविजतरश्मिर्धर्मो स्मस्वती वाग
 दिनी दादशंगम्युतज्ञानेन्योनमश्नाचाण प्रस्त्रकतंग प्रस्थानागश्ममचायाग भवाराग
 शश्रंगमज्ञानधर्मिकथागदि जपास्काभयनागश्चततकतदशंग प्रश्ननुतरे पयादकदशंग
 एप्रहावाक्यण शो विपाकस्त्रांग प्रहादिवाद्यंग प्रानामधेय द्वादशंगम्युतज्ञानेन्यो त्वं भ
 नार्चेयामि ॥ अर्धं ॥ इति सरस्वती जयमाला संपूर्णे ॥ अथ गुरु जयमाला प्रारब्धतो ॥ न विद्यन्नवतार
 सोत्तरकारण प्रच्छिविति त्वपरतदणं तव कर्मश्च संगर्हदय धर्मांशो पाल्मि पंचमहश्चय ह
 द्यं वेदा मिमहारि सि सोत्तवंत पंचैदिय संजमजोग जुत जे पारहश्चंग हश्चण फसरंति जे च्चनद
 वदमुणि ध्युणंति ॥ यमादाणुसारिवरकोष्ठबुद्धि नयण जाहश्चायासरि स्त्रिजे पाणादारी तै प्रणीय
 एकमुत्तश्चातावणी यश्च जेमौ एधाय चंदाहिणीय जे जस्य पवणे णि वासणी य जे पंचमहश्चय ध

तिहिं॥ ५॥ इति नमस्तु॥ संध्यां नैवेद्यं दत्त्वा दिसहवीर्यं तत्र तूर्वेनातितीर्थं करेभ्योऽन्नार्घ्यं फल
 प्रक्षालयत्वांश्चैव नार्चयामि॥ अर्घ्यं॥ अथ जिनवाणी कथेज्यमस्तु॥ अथ तै॥ संपदं सुहकारणकमविघ्न
 ण॥ नवसमुद्रतारणतरणं॥ जिनवाणी॥ मस्मिमिसतिपयासमिसगामोदसंगमकरणशृङ्खलं जि
 णंदमुद्राजविणिगायतारणं॥ इदं विगुं किं यांयपयाय॥ तिलोयद्रमंडणधम्महराणि॥ सयापणमा
 मिजिणंदहराणि॥ यश्च वगादईदश्च वायज्जुएहिं॥ सुधारणनेयहिं॥ तिस्रएहिं॥ मई॥ चतीसपऊपमु
 द्वाणि॥ सयापणमामिजिणंदहराणि॥ प्रसुदं पुणदेणि॥ अणेयपयार॥ सुवारदनेयजातयसार॥ सु
 दणं॥ इदं समस्मिज्जजाणि॥ सयापणमामिजिणंदहराणि॥ भजिणंदणं॥ इदं एरिंदरुं किं॥ मया सद
 पुणपुणकिं॥ नलकिं॥ एजगुपहिं॥ इज्जएहुविं॥ याणि॥ सयापणमामिजिणंदहराणी॥ भज्जलोयन्नवे
 पञ्चतकरे॥ इज्जुतिणि॥ विकालससस्त्रणे॥ चजगार्हेत्तस्काएदुज्जज्जाणि॥ सयापणमामिजिणं
 दहराणि॥ इति॥ जिएंदच्चीरेतुविचिंतुमुणेरु॥ सुसावयधम्मऊज्जुतिजणे॥ इति॥ एजगुवित्तज्जजरुहुवि
 याणि॥ सयापणमामिजिणंदहराणि॥ भसुजीवश्चजीवहतस्सहरत्तुसुपुणविपावाविबंधविमुक्तुं॥ न
 उच्छुणि॥ एजगुविनासरुणणि॥ सयापणमामिजिणंदहराणी॥ पतिनेयहिं॥ जहिं॥ विणुविचिंतुं॥ न
 उच्छुणि॥ जोजि॥ विज्जंतं॥ मरुजतु॥ सुखा॥ इयकेवत्तण॥ एनविणु॥ सयापणमामिजिणंदहराणि॥ पजिणंदरुं॥

ते सुप्रसुप्ते एषा ॥ प्रजिता विमल त्विष ॥ प्रजिता नरता हे श्रेष्ठ ॥ नये दे नैति नरी नि ॥ चतुर्वैधस्य
 त्रिणिकुर्वेत्तु शश्वती प्रार्थ ॥ जिने नक्ति जिने नक्ति ॥ जिने नक्ति ॥ सदा स्तुभे ॥ सप्त तमेव संसारं
 एणं मोक्षकारणं ॥ अते नक्ति श्रुते नक्ति ॥ श्रुते नक्ति सदा स्तुभे ॥ सदा तमेव संसारं ॥ एणं मोक्ष
 एणं प्रसुप्ते नक्ति ॥ गुणे नक्ति गुणे नक्ति सदा स्तुभे ॥ चारित्र्यमेव संसारं ॥ एणं मोक्षकारणं ॥ अथ
 ५ धर्मात् ॥ वता एषा एषा एषा एषा एषा ॥ सिजतु रूखत धरा तव चरण विहाणे ॥ केवल एणे
 रुपरमेष्प रुपरमपल ॥ पदरी कंद ॥ जय फल सेह रुसी सर एण मिय पाया ॥ जय अजिय जियंग यरे सण
 जय संजव संजव कय विर्जेय ॥ जय अहि एंद एणं दिश पजय ॥ जय सुमद सुमद सप्प पया स ॥ ज
 पन मण्ह पज मणि वास ॥ जय जय हि सुपा स सुपा साता ॥ जय चंद पद चंद हवत ॥ जय पुष्प दंत दं
 रं ॥ जय सीय लसीय लवय एसे हि गाण ॥ जय जय हि अणं ता एंत एण ॥ जय धम्म धम्म ति स्थिर संत ॥ ज
 य संति संति विहि या हि वत ॥ जय कुंशु कुंशु पदु अंमि सदा ॥ जय अर अर माह र विहि य स मय ॥ जय मदि
 मदि अत्ता मगंधा ॥ जय मुणि सुवय सुवय एवंध ॥ दिजय एणि एणि मिय मरणे पर सा मि ॥ जय एणि धम्म र
 हव कणे मि ॥ जय पास पास किंद एण किवा एण ॥ जय वट्ट माण ज सवट्ट माण ॥ प्रता ॥ द्यजाणि द्य एण मदि
 वरिय विया मदि ॥ पद हि विण मिह सुग व ति हि ॥ अणि ह ए हि अण द हि ॥ स मिय कुवा र हि ॥ पण विक्ख रंता व

नवादिष्य॥ तर्हि देवशास्त्रेण नमः हे सर्वे देवज्ञेन तच्चतुष्टयत्तमी करि विराजमानश्च
 दहनायत्वाधूयेनार्चयामि॥ तर्हि प्रमाणनयाज्ञैतस्मादादृजिनववनहेजिनवाणीमाताश्रय
 दनायत्वाधूयेनार्चयामि॥ तर्हि ज्ञात्वा ज्ञाचार्योपाध्याय सर्वे साधुसम्पत्तत्रयके साधक
 मे दहनायत्वाधूयेनार्चयामि॥ धूपं॥ चतुर्थादितुभ्यमनसा प्रणम्या कुवादिवात्सल्य
 न॥ फलैरत्नमोक्षफलानि सारैर्गजिनेन्द्रसिद्धांतयतीत्यजेत्स्व॥ तद्दे॥ जो जैसी कर
 ॥ फलत्वेना॥ फलपूजा जिन एजकी॥ निश्चेश्चि न फलत्वेनाप्रफलफलसम्बन्धे फलपद
 दफलनादि॥ महामोक्षफलतुमलस्योपातैर्पूज्याया॥ हे जिनेंद्रसंसारसुखहैदुःखरूप
 जाजा सुमपदफलसंस्पर्जि ह्यमोक्षदेहमहाएजा॥ अपरमचारि नृदत्त एपि कै न पजायो फ
 रुसेव फलजुतकीपा॥ सो फलद्योविधि सौख्य॥ तर्हि देवशास्त्रेण नमः हे सर्वे देव
 ते चतुष्टयत्तमी करि विराजमानमोक्षफलप्राप्तायत्वा फलैर्नार्चयामि॥ तर्हि ज्ञात्वा र्येजपाध्या
 वे साधुसम्पत्तत्रयके साधकमोक्षफलप्राप्तायत्वा फलैर्नार्चयामि॥ तर्हि ज्ञात्वा र्येजपाध्या
 साधुसम्पत्तत्रयके साधकमोक्षफलप्राप्तायत्वा फलैर्नार्चयामि॥ फलं॥ एतस्मादिरेण
 तपुष्पजातौ निवेद्य दीपमालाधूपधूपं फलैर्विचित्रैर्घनपुष्पयोगात्वा जिनेंद्रसिद्धांतयतीत्यजेत्

नन्विषामि॥ नेवेद्यं॥ भ्रस्तोद्यमांभीकृतविश्वविश्व॥ मोहं धकारः प्रतिप्राप्तिदीपनादियैर्केन त्कं च
 न पात्रसंस्थे॥ जिनें द्रसिद्धं तयतीत्यजे हमादिहोहा॥ जातश्रं धन्नालसनसो॥ स्वपरजेद नहीपाय
 उज्जलदीपकतुमचरण॥ प्रजिवोधसुधयाया॥ यथापापमहेते सकल॥ निशिमं दीपकलेतदीपक
 संजिनपूजितं॥ निर्मेलज्ञानजद्योता॥ यहिजिने द्रश्चज्ञानघन॥ छायरह्योममप्राण॥ दीपकसंस्पदपूजि
 ह्नादिहर्त्तनसम्पकज्ञाना॥ अकेवलज्ञानकिरणभयै॥ प्रकटनयेतुमज्ञानाहरोमोहचक्रतमनकुं॥
 मोहिमेदिश्चान्ना॥ नृद्धी देवशास्त्रगुरुभ्योनमः॥ हे सर्वज्ञदेव जगतत्तुष्टयलक्ष्मी करिविराजम
 नमो हं धकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ निर्द्धी प्रमाणनयगानितस्यादादजिनवचनहेजिनवाणी
 मातामोहं धकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ निर्द्धी श्वाचयेन पाध्याय सर्वसाधुसम्पकटनय
 केसाधकमोहं धकारविनाशनाय त्वां दीपेनार्चयामि॥ निर्द्धी दुष्टाष्टकर्मैधनपुष्टजालः संधूपनेन
 सुधूपकेतनाधूपेर्विधूताप्यसुगंधांघौ॥ जिनें द्रसिद्धं तयतीत्यजे हं॥ होहा॥ अहे कर्मैर्धनप्रक
 तुमप्रजुजालनरायाधूपसुगंधी॥ वेदकेहं रुं रुं रश्चधनाया॥ पावकदहसुगंधकुं धूपकहवैसोय
 येवताधूपजिनेशकुं श्रष्टकर्मैत्तय होया॥ यहिजिनें द्रमे कर्मैरिपु॥ जालनकुं मनाया॥ पदपूजं वसुधु
 प्रसह्यो कर्मैदुलकाया॥ श्रष्टकर्मैर्कुं दधकारिप्रगतश्चष्टण॥ एधाणि श्रष्टयण ऊपरवसेमो विधिश्चष्ट

पिं० र
रु० र
ड० र
न० र

नेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयान्तिस्मरन् रज्जिनवचनहेज्जिनवाणीमातासंसारतापयोगिक्व
 णानायत्वाचंदनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसम्पत्करत्नत्रयकेसाधकसंसारताप
 णेणविनाशनायत्वाचंदनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं अक्षयारसंसारमहासमुद्रप्रोत्तारणेप्राज्यतरीन्सुभक्त
 र्हीर्धोत्तारोगेध्वस्तात्ततोधेज्जिनेन्द्रसिद्धंतयतीनयजेहं॥ ॐ ह्रीं तं ब्रह्मध्वत्तपवित्रश्रुतिनाम
 सुभक्ततासंश्रुतसज्जिनपूजिहं॥ अक्षयपदपरकामाक्षित्वात्तणजन्मसुधारिकेनयोनज्ज
 न्प्रपमानं ब्रजलश्रुततनुमचरन्॥ पूजितहं शिवध्यानं॥ रहेज्जिनेन्द्रसिद्धिणि विधेः॥ धारिधारि
 परिणय॥ ॐ ह्रीं नमोऽश्रुतजज्जं॥ पदश्रुतपदराया॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योनमः॥ हे सर्वज्ञदेव॥ अनंतचतुष्ट
 यन्नरुसेवकश्रुत्यकीये॥ मोक्षक्षयपदराया॥ ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योनमः॥ हे सर्वज्ञदेव॥ अनंतचतुष्ट
 यत्तन्मीकरिविराजमानश्रुत्यपदप्राप्तायत्वांश्रुतनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं प्रमाणनयान्तिस्म
 रज्जिनवचनहेज्जिनवाणीमाताश्रुत्यपदप्राप्तायत्वांश्रुतनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायस
 र्माधुसम्पत्करत्नत्रयकेसाधकश्रुत्यपदप्राप्तायत्वांश्रुतनेनार्चेयामि॥ ॐ ह्रीं अक्षयारसंसारमहासमु
 विबोधस्योनामयोसुचर्यो कथनैकधूर्यो नकुं दारविंदप्रमुखप्रसन्नैः॥ जिनेन्द्रसिद्धंतयतीनयजे
 हं॥ ॐ ह्रीं कामवाणपुष्पेहरो॥ सोतुमजीनेराययातैर्मेपायनपदं॥ कामवाणानसिजाय॥ ॐ पुष्पच

मेः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीत्रांति॥ श्रीकुंयुः स्वस्ति॥ स्वस्ती श्रीअः नाथः॥ श्रीमहि स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीमुनि सु
 ॥ श्रीनामिः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीनेमि॥ श्रीपार्थः स्वस्ति॥ स्वस्ती श्रीवर्द्धमानः॥ छंदजे पेंद्रवजा निता प्रक
 तकेवलौ धा सुपुनमनः पर्येय भुञ्चो धा॥ दिव्या वधिरानव लप्रबुद्धः स्वस्ति क्रियासुः परमर्ष
 नः॥ अतो दस्य धानोपममेकवीजं॥ संनिचसं श्रोतयत्तुमरि चतुर्विधं बुधिवलं दधानाः स्वस्ति कि
 । सुपुमर्षयो नभः संप्रवेनं संप्रवणं च दृष्ट्वा॥ दास्ता दनाद्या णि विलेक नानि॥ दिव्या न्मतिज्ञानवत्ता
 हंतः स्वस्ति क्रिया सुपुमर्षयो नः॥ अत्राप्रधानाः अवणाः समृद्धाः प्रत्येक बुद्ध्या दश सर्वपूर्वैः प्र
 देनोष्टां निमित्तविज्ञाः॥ स्वस्ति क्रिया सुपुमर्षयो नः॥ अणित्ति दत्ताः कुत्रात्ता महिम्नि॥ लघिनि
 ः कृतिनो गिरिनि॥ मनोवपूर्वो गयत्ति नश्च निरुं॥ स्वस्ति क्रिया सुपुमर्षयो नः॥ प्रसक्तमस्य
 त्वेव सित्वमैश्र्यं॥ प्राकाम्यमंतर्द्वि मया क्षिपामाः॥ दाया प्रविधातुण्य प्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परम
 योनः॥ दृजं धावलिश्रेणि फलां वृत्तं तु॥ प्रसन्नवीजं कुर्यात्पां द्वाः॥ ननो गणै रैरे विहरण्य स्व
 स्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ अक्षं च तद्वचमस्तथो ग॥ चो रंतपो द्योरपर क्रमाश्च॥ ब्रह्मा परं द्यो गु
 ॥ अंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ अमर्षे सर्वेषां यस्तथा गो॥ विषयि क्पा दष्टि र्विषयि क्पा
 ॥ अविहृविडजस्तपत्तौ षधीश्च॥ स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ए॥ दीरं प्रचंतो न यतं प्रचंतो मधु

ह्यवाचकं परमेश्विनः सिद्धचक्रसप्तसीजं सर्वतः प्रणमामहं । कर्मोष्कविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी
 निकेतनं सप्रत्कादिगुणोयेतं । सिद्धचक्रं नमामहं । हे नोदहते साहाय्यसंपातिलकाच्छंदः श्री
 प्रच्छिनेंद्रमजिवंद्यजगत्त्रयेणं । स्मादादनायकमनंतचतुष्टयाहे । श्रीमूलसंघसुदृशं सुकृते कहेतु
 जेनेंद्रयज्ञविद्येयमया अभ्यासि ७ । स्वसिन्निलोकगुरवे जिनमुंवाया । स्वसिन्नजगमहि मोदयसु
 स्थिताय । स्वसिन्नकाशसहजोर्जितदृगमकाय । स्वसिन्नसन्नल्लिताद्भुतैवेजवाय । नः ससुहृत्
 हिमलवोधसुधाक्षवाय । स्वसिन्नजावपराजाविनाशकाम । स्वसिन्निलोकाविततैकनिद्रकामा
 य । स्वसिन्निकात्सकलायतनिस्तताय । एवमस्य शुद्धिप्रधिगामयथा नुरूपं । नावस्य शुद्धिम
 धिकामधिगंतुकाम । ज्ञात्वं नानिविधान्यवतं विवल्तान् । नार्थं यन्नपुरुषस्य कणेभि यज्ञप्र
 १० । अर्हन्पुण्यपुरुषोत्तमपावननि । वस्तुनि नृत्तमखिलाभ्ययमेक एव । अस्मिन्नज्वलादिप्रत्के
 नलवोधवन्नोपुण्यं समग्रमहमेकमनजुहोमि २१ । हे नोदहते साहाय्यसंपातिलकाच्छंदः श्री
 मुञ्जालिंक्षिते । श्रीहृषग्नः स्वसि । स्वसि श्रीअर्जित । श्रीसंजवः स्वसि । स्वसि श्रीअनिनंदनः
 श्रीसुप्रतिः स्वसि । स्वसि श्रीपद्मप्रजः । श्रीसुपार्थस्वसि । स्वसि श्रीचंद्रप्रजः । श्रीपुष्पदंतः स्वसि ।
 स्वसि श्रीगीतलः । श्रीश्रेयान्नस्वसि । स्वसि श्रीवासपुज्यः । श्रीविपलः स्वसि । स्वसि श्रीअनंतः । श्रीध

एण जयन्तीत॥ तुम पद जल सूपूजि हं॥ मिटे डूःख विपरीत॥ ५॥ हि जिनें छ जल संज जं॥ हरे ज म
 भुत जाल॥ निमेल सुख मय स्वासती॥ मोक्ष हे कृत फल॥ ३॥ तुम पवित्र पद पूजिकें॥ जय पवित्र
 चरु जीव॥ मोपवित्र श्रवकी जिणे॥ मिटि विनाव सदीव॥ ४॥ नुं छ हि वणा स्वगुरु न्योनमः हे सर्व हरे
 वश्र नंत चतुष्टय लक्ष्मी करि एज मान जन्म जण मृत्यु एण विना श्रानाय तं जले नार्क्या मि॥ नुं
 छी॥ प्रमाण नया नैत स्या द्वाद जिन वचन हे जिन बाणी॥ पाता जन्म जण मृत्यु एण विना श्रानाय
 तं जले नार्क्या मि॥ नुं छी॥ श्राव्याये जण ध्याय सर्व स्या धुस मकर जत्र पके स्या धक जन्म जण
 मृत्यु एण विना श्रानाय॥ तं जले नार्क्याये मि॥ नुं जलं॥ ताम्पि त्रिलोकोदर मभवर्ती॥ समस्त स
 रवा हित हरि वाक्या न॥ श्री चंदने गंध विलुट्य श्रंगे॥ जिनें द्रसि द्वांत यती नय जे ह मर देहा
 त प्रवस्तु ग्रीत ल करै॥ चंदन ग्रीत ल श्राप॥ चंदन सृजिन पूजिता॥ मिटे मोह संताप॥ २॥ सारी
 र कमानुष विविध॥ दोष जाल त उफेय॥ तुम पद चंदन पूजिता॥ त्वांति सुर ससुख लेय॥ महि जि
 नें छ जागे में तप ते नयो श्रव नंतो काल॥ चंदन संपद पूजि हं॥ हरि नवा ताप जंजात्वा॥ निज श्राना
 य मिटाय प्रभु॥ मे टन पर श्राना ताप॥ तीर्थ कर पदधारिणे॥ मोहि मे टि कृत पाप॥ ४॥ नुं छ हि वणा स्वगुरु
 न्योनमः हे सर्व हरे वश्र नंत चतुष्टय लक्ष्मी करि एज मान संसार तापे ग विना श्रानाय तं कं

अवंतोपपुते अवंतः। त्वत्तीणसंवा समहानसाश्वास्ति क्रियसुः परमपयो न भवे। इति स्तुतिः।
 लविधानो॥ अथ तं हृदं॥ सर्वः सर्वज्ञाथः सकलतनु च तं पापसंतापहृते॥ त्रितो वया क्रोत की
 तिः। त्वत्पदं त्रिपुटो तिकर्म प्रणमं॥ श्रीमान्निर्वाणसंपं ह्युवते कएत्वी दकं उसुकं वे॥ इदं दे
 वं धपादे जयति जिनपतिः॥ मातृक त्स्मण पूजा भय जय जय श्री सत्क्रोति प्रजो जगतां
 पते॥ जय जय नवाने वस्वामी नवाने मिस्रजतां॥ जय जय प्रहामो हृदं त प्रजात कते चैनं जय
 जय जिने शत्वं नाथ प्रगीदकरो महां। इत्युच्चार्य जिनमूर्तिमग्रे ध्यात्वा जलिनं दधेत्॥ जिन च
 हण पूजनमूर्तिना॥ तद्देव लं दं॥ देवी श्री भुवने देवते जगवति त्वत्पादपंके लं॥ इदं यामि शि
 मुय त्वत्पदं न त्वामय प्राप्यते॥ मातश्चेति त्वमे जिनमुचो ह्रुते सदा त्वाहि मां दृष्ट्वा नेन मयि प्र
 त्रीदं जवती संपूजयामो धुना॥ शब्दं तु चो यो मुदं च दृष्ट्वा प्रोक्ष्य भोजं लिनं दधेत्॥ मुदं चो पूजनमूर्ति
 त्वां संपूजिष्यामि पूजस्य पादपक्ष्मणेण॥ तपः प्राप्नोति त्वत्पादं गिरि हस्य प्रह्लाद मनः॥ इत्युच्चार्य
 हृदं दृष्ट्वा ग्रे ध्यात्वा लिनं दधेत्॥ अथ हृदं दृष्ट्वा दधेत्॥ देवं द्रजागे द्रनरं द्रवं धानां भुंजत पदान्म
 भित्तमावणेन॥ इध्यादिसंस्पर्धेणै जे ह्ये दो॥ जिने द्रसि ह्यंत यती नप जे ह्ये दो॥ माति न वस्तु ज
 लकौ॥ ग्रह स्वजा वल मालि जल संजिन पद पूजितां कर्म कलं कमिदि जाय॥ इति च नमू॥ ति श्रामा जम

मेः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीग्रांति श्रीकुंभुः स्वस्ति प्रससी श्रीअः नाथः श्रीमहि स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीमुनि सु
 ॥ श्रीनामिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमि श्रीपार्थः स्वस्ति स्वस्ती श्रीवर्द्धमानः चिंदनेपे द्वजानि त्पाप
 तकेवलौघा सुफटनमनः पर्येप भुङ्क्वोधा दिव्यानामिज्ञानवत्तप्रबुद्धः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षे
 नः कोटस्थधान्योपममेकबीजं संनिचसं श्रोतपत्नसमि चतुर्विधं बुधिवत्तं दधानः सः ।
 सुपरमर्षेयो नभः संस्पन्नेन संश्रवणं च दह दत्तादनाद्याणिवित्ते कनानि दिव्यान्मतिज्ञानवत्ता
 हंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षेयो नः ॥ ३ ॥ प्रज्ञाप्रधानः श्रवणः समृद्धः प्रत्येकबुद्धादत्तासर्वपूर्वैः प्र
 नोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षेयो नः ॥ ४ ॥ अणिनेदत्ताः कुशलागहिभिः तार्धो
 क्ताः कृतिनो गिरिति मनोवपूर्वागवत्तिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासु परमर्षेयो नः ॥ ५ ॥ प्रवन्नमरुप
 त्वेव सित्वमैश्र्यं प्राकाम्यमंतर्हि मध्यादिमाप्ताः तथा प्रतिधातुण्यप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परम
 र्षेयो नः ॥ ६ ॥ जंघावल्जिश्चोणिफलां वृत्तं तु प्रसन्नबीजांकुत्कारणं कान्नोपाणत्वेरिव हारणश्च स्व
 स्ति क्रियासुः परमर्षेयो नः ॥ ७ ॥ दक्षं च तप्तं च महत्तयो गं वारंतपोघोरपराक्रमश्च ब्रह्मापरं घोरगु
 षं च तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षेयो नः ॥ ८ ॥ आमर्षे सर्वोषधयस्तथा गोविषं विषं विषादं हि विषं विषा
 दं च सखि ह्यविडजस्त्रपत्नौषधीश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षेयो नः ॥ ९ ॥ दीरं श्रवं तोनयनं श्रवं तोनयनं

स्वान्नकंपरमेहिनः सिद्धचक्रसप्तदीप्तं सर्वतः प्रणमामहं । कर्मोष्कविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी
 निकेतनं सप्रत्कादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमामहं । दिर्ज्ञो ह ते साहाय्यं संस्तुति लकाच्छंदः श्री
 प्रज्जिनेन्द्रमनिवंदजगन्नेत्रेणं । स्मादादनायकमनंतचतुष्टयाहं । श्रीमूलसंघमुदग्रं सुदृढं ते कहेतु
 जेनेन्द्रजगदिद्रेषमया न्यायि ७ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनमुं गावाय । स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसु
 स्थिताय । स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ध्वितट्टमवाय । स्वस्ति प्रसन्नलज्जिताङ्गुतैवेजवाय ८ ससुखल
 क्षिप्तलवोधसुधास्रवाय । स्वस्ति स्वभावपरजाविनाशकाय । स्वस्ति त्रिलोको वितते कनिष्ठकामा
 य । स्वस्ति त्रिनालसकलाय तविस्तताय ९ इत्यस्य श्रुद्धिप्रधामयथा नुरूपं जावस्य श्रुद्धिप्र
 धिकामाध्यां तु कामः । आलंवनानि विधान्यवत्तं विवत्तान् । नार्थे यन्नपुरुषस्य कणोपि यन्नप्र
 र्थं च ह नमुण्यपुरुषोत्तमपावनानि । नस्तु निरन्तरमखिलाभ्ययमेक एव । अस्मिन्नज्जलक्षिप्तक
 वलवो धव क्रोमुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ११ । त्रिंक्षेपद्रव्यं तन्नाम । जिनेन्द्र तिमोर्ध्व
 मुष्मं जलं क्षिपेत् ॥ श्रीचक्रः स्वस्ति । स्वस्ति श्रीचक्रित श्रीसंजवः स्वस्ति । स्वस्ति श्रीचक्रितं नन्दनः
 श्रीसुप्रतिः स्वस्ति । स्वस्ति श्रीपद्मप्रजनः श्रीसुपार्श्वस्वस्ति । स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रजनः श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति ।
 स्वस्ति श्रीशीतलः । श्रीश्रेयान स्वस्ति । स्वस्ति श्रीवासुपुत्रः । श्रीविमलः स्वस्ति । स्वस्ति श्रीअनंतः । श्रीध

तो न व न व व प ट स चि धा प नं ॥ ए ॥ अथ स मु च्च य दृ ज्ञा प्रा र ज्ये तो ॥ उ द क चं द न तं दु त्त पु ष्य कै व र सु
दी प क धृ ष फ त्ता द्ये कै ॥ ध व ल मं ग ल गान र वा कु ले ॥ जि न गृ ह्ने जि न र स म हं य जे ॥ १ ॥ ॐ श्री अ र हं त रि
हं त्वा यो पा ध्या य सर्व स धु जि न व च न द र्शे न वि श्रु क्त्वा दि शो ड श का र ए न त म त्त मा दि द स ल त्त यी क
र त्त त्र य पर म धर्म त्वां अ र्धे न च्छे पा मि ॥ अ र्धं ॥ अथ वि श्वे ध दृ ज्ञा प्रा र ज्ये तो ॥ ॐ न म ॥ सिद्धं न्य ॥ ॐ न म
सिद्धं न ॥ ॐ न म ॥ सिद्धं न्य ॥ ॐ न म ॥ जय ॥ जय ॥ न मो स्तु ॥ न मो स्तु ॥ न मो स्तु ॥ ए मो अ रि हं ता ए ॥ ए मो
सिद्धा ए ॥ ए मो अ या रि या ए ॥ ए मो ज व ज्ज य ण ॥ ए मो लो ए स व स र ह ॥ ए ॥ अ दि मं त्रे च्च ना दि मं त्रे
न म ॥ श्री च तारि मा लं ॥ अ र हं त मं ग लं ॥ सिद्धं मं ग लं ॥ स र हं मं ग लं ॥ के व लि प ण तो ॥ ध म्मो मं ग लं ॥ च
तारि लो गु त मा ॥ अ र हं त लो गु त मा ॥ सिद्धं लो गु त मा ॥ स र हं लो गु त मा ॥ के व लि प ण तो ॥ ध म्मो लु गु त
मा ॥ च तारि सर णं प च्च जा मि ॥ अ र हं त सर णं प च्च जा मि ॥ सिद्धं सर णं प च्च जा मि ॥ स र सर णं प च्च ज्ज मि
के व लि प ण तो ॥ ध म्मो सर णं प च्च जा मि ॥ ३ ॥ अथ वि नः प वि नो वा ॥ सु स्थि तो ज स्थि तो पि वा ॥ ध्या ये त् यं च
न म स्तु तं ॥ सर्व पा पे श्च मु च्य तो ॥ १ ॥ अथ वि न य वि न य ॥ सर्व व स्था ग तो पि वा ॥ यः स्म रे त् प र मा त्मा नं स
वा स्था नं त रे शु चि ॥ २ ॥ अथ प र जि त मं त्रो यं ॥ सर्वे वि द्म वि न म नं ॥ मं ग ले षु च्च सर्वे बु ॥ प्रथ मं मं ग लं म त ॥
३ ॥ ए सो मं च ए सो पा रे ॥ स व पा पः प ण स णो ॥ मं ग ल ए च्च सर्वे सि प ट मं हो य मं ग लं ॥ ४ ॥ अ हि मि त् स त् रं च

समे पूजा
६

नां॥ नुं॥ एमो लोएसवसारुणं सर्वसाधुपरमेष्ठिनश्चनावतरावतरासंबोषट्शक्लाननं॥ नुं॥
एमो लोएसवसारुणं सर्वसाधुपरमेष्ठिनश्चनावतिष्ठः तिष्ठः वः वः स्थापनं॥ नुं॥ एमो लोएसवसा
दूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिनश्चामपसन्निहितो नवनववषट्सन्निधापनं॥ नुं॥ प्रमाणनयगान्तिर
स्यादादजिनवनश्चनावतरावतरासंबोषट्शक्लाननं॥ नुं॥ प्रमाणनयगान्तिरस्यादादजिनव
वनश्चनावतिष्ठः तिष्ठः वः वः स्थापनं॥ नुं॥ प्रमाणनयगान्तिरस्यादादजिनवनश्चामपसन्निहितो
नवनववषट्सन्निधापनं॥ नुं॥ द्यो न विभुश्चादिद्यो हसकराणश्चनावतरावतरासंबोषट्श
क्लाननं॥ नुं॥ द्यो न विभुश्चादिद्यो हसकाराणश्चनावतिष्ठः तिष्ठः वः वः स्थापनं॥ नुं॥ द्यो न विभु
श्चादिद्यो हसकाराणश्चामपसन्निहितो नवनववषट्सन्निधापनं॥ नुं॥ उत्तमत्प्रादिदशलक्षणीकपरमधर्म
क्षणीकपरमधर्मश्चनावतरावतरासंबोषट्शक्लाननं॥ नुं॥ उत्तमत्प्रादिदशलक्षणीकपरमधर्म
श्चनावतिष्ठः तिष्ठः वः वः स्थापनं॥ नुं॥ उत्तमत्प्रादिदशलक्षणीकपरमधर्मश्चामपसन्निहितो न
वनवषट्सन्निधापनं॥ नुं॥ सम्प्राद्वो न सम्पक्ज्ञानसम्पक्चात्रिजलत्रयपरमधर्मश्चनावति
ष्ठः तिष्ठः वः वः स्थापनं॥ नुं॥ सम्प्राद्वो न सम्प्राज्ञानसम्प्राचात्रिजलत्रयपरमधर्मश्चामपसन्निहि

[illegible]

चत्तैसुरस्वचरन्त्यपि किं फटिककोटसो न्यायमानं च नो गुणं लब्धं जानन् ॥ १॥ मधिसंज्ञावनीध्वद
 म्भनृपः सितचंद्रक्रांतिमणि कीर्तय ॥ जयगंधकुटीश्वामोदसारं ॥ भुजगिरा कलसजद्योतक
 रं ॥ जयश्याद्विषोडशसिवाणामनुषोडशभावनेनिधानं ॥ जयद्वितीयपीठवसुगुणस्वदय
 जयतृतीयपीठवसुजलस्वायं ॥ जयस्मिम्पीठपरकवलसाराजिनश्चतरीकश्चाननसुभारज
 यनामंडलविकेठानं ॥ जयछत्रतीर्तेशसितजानं ॥ २० ॥ जयतस्तुभ्यो कर्तेशो कदरं ॥ जयविवर
 करैचजसविहजरं केमागधिनायाकोमभारं ॥ सुरपुष्पवृष्टिसेनाश्रयारं ॥ २१ ॥ निजुंजनिवजैश्वरि
 णं श्रीश्वर्ध्वादशकोटिनशङ्खनीं ॥ सुरभसुरकरैजयनंदनं दवाजैसमीरश्चतिमंदमंदं ॥ २२ ॥ जयदेव
 श्वनंतचतुष्टधारं ॥ दारसनसुखवीरजाणानसारं ॥ जयतीनकालादिव्यध्वनिहोय ॥ सुणिसमर्पके जाय
 दशप्राणसोय ॥ २३ ॥ नृदयेण समकंठकनकोपः ॥ षट्फलफलसुगंधहोय ॥ जन्मा विधेधप्राणीन
 ऐष पंदकमलरचैजनसर्वतोष ॥ २४ ॥ प्रभुगुणश्चनंतनाभेन जाय ॥ ऐश्वर्यसुगुरुयकाय ॥ ऐश्व
 रजकरुंकरधारिसीसं ॥ मुजिह्यारत्नारत्नवतैजगीसं ॥ २५ ॥ धृतां प्रहजिनगुणसारं ॥ भ्रमस्तत्रायं जो
 तनिजनकं वैधरं ॥ हनिजरमरणवलिनशैलवावलि ॥ रामचंद्रशिवतियवरं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं श्री आदि
 नाथजिनेंद्राय नमः ॥ नमस्तस्मात्प्रायश्चर्येन च यामि ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथपूजासंघं ॥ ॥ ॥

ना। चतुर नि कायदेव नराणि पूजे मै पूजं वताय नृंस्ते श्री आदिनाथ जिने ज्ञापकाण कदापि
कदशी ज्ञान कल्याण कायत्वं श्रद्धेना चेषामि॥ श्रद्धे॥ अ॥ मम श्रद्धे सितचौ दस विधिसे सदा ते मोक्ष पार्द
ने अणुसुरजरागै लास सुधाना॥ पूजे मै पूजं धरि ध्यान॥ नृंस्ते श्री आदिनाथ जिने ज्ञाप माधव सचतु
री मोक्ष कल्याण कायत्वं श्रद्धेना चेषामि॥ श्रद्धे॥ अ॥ श्रद्धे जय मांस्ते॥ श्रद्धे॥ आदि जिने श्रद्धे
दित्वा धि केवल भद्रो॥ सप्रवसर ण धन देवर चो को वर नही॥ फलदा यो जननी कमला सो ना धरौ
स सहस सेषान सुरा सुरजै करौ॥ शप दरी छंद॥ जय धृति सा लप ण रत्न चू॥ दिगमन स्थं न जह्ये
तस्य च नवापी प्रधि श्रुज सुहं य॥ लखि मानी को मद्रं जायाय॥ जय रा र्दम धिनी रजमाला॥
चन कल्प लता व द्रु कुसुम जाला॥ प्रकर रत्न मय तेज नाना च वगो पुर प्रति देय धूप दान॥ सुत सत ते
तोर ण दोष ना टा सा ला॥ सुर ति या गा वै जिन गुण विरा ला॥ वन सुर त र चै त्प श्रमो क आ म धु ज व र न व
र ज व न सर्वे जाम॥ अ॥ वापी कय वेदी च न कुचारा व न चारि फेर शो ना श्रया र्क ल धौ त शाला र्ज्जो ज तं ग
च जगो पुरा पुर व ज न सुचां॥ अ॥ च न व न वेदी व न चारि चारि क द्रु नं दी प र्वे तपो द सा य॥ सिंहा रथ दु म म
न हार स त प॥ जिन विवा कित व द्रु फु नि सरू प॥ अ॥ क हल ता न व न गा चै क त्या ण॥ च ऊ वी न व जै म र दं म
न नो चै किंच न रां ध र्वे गी त॥ जिन गुणा वै श्र प च ए स गी त॥ ई स व ड वार पा ल क रा दा श्र न द्या॥ क र्जो मि

प्रथमकर्मैव ह नायत्वं धूपे नार्चयामि ॥ फलं ॥ मधुरपक्वा फलोदसुंदा ललितवर्णसुहावने सु
खदायत्वे च नक्षुधामोचनघ्राणं जनपावने ॥ फलमुक्तिकारणश्च परतत्त्वे वा लक्ष्मिकारत्ने पर
श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्रकेयुगान्वरचन्द्रेयदी ॥ ३ ॥ श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्राय मे लफलप्राप्त्या य
त्वा फलेनार्चयामि ॥ फलं ॥ एनीरांशदस्यादिवसुविधिव्यवेकरिपदं जिनतने ॥ जेपूज्यभ्यार्वेवं दि
सर्तवे जानि नत्सवश्चातिघने ॥ सुखेयचक्रिका मल्लधरतीर्थे पदकीश्वरेयद्दो ॥ सुखसमन्वत्सुन्दरं वि
वर्केश्चादिजिनवरधेयदी ॥ ४ ॥ श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्राय नमो ॥ फलप्राप्त्या यत्वं श्रद्धेनार्चयामि ॥ अ
र्घ्यं ॥ ॥ अथ यद्वक्तव्यं ॥ एतज्जिसर्वार्थसिद्धिमान् ॥ त्वे पञ्चसादश्च सितजगन् ॥ मन्देय
नरमैश्वर्यतारुत्रियो जिज्ज्वाणचित्तश्रविकार ॥ ५ ॥ श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्राय नमो ॥ इह साहस्रानुति य
गार्जे कल्याणकायत्वं श्रद्धेनार्चयामि ॥ श्रद्धे ॥ ॥ नोमीचैतश्चासितजन्मये ॥ आसनकं पि सुखकेयये ॥ प
द्मे सुगिरसपतजानि ॥ विषमनाथपूज्यं धारिध्यान ॥ ६ ॥ श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्राय चैतद्वदस्मै नोमीज
न्मकल्याणकायत्वं श्रद्धेनार्चयामि ॥ श्रद्धे ॥ ॥ रसतसुतजुगति यकन्यादोया ॥ त्यागनपाधे सचमुनि
वरदोय ॥ ध्यानधसो नमिचैतश्चसेत ॥ पूजे मे पूज्यसि वदेत ॥ ७ ॥ श्रीश्चादिनाथजिनेन्द्रा चैतद्वदस्मै
नोमीतपकल्याणकायत्वं श्रद्धेनार्चयामि ॥ श्रद्धे ॥ ॥ ३ ॥ एतज्जित एकादशे द्वा नज्जगो धर्मैकह्यो नम

स्त्रिजलतैपुजपंचकरेयही॥ श्रीआदिनाथजिनेंद्रकेयुगाचरनचरचोधेयही॥ १०६ श्रीआ
 देनाथजिनेंद्रायश्चपदसाम्नायत्तांश्चरतेनार्चेयामि॥ ३॥ अहंमंदारमेरुसुपाज्जाती
 नवर्णसुहावने॥ चंचरीकथ्यावैषवनपरसैचक्षिंरुंस्त्रिपावने॥ सोकामवाणविध्वंसकार
 कनकनाजनलेयही॥ श्रीआदिनाथजिनेंद्रकेयुगाचरणचरचूंधेयही॥ १०७ श्रीआ
 नेंद्रायकामवाणविध्वंसनायत्तांपुष्पेनार्चेयामि॥ ४॥ धसुरहीधृतपकवानसुंदर
 वैविधवनपयही॥ दीप्तिरसधारिसुरनानजनललेमनलतचायही॥ सोलुधानंजनरसिंज
 रुचरुचक्षिमेयही॥ श्रीआदिनाथजिनेंद्रकेयुगाचरनचरचोंधेयही॥ १०८ श्रीआदना
 दायलुधावेदनीरेणविनाशनायत्तांनैवेदेनार्चेयामि॥ नैवेदां॥ ५॥ त्रैलोक्यकेठयादवेधुव
 पैएकलखायही॥ तममोहपटलविलापज्योधनपवनतैनाश्रिजायही॥ सोपानकारणदुष्पम
 तेजनास्करलेयही॥ श्रीआदिनाथजिनेंद्रकेयुगाचरनचरचोंधेयही॥ १०९ श्रीआदिनाथ
 जिनेंद्रायमोहांधकाएविनाशनायत्तांदीपेनार्चेयामि॥ दीपं॥ ६॥ आरसंगुरुतासधारैसुरनि
 मधुध्यावही॥ ब्रजधूम्रलविदिगापालाचिंतैनीलक्षितधारआवही॥ सोअसकर्मविध्वंसकार
 लयचंदनसेयही॥ श्रीआदिनाथजिनेंद्रकेयुगाचरनचरचोंधेयही॥ ११० श्रीआदिनाथजि

गच्छन् जहमारी॥ जानत झन थकी प्रभु सारी॥ तातैं कहनी कहु नही आचै॥ नां छिता थै पद तुम करि
 पावै॥ दासता॥ एनाम जिने श्वर दुष्ट तत्तयों॥ कर जो न कि जन कंठ धरै॥ होय दिव्य श्रमरे श्वर एहु मिने
 श्वर एम चंद शिव तिय वर है॥ ऐ॥ श्रद्धा॥ श्री हृषीकेशि पद लवीर पर्यंत चतुर्विंशति जिनें दाय श्रद्धा
 फल प्राप्त पत्तं श्रद्धे न च्चैयामि॥ श्रद्धा॥ इति सुमुख पद सुन॥ श्रद्धा श्रद्धा दिनां थकी पूजा प्राप्त
 श्रद्धा॥ सुख प्रदुर मति थिमेतिक मे श्रद्धा पदी॥ नृप पद तजि वैराग्य प्रभु श्रद्धा पदी॥ श्रद्धे सै श्रद्धा जि
 ने श्रद्धा दिती थै कए॥ श्रद्धा कानन विधिकरुं॥ त्रिविध नमि कै रए॥ परि पुश्र्वा जलित्ति थै रए॥ गिरि
 द॥ विमल नीर मनो झरी तल शरद शसि सप्त सेत ही॥ श्रद्धा मोट मि श्रित हिम न ड़वर वै मधुर कर प्रीति
 ही॥ जए मरन संभव नाश कए॥ कनक नाजन लेय ही॥ श्री श्रद्धा जिनें द्रके युग चरन चरवों थै पही
 ॥ ॐ श्री श्रद्धा दिनाथ जिनें द्रय जन्म जए मृत्पुणे गविनाश नाय पत्तां जले न च्चैयामि॥ जलं॥ यन च्च
 न श्रद्धा श्रित नीम श्रद्धा मित्ती श्रद्धा दित रुकटु मिष्ट ही॥ गोसीरां धस मीर तैं लगी होय चंदन सुष्ठ ही॥ सोम
 लय तैं कस्मीर द्योसि॥ जय नाप नासन लेय ही॥ श्री श्रद्धा दिनाथ जिनें द्रके युग चरन चर चूं थै पही॥ ॐ श्री
 श्री श्रद्धा दिनाथ जिनें द्रय संसारा ताप एग॥ किनाश नाय पत्तां चने न च्चैयामि॥ चं चं॥ ॥ श्री रित गां नीम
 सीची साहि सुखा सुखानी॥ नृप नो पजो पम नो झपिं॥ इन सरल हिंडी पावनी॥ पद श्रद्धा यकार नदी॥

पूजया वै वंदिस्म तैवेवा निजस्वश्रुतिधने॥ सुरहोय च त्रीकामहत्तधरतीर्थे पदको श्रेयसी सु
 मचंदत्तहंतशिवके श्रेयै करि प्रभुये यही॥ नृदेव जादि प्रहवी एय र्ये तचतुर्वै अतिजिने ह
 ये फत्तमा प्रायत्वां श्रद्धे न च्चेयामि॥ श्रद्धे॥ ए॥ नृश्रद्धे न च्चेयामि॥ नृश्रद्धे न च्चेयामि॥
 ॥ वि॥ नृप पदमेधन धा न्पदे यव रु पो दि॥ प्रमा तम पद कज ए जत जि मु नि न ए के वत्स
 वे गो धा सि वा ले थि रउ ये॥ २२॥ वे स री छं द दृष न जि ने जु ग दृष दा ता रं अ जित न वा ए व प म
 सं न क के दय क र ता॥ श्रु नि ने द न शि व मा ए ज तौ॥ २३॥ सु म ति सु म ति दा ता ज ग त्ता॥ प द्मा कृत प द

व र द्वा ता॥ भि न्न सु पा र्थ्वे नि ज पा सि वि द री॥ वं द्वा प्र नु श सि ते णु ति नारी॥ २४॥ पु ष्प दं त श्रा तं
 दा सो॥ शी त ल ज ग त सं वो धि ज धा सो॥ श्रे य श्रे य शि व के दा ता रं वा स पू ज्य वि द्रु म द्यु ति सा रं॥ २५॥
 ल स क ल गु ण स्था न ज चा रे लो का लो क श्र नं त नि ह्य रे ध र्म सु धा त म म र्मे व ता यो॥ सां ति जा त
 हे त वो धि सु ना यो॥ २६॥ कुं थ स क ल सु त्त स म क रि पा ले॥ श्र र श्र रि क्सु ध रि ध्या न प्र ज स ले॥ प्र ह्नि म ह्म
 त्रे स म र वि दा सो॥ मु नि सु व्र त श रि ने जु त्त म न मा सो॥ २७॥ मि श्र ष्टा द्वा ले ष सं घा रे ने म त जि रं ज म ति
 सु पा रे॥ स ज ल ज ल द त्त न पा र्थ्वे जि ने द्वा वं द र वी र सि ध्वा र त नं द॥ २८॥ च च वी स जि ने स्वर सा रं वं
 म न व च त न कृत क रं ती र्थे क र न वि के न व त्ता ता॥ वि न का र ण जा वं धु वि र या ता॥ २९॥ क र ण सा

हेतुते कर्मवसुदुर्जेना॥ वसुगुणसुधुवतधरावयेनवच्छारिके॥ आह्वननविधिकरुणेष्वजर्चा

॥ परीपुष्पाजलिल्लियेत॥ गीताखंडकपूर्ववासितसेरससिधमधवलक्षारतुसारं॥ मुनिचित
विमलसौरभरक्षैप्रभुकरणारतैः॥ सोहिमनजद्रवनीरसीतलकुंभनीरिकरलेयही॥ चौवीसजिन
दृषनादिकेपदजिज्जुगुणगणधेयही॥ ॐ ह्रीं दृषनादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनंद्रयज
मजरामृत्युणेणिकिनामानायत्वंजलेनार्चयामि॥ जलं॥ मलयनीरकपूरशीतलवदनपूरनंदही
आमोदवद्रुचिसभीरतैरिगारक्षैप्रभुकर्मदंडही॥ सोद्व्यभवपतनाशकारणकनकभाजनलेयही
चौवीसजिनदृषनादिकेपदजिज्जुगुणगणधेयही॥ ॐ ह्रीं दृषनादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंश
तिजिनंद्रयसंसारतापणेणिकिनामानायत्वंचनेनार्चयामि॥ चंदनं॥ राधवत्ससाहस्रचंदडिडि
पिंडनामुताजिमी॥ नृपभोगजोपमनोहश्चितहारांधतैप्रभुकरतुसी॥ पदश्चत्यकारणत्वासि
जलतैजनेकरमेलेयही॥ चौवीसजिनदृषनादिकेपदजिज्जुगुणगणधेयही॥ ॐ ह्रीं श्रीहृष
दिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनंद्रयवत्तपदप्राक्षयत्वाश्चक्षतेनार्चयामि॥ चक्षुः॥ अविम
त्तांधसुगंधकटादिगुह्यसमचणैसुहावने॥ तलचायत्नोचनद्वारह्वरी॥ मधुपकोरल्लियावने
सोसमत्वाणविव्धं सकारणश्चमरतरुकेलेयही॥ चौवीसजिनदृषनादिकेपदजिज्जुगुणगणधेयही॥

[illegible]

वणाः समक्षाः । अत्येकवृक्षादत्रासर्वपृथ्वीः ॥ अवाटितोष्टो गतिसि तद्विज्ञाः स्वसि कि
 यासुः परमर्षयो नः ॥ ४ ॥ अणि निदत्ता कुत्रात्तमहिनिः । तद्विनिश्रुताः कृतिनो ग
 रिनिः ॥ मनोवपुर्वगिव लिनम्य निद्व्यं । स्वसि क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ५ ॥ सकामस्तु
 पितृवश्चित्तमेतत् ॥ आत्मा मय संतर्हि मया हि माताः । तथा प्रतीया तगुणप्रधानाः ।
 स्वसि क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ६ ॥ जंघावलिम्रेणि फलं चतुर्तनु ॥ असूजवीजं कुरु
 रणाक्षानः । न नो गणस्वेदविहारणम्य । स्वसि क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥ दीप्तं च तमं
 च महत्तमो गं ॥ धीरं तपो धीरपराक्रमा म्य । ब्रह्मा परं धीरगुणं म्य रंतः । स्वसि क्रि
 यासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥ आमर्षि सर्वोषधायस्तथात्री । विषं विषादद्वि विषं विषा म्य
 सखि ह्य विदुश्च मत्तोषधी म्य । स्वसि क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ९ ॥ दीप्तं च तमं
 द्युतं च तमं ॥ मधुम्य र्वतोपमत्तं च तं ॥ अक्षीणं संचासमहानसाम्य । स्वसि क्रि

नंदनः॥ श्रीसुमतिः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः॥ श्रीसुपांशुः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्री
 इन्द्रप्रभः॥ श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीशीतलः॥ श्रीश्रेयान स्वस्ति॥ स्वस्ति
 श्रीवासपूज्यः॥ श्रीविमलः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअनंतः॥ श्रीधर्मः स्वस्ति॥ स्वस्ति
 ितिः॥ श्रीकुंयुः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअरः॥ श्रीमहिः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीमुनिसुव
 ः श्रीनमिः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीनेमिः॥ श्रीपार्श्वः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीवर्धमानः॥ हूं
 हउपे इवज्ज॥ नित्यायकंपाप्नुत केवलौघा॥ स्फुरन्मनः पर्ययमुक्त्वोधाः॥

व्यावधिः ज्ञानवलप्रवृत्ताः स्वस्ति किपासुः परमर्षयोगिनः॥ २॥ कोटस्थ ध्यात्पोपमा
 मेकवीजो संनिज संश्रोत पदानुसादि॥ चतुर्विधं बुद्धि वलं दधानाः स्वस्ति
 सुः परमर्षयोगिनः॥ २॥ संस्पृर्गने संश्रवणं च दरादा स्वादनाद्या ए विजो कनाति॥
 दिव्यान्मतिज्ञानवलाकृतं तः॥ स्वस्ति किपासुः परमर्षयोगिनः॥ ३॥ विज्ञाप्रधानाः

